रु. ६.००

सर्वोत्तम
रीडर्स डाइजेस्ट

...स्तक

...जादूगर हूदिनी
पृष्ठ ११५

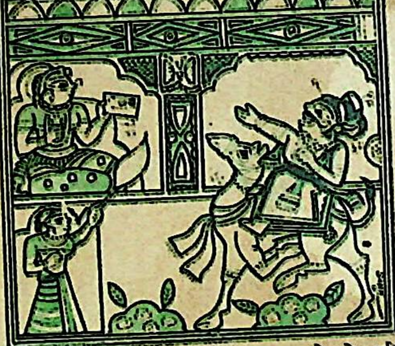
हिंद महासागर में रोमांच
पृष्ठ १७

उपासना का मर्म
पृष्ठ ७३

पाकिस्तान की खोज
पृष्ठ ५

संसार की सर्वाधिक लोकप्रिय पत्रिका
प्रति मास १७ भाषाओं और ४१ संस्करणों में ३.१ करोड़ से अधिक प्रतियां
हिंदी प्रकाशन का दूसरा वर्ष. अगस्त '८२ अंक की मुद्रित प्रतियां ५२,०००
Reader's Digest : Hindi Edition : Sept. 82
यह प्रति वार्षिक ग्राहकों के लिए है, बिक्री के लिए नहीं

आइए
मधु मुसकान लाइए



सर्वोत्तम में विभिन्न स्तंभों के लिए रचनाएं भेजिए. प्रकाशित रचनाओं पर पारिश्रमिक निम्न दरों से दिया जाता है :

जीवन की यह रीत : रु. १५०
रचनाएं आप के निजी अनुभव पर आधारित और पूर्णतः अप्रकाशित होनी चाहिए. उन से वयस्क मानव स्वभाव या दैनिक भारतीय जीवन का कोई आकर्षक पक्ष उजागर होना चाहिए. अधिकतम शब्द : ३००

जय जवान ! जय मुसकान ! : रु. १५०
सैनिक जीवन के सच्चे अनुभवों पर आधारित अप्रकाशित रचनाएं. अधिकतम शब्द : ३००

पाठशाला हास्यशाला : रु. १५०
विद्यार्थी जीवन से संबंधित सच्ची अप्रकाशित रचनाएं. अधिकतम शब्द : ३००

मेरा काम तेरा काम : रु. १५०
काम के क्षणों में होने वाली सच्ची मनोरंजक घटनाओं पर अप्रकाशित रचनाएं. अधिकतम शब्द : ३००

लच्छे भाषा के : रु. ४०
हिंदी उर्दू लेखकों द्वारा लच्छेदार चित्रण, रवानीदार, मज़ेदार और दिलचस्प मुहावरे, वाक्य या छंद. उद्धरणों के साथ लेखक का नाम, पुस्तक या रचना का शीर्षक, और प्रकाशन संस्था का नाम या पत्रिका का नाम एवं प्रकाशन तिथि अवश्य लिखें. स्वरचित रोचक वाक्य अथवा वर्णन भी भेज सकते हैं. अधिकतम शब्द : १००

इसी प्रकार झलकियां (प्रसिद्ध व्यक्तियों के जीवन की उल्लेखनीय घटनाएं), सोचने की बात (पुस्तकों, पत्रपत्रिकाओं, भाषणों में उठाए गए ऐसे मुद्दे जिन पर सब को विचार करना चाहिए) आदि स्तंभों के लिए, तथा लेखों के अंत में प्रकाशित की जाने वाली लघु रचनाओं के लिए भी आप अपनी पसंद के उद्धरण भेज सकते हैं. प्रत्येक उद्धरण के साथ लेखक, पुस्तक या पत्रपत्रिका का नाम व प्रकाशन तिथि अवश्य लिखें. प्रकाशित उद्धरणों को हमारे पास सर्व प्रथम पहुंचाने वालों को प्रति उद्धरण रु. ४० दिए जाएंगे.

हर रचना पर अपने नाम व पते के साथ भेजने की तारीख़ अवश्य लिखें. जिस रचना पर भेजने की तारीख़ नहीं लिखी होगी, उस पर क़तई विचार नहीं किया जाएगा. संपादक का निर्णय अंतिम व पूर्णतः मान्य होगा. रचनाओं के संबंध में किसी प्रकार का कोई पत्र व्यवहार नहीं किया जाएगा, न ही अस्वीकृत रचनाएं लौटाई जाएंगी. रचनाएं भेजने का पता :

संपादक, सर्वोत्तम,
बी-१५, झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया,
दिल्ली-११००३२

लिफ़ाफ़े पर ऊपर के बाएं कोने पर संबंधित स्तंभ का नाम व भेजने की तारीख़ फिर से लिखना न भूलें.

सर्वोत्तम सूक्तियां

कितनी भयावह हो जाती है अरसे से उपेक्षित कार्य की प्रतिच्छाया.

—चांसी राइट

कोई आप की पीठ पर सवारी नहीं कर सकता बशर्ते वह झुका न हो.

—मार्टिन लूथर किंग, जूनियर,
मानवाधिकारवादी नेता

आशा आने वाले साल की दहलीज़ पर खड़ी मुसकराती है, और कान में हौले से कह जाती है कि यह साल पहले से सुखद होगा. —लार्ड टेनिसन,
अंगरेज कवि

कभी आप को ऐसा नहीं लगा क्या कि यह संसार एक काली डिनर जैकेट है और आप कत्थई जूते के जोड़े?

—जार्ज गावेल,
अमरीकी हास्य अभिनेता

आह्लाद वह चीज़ है जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता. यह तो संगीत लहरियों की तरह अनुभव करने की चीज़ है. —मार्क ट्वेन,
अमरीकी हास्य लेखक

आप को बताए बिना आप के बारे में फ़ैसले हो जाना भी अपने आप में मंगलकारी हो सकता है. यह जताता है कि दूसरा व्यक्ति आप पर कितना भरोसा करता है, उस के जीवन में आप का कितना निकट स्थान है. —जौयस बंधु,
अमरीकी टीवी व्यक्तित्व

सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट

वर्ष २ · अंक २० सितंबर १९८२

भारतीय संस्करणों के प्रमुख संपादक: राहुल सिंह
संपादक: अरविंद कुमार
सहायक संपादक: ललित सहगल, सुशील कुमार

संपादन मंडल:
अरुण कुमार, राम अरोड़ा, महेश नारायण भारती

विज्ञापन विभाग:
चंद्रन थरूर (निदेशक)
राम दत्ता (क्षेत्रीय प्रबंधक, बंबई)
विवियन डी सूजा (क्षेत्रीय प्रबंधक, दिल्ली)
कुमार माधवन (क्षेत्रीय प्रबंधक, मद्रास)
अमिताभ मजूमदार (क्षेत्रीय प्रबंधक, कलकत्ता)

अन्य विभाग:
विनायक उकिड्वे (वित्त नियंता)
संजय जौहरी (वितरण प्रबंधक)
अजय कुमार दयाल (वितरण अधिकारी)

शुल्क:
रु. ७२.०० प्रति वर्ष, डाक व्यय अन्तर्गत
जानकारी के लिए लिखें: सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट,
बी-१५, झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली-११००३२
'सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट' आर डी आई प्रिंट एंड पब्लिशिंग प्राइवेट लिमिटेड द्वारा प्रकाशित किया जाता है.
पंजीकृत कार्यालय: ओरियंट हाउस, मंगलौर स्ट्रीट, बलार्ड एस्टेट, बंबई ४०००३८

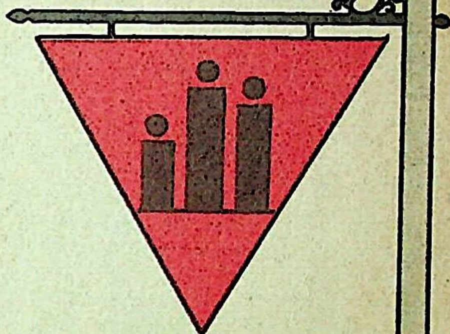
प्रकाशक तथा प्रबंध निदेशक: अनील गोर

रीडर्स डाइजेस्ट
प्लेजेंट विल, न्यू यार्क
संस्थापक: डी विट वालेस और लीला एचेसन वालेस

रीडर्स डाइजेस्ट के अंतरराष्ट्रीय संस्करण
प्रमुख संपादक: एडवर्ड टी टामसन
संचालन संपादक: आलें द लाइरो
अध्यक्ष: जान ए ओ'हारा

अंतरराष्ट्रीय संस्करण १७ भाषाओं में प्रकाशित किए जाते हैं और उन के प्रमुख कार्यालय इस प्रकार हैं: अम्सटर्डम (डच), एथेंस (ग्रीक), ओसलो (नारवेजियन), केप टाउन (अंगरेजी), कोपेनहेगन (डेनिश), ज़्यूरिख (जरमन और फ्रैंच), तोकियो (जापानी), दिल्ली (हिंदी), पेरिस (फ्रैंच और अरबी), बंबई (अंगरेजी), मिलान (इटालियन), मेक्सिको सिटी (स्पेनिश), मैड्रिड (स्पेनिश), मौंट्रीयल (अंगरेजी और फ्रैंच), लंदन (अंगरेजी), लिसबन (पुर्तगाली), सिडनी (अंगरेजी), सीयोल (कोरियन), स्टटगार्ट (जर्मन), स्टाकहोम (स्वीडिश), हांगकांग (चीनी), हेलसिंकी (फ़िनिश).

शब्द संपदा सर्वोत्तम धन



—कुसुम कुमार

तीन की संख्या त्रिलोक में लोकप्रिय है—तीन देवता, तीन तिलंगे, तीन रानियां, इत्यादि से आरंभ हो कर वही ढाक के तीन पात तक तीन का तिगड्डा दिखाई देता रहता है. यहां तीन की संख्या से संबंधित २० शब्द दिए जा रहे हैं. देखिए ये आप को किसी तिराहे पर तो नहीं खड़ा कर देते. हर एक के सामने चार संभावित अर्थों में से निकटतम पर सही का निशान लगाइए और अगले पृष्ठ पर छपे सही उत्तरों से मिला कर निर्णय स्वयं कीजिए.

१. त्रिफला—अ. एक औषधि. आ. आम केला और अमरूद. इ. तीन प्रकार के भोग. ई. स्वर्ग प्राप्ति.
२. तिहाई—अ. तार सप्तक. आ. तीसरा भाग. इ. तीसरा विकल्प. ई. तीन बार.
३. त्रिकोण—अ. तीन कोने. आ. शिव का एक गण. इ. तीन भुजा वाला क्षेत्र. ई. भैरवी चक्र.
४. तिगुना—अ. तीन गुण वाला. आ. तीन बार मुड़ा हुआ. इ. तीन बार पढ़ा गया. ई. तीन गुना.
५. त्रिशूल—अ. कीकर का वृक्ष. आ. नरक के तीन ताप. इ. नायिका का भ्रू संचालन ई. शिव का अस्त्र.
६. तिहैया—अ. नाविकों का गीत. आ. तीन चप्पू वाली नाव. इ. तबले की एक थाप. ई. तिगुने स्वर में गाया गीत.
७. त्रिबली—अ. त्योरी. आ. ब्रह्मा विष्णु महेश. इ. पेट पर पड़ने वाले तीन बल. ई. अर्जुन कर्ण दुर्योधन.
८. तिपाई—अ. लंगड़ी खाट. आ. पुराना पैसा, जिस में तीन पाई आती थी. इ. ३३.३ प्रति शत. ई. तीन पायों वाली मेज़.
९. त्रिपिटक—अ. तीन प्रकार के दंड. आ. तीन पेटियां. इ. जैन धर्म ग्रंथ. ई. बौद्ध धर्म ग्रंथ.
१०. त्रिनेत्र—अ. गणेश. आ. तीन छेद वाली गुल्लक. इ. शिव. ई. इंद्र.
११. तीसर—अ. तीसवां आ. उस का. इ. एक कढ़ाई. ई. तीसरी जुताई.
१२. त्रियामा—अ. रात. आ. चांदनी. इ. वामन अवतार. ई. आम्रपाली.
१३. तिमाही—अ. तीन महीने बाद होने वाला. आ. तीन महीनों का एक मौसम. इ. तीन लड़ों वाला चंद्रहार. ई. रात.
१४. त्रिपथगा—अ. जल थल आकाश में चलने वाली गाड़ी. आ. गंगा नदी. इ. दिग्भ्रमित. ई. तीन रास्ते.
१५. तिरपौलिया—अ. तीन पैरों वाला. आ. तीन खंबों वाला. इ. तीन फाटक वाला. ई. एक रोग.
१६. त्रिवेणी—अ. तीन चोटियों वाली. आ. संगम. इ. नाभि. ई. रीढ़ का निम्न भाग.
१७. तेहरा—अ. एक प्रकार की खिचड़ी, आ. तीन परत वाला. इ. क्रुद्ध. ई. उत्सव.
१८. त्रिपुंड्र—अ. गहरा पीला. आ. तीन कुंती पुत्र. इ. तीन नगर. ई. एक प्रकार का तिलक.
९. तीनपान—अ. ढाक का पेड़. आ. एक प्रकार का रस्सा. इ. बेल का पेड़. ई. कलकतिया पान.
२०. त्रिजटा—अ. तीन सिर वाला. आ. मेघनाद. इ. एक राक्षसी. ई. काल.

(सही उत्तर के लिए पृष्ठ पलटिए)

शब्द संपदा सर्वोत्तम धन

उत्तर

१. त्रिफला —अ. एक (आयुर्वेदिक) औषधि जिस में आंवला, हड़ और बहेड़ा का चूर्ण मिला होता है.

२. तिहाई —आ. तीसरा भाग, एक बटा तीन. तिहाई फ़सल को भी कहते हैं क्योंकि किसी ज़माने में किसान के पास उपज का तीसरा भाग बचा करता था शेष दो भाग ज़मींदार को चले जाते थे.

३. त्रिकोण —इ. तीन भुजा वाला क्षेत्र, ज्यामिति में वह आकृति जिस में तीन कोण और तीन भुजाएं हों.

४. तिगुना —ई. तीन गुना, जो आकार या परिमाण में दो बार और अधिक हो.

५. त्रिशूल —ई. शिव का अस्त्र जिस का आकार बरछी जैसा होता है और ऊपर तीन नोकदार फल लगे होते हैं.

६. तिहैया —इ. तबले ढोल पखावज आदि की एक थाप. इस के अनुसार अंतिम या सम वाले ताल को तीन भागों में बांट कर प्रत्येक भाग पर थाप दी जाती है और अंतिम थाप ठीक सम पर पड़ती है. अन्य अर्थ : तिहाई.

७. त्रिबली —इ. (व्यक्ति विशेषतः स्त्री के) पेट पर पड़ने वाले तीन बल या रेखाएं जिन्हें संस्कृत काव्य में सौंदर्य सूचक माना जाता था. इसे त्रिवलि, त्रिवलिका और त्रिवली भी लिखा जाता है.

८. तिपाई —ई. तीन पायों वाली मेज़ जिसे अंगरेजी में टीपाय या चाय की मेज़ भी कहते हैं, तीन पायों वाला कोई भी स्टूल या आधार जैसे कैमरा टिकाने का ट्रिपाड. तिपाई का एक गुण यह है कि वह किसी भी प्रकार की असमतल भूमि पर मज़बूती से टिक सकती है.

९. त्रिपिटक —ई. बौद्ध धर्म ग्रंथ जो तीन (विनय, सुत्त और अभिधम्म) पिटकों में विभक्त है.

१०. त्रिनेत्र —इ. शिव जिन के तीन नेत्र माने जाते हैं.

११. तीसर —ई. (खेत की) तीसरी जुताई.

१२. त्रियामा —अ. रात जिस के तीन प्रहर माने जाते हैं.

१३. तिमाही —अ. तीन महीने बाद होने वाला, तीन महीनों की अवधि वाला, तीसरे महीने होने वाला. जैसे, तिमाही इम्तहान —वह परीक्षा जो पढ़ाई आरंभ होने के बाद तीसरे महीने हो ; तिमाही ब्याज-वह सूद जो दर तीसरे महीने अदा किया जाए.

१४. त्रिपथगा —आ. गंगा नदी जो स्वर्ग मर्त्य और पाताल तीनों लोकों में बहती है.

१५. तिरपौलिया —इ. तीन फाटक वाला (वह बाज़ार या मकान) जिस में जाने के तीन बड़े द्वार या मार्ग हों. पोल = फाटक.

१६. त्रिवेणी —आ. संगम, प्रयाग में वह स्थान जहां गंगा यमुना तथा सरस्वती का मिलन होता है.

१७. तेहरा —आ. तीन परत वाला; तीन तहों का; जिस की तीन प्रतियां एक साथ हों; तीन गुना. इसे 'तिहरा' भी लिखते हैं.

१८. त्रिपुंड्र —ई. एक प्रकार का तिलक जिस में ललाट आदि पर भस्म अथवा चंदन की तीन आड़ी या चंद्राकार रेखाएं बनाते हैं. इसे त्रिपुंड भी लिखते हैं.

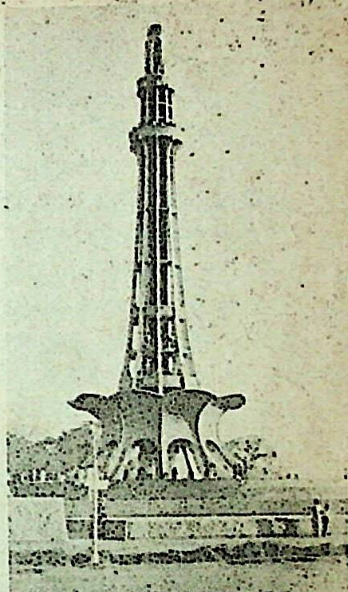
१९. तीनपान —आ. एक प्रकार का मोटा रस्सा. इसे तीनपाम भी लिखते हैं.

२०. त्रिजटा —इ. एक राक्षसी जिस का नाम त्रिजटा था और जो अशोक वाटिका में सीता के साथ रहती थी.

मूल्यांकनः

१८ या अधिक सही ....सर्वोत्तम
१५ से १७ सही ....अत्युत्तम
११ से १४ सही ....उत्तम

नए राष्ट्र की खोज



भारत और पाकिस्तान के लोग विभाजन के साए तले कब तक जीते रहेंगे?

जान लाल

मैं ने सोचा था कि अतीत की ओर मेरी यह वापसी भावुकतापूर्ण होगी, लेकिन अंततः यह एक नए राष्ट्र की खोज सिद्ध हुई. तीसादि में लाहौर की सभ्यता और संस्कृति का मधुपान मैं ने किया और १९४७ के दंगों तक पाकिस्तानी पंजाब मेरा घर भी था. अब ३५ वर्ष बाद मैं वहां एक विदेशी के रूप में लौट रहा था, कुल दो दिन पहले ही मेरे पासपोर्ट पर वीसा का ठप्पा लगाया गया था.

मैं ने और मेरे साथ इस यात्रा पर निकले मेरे दो साथियों ने जिन जगहों को सब से पहले तलाशा, वे थीं—नेपियर रोड स्थित एनमोर हाउस जहां मेरा जन्म हुआ था तथा पंजमहल रोड जहां मेरे आरंभिक इक्कीस वर्ष बीते थे. ये दोनों ही पूरी तरह खो चुके थे. एनमोर हाउस की जगह अब लड़कियों का नया छात्रावास था, और वह ऊंची ऊंची दीवारों से घिरा था. नंबर् २ पंजमहल रोड वाला हमारा मकान अब क्वींस रोड पर बने एक नए विशाल लाल ब्लाक का पिछवाड़ा बन गया था जिस की गंदी नालियां वहीं कीचड़ फैला रही थीं. सड़ांध भरे इन पोखरों में आराम से पसरी बड़ी बड़ी भैंसें हरे चारे बरसीम के रसीले गट्ठर में मुंह मार रही थीं. पुराने लाहौर की झलक यहां वहां दिखाई दे जाती थी. मन झिंझोड़ देने के लिए यह पर्याप्त था: किम की तोप (इस मध्ययुगीन तोप को रुडयार्ड किपलिंग ने अपने उपन्यास 'किम' से अमर कर दिया), यूनिवर्सिटी हाल, अजायबघर, नीला गुंबद चौक और अनारकली बाज़ार. लेकिन डिपार्टमेंट स्टोर राजा ब्रदर्स की दुकान और अनारकली के ही अमीन के अड्डे यानी खेल सामग्री की दुकान का अभाव मन को कचोटता था. माल रोड पर अनेक चमचमाती नई इमारतें उभर आई हैं. फिर भी नहर से ले कर नगर पालिका कार्यालय तक पुरानी शान अब भी

क़ायम है. इस के आगे गवर्नमेंट कालिज की सजी संवरी इमारत अपने आसपास के दृश्य पर हावी है. एक बार मुझे शायद प्रिंसिपल हाउस की झलक भी दिखाई दी—जहां मेरे नाना पिछली सदी में डिस्ट्रिक्ट एवं सेशंस जज के रूप में अदालत लगाया करते थे.

पुराने लाहौर के अनेक स्मारक हैं, लेकिन पुराने लाहौरियों को वह शहर अब अपनी यादों में ही मिल सकता है. आज का लाहौर बिल्कुल अलग है कोई उनतीस लाख की जन संख्या का यह शहर मानो फटा पड़ रहा है. दिल्ली की तरह लाहौर में भी विभाजन के बाद काफ़ी शरणार्थी पहुंचे और दिल्ली की ही तरह इस का पुराना व्यक्तित्व खो गया है. लेकिन पुरानी यादों का अब कोई मतलब नहीं. अब हमें यथार्थ में ही जीना है.

महिलाओं का स्थान. पाकिस्तान के लोग मेरी प्रतिक्रियाएं जानने को बेहद उत्सुक थे. मैं ने कहा, "यहां मर्दों का बोलबाला है." मेरे इस कथन से वे चकित और भ्रमित हो जाते. कभी कभी मुझे लगता कि यह सुन कर वे क्रुद्ध भी होते थे. यह बात नहीं कि वहां की अधिकांश स्त्रियां परदानशीन हो गई हैं या कहीं दिखाई नहीं देतीं. मेरा यह मतलब था भी नहीं. जापानी मोटर साइकिल यामाहा की सीट पर पीछे बैठी औरतों के चेहरों के नक़ाब हवा में उड़ते दिखाई देते थे. परंपरागत सुत्थन और कुरता पहने, दुपट्टा ओढ़े औरतें बाज़ारों में ख़रीददारी करती दिख जाती थीं. और कोई कोई तो अपनी जापानी टोयोटा कार ऐसी चुस्त अदा से चलाती गुज़र जाती कि हमारी आधुनिकाओं की जीन्स पहनने वाली पीढ़ी हैरान रह जाए. मैं ने वहां एक महिला को भीड़ वाले इलाक़े में स्कूटर चलाते भी देखा. फिर भी मैं कहता हूं, पाकिस्तान पुरुषों का संसार है. वहां हवाई अड्डे पर उतरने के बाद से लौटने तक मैं ने हर जगह वहां के मर्दों को सलवार, कमीज़ और कोहाटी चप्पलें पहने मालिकाना शान से चलते देखा. कोहाटी चप्पलों का ज़िक्र आया ता बता दूं, मैं अपने लिए भी एक जोड़ा लेता आया और यह लेख मैं वे आरामदेह चपलियां पहने लिख रहा हूं.

बात सिर्फ़ इतनी सी नहीं है कि हर जगह आप को पुरुष अधिक दिखाई पड़ते हैं. जिन अनेक प्रमुख महिलाओं से मेरी भेंट हुई उन से क्षमा याचना के साथ मैं कहना चाहूंगा कि सामान्यतः वहां की महिलाओं को समाज में अपने सही स्थान का पता है. और शायद इसी लिए जब उन्हें उन के योग्य कोई काम करने का अवसर मिलता है तो वे उसे असा रण दक्षता के साथ पूरा करती हैं. सामूहिक बातचीत तथा घरों के भीतर आपसी चर्चा में यह बात बार बार उजागर हुई. पाकिस्तान में महिलाएं पढ़ाने में, डाक्टरी आदि पेशों में, अफ़सरी में, मैनेजरी में—हर क्षेत्र में दरवाज़ों पर दस्तक दे रही हैं. मुबारक़ हो. इस प्रकार मेरी एक प्रतिक्रिया धराशायी हो गई. इस के वाद कभी मैं ने जल्दबाज़ी में अपना मुंह नहीं खोला. हां, कपड़ों के बारे में हलकी फुलकी बातें ज़रूर कीं.

समाज में पुरुषों की प्रमुखता के इस तथ्य के बाद जिस चीज़ पर मुझे आश्चर्य हुआ, कहना चाहिए कि सदमा पहुंचा, वह यह थी कि मैं ने दिल्ली छोड़ने के बाद से कहीं भी किसी को जीन्स नाम की चीज़ पहने नहीं देखा. और भी अचरज की बात थी कि जिस टेरीकाट की पैंटों का प्रचलन सारे भारत में आज है, उस का यहां लगभग अभाव था. पता चला कि पाकिस्तान में केवल बाबू लोग ही टेरीकाट पैंट पहनते हैं. यह सच

निकला. एक बार मैं पंजाब सचिवालय में स्थित अनारकली की शानदार मजार देखने गया तो वहां टेरीकाट पैंटधारी कुछ बाबुओं को टहलते भी पाया.

पराश्रय. मैं कपड़ों पर अधिक ध्यान देता हूं. इस लिए यह बात मेरे मस्तिष्क में काफ़ी देर बाद पैठी कि पाकिस्तान अभी तक विदेशी टेक्नोलाजी पर निर्भर है. सड़कें इंपोर्टेड कारों से भरी थीं. इन में से ९९ प्रति शत जापानी हैं. इन्हें मंगाने का तरीक़ा बड़ा आसान है. आप के लिए कार की क़ीमत कोई भी विदेश में जमा करवा दे—कार आप के घर पहुंच जाएगी. छोटी सुज़ुकी कार की क़ीमत साठ हज़ार पाकिस्तानी रुपए तक पड़ती है. और इस से कुछ बड़े डौल की टोयोटा कार लगभग डेढ़ लाख पाकिस्तानी रुपए में आती है. इस के अतिरिक्त प्रवासी पाकिस्तानी हर वर्ष २.४ अमरीकी अरब डालर से भी अधिक की विप्रेषण राशि स्वदेश भेज रहे हैं. अगर यह ध्यान में रखा जाए कि किसी भी संपन्न व्यक्ति की सब से पहली कोशिश यह होती है कि वह अपना धन किसी तरह विदेशों में सुरक्षित जमा करवा दे, तो एक बहुत बड़ी राशि अभी विदेशों से पाकिस्तान आना बाक़ी है. इस बीच पाकिस्तान में जो भी औद्योगिक विकास हुआ है, वह विदेशियों की उदार सहायता से संभव हुआ है. लेकिन किस क़ीमत पर?

हाल तक पाकिस्तानियों को इस की कोई चिंता नहीं थी. वे विदेशी साज़ सामान जुटाने में लगे थे. शायद ही किसी डाक्टर, इंजीनियर, सरकारी अफ़सर या उद्योगपति का घर एसा हो जहां रंगीन टीवी, स्टीरियो अथवा एक दो कारें न हों. सार्वजनिक कार्यालयों और शयन कक्षों में विदेशी एयर कंडीशनरों की भरमार है. फिर मैं ने एक संस्था में १८००० बीटीयू के २४ सेट पड़े देखे जो वहां लगने थे. इन में टेकुमसेह के कंप्रेशर लगे थे. हां, यह ज़रूर है कि इन के खोल शायद पाकिस्तान में ही बने थे.

अमरीकी और अरब पैसे तथा प्रवासियों द्वारा भेजी जाने वाली विदेशी मुद्रा का पाकिस्तान में सैलाब सा आ गया है. लेकिन अब संकेत दिखाइ पड़ते हैं कि वहां की आर्थिक नीति में बड़े उद्योगों में पूंजी निवेश पर ध्यान दिया जा रहा है. रूसी सहयोग से निर्मित कराची इस्पात मिल की स्थापित उत्पादन क्षमता १३.७ लाख टन है. तक्षशिला में चीन की मदद से बने भारी इजीनियरिंग प्लांट में निर्मित शक्कर बनाने की मशीनों का निर्यात होने लगा है. वहीं निर्मित सड़क कूटने के इंजन स्वदेश में काम आते हैं और रेल के पुराने डब्बों में तक्षशिला के एक्सल लगने लगे हैं. टैंक बनाने की भी उन की योजना है. इसी पर एक शिक्षाविद ने हंसते हुए कहा भी, "आप के बराबर जो आना हुआ." अगले वर्ष तक वे सुज़ुकी कार असेंबल करने लगेंगे जिन के ८५ प्रति शत पार्ट पाकिस्तान में ही बनेंगे.

नई चेतना. पाकिस्तान जाग गया है. औद्योगिक पिछड़ापन दूर किया जाएगा. देश में शिल्पिक योग्यता की कमी भी नहीं है. पंजाब के कारीगरों पर मुग़ल बादशाहों तक को भरोसा था. उस्ताद अहमद लाहौरी ताजमहल के मेमार-ए-कुल अर्थात सर्वोच्च वास्तु शिल्पी थे. उन्हीं की देखरेख में बादशाह शाहजहां ने दिल्ली, लाहौर व आगरा की कई अन्य इमारतें बनवाई थीं. उन का पोता ख़ैरुल्ला प्रसिद्ध गणितज्ञ और खगोलशास्त्री था. कहा जाता है कि उसी ने सवाई राजा जयसिंह द्वितीय के लिए जयपुर वाले जंतर मंतर का नक़्शा तैयार किया था. अतः पाकिस्तान की वैज्ञानिक और

तकनीकी संभावनाओं को कम आंकना भारी ग़लती होगी.

जो बात सब से ज़्यादा उभर कर आई वह थी अरब संबंधों का और इसलामी पुनरुत्थान-वाद का महत्व. अरबों से संबंध उन के लिए आर्थिक आवश्यकता है, तो धार्मिक पुनरुत्थान प्रेरणापुंज. आर्थिक और राजनीतिक संस्थाओं को इसलामी दर्शन का जामा पहनाने के लिए अध्ययन किए जा रहे हैं. राष्ट्रपति ज़िया की लोकप्रियता उतनी ही व्यापक है जितनी भुट्टो के प्रति नफ़रत. हम हिंदुस्तानियों को इस भ्रम में नहीं पड़े रहना चाहिए कि भुट्टो लोकतंत्रवादी था. उस ने पिछले चुनावों में जाली मतदान कराया था, हालांकि इस की कोई ज़रूरत नहीं थी. अधिकांश लोग उसे एक नृशंस हत्यारे के रूप में ही याद करते हैं. उस की कार्य प्रणाली ही ऐसी थी. आम तौर पर सेना के लोग भी लोकप्रियता से कोसों दूर हैं. पिछले चार सालों में ४२ लोगों को विदेशों में राजदूत नियुक्त किया गया. इन में से पूरे १७ राजदूत सेना के तीनों अंगों से संबद्ध थे तो १४ लोग सीधे थल सेना से ही लिए गए थे. ऊंचे सरकारी ओहदों पर सेना के ऐसे एकछत्र आधिपत्य से उस की लोकप्रियता को चार चांद नहीं लगे हैं.

भारत पाक संबंधों में व्याप्त गतिरोध पर जितना अफ़सोस भारतीय पंजाबियों को है उतना ही एक औसत पाकिस्तानी को भी है. हम तीनों जहां भी गए हमारा स्वागत बेहद गरमजोशी और सौजन्य के साथ किया गया. (हम में से दो की कोई स्पष्ट पहचान नहीं थी, पर एक दूर से ही सिख दिखाई देता था) चाहे दीना के पास का गांव हों या ख़ैरियां का बाज़ार, लाहौर की गलियां हों या मरी की पहाड़ियां, लोग गरमजोशी से हाथ मिलाते तथा पंजाबी और उर्दू भाषा में तपाक से स्वागत करते.

उन की यह गरमजोशी एक साझी परंपरा की स्वतः स्वीकृति थी अथवा मात्र मेहमान-नवाज़ी? उत्तर समय देगा. लेकिन बात बिलकुल स्पष्ट है कि पिछले ३५ वर्षों में पाकिस्तान ने अपना एक विशिष्ट व्यक्तित्व विकसित कर लिया है. दोनों देशों को यह बात समझ लेनी चाहिए. लेकिन इस समझ से भी क्या होगा?

यह विषय बार बार उठाया गया, और अकसर लोग इस पर बात चीत करना चाहते थे. उन्हों ने खुले शब्दों में कहा कि पाकिस्तान को सोवियत संघ से ख़तरा है जबकि भारत और सोवियत संघ दोस्त हैं. अथवा जैसा कि एक प्रमुख शिक्षाविद ने कहा, "भारत और पाकिस्तान की दोस्ती ज़रूरी है—लेकिन सीआईए हमें दोस्त नहीं बनने देती."

दक्षिण एशिया से बड़ी शक्तियों का हस्त-क्षेप ख़त्म होना चाहिए, यही हम दोनों देशों के हित में है.

धर्म परायण

चर्च से बाहर आते ही हम तीनों भाई बहन प्रायः पापा के पीछे पड़ जाते कि कोला पिलाओ और आइसक्रीम खिलाओ. यूं तो वह अकसर मान जाया करते थे, लेकिन उस रविवार को तुनक गए : किस किताब में लिखा है कि चर्च से निकलते ही कुछ न कुछ खाने पीने को ज़रूर होना चाहिए?

"बाइबिल में लिखा है," मेरी बहन ने चट से उत्तर दिया, "धन्य हैं वे लोग जो अच्छा कर्म करने के बाद ही भूख और प्यास मिटाते हैं."

—बौब बोनब्रेक

मेरा काम तेरा काम



मैं उस विमान में फ़्लाइट अटेंडेंट था. तेज़ तूफ़ान के कारण विमान को अचानक उतरना पड़ा. ऊबड़-खाबड़ धरती को छूते ही उस में भूचाल सा आ गया. यात्री विमान के कप्तान और कर्मचारियों को धकियाते ठेलते बाहर भागने लगे. दादी मां सी एक महिला ने डग भरते भरते शांत स्वर में पूछा, "हम धरती पर उतरे हैं या मार गिराए गए हैं?"

—स्टीव क्रैटन

एक मां अपने बच्चे का फ़ोटो उतरवाने गई, तो फ़ोटोग्राफ़र से पूछा, "कितने पैसे होंगे?"

"छः के पांच डालर."

"लेकिन मेरे तो चार ही बच्चे हैं!" वह बोली.

—न्यू एशियन मंथली, ताइवान

कुछ वर्ष पहले ओहायो सीनेट पद के लिए चुनाव लड़ रहे डेविड जानसन परिषद की एक प्रौढ़ सदस्या के साथ चुनाव प्रचार पर निकले. उन्हों ने एक किवाड़ खटखटाया. सुडौल शरीर की निर्वसना सुंदरी ने दरवाज़ा खोला. उस के बदन पर बाल घुंघराले करने वाली पिनों के सिवा कुछ नहीं था.

हर मतदाता से कुछ न कुछ बात करने वाला उम्मीदवार भौंचक्का रह गया. बिना कुछ बोले उस ने सुंदरी की ओर प्रचार सामग्री बढ़ा दी. सुंदरी ने बिना झिझक सामग्री ले ली.

दरवाज़े से परे होते ही बौखलाए जानसन ने ऊंचे स्वर में कहा, "लाजवाब चीज़ थी."

"इस में क्या शक है," प्रौढ़ा पार्षद ने खीझ कर कहा, "लेकिन हमारे समय में कोई औरत बालों में सिर्फ़ पिन लगाए कभी दरवाज़ा नहीं खोलती.

—पाल ई श्रोडर

बच्चों के लिए पुस्तकें लिखने का सब से बड़ा पुरस्कार है नन्हे मुन्नों की डाक. प्रथम पुरुष में लिखी गई मेरी एक ऐतिहासिक रचना पढ़ कर एक बच्चे ने लिखा, "... मुझे आप की किताब बहुत पसंद आई, अच्छा. यह चिट्ठी मैं यह जानने के लिए डाल रहा हूं कि आप अभी ज़िंदा हैं या नहीं, बताइए?

—बीएट्रिस स्मिथ

१९७२ में मैं अमरीकी राष्ट्रपति के विश्राम गृह से संबद्ध परिवहन अनुपोषण इकाई का कर्मचारी था. वाशिंगटन जाने के लिए मैं नौ सेना के एक हेलीकाप्टर में सवार हुआ. तीन और आदमी मेरे साथ सवार हुए. एक मेरी बग़ल में और दो मेरे आगे बैठ गए. आगे वाली सीटों पर बैठे सवारों को पहचान कर मैं स्तंब्ध रह गया: एक थे अमरीकी विदेश मंत्री हेनरी किसिंजर, और दूसरे थे रूसी विदेश मंत्री आंद्रेई ग्रोमिको. मेरे साथ बैठा व्यक्ति किसिंजर की सीक्रेट सर्विस का जासूस था. उड़ान के दौरान मैं दोनों प्रसिद्ध विभूतियों को निहारता ही रहा. दोनों वार्तालाप में मग्न थे, जो

इंजन के शोर में मुझे सुनाई नहीं दे रहा था.

अचानक किसिंजर ने पलट कर मुझ से पूछा "तुम्हारे ख़याल से हमें क्या करना चाहिए?" एक वफ़ादार अमरीकी की तरह मैं ने उत्तर दिया, "मैं आप से बिलकुल सहमत हूं, डाक्टर किसिंजर." इस पर ग्रोमिको की ओर मुड़ कर उन्हों ने कहा, "तो यही तय रहा." ग्रोमिको अनमने हो खिड़की से बाहर देखने लगे. मैं फूला न समाया कि दो महान कूटनीतिज्ञों के वार्तालाप में मैं ने भी भाग लिया है.

जैसे ही हेलीकाप्टर धरती पर उतरा, मैं ने सीक्रेट सर्विस के जासूस से पूछा कि मैं ने किस बात पर अपना फ़ैसला दिया था. उस ने बताया कि दोनों विदेश मंत्री सलाह कर रहे थे कि कैसा भोजन किया जाए—फ़्रैंच या चाइनीज़ और मैं ने चाइनीज़ के हक़ में राय दी थी.

—माइकेल डी मिलर

पांच बरस तक एक बड़े स्टोर में जासूस के तौर पर दुनिया देखने के बाद अब मुझे किसी बात पर आश्चर्य नहीं होता. पर कभी कभी ऐसी घटती



है कि मन यह चीखने को होता है, "नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता."

एक बार की बात बताऊं—भली भाली लगने वाली एक वृद्धा ने स्टोर से सौंदर्य प्रसाधन की काफ़ी सामग्री उठा ली. मैं ने ताड़ लिया और उन्हें अपने कमरे में ले गई. वहां मेज़ पर उन से भारी-भरकम पर्स उलटने को कहा.

उन्हों ने पर्स खाली किया, तो प्रसाधन सामग्री के साथ साथ तीन छोटे गमलों में कैक्टस भी निकले.

मैं पूछे विना न रह सकी कि आख़िर कैक्टस जैसी चीज़ क्यों उठाई उन्हें ने.

"क्या बताऊ," अफ़्रीकी कैक्टस भी आजमा चुकी, पर हमारे यहां वे फूलते ही नहीं."

—जि हि

मैं प्रांतीय सूचना एवं प्रचार विभाग में काम करता हूं और हमारे यहां से जारी किसी समाचार को अख़बार में जगह मिलती है, तो हमारे सहयोगियों के हर्षातिरेक का ठिकाना नहीं रहता. ख़ैर, हमारे एक साथी अवकाश ग्रहण कर रहे थे. हम सब ने कार्यालय की ओर से उन्हें विदाई भेंट दी, तो वह ख़ुशी से उछल पड़े. सीधे केंद्रीय राजधानी से प्रकाशित समाचार पत्र में भेंट लिपटी देख बोले, "देखा, चलते चलते भी कितने बड़े अख़बार ने जगह दी!"

—चा ले

मेरी एक प्रौढ़ा सहेली नौकरानियों से इंटरव्यू ले रही थी. पांचवीं उम्मीदवार अंदर आई, तो बोली, "मैं खिड़कियां साफ़ नहीं करूंगी. फ़र्श की सफ़ाई भी मेरा काम नहीं होगा. और नहाने के टब साफ़ करने का जिम्मा भी मेरा नहीं."

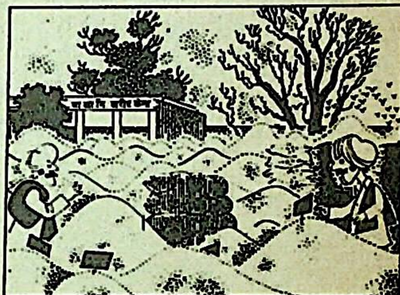
मेरी मित्र ने गंभीरता से पूछा, "तुम पियानो बजाना जानती हो?"

"नहीं, लेकिन आप यह क्यों पूछ रही हैं?"

मेरी मित्र बोली, "इस लिए कि खिड़कियां, फ़र्श और नहाने के टब साफ़ करते समय मैं चाहूंगी कि कोई बैठ कर पियानो बजाता रहे."

—ड फ्रो

भारतीय खाद्य निगम आपके परिवार के लिए आप से भी पहले खरीदारी शुरु कर देता है।



खरीदारी का ऐसा सिलसिला जो भारतीय खाद्य निगम देश भर में चलाता है। हर वर्ष लगभग 130 लाख टन खाद्यान्न खरीदता है। यह खरीद सरकार द्वारा निश्चित मूल्यों पर की जाती है और यह मूल्य उचित और किसान को अधिक उत्पादन करने को प्रोत्साहन देने वाले होते हैं। 180 लाख टन की आधुनिक और वैज्ञानिक भण्डारण क्षमता में आप के लिए संचित सुरक्षित सूखे अनाज जो ऊंचे साइलो और देश भर में फैले सुनियोजित गोदाम समूहों में रखता है। देश भर में पूरे वर्ष में किये जाने वाले कार्य कलाप। यह निश्चित करने के लिए कि आप का थैला भरने के लिए हमेशा पर्याप्त अनाज उपलब्ध हो।

और आपके परिवार की उतनी ही चिन्ता करता है जितनी आप स्वयं करते हैं।

आपके परिवार का स्वास्थ्य

भारतीय खाद्य निगम को इसकी उतनी ही चिन्ता है जितनी आपको। इसका पता अच्छी किस्म के अनाज और भण्डारण में हर स्तर पर कड़ी गुण नियंत्रण व्यवस्था के रूप में देखने को मिलता है। जिसके लिए गुण मानक निर्धारित किये जाते हैं और उनका कड़ाई से पालन किया जाता है। वास्तव में भारतीय खाद्य निगम गुणों का अत्यन्त ध्यान रखता है क्योंकि किसी अन्य खाद्य वस्तु की पूर्ति करने वाले की तरह इस पर भी खाद्यान्न मिलावट निरोधक अधिनियम लागू होता है। जब कभी आपको ऐसा लगे कि आप जो अनाज खरीद रहे हैं वह देखने भालने में इतना अच्छा नहीं है तो आप यह न सोचे कि यह घटिया किस्म का है। भारतीय खाद्य निगम कई किस्मों का अनाज खरीदता है जिनमें से कुछ प्राकृतिक रूप से चमकीली न हो या उनकी चमक खत्म हो गई हो। लेकिन हमेशा की तरह गुणवत्ता को एक जैसा बनाये रखने पर ध्यान दिया जाता है।



आपके परिवार का बजट

उपभोक्ता को खाद्यान्न की निर्बाध पूर्ति कैसे की जाये। यह भी अपने आप में एक कहानी है। विशाल परिवहन व्यवस्था के माध्यम से इस कार्य को ठीक प्रकार से पूरा करने की चेष्टा की जाती है। भारतीय खाद्य निगम प्रतिदिन कुशलतापूर्वक अनाज भेजने के लिए लगभग 2600 बड़ी लाइन और 300 छोटी लाइन के वैगनों का उपयोग करता है।

भारतीय खाद्य निगम परिवहन व्यय, मण्डी में चुकाये जाने वाले विभिन्न करों, भण्डारण लागत तथा बैंकों द्वारा ऋणों पर लिये जाने वाले शुल्क से आपको राहत दिलाता है। इनमें अधिकांश खर्चों को भारत सरकार उपभोक्ता सहायता राशि के जरिये पूरा करता है। जिससे आपको लागत मूल्य से कम कीमत पर उचित दर दुकानों से अनाज मिल सके और इसके फलस्वरूप आपका बजट संतुलित रहे।

खेतों से भण्डारण स्थलों पर तथा भण्डारण स्थलों से राज्य वितरण एजेंसियों (जो उचित दर दुकानों को अनाज पहुंचाती हैं) तक यह एक लम्बी यात्रा है। भारतीय खाद्य निगम गाइड के रूप में साथ रहता है। और आप गृहिणी इसके साथ अपनी चिन्ता बांट सकती हैं। भारतीय खाद्य निगम आपके परिवार की देखभाल करने में आपकी सहायता करता है।



भारतीय खाद्य निगम

राष्ट्र की सेवा में संलग्न

आप कितने सतर्क हैं ?

स्काट मारिस

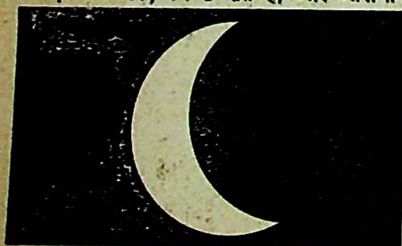
आप का ध्यान कहां रहता है? इन प्रश्नों के उत्तर ईमानदारी से दीजिए

बहुत सी चीज़ें हम रोज़ाना देखते तो हैं, लेकिन उन पर ध्यान नहीं देते. महत्वपूर्ण चीज़ों पर ध्यान देना तथा बेकार चीज़ों की उपेक्षा कर जाना हमारे मस्तिष्क का स्वभाव है. विविध उद्दीपकों में से आवृत्तिमूलक और असार की छंटनी कर के वह केवल 'आवश्यक' संवादों को ही आगे बढ़ने की अनुमति देता है.

लेकिन आवश्यक और अनावश्यक का निर्णय कौन करता है? सतर्क—शरलक होम्ज़ जैसे जासूस या किसी धुरंधर वैज्ञानिक के से मस्तिष्क के लिए मामूली से मामूली तथ्य भी अत्यंत अर्थपूर्ण हो सकता है.

निम्न प्रश्नोत्तरी से यह पता चल सकता है कि आप कितने अवलोकनशील हैं:

१. तारों भरी, स्वच्छ रात है, और आसमान



में—चित्र में दरशाए अर्धचंद्र जैसा— चांद टिमटिमा रहा है. बताइए, यह चांद बढ़ रहा है, या घट रहा है? यानी अगली रात, आसमान को देख कर क्या आप बता सकते हैं कि वह कल से बड़ा है या छोटा? चमकीला है या फीका?

२. मोनोपली* के खेल में गोटियां बोर्ड के गिर्द किस दिशा चलती हैं? दक्षिणावर्त, या वामावर्त?

३. चलते वक़्त बांहें आप के पांवों की लय ताल के अनुरूप उठती गिरती हैं या उस के विपरीत?

४. घूमने वाले दरवाज़े किस दिशा में घूमते हैं?

५. 'यहां गाड़ी खड़ी न करें' अथवा 'धूम्रपान निषेध' दरशाने वाले अंतरराष्ट्रीय चिह्नों में वृत्त को काटने वाली कर्णरेखा किस ओर को होती है?

६. महिलाओं के ब्लाउज़ में काज किस तरफ़ बनाए जाते हैं?

७. किताबों में सम संख्या वाले पृष्ठ दाहिनी

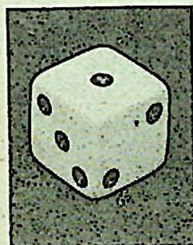
---

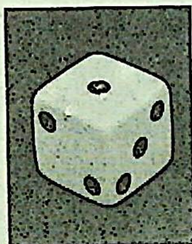
*[illegible] मार्च १९८१

'ओम्नी' (फ़रवरी १९८२) से संक्षिप्त. कापीराइट ओम्नी [illegible] लि. न्यू यार्क

तरफ़ होते हैं या बाईं तरफ़?

८. चित्र में दो गोटियां हैं. एक चित्र में बिंदियां उस तरह दिखाई गई हैं जिस तरह आम गोटी पर बनी होती हैं. दूसरे चित्र में ऐसी गोटी का प्रतिबिंब है, अतः उस में बिंदियों का क्रम/दिशा मार्ग उल्टा हो गया है. बताइए कौन सी गोटी वास्तविक है, और कौन सी प्रतिबिंब?





९. हौदी (सिंक) में लगी दो टोंटियों में से गरम पानी की कौन सी होती है और ठंडे पानी की टोंटी किस ओर होती है?

१०. आम तौर पर इस्तेमाल की जाने वाली बहुभुजीय पेंसिल की कितनी भुजाएं होती हैं?

११. यातायात नियंत्रण के आड़े (शीर्षाभिमुख) सिगनलों में हरी रोशनी सब से ऊपर होती है या सब से नीचे?

१२. पुरुषों की टाई में बनाई गई पट्टियां बहुधा तिरछी होती हैं, मगर ये (पहनने वाले की दृष्टि के अनुसार) दाहिने से बाएं ढलती हैं या बाएं से दाहिने?

आप कितने सतर्क हैं?

उत्तर

१. पृष्ठ सख्या . . . पर दिखाया गया चंद्रमा घट रहा है. अतः अगली रात अधिक अंधियारी होगी. इसे और अच्छी तरह से समझने के लिए अंगरेजी के अक्षर D और C को याद रखना चाहिए. उत्तरी गोलार्ध में जब अर्धचंद्र की भुजाएं (D की तरह) बाईं ओर को हों, तो चंद्रमा बढ़ रहा होगा. जब अर्धचंद्र की भुजाएं (C की तरह) हों, जैसी कि चित्र में दिखाई गई हैं, तो वह घट रहा होता है. पूरा अनुक्रम यूं होता है: पहले D, फिर पूर्णचंद्र, फिर C. पूर्ण क्रम को 'डी ओ सी' (DOC) कहते हैं.

२. दक्षिणावर्त.

३. विपरीत; विरुद्ध.

४. वामावर्त.

५. सामने से हमारे देखने पर कर्ण रेखा वृत्त के ऊपरी बाएं कोने से नीचे दाहिनी ओर आती है.

६. दाहिनी ओर.

७. बाईं.

८. असली गोटी दाहिनी ओर है

९. बहुधा दाहिनी ओर.

१०. छः.

११. बहुधा सब से नीचे.

१२. बाएं से दाहिने.

मूल्यांकन

११-१२ सर्वोत्तम; ८-१० उत्तम; ६-८ संतोषजनक; ५-७ साधारण



घातक उपचार

अस्पताल कर्मचारियों पर किए जाने वाले हमले निश्चय ही निंदनीय हैं, पर यह भी सच है कि सार्वजनिक अस्पतालों में लापरवाही की कोई सीमा नहीं. हाल ही में कलकत्ता के एक सार्वजनिक अस्पताल में सेलाइन-ग्लुकोस मिश्रण की जगह मरीज़ को मिट्टी का तेल चढ़ाए जाने से होने वाली मौत से स्वास्थ्य अधिकारियों में उपजी चिंता स्वाभाविक है. जांच समिति द्वारा अपराध तो सिद्ध हुआ, परंतु इस के दोषी की खोज में वह असफल रही.

घासलेट का यह किस्सा और इस से पहले हैदराबाद में एक बच्ची की ग़लत, स्वस्थ आंख निकाल दिए जाने जैसे निर्मम, अपराधतुल्य मामले कोई नए नहीं. आज किसी भी सार्वजनिक अस्पताल में भरती होना उतना ही ख़तरनाक है जितना कि बिना इलाज पड़े रहना. वार्डों में सफ़ाई जैसी मूलभूत आवश्यकता पर सर्वप्रथम कुठाराघात होता है. कानपुर के एक अस्पताल में बैक्टीरिया संदूषण इस कदर था कि ९६ प्रति शत रोगी भरती होने के बाद इस से संक्रमित हो गए. देश भर में अस्पतालों के वार्डों को समय समय पर बंद करना पड़ता है, क्योंकि टेटनस किसी महामारी की तरह फैलने लगता है. एक बिस्तर पर दो मरीज़ होते हैं जिस से एक की छूत दूसरे को लग जाती है.

इस पर तुर्रा यह कि इन सरकारी अस्पतालों के कर्मचारी मरीज़ों की ज़रूरतों के प्रति सर्वथा लापरवाह हो चुके हैं. यह ठीक है कि अस्पतालों में भीड़ अधिक होने से वहां के अमले और अन्य साधनों पर दबाव पड़ता है. परंतु यह सभी समस्याओं का एकमात्र कारण तो नहीं. उदाहरणार्थ, इस से कलकत्ता के अस्पतालों में होने वाली अवैध शराब की बिक्री या बंबई के अस्पतालों के प्रांगण में चलती शराब की भट्ठियों का औचित्य सिद्ध नहीं होता. न ही ज़रा ज़रा सी बात पर डाक्टर का बीमार को छोड़ कर चल देना, मरीज़ों की भीड़ के संदर्भ में उचित ठहराया जा सकता है.

बड़े पैमाने पर होने वाली दवाओं की चोरी से भी दवाओं की कमी की समस्या और विकट हो लेती है. उपकरणों तक को सही, चालू हालत में नहीं रखा जाता. घासलेट दुर्घटना की जांच करने वाली समिति ने सुझाव दिया है कि अस्पताल के अधीक्षकों के कर्तव्यों का क्षेत्र विस्तृत किया जाना चाहिए. पर इस के लिए उन्हें विस्तृत अधिकार भी देना ज़रूरी है. इस समय तो हालत यह है कि उन्हें छोटी छोटी बातों के लिए स्वास्थ्य विभाग का निदेश प्राप्त करना पड़ता है. यही नहीं, राजनीतिक पहुंच रखने वाले अपने मातहतों के रहम पर भी रहना पड़ता है. —'स्टेट्समैन'

प्रतिभा पलायन

प्रशिक्षित वैज्ञानिक जन बल की दृष्टि से हमारा देश तीसरे स्थान पर है. पर इन में से अधिकांश लोग समृद्ध देशों में पलायन कर जाते हैं. इस बहाव को रोकने के लिए और इस का रुख़ पलटने के लिए हमारे नीति नियोजकों की ओर से कोई कारगर समरनीति का निर्धारण आज, अभी तक शेष है.

यह सच है कि पलायनकारी प्रतिभाओं के स्वदेश छोड़ने के पीछे अर्थ और भौतिक सुख सुविधाओं का मोह भी हावी रहता है, पर बात मात्र

इन्हीं प्रलोभनों तक सीमित नहीं. हमारे शिक्षा संस्थानों में शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है, प्रतिभा की क़द्र नहीं रही, अनुसंधान की सुविधाएं नाम मात्र को हैं और कुंठाएं बढ़ती जा रही हैं. हमारी 'सिफ़ारिश की संस्कृति' हज़ारों संत्रस्त युवक युवतियों को अपनी व्यावसायिक तथा शैक्षिक क्षुधा की तुष्टि के लिए दूसरे देशों का रुख़ करने को विवश किए है. यही संस्कृति विदेशों में बसे हजारों हिंदुस्तानियों को स्वदेश लौटने से रोक रही है. अब चूंकि द्वितीय श्रेणी ही हमारे स्थायी गुण के रूप में फलती फूलती है, इस लिए द्वितीय श्रेणी की प्रतिभाओं को ही प्रश्रय भी मिलता है. विश्वविद्यालयों के विभागीय प्रमुख शायद ही किसी योग्य तथा प्रतिभाशाली व्यक्ति का चयन करते हों. उन्हें सदा यह भय खाता रहता है कि किसी प्रतिभावान का आना उन के लिए मुश्किलें न पैदा कर दे. इस तरह एक आत्मसेवी वर्ग ने निर्णायक की भूमिका वाले हर पद पर अपनी जड़ें फैला रखी हैं. अतः हमारे नेता प्रतिभा पलायन पर सचमुच अंकुश लगाने और प्रवासी भारतीयों को लौटाने के प्रति ईमानदार हैं, तो उन्हें भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद जैसी उच्च स्तरीय संस्थाओं को ऐसे उत्कृष्ट शिक्षा क्षेत्रीय प्रशासकों को सौंपना होगा, जो हमारी 'सिफ़ारिशपरस्त' संस्कृति की चूलों पर प्रहार कर सकें.

—'हिंदुस्तान टाइम्स'

अमानवीय व्यवहार

कानपुर जेल के किशोर क़ैदियों के साथ किए गए घिनौने व्यवहार का परदाफ़ाश होने से कोई नई बात सामने आई हो, ऐसी कल्पना भी भ्रामक है. १९८१ में सोलह से कम आयु के पूरे १,७२२ लड़के लड़कियां देश के विभिन्न कारावासों में थे और इस सूची में पश्चिम बगाल का नाम सब से ऊपर था. यहां के ५२४ किशोर क़ैद में थे. इन में से अधिकांश के साथ मानसिक, लैंगिक अथवा शारीरिक अनाचार किया गया. बिहार की ६५ जेलों में बच्चों के लिए कोई स्कूल नहीं, जबकि पश्चिम बंगाल में यतीम और आवारा किशोरों को वहां की पहले ही खचाखच भरी जेलों में छंटे हुए अपराधियों के साथ रहना पड़ता है.

पूरे देश की जेल व्यवस्था समान रूप से भ्रष्ट है और स्थिति दुर्दांत क़ैदियों और भ्रष्टाचारी कर्मचारियों की मिलीभगत के कारण बद से बदतर होती जा रही है. बाल अधिनियम में १६ वर्ष से कम आयु के बच्चों को क़ैद करने की मनाही है, और अपराधी परिवीक्षा अधिनियम के अनुसार २१ वर्ष से कम आयु के लोगों को जेलों के बजाए सुधारगृहों में रखने की व्यवस्था है. परंतु इन क़ानूनी व्यवस्थाओं का पालन शायद ही कभी होता हो. और तो और अदालत ने भी आलोच्य क़ैदियों से संबंधित ब्यौरे पेश करने को कहा तो छः राज्यों ने इस का उत्तर तक देना ज़रूरी नहीं समझा. न ही केंद्र सरकार ने अदालत के इस सुझाव पर कोई कार्यवाही की कि देश भर में किशोर अपराधियों के लिए समान रूप से विशेष व्यवस्था होनी चाहिए.

वस्तुतः उपरोक्त संदर्भ में सारी दंड व्यवस्था दोषपूर्ण है. पश्चिम बंगाल के बाल अधिनियम १९५९ और केंद्र शासित प्रदेशों के लिए १९६० में केंद्र द्वारा बनाए गए इसी प्रकार के क़ानून में किशोर अपराधी और उपेक्षित बच्चे की कोई पृथक परिभाषा नहीं की गई. अधिकांश प्रदेशों में तो इस दृष्टि से कोई विधायी व्यवस्था भी नहीं है. बाक़ियों ने इस आशय के अधिनियमों को लागू करने के लिए कोई नियम ही नहीं बनाए. पर्याप्त संख्या में बाल सुधार गृह या सुधार संस्थान नहीं हैं और केंद्र तथा राज्य सरकारें इस की चर्चा होने पर सदा अर्थ के अभाव का रोना रो देती हैं. असली कमी मानवीयता की है. कड़े से कड़ा क़ानून अथवा रुपयों के अंबार से भी इन किशोर क़ैदियों का कल्याण संभव नहीं. ज़रूरत इस बात की है कि पुलिस, अदालतों और जेल अधिकारियों को समाज के प्रति अधिक जागरूक रहने के लिए बाध्य किया जाए.

—'स्टेट्समैन'

वर्ष २ : अंक २०

सर्वोत्तम
रीडर्स डाइजेस्ट

सितंबर १९८२



कंडुकारी की अविस्मरणीय यात्रा

प्यासे नाविक, भूखी नाव

एमिली तथा पर ओला दोलर

तीसरे पहर नाव का डीज़ल इंजन बंद हो जाने पर भी तीनों नौजवान मछुआरों में से कोई नहीं घबराया. ज़मीन का कहीं निशान नहीं था और नाव हिंद महासागर की लहरों पर असहाय सी डोल रही थी, पर आसपास बहुतेरी नौकाएं थीं. यहां अकसर मीलों तक बिखरी रहने वाली नावों के चलते किनारे से एक तरह की मेंढक डुबकी के ज़रिए ही संपर्क साधा जा सकता था. अलबत्ता यह एक ख़तरनाक तरीक़ा था, क्योंकि ऐसे लोगों की कमी नहीं थी जो एक बार समंदर में उतरे तो फिर कभी नहीं दिखे. लेकिन इन तीनों को यक़ीन था कि कोई न कोई उन्हें गावठाण तक खींच ले जाएगा.

यह ४ जनवरी १९८० का दिन था.

उन में से एक ने अपनी भड़कीली छापों वाली क़मीज़ उतारी और उसे बांस क खंभे से बांध कर फहराने लगे. बाक़ियों ने जाल खींच लिए. लेकिन पहर ढलने लगा था और एक एक कर के आसपास की नावें किनारे लौट चली थीं.

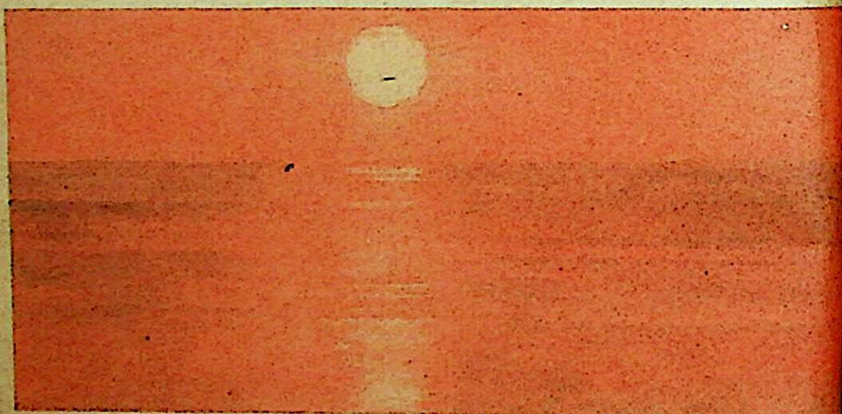
अब ज़ा कर नाविकों को अहसास हुआ कि सूर्यास्त की चौंध में उन की नाव शायद गुम हो कर रह गई होगी. चीख़ चीख़ कर पुकारते उन के गले दुखने लगे. जल्द ही वे अपनी २८ फ़ुट लंबी, लकड़ी की खुली नाव—कंडुकारी—में बेसहारा भटकने लगे.

इस भटकी हुई नाव क तीनों नाविक—२४ वर्षीय सुनील आडंबर्गे, १९ वर्षीय सिरिल हेंदावितारण और १७ वर्षीय निमाल गुणरत्न—चचेरे भाई थे और श्रीलंका के तटवर्ती गांवों के हज़ारों बाशिंदों की तरह रोज़ी रोटी के लिए मछली पकड़ते थे. तीनों ने पाया कि नाव के इंजन की मरम्मत नामुमकिन है; शायद मेन क्रैंकशाफ़्ट टूट गया था. छोटी सी नाव में कुतुबनुमा, रेडियो या कोई भी अन्य मार्ग-

निर्देशक उपकरण नहीं था. चूंकि टापू की भीतरी पहाड़ियां नज़र नहीं आ रही थीं, इस लिए उन्हों ने अंदाज़ा लगाया कि वे ज़मीन से क़रीब ३० किलोमीटर दूर हैं. इस उम्मीद से कि संध्याकालीन, तटगामी हवा उन्हें किनारे की ओर धकेल ले जाएगी, तीनों ने एक कामचलाऊ बादबान बना डाला. फिर अंधेरा घिर आया, और वे सो गए.

आंख खुलने पर उन्हें पता चला कि हवा का रुख़ बदल चुका है और वे तट से दूर बहे जा रहे हैं. टापू के दक्षिणी सिरे पर देवेंद्र हेड के लाइट हाउस से टिमटिमाहट तक नज़र नहीं आ रही थी. श्रीलंका था तो कहां था?

सब से बड़े सुनील ने कमान संभाल ली. उस ने कहा, पाल उठा दो. चूंकि बहते बहते उन्हें कहीं न कहीं पहुंचना ही था, पाल उन्हें वहां तेज़ी से पहुंचा सकता था—'वहां' चाहे जहां हो.



चचेरे भाइयों के गांव की आख़िरी नाव भी जब गावठाण लौट आई और कंडुकारी का कोई पता न चला तो सिरिल के पिता ने मछुआरों से पूछताछ की. वे बोले कि उन्हों ने दोपहर बाद से ही नहीं देखा. सुनील और निमाल बुज़ुर्ग दादा दादी के साथ रहते थे, और उन्हें भी लड़कों की कोई ख़बर नहीं थी. पौ फटते ही सिरिल के पिता किसी की कार मांग कर तट के साथ साथ बने राजमार्ग पर उत्तर की ओर चल पड़े. पिछली शाम लौटे हुए मछुआरों का अनुमान था कि भटक कर नाव इसी ओर गई होगी. रास्ते में गांव में उन्हों ने पूछताछ की.

तट के साथ साथ पूछताछ करते वह गाल्ल तक जा पहुंचे. इस बड़े से क़सबे में उन का एक दोस्त रहता था, जिस के पास एक ट्रालर बोट थी. वह उन की मदद को तैयार हो गया. चार दिन तक दोनों तटवर्ती समुद्र में खोजबीन करते रहे. आख़िर उन का ईंधन चुकने लगा.

इस बीच सरकारी अधिकारियों को भी सूचना दे दी गई थी और आकाश से समुद्र में व्यापक खोज भी शुरू हो गई थी. नौ सेना की गश्ती नौकाएं दक्षिण पश्चिम में ६५० किलोमीटर दूर माल्दीव द्वीप समूह तक हो आईं; भटकी हुई बहुत सी नौकाएं अतीत में उस

तरफ़ जा निकली थीं. वायुसेना के हेलिकाप्टरों ने तटवर्ती समुद्र को छान मारा. दो सप्ताह से भी लंबी ढूंढ़ा ढांढ़ी के बाद यह मान लिया गया कि कंडुकारी डूब गई है—और साथ ही उस के नाविक भी. कोई नहीं जान सका कि सुनील, सिरिल और निमाल श्रीलंका से क़रीब ३०० किलोमीटर दूर पूरब की ओर निकल गए थे और अनजाने ही आस्ट्रेलिया की ओर बढ़ते जा रहे थे.

समुद्र में भटकने के दूसरे दिन सूर्योदय होते ही तीनों युवकों ने अपने भंडारे का जायज़ा लिया. कप्तान सुनील ने बचे हुए १५ लिटर पानी पर राशन लगा दिया—किसी को भी दिन में दो बार आधे कप से ज़्यादा पीने को

पर टूट पड़े. शाम को सुनील ने अपने बड़े जेबी चाकू से नाव की रेलिंग में दो खांचे बना दिए, ताकि दिनों का कोई हिसाब रहे.

कंडुकारी में सात खांचे बन गए. तब मौसम एकदम ख़राब हो उठा. सीधी उठती विशाल लहरें नाव को झकझारने व सराबोर करने लगीं. समुद्र में जा पड़ने से बचने के लिए तीनों के तीनों गनलों से चिपक गए.

फिर उस तूफ़ान के बीच एक मालवाहक नज़र आया. तीनों चिल्ला चिल्ला कर हाथ हिलाते रहे; और जहाज़ उन के इतने पास आ गया कि उन्हें उस के डेक पर खड़े, दूरबीनों से उन्हें देखते लोग भी नज़र आने लगे. लेकिन, कमाल की बात है, जहाज़ उन के पास से निकल गया; और ग़ायब हो गया.



नहीं मिलेगा. खाने के नाम पर उन के पास था कोको के चूरे का एक जार, एक डब्बा कंडेंस्ड मिल्क, और थोड़ी सी चीनी. इन सब को पानी में मिला कर उन्हों ने चाकलेट ड्रिंक सा बना लिया. निमाल ने मछली का कांटा पानी में डाल दिया.एक छोटी सी शार्क फंस गई. उसे स्टोव पर पका कर वे भुक्खड़ों की तरह उस

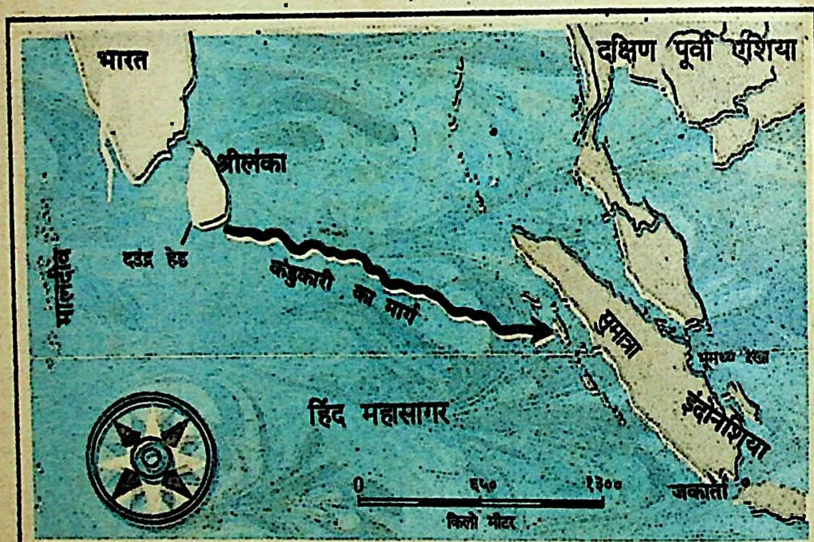
बचाव का मौक़ा यूं निकल जाने से वे इतने हताश हो गए कि अगले कुछ दिन उन के लिए जीवन मरण के संघर्ष के दिन बन गए. कभी कभार वे कोई मछली पकड़ लेते और उसे पका कर बिना किसी चाव के खा लेते. नाव की रेलिंग पर जब ११ खांचे बन गए तो उन का पीने का पानी ख़त्म हो गया. और

बारिश का कोई आसार नहीं था.

अब उन्हों ने, गला तर रखने के लिए, थोड़ा थोड़ा समुद्री जल पीना शुरू कर दिया. जब भी कोई मछली पकड़ते, तो पहले वे उस का रक्त पीते; उस की आंखें निकाल लेते और कोटरों का द्रव चूस जाते. २०वें दिन उन की दियासलाइयां भी चुक गईं. अब वे मछलियों को कच्चा ही या फिर धूप में सुखा कर खाने लगे. खांचों की संख्या बढती रही.

कृपा होते होते रेलिंग पर २० खांचे खुद चुके थे. बूंदें गिरनी शुरू हुईं तो युवकों ने आसमान की ओर उठा कर मुंह खोल दिए और अपने पीपे और ख़ाली जगों में पानी भर लिया. लेकिन जल्दी ही यह संग्रह भी चुक गया.

वक़्त के साथ साथ उन के बाल बढ़ गए, और दाढ़ी में गुंजलकें पड़ गईं. अब वे पकड़ी हुई मछलियों को साफ़ करने या सुखाने की ज़हमत भी न उठाते और उन्हें साबुत ही खा



उधर, घर में, सिरिल के पिता इस विश्वास पर डटे रहे कि लड़के अभी ज़िंदा हैं. वह आस्थावान बौद्ध थे. बौद्ध मंदिर जा कर वे उन के मंगल के लिए प्रार्थना करते. फल फूल चढ़ाते और उन की सुरक्षा की भिक्षा मांगते.

कंडुकारी में हिचकोले खाते तीनों युवा मछुआरे भी अब प्रार्थनाएं करने लगे थे कि थोड़ी सी बरसात हो जाए लेकिन देवताओं की

जाते. पानी की जगह वे अपना पेशाब ही जमा कर के पीने लगे थे. बारिश होती तो पेंदे में ताज़ा पानी इकट्ठा करने के लिए—जलमग्न होने का जोखिम उठा कर भी—वे नाव के परनाले तक बंद कर देते.

अंततः निमाल ने पानी की जगह दूसरों की गैरजानकारी में समुद्री जल, डीज़ल और थोड़े से मीठे पानी की काकटेल बना कर पीनी शुरू कर दी. इस से उस की जल आपूर्ति लंबे

समय तक बनी रह सकती थी. डेढ़ महीने बाद जब दूसरों ने पाया कि वह कमज़ोर होता जा रहा है तो उस ने अपनी हरकत कबूल ली. इस पर उन्हों ने सारा ईंधन पानी में बहा दिया.

मछलियों का कोई ठौर ठिकाना नहीं था, पर पूर्णमासी के दिन हमेशा काफ़ी मछलियां हाथ लग जातीं. उस दिन तीनों पेट भर खा लेते—और रोते जाते. पूर्णमासी के दिन श्रीलंका में बौद्धों को छुट्टी रहती है. परिवार के लोग तथा मित्र आपस में मिलते जुलते हैं, मंदिर जाते हैं और इकट्ठे भोजन करते हैं. उस मौके पर उन्हें घर की याद बहुत सताती.

एक पूर्णमासी के दिन, हमेशा की तरह काफ़ी अच्छी ख़ासी मछलियां पकड़ने के बाद उन्हों ने देवताओं के सामने एक शपथ ली. चूंकि प्यास उन्हें भूख से कहीं ज़्यादा सताती थी, उन्हों ने मन्नत मांगी कि विधाता थोड़ी सी बारिश कर दे तो वे सारी मछलियां देवताओं को भेंट दे देंगे. और उन्हों ने मछलियों को पानी में फेंक दिया. उस रात बारिश तो हुई, लेकिन अगले पूरे हफ़्ते तक उन के हाथ कोई मछली नहीं लगी.

रेलिंग पर अब ६२ खांचे बन चुके थे, और एक अरसे से उन्हें न पानी नसीब हुआ था, न मछली. निमाल लगातार समुद्र का पानी पी रहा था. आख़िर एक दिन सुनील बोला, "चलो, नाव से कूद पड़ें, और क़िस्सा ख़त्म करें." सिरिल तो सहमत हो गया, लेकिन सब से छोटा निमाल गिड़गिड़ाने लगा. "मैं मरना नहीं चाहता." इस पर बाक़ी दोनों बेहद शर्मिंदा हुए. सुनील ने उसे यक़ीन दिलाया, "हम आख़िरी दम तक नाव में ही रहेंगे."

मगर इस के बाद वे इस विपत्ति के लिए इशारों इशारों में एक दूसरे को दोषी ठहराने लगे. कर्म में उन की गहरी आस्था होने के कारण वे रह रह कर सोचने लगते कि कहीं किसी एक के बुरे कर्मों के फलस्वरूप ही तो वे यह यातना नहीं भोग रहे!

पर उस दिन रेलिंग में १०२वां खांचा बनाने के लिए सुनील तन कर बैठा तो सहसा चिल्ला पड़ा, "ज़मीन! . . ." क्षितिज पर ताड़ के पेड़ों से आच्छादित किसी द्वीप की आकृति उभर आई थी. कंडुकारी तट की ओर सरकती रही और वे तीनों मंत्रबिद्ध से टुकुर टुकुर ताकते रहे, "क्यों न हम तैर कर वहां पहुंच जाएं," सिरिल ने आग्रह किया. लेकिन निमाल इतना कमज़ोर हो चुका था कि उस के लिए तैरना मुमकिन नहीं था. लिहाज़ा सुनील बोला, "हम साथ ही रहेंगे." मगर रात को निर्मम प्रकृति ने हवा का रुख़ एक बार फिर बदल दिया. सुबह हुई तो क्षितिज वीरान था.

तीन दिन बाद निमाल सोते सोते ही, बड़ी शांति से, हमेशा के लिए सो गया. दोपहर तक उस के पार्थिव शरीर की देखभाल करते सुनील और सिरिल फूट फूट कर रोते रहे. फिर, अंत्येष्टि की बौद्ध रीति के अनुसार उन्हों ने निमाल के हाथों और पैरों के अंगूठे एक साथ बांध कर उस के मृत शरीर को समुद्र में प्रवाहित कर दिया.

२४ अप्रैल को, कंडुकारी में १५ हफ़्तों से भी ऊपर यात्रा करते रहने के बाद किसी इंजन की घरघराहट सुन कर ज़िंदा बचे दोनों युवक चौंक पड़े. एक विदेशी मछलीमार नौका उन की तरफ़ चली आ रही थी. वे उछल कर खड़े हो गए. लगे इशारों से समझाने: "खाना नहीं, पानी नहीं, इंजन भी नहीं."

मछलीमार नौका कंडुकारी की बग़ल में आ गई और दोनों को उस में चढ़ा लिया गया. कप्तान की ज़बान उन की समझ में नहीं आ रही थी. संकेतों की भाषा में ही उस ने भोजन

का प्रस्ताव रखा. फिर, जर्जर नाव को पीछे बांधे, मछलीमार नौका, इंदोनेशियाई द्वीप सुमात्रा के एक निकटवर्ती बंदरगाह की ओर चल दी. यूं कंडुकारी की अविश्वसनीय यात्रा आख़िर ख़तम हुई.

सिरिल और सुनील को इंदोनेशियाई बंदरगाह पुलिस के हवाले कर दिया गया. पर पुलिस समझ नहीं पा रही थी कि ये भटके हुए मछुआरे हैं किस देश के. हालांकि वे दोनों "लंका, लंका" कहते रहे, पर गुत्थी तब तक नहीं सुलझी, जब तक कंडुकारी का निरीक्षण नहीं किया गया. निरीक्षण के दौरान एक ख़ाली माचिस मिली. उस के घिसे हुए लेबल पर छपे शब्द बड़ी मुश्किल से पढ़े गए: 'सीलोन मैच कं. लि., कोलंबो.' अब इंदोनेशिया की राजधानी जकार्ता में श्रीलंका के दूतावास को फ़ोन किया गया; और उन की शिनाख़्त हो गई.

कुछ दिन बाद दोनों युवकों को हवाई जहाज़ से जकार्ता और वहां से तत्काल, जांच पड़ताल के लिए, श्रीलंका के राजदूत के निवास स्थान पर पहुंचाया गया. हैरानी की बात यह थी कि सूजे हुए पांवों और कुपोषण तथा समंदरी प्रानी को पचा न पाने के कारण फूले हुए पेटों के अलावा उन का स्वास्थ्य एकदम ठीक था. राजदूत ने उन्हें वस्त्र मुहैया कराए, और सब से अच्छी बात यह की कि घर लौटने के लिए हवाई जहाज़ के दो टिकट दिलवा दिए.

कोलंबो पहुंचते ही रिपोर्टरों की भीड़ ने सुनील और सिरिल को सिर आंखों पर बिठा लिया. सिरिल के पिता परिवार के ५० सदस्यों व मित्रों के साथ चार घंटों की यात्रा कर के हवाई अड्डे पर पहुंचे थे, हर्षमय पुनर्मिलन तथा दिवंगत निमाल का शोक मनाने के बाद, पूरा दल घर की ओर चल दिया. उन की यह यात्रा उन मछुआरों की भीड़ द्वारा बीच बीच में भंग होती रही जो इस चमत्कारी यात्रा से लौटे युवा मछुआरों की एक झलक भर पाने को बेताब थे. निःसंदेह कंडुकारी की इस महायात्रा—२,२०० किलोमीटर की दूरी तय करने और बिना ईंधन १११ दिनों तक समुद्र में रहने—की नौ चालन के इतिहास में कोई दूसरी मिसाल नहीं मिलती.



तह बाज़ारी

मैं सुपर बाज़ार से सामान ख़रीद रही थी कि हमारे दो वर्षीय सुपुत्र कहीं के कहीं निकल गए. थोड़ी देर हैरान होने के बाद मुझे सुझाया गया कि मुझे उस की तलाश कहां करनी चाहिए. तभी मेरी चिंता दूर हो गई जबकि मैं ने एक बूढ़ी क्लर्क को बच्चे को अपनी उंगली थमाए अपनी ओर आते देखा. वह पास आते ही बोली, "यह उधर बरतनों में घुसे थे. हम इन्हें पकड़ कर कपड़ों में ले आए. लीजिए, ले जाइए."

—अनीता बी

हम थिएटर में बैठे फ़िल्म के शुरू होने की प्रतीक्षा में थे कि हाल में मैनेजर की घबराई हुई आवाज़ गूंजी: भूरे शिकारी कुत्ते के मालिक, जहां कहीं हों तत्काल जलपान गृह में पहुंचें, तत्काल.

—मार्क ब्रूस

चिरंतन प्रेमी और अमर नाटककार

विश्वकवि गेटे

जिन के पुण्यस्मरण का यह १५०वां वर्ष है

अर्नेस्ट ओ हाउज़र

वह जरमनी की महानतम साहित्यिक प्रतिभा थे. उन के पास हर मानवीय स्थिति, हर मानवीय भावना के लिए शब्द थे. ख्याति उन्हों ने मुख्यतः कवि, उपन्यासकार तथा नाटककार के रूप में पाई, मगर वस्तुतः वह पश्चिम के अंतिम विश्वजनीन प्रज्ञा पुरुष थे. उन की गतिविधियों की विविधता विशेषज्ञताओं के युग में जी रहे आधुनिकों को इस क़दर चकाचौंध करती है कि वे रह रह कर इस बौद्धिक भीष्म की ओर टुकटुकाने लगते हैं.

योहान वोल्फ़गांग वान गेटे (१७४९-१८३२) का जीवन काल दो शताब्दियों में प्रशस्त था, और दोनों ही शताब्दियों के अनेक वर्षों पर उन की प्रतिभा का वर्चस्व रहा. विचारक, अन्वेषक और स्रष्टा गेटे जीवन काल में ही किंवदंती बन गए थे. उन के प्रामाणिक लेखन के १४३ ग्रंथ हैं, लेकिन वह अपने जीवन को ही अपनी प्रमुख कृति मानते थे. ''अस्तित्व के पिरामिड को ऊंचे से ऊंचा उठाना'' वह अपना कर्तव्य समझते थे.

बचपन. सुख शांतिपूर्ण जीवन बिताने वाले गेटे के सुभद्र पिता को अपने सराय मालिक पिता के विरासत में काफ़ी दौलत मिली थी. गेटे की मां फ्रैंकफर्ट के महापौर की बेटी थीं. यहां के जिस लंबे चौड़े मकान में योहान वोल्फ़गांग का जन्म हुआ और यौवन बीता, उस में उस की मेधा और रुचियों के असंख्य सुराग़ मिलते हैं. उदाहरणार्थ, उन के पिता का पुस्तकालय, जिस में उच्च कोटि की कृतियां भरी थीं साथ ही उन की चित्र दीर्घा, जिन की चित्ताकर्षक दृश्यावलियां देख देख कर अनजान योहान के मन में उस इटली के बारे में कौतुक उपजा, ''जहां नींबू बौराते हैं, और गहन हरीतिमा में सुनहरी नारंगियां चमचमाती हैं.'' लेकिन सब से मुखर स्मारक है बच्चों के खेलने के कमरे में बना कठपुतली घर. इस रंगमंच पर बालक गेटे अद्भुत उत्साह से लोमहर्षक नाटक खेला करता था, जिन में हहराते सागरों के, आकाश से उतरते देवताओं के दृश्य भी होते थे और बिजली की चमक और गरज भी सुनाई देती थी.

लाइपजिग तथा स्ट्रासबर्ग में छात्र जीवन के दौरान गेटे की मेधा मुखरित होनी शुरू हुई: क़ानून पढ़ने के साथ साथ उन्हों ने कला, चित्रकारी तथा नक़्क़ाशी भी सीखी. आज भी उन के सुरक्षित बचे चित्र उन्हें रूपचित्रों एवं प्रकृति चित्रों का मेधावी चितेरा साबित करते हैं. साथ ही वह काव्य तथा निबंध लिखते,

समकालीनों के साथ पीते खाते और अपनी मोहिनी तथा बौद्धिकता से उन्हें मुग्ध करते.

माता पिता के नीड़ से उड़ते ही गेटे ने एक महान प्रेमी की वृत्ति अपना ली. उन का सर्वश्रेष्ठ काव्य बहुत हद तक इसी का परिणाम है. २१ वर्ष की उम्र में घोड़े पर सवार स्ट्रासबर्ग का विद्यार्थी योहान एक दिन अपने एक मित्र के साथ राइन नदी के निकट ज़ाज़नहाइम नामक गांव में पहुंचा; और स्थानीय पादरी की सुनहरी बालों और नीली आंखों वाली बेटी पर मर मिटा. पूरा महीना चांदनी रातों में विचरते, एकाकी वन विहार करते किसी गीत सा गुज़र गया. लेकिन वचन निभाने की बारी आई तो वह लड़की को सहसा छोड़ भागा. कालांतर में यही बाला उस के महाकाव्य 'फ़ाउस्ट' की भोली भाली नायिका ग्रेशन के रूप में अमर हो गई.

इस संक्षिप्त प्रेम प्रसंग के परिणामस्वरूप उन्हों ने पहली बार प्रेम कविताएं रचीं. पूर्ववर्ती तुकबाज़ों की कृत्रिमता तज कर अपनी निजी शैली में उन्हों ने भावावेश यूं उंडेल दिया कि छंद कभी उल्लास से थिरकते तो कभी पीड़ा से सिसकते मालूम पड़ते. गीतों की रुपहली धारा गेटे के पूरे जीवन में अजस्र बहती रही. उन्हों ने कहा भी—"छंदों को पढ़ो मत, गाओ!" शुबर्ट, मोज़ार्ट तथा मैंडलसोन जैसे उद्भट संगीतकारों ने उन की सैकड़ों कविताओं पर धुनें रचीं.

अगली प्रेयसी. गेटे की अगली प्रणय स्थली थी वेट्ज़्लार. फ्रैंकफर्ट के उत्तर में बसे इस क़सबे में वह जैसे तैसे वकालत करने गए थे. शार्लोट बफ़ की सगाई हो चुकी थी, पर वह उस पर फ़िदा हो कर ही रहे. दो दुख भरे महीनों तक वह उस के इर्द गिर्द मंडराते रहे, फिर क़सबा छोड़ गए. मगर शार्लोट को वह नहीं भूल सके. इस पीड़ा ने भी उन से कई चिरस्मरणीय रचनाएं लिखवाईं. उन के उपन्यास का नायक वर्दर प्रेम में निराशा हो कर आत्महत्या कर लेता है. उस की गोली की आवाज़ मानो सारी दुनिया ने सुनी.

'युवा वर्दर के दुःख' (द सौरोज़ आफ़ यंग वर्दर) के प्रकाशन के समय गेटे २५ वर्ष के थे. इस से पहले एक ऐतिहासिक नाटक ने उन्हें ख़ासी प्रतिष्ठा दिलाई थी, लेकिन इस उपन्यास ने उन्हें विश्वविख्यात बना दिया. काव्यात्मक शैली में लिखे वर्दर ने पाठकों को कई स्तरों पर विह्वल किया. नई उम्र के छोकरे वर्दर और योहान वोल्फ़गांग की तरह पीली वास्कटों और बिरचिसों पर नीले कोट पहने घूमने लगे. कुछ भग्नहृदय प्रेमियों ने तो वर्दर की देखा देखी ख़ुद को गोली मार ली. कई भाषाओं में अनूदित इस उपन्यास की यूरोप भर में चर्चा हुई.

मगर लिखने से पैसा धेला कम ही मिलता था. इस लिए जब साक्स-वाइमर के युवा ड्यूक कार्ल आगस्ट ने संरक्षण का प्रस्ताव रखा तो गेटे ने स्वीकार लिया और डची की सुशांत राजधानी वाइमर में बस गए. दोनों युवकों की मित्रता ५३ वर्ष बाद ड्यूक की मृत्यु तक अटूट रही.

ड्यूक की परिषद के सदस्य के रूप में गेटे का जीवन कई तरह से सक्रिय हो उठा. उन्हों ने कर प्रणाली में सुधार किया, भ्रष्टाचार ख़तम किया, सैनिक कटौती की और भूमि सुधार किया. ड्यूक की सिफ़ारिश पर जरमनी के बादशाह ने उन्हें कुलीन वर्ग की सदस्यता प्रदान की और उन्हें अपने आप को वान गेटे* कहलाने का अधिकार दिया.

*वान एक उपसर्ग है, जो आस्ट्रिया और जरमनी के कुलीन घरानों के पुरुषों के नाम से पहले जोड़ा जाता है.

एक बार फिर वह प्यार के चक्कर में पड़ गए. या शायद, इस बार यह गहरी दोस्ती भर थी. रूपसी थी ड्यूक के अश्वपाल की पत्नी शार्लोट वान श्टाइन. दीर्घ संबंधों के दौरान संभ्रांत शार्लोट ने इस नौजवान शेर को भद्र समाज का परिष्कृत सदस्य बना डाला.

प्रकृति भगवान. अर्धग्रामीण वाइमर में रहते रहते शहरी गेटे प्रकृति और उस के रहस्यों के प्रति आकृष्ट होने लगे. जो भी देखते, उस के प्रति उन की जिज्ञासा और रचनात्मकता जाग उठती. उन्हों ने बादलों और तूफ़ानों का अध्ययन किया. छेनी हथौड़ा और झोला ले कर वे निर्जन पहाड़ों की ओर चले जाते और तरह तरह के शिलाखंड और स्फटिकाश्म इकट्ठे करते फिरते. एक दिन, ड्यूक के साथ शिकार के दौरान, उन्हें कुछ वनवासी मिले, जो जड़ी बूटियां बीन रहे थे. उन में से एक ने गेटे को जैंशंन (कुटकी) का पौधा दिया. वह इस के घनेपन और सौंदर्य पर मुग्ध रह गए. इस के बाद उन्हें तरह तरह के पौधे इकट्ठे करने, उन के मूल (लैटिन) नाम मालूम करने, खुर्दबीन से उन का ज़र्रा ज़र्रा जांचने की ऐसी धुन लग गई कि अपने बग़ीचे को उद्यान विज्ञान का एक नायाब नमूना बना दिया. होते होते वह यह सोचने लगे कि वह कौन-सी आदिम वनस्पति थी जिस से सृष्टि भर के पेड़ पौधे उत्पन्न हुए! यह विचार 'प्रकृति भगवान' संबंधी उन के रहस्यवादी चिंतन के एकदम अनुरूप था.

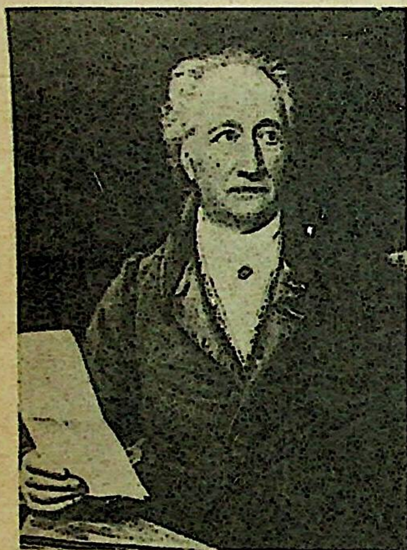
तिस पर भी वैज्ञानिक धारणाओं के प्रति गेटे अत्यंत आस्थावान थे. अपने 'रंग सिद्धांत' पर उन्हें एक अरसे तक काफ़ी गर्व रहा. वह कहते, "दुनिया में कवि तो मुझ से अच्छे हुए भी हैं, और होते भी रहेंगे. पर मुझे फ़ख्र है कि इस सदी में मैं अकेला एक ऐसा आदमी हूं जो रंगों के जटिल विज्ञान की वास्तविकता जानता है." इस विषय पर तीन भारी भरकम खंडों में लिखी उन की पुस्तक की आलोचना भी हुई, मगर इस से हतोत्साहित हुए बिना वह जीवन भर प्रिज़्मों, दर्पणों और मोमबत्तियों से एकद्-षियक प्रयोग करते रहे. रंग के प्रति आंख की प्रतिक्रिया संबंधी उन की बहुत सी खोज आज भी प्रामाणिक मानी जाती हैं.

रोम की सांवरी. सामान्य पाठक तो गेटे की वैज्ञानिक रचनाओं का दीवाना इसी लिए है कि वे गेटे की हैं. वैज्ञानिक गेटे की बग़ल में कवि गेटे हमेशा खड़ा मिलता है. सूक्ष्मदर्शी यंत्र से एक तुच्छ से कीड़े की जांच करते समय गेटे का कवित्व जाग उठता था. उन की मान्यता थी कि विचारकों को हर ज्ञेय वस्तु का संधान करना चाहिए, "और अज्ञेय की उपासना सौम्य भाव से करनी चाहिए."

वाइमर में ११ वर्ष रहने के बाद उन के कलाकार मन ने विद्रोह कर दिया. कुरसी से बांधे रखने वाली ड्यूटियों और छोटे से दरबार में व्याप्त संकीर्णताओं से वे घबरा गए. चोरी छिपे एक बग्घी के ज़रिए वह अपने सपनों के देश इटली की ओर चल पड़े, जहां वे लेखन, चित्रांकन और रोम की एक सांवली सुंदरी के प्रेम में डूब गए.

दो वर्ष बाद वह वाइमर तो लौट आए, पर पुरानी ज़िंदगी उन्हों ने नहीं अपनाई. उन का मंत्री पद एवं वेतन क़ायम रहा, किंतु राजकाज से उन्हें मुक्ति दे दी गई. अब वह सृजन के लिए पूर्णतः स्वतंत्र थे.

जब वह पहली बार वाइमर आए थे तो अपने नाटक 'फ़ाउस्ट' की रूपरेखा साथ लाए थे. शेक्सपीयर का समकालीन अंगरेज नाटककार क्रिस्टोफ़र मार्लो इस विषय पर एक दुखांत नाटक लिख चुका था और गेटे इस की



विषयवस्तु के वशीभूत थे. ६० वर्ष तक वह इस नाटक पर परिश्रम करते रहे. इस का पहला भाग छपते छपते वह ५९ वर्ष के हो गए थे, और दूसरे भाग के लिए जीवन के अंतिम दिनों तक काम करते रहे. इस रचना को वह अपने जीवन की प्रधान गतिविधि बताया करते थे. और उन का कथन सही भी था. गेटे की प्रतिष्ठा प्रधानतः 'फ़ाउस्ट' के ही कारण है.

यह नाटक डा. फ़ाउस्ट नामक एक प्रौढ़ आयु के विद्वान के बारे में है जो जीवन के सर्वांगीण भाग के बदले अपनी आत्मा शैतान को सौंप देता है. जरमनी की महानतम साहित्यिक कृति माने जाने वाले इस नाटक में गेटे की अतिशय गरिमापूर्ण कविता के नमूने मिलते हैं. जीवन की तरह इस में कहीं कहीं शिथिलता भी है, और अर्थ भी हमेशा स्पष्ट नहीं होता. खुद गेटे ने एक बार शिकायत की थी : "लोग मुझ से पूछते हैं 'फ़ाउस्ट' आखिर है क्या? जैसे मुझे मालूम हो!"

वाइमर इस बीच जरमनी की साहित्यिक राजधानी बन चुका था. गेटे के आग्रह पर ड्यूक ने सभी प्रमुख विद्वानों, कलाकारों तथा लेखकों को अपने दरबार में आमंत्रित किया. इन में फ़्रीड्रिक वान शिलर जैसे दिग्गज भी थे. ड्यूक के रंगमंच का निर्देशन गेटे ने खुद संभाल लिया और अपने नाटकों के साथ साथ शिलर और मोज़ार्ट की विख्यात रचनाओं का मंचन किया. अभिनेताओं का चुनाव, रिहर्सल व कला निर्देशन तो वह सामान्यतः करते ही थे, अपने एक नाटक में मुख्य भूमिका भी स्वयं उन्हों ने निभाई. उन की रचनात्मकता इन दिनों शिखर पर थी. लेकिन गड़बड़ी हो जाने पर वह उबल पड़ते. एक बार किसी कमज़ोर नाटक पर दर्शकों ने छींटाकशी की तो वह अपने बाक्स में से चिंघाड़े, "खी खी नहीं!"

हंसमुख सुंदरी. ५७ वर्ष की उम्र में उन्हों ने क्रिस्टियान वुल्पिउस नाम की हंसमुख महिला से शादी कर ली. उस के साथ वह १८ वर्ष से रहते आए थे; और इस बीच गेटे की वफ़ादारी में भले ही कमी आई, सुख में कमी नहीं आई. उन्हें एक बेटा भी हुआ—आगस्ट—लेकिन मां बेटा गेटे के जीवन काल में ही चल बसे.

ड्यूक ने उन्हें एक विशाल मकान दे रखा था, उसी में अपने चित्रों, नक्काशियों, वानस्पतिक और जैविक संग्रहों, चट्टानों के नमूनों, दुर्लभ सिक्कों तथा ग्रंथों के बीच उन्हों ने शांतिपूर्वक वृद्धावस्था काटी. बीटोवन, नेपोलियन, हाइने जैसी हस्तियां उन से मिलने यहीं आतीं.

अपनी ख्याति के उषा काल में गेटे दुबले पतले युवक थे. अधेड़ उम्र में वह स्थूल हो गए थे, लेकिन बुढ़ापे में वह फिर कृशकाय

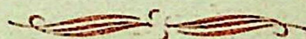
दीखने लगे. नाटे होने के बावजूद, प्रभावशाली रूप रंग के कारण वह लंबे दीखते थे. उन की मुखाकृति बड़ी सुंदर थी: विराट मस्तक, पतली नाक, चौड़ा सुगढ़ मुखड़ा और भूरी चमकीली आंखें, जिन की 'गिद्ध दृष्टि' हर मिलने वाले को आकर्षित करती. उन के व्यक्तित्व से ओजस्विता, वार्तालाप से विनोदप्रियता और आचरण से गरिमा छलकती थी, जो उन की महिमा मंडित प्रौढ़ता के एकदम अनुरूप थी. जीवन की अवसान वेला तक वह सफ़ेद फ़लालेन का ड्रेसिंग गाउन पहने, हंस के परों वाली क़लम चलाते ही रहे.

आश्चर्य होता है कि एक आदमी की इतनी गतिविधियां कैसे हो सकती हैं? ख़ुद गेटे ने एक बार कहा था कि कुछ लोगों के दिमाग़ी घोड़े हवा में दौड़ते हैं. साधारण आदमी दिन भर में जितना चलता है, उतनी दूरी वे दो क़दमों में तय कर लेते हैं. और इस में संदेह नहीं कि काम में रम जाने की उन की शक्ति अद्भुत थी. लेकिन अपनी शक्ति के उपयोग के प्रति वह बड़े विवेकी थे. बड़े शहरों के गुलगपाड़े से वह हमेशा बचते रहे. अपनी जड़ें उन्हों ने वाइमर की आत्मीय भूमि में जमाईं, जहां का वातावरण मानवीय था. यहां की सौम्य ऋतुओं में उन की प्रतिभा ख़ूब फूली फली.

अपने अंतिम जन्म दिवस से कुछ ही पहले अपने दो छोटे पोतों को वह पहाड़ी काटेज घुमाने फिराने ले गए, जहां ५१ वर्ष पहले उन्हों ने एक रात बिताई थी. उसी रात उन्हों ने दीवार पर एक छोटी सी कविता लिखी थी, जो उन्हों ने दोनों बच्चों को पढ़वाई:

पर्वत हैं निस्तब्ध
फुनगियां निःश्वास
वन में पंछी हैं सब मौन
शीघ्र ही पाओगे तुम भी चैन.

अपने निराडंबर शयनकक्ष की गद्देदार कुरसी पर बैठे बैठे वह मानो अनिच्छापूर्वक मरे. उन की विधवा पुत्रवधू ओटीली उस समय उन के पास थी. दिन था २२ मार्च का. उन्हों ने तब कहा था, वसंत अभी अभी शुरू हुआ है. अंतिम शब्द थे: "रोशनी और चाहिए."



प्रकाश ध्वस्त

कुछ दिनों से एक अनोखा लैंप बाजार में आ गया है. उस ने ज़रिए नक़ली नोटों की तत्काल पहचान हो सकती है. इस लैंप का नाम ही पड़ गया है 'द रिवीलर' यानी 'परदाफ़ाश करने वाला'. यह 'वुड्स लैंप' आधारित है और इस प्रकाश की विशेषता यह है यह स्वयं तो नज़र नहीं आती, किंतु तैलीय पदार्थों में एक प्रकार की दमक पैदा कर देती है. नक़ली नोट बनाने वाले जिस स्याही के 'वाटरमार्क' लगाते हैं, उन में तैलीय अंश काफ़ी होता है. यह तैलीय भाग 'काष्ठ किरण' के संपर्क में आते ही चमचमाने लगता है और पोल खुल जाती है. बड़े बड़े परदे फ़ाश करने वाला यह लैंप आकार में काफ़ी छोटा है और कोई २६,२५० रुपए में ख़रीदा जा सकता है. इस की कार्यपद्धति अत्यंत सरल है. बटन दबा कर किरणों को जाग्रत करें, फिर नोट को किरणों के क्षेत्र से गुज़रने दें. नोट यदि नक़ली है, तो वारटमार्क तत्काल चमकने लगेगा.

—'ल नोते', मिलान



संसार के मस्तिष्क पर उन्माद सी छाई रहने वाली धातु

सोना

कुछ अनूठे तथ्य, जो शायद आप न जानते हों

यह सुंदर है, निर्विकार है, और दुर्लभ है, वातावरण इसे दूषित नहीं कर सकता. इसे पाने के लिए लोग जान दे देते हैं, जान ले लेते हैं. कुछ के लिए यह परम पावन है तो कुछ के लिए सारे संकटों का मूल. और कुछ दिन पहले तो यह दुनिया पर महामारी की तरह छा गया था—जिसे देखो, उसी पर सोने का बुख़ार!

चौबीसों घंटे सोने का सौदा बड़ी गरमजोशी से चलता रहता है. पूरब में हांगकांग से चल कर यह सौदा सूरज के साथ साथ पश्चिम की ओर ज़्युरिख, लंदन, न्यू यार्क, होनोलुलू की परिक्रमा करता हुआ, दूसरे दिन का उन्माद जगाने के लिए हांगकांग लौट पड़ता है. एक ओर सट्टाबाज़ार में बोली लगाने वालों की चीख़ पुकार और तांडव होता है, दूसरी ओर कोलाहलरहित कक्षों में दिन में दो बार टेलीफ़ोन को कान से लगाए कुछ लोग संसार की

विभिन्न मंडियों में लगी दरों के आंकड़े बटोरते रहते हैं—ताकि स्थानीय दरें निर्धारित की जा सकें.

२१ जनवरी १९८० को प्रति औंस (सवा-सत्ताईस ग्राम) ७००० रुपए की गगनचुंबी दर (दूसरे ही दिन यह दर ५२४० रुपए पर उतर गइ थीं : एक ही दिन में दर की उठान और गिरावट का यह कीर्तिमान है.) १९८१ के ग्रीष्म में ३३०० रुपए के आसपास मंडराने लगी. सुवर्ण ज्वर की चरम स्थिति में लोग उत्तराधिकार में प्राप्त सोने को वेचने के लिए सात सात घंटे लाइन में खड़े रहते थे. अब यह स्थित तो नहीं रही परंतु आज भी कंचन की अस्थिरता एवं अदम्य आकर्षण ज्यों का त्यों है.

अधिकतम दर पर मात्र एक औंस सोने से लगभग ३५ क्विंटल गेंहू या चावल ख़रीदा जा सकता है. एक किलो सोने के वदले आधुनिकतम सुविधाओं से युक्त वंगला मिल सकता है. और एक सूटकेस भर सोने की छड़ों के बदले आप कच्चे खनिज तेल का पूरा जहाज़ और उस के साथ साथ छोटा सा स्वचालित स्वीमिंग पूल भी प्राप्त कर सकते हैं.

जन्म दिवस और बड़े दिन के उपलक्ष्य में विशेष रूप से बच्चों को उपहार देने के लिए स्विट्ज़रलैंड के नागरिक छोटी छोटी स्वर्ण शलाकाएं ख़रीदते हैं. फ्रांसीसी लोग स्वर्ण संचय के लिए प्रख्यात हैं. भारत में कई अरब रुपयों का सोना नागरिकों की निजी संपत्ति है.. रूढ़िगत मान्यता के अनुसार स्वर्ण आभूषण भारतीय नारी की सुहागश्री एवं भाग्यश्री के प्रतीक माने जाते हैं. वैसे तो विवाहों के अवसर पर ही वह सारे आभूषण धारण करती है, लेकिन आभूषण इने गिने ही हों तो अकसर पहने रहती है.

सोने की क़ीमत बढ़ने का मतलब है औषधि, दंत चिकित्सा तथा अन्य उद्योगों पर भी भारी बोझ बढ़ जाना. इन तीनों में से औषधि के लिए सोने का न्यूनतम मात्रा में प्रयोग होता है. किसी समय सोना लाख दुखों की एक दवा तथा दीर्घायु के लिए रामबाण के रूप में मशहूर था, पर आज औषधि के रूप में इस का उपयोग मुख्यतः एक ही व्याधि में होता है—संधिवात के कुछ विशेष रूपों के शिकार मरीज़ों को स्वर्ण तत्व के इंजेक्शन से लाभ होता है.

दंत चिकित्सा के लिए प्रति वर्ष पचीस टन सोना प्रयुक्त होता है. लगभग १६ प्रति शत सोना उच्च तकनीकी उद्योगों में खप जाता है. सूक्ष्म छीलन, तार व फ़िल्म के रूप में सोने का उपयोग संगणक (कंपूटर), गणक (कैलकुलेटर), रेडियो एवं टेलीविज़न यंत्र, सौर ऊर्जा उपकरण, टेलीफ़ोन प्रणाली, राकेट और एस एस टी कंकार्ड वायुयानों के रोल्स रायस इंजनों में किया जाता है.

मात्र एक औंस सोने को पीट कर १६ वर्ग मीटर की पतरी बनाई जा सकती है, और एक टन सोने से तो इतनी लंबी पतली तार खींची जा सकती है कि वह चंद्रमा की परिक्रमा कर के फिर धरती तक वापस आ सकती है. अंतरिक्ष यात्रियों के परिधानों तथा बचाव रस्सी पर चढ़ाया गया मात्र .१५ माइक्रोन का अति सूक्ष्म स्वर्ण आवरण भीषण उष्णता और विकिरण से रक्षा करता है. दमकल कर्मचारियों के मुखावरण में प्रयुक्त सोना आग की लपटों में भी उन की दृष्टि में बाधक बने बिना भयानक ताप से उन की रक्षा करता है. अत्यल्प विद्युत प्रवाह की सहायता से सोना वायुयान और रेलगाड़ी के वायुरोधक शीशों को हिमपात, ओले तथा कुहरे में अपारदर्शी होने से बचाता है. उच्च दबाव पर भरे गए संक्षारक

गैसों के पात्रों के भीतरी स्तर में भी सोना काम में लाया जाता है. यह अत्यंत उच्च तथा अत्यंत निम्न तापक्रमों को भी नाप सकता है. यंत्रों के चलायमान सुकुमार भागों को स्वर्ण चिकनाई प्रदान करता है, तथा फ़ोटोग्राफ़ी वाली फ़िल्मों में रजत घोल के प्रभाव को बढाता है.

गगनचुंबी इमारतों की खिड़कियों में लगा सोना सूर्यप्रकाश की प्रखरता कम करता है, बाहरी उष्णता को रोकता है और अंदर की उष्णता को परावर्तित करता है. इस प्रकार स्वर्ण से वातानुकूलन तथा कक्ष तापन दोनों ही ख़र्चों में बचत होती है. प्राचीन काल के वास्तु शिल्पी भवनों के शिखर पर लगे कलशों पर सुंदरता के लिए सोना मढ़ते थे. आधुनिक वास्तुविद संपूर्ण भवन की बाहरी दीवार पर सोने की फ़िल्मों वाली टाइलें जडते हैं. इस से भवन की सुंदरता के साथ टिकाऊपन भी बढ़ जाता है.

स्वर्ण अमर अविनाशी है. अजर है—इस में बार बार प्रयुक्त किए जाने की अनंत क्षमता है. यह नित्य है तथा सर्वत्र संचनीय है. पिछले ६,००० वर्षों में मनुष्य द्वारा भूगर्भ से जितना भी सोना खोदा खरोंचा गया, वह अब भी है, ऐसा माना जाता है. राजा सोलोमन ने लगभग आधी दुनिया से मंगा मंगा कर स्वर्ण का विपुल भंडार बनाया था. उस सोने का कुछ अंश आज किसी नववधु की विवाह मेखला में हो सकता है. संसार के विभिन्न संग्रहालयों में आज भी पुरातन स्वर्ण दमक रहा है—मिस्र में काहिरा के संग्रहालय में तुत अंखामुन की भव्य समाधि से निकला सोना मौजूद है. एथेंस में माइसीनिया के अगमेनान का मुखावरण भी है. लेनिनग्राद तथा कीव में सीथियन स्वर्ण है. डबलिन में सेलेटिक स्वर्ण है. लीमा, बोगोटा और मेक्सिको सिटी में प्राचीन इंका एवं एज़टेक सभ्यताओं का सुवर्ण सुरक्षित है. और प्राचीन शव समाधियों के टीलों के उत्खनन से आज भी पुरातन स्वर्ण निकलता ही आ रहा है.

गत साठ शताब्दियों में मनुष्य द्वारा निकाला गया सारा सोना एकत्रित किया जाए तो १५.५ मीटर लंबाई, चौड़ाई तथा ऊंचाई का घनाकार पिंड बन जाएगा, जिस का वज़न होगा ८७,००० मीटरिक टन. आज कल प्रति वर्ष १,४०० टन से थोड़े कम सोने का उत्पादन हो रहा है. संसार के ज्ञात खदानों से सारा सोना निकाल लिया जाए तो भी पूर्वोक्त घन पिंड का आकार डेढ़ गुना ही हो पाएगा. किसी समय संसार का प्रमुख स्वर्ण उत्पादक देश अमरीका अब चौथे स्थान पर है, वह समूचे उत्पादन का मात्र तीन प्रति शत, लगभग ४० टन सोना निकालता है. तीसरे स्थान पर कनाडा है, जो स्वर्ण उत्पादन में अग्रणी दोनों देशों रूस एवं दक्षिण अफ़्रीका से कोसों पीछे है. वह कुल चार प्रति शत स्वर्ण निकालता है. सोवियत रूस अपने एशियाई खदानों से २३ प्रति शत और दक्षिण अफ़्रीका ५२ प्रति शत सोना निकालता है.

एक औंस शुद्ध सोना प्राप्त करने के लिए दक्षिण अफ़्रीका के खदानों से पांच टन अयस्क निकालना पड़ता है. इस अति व्ययी अनुपात को ग्लासगो के दो चिकित्सकों तथा एक रसायन शास्त्री ने सायनाइड निस्सारण विधि का आविष्कार कर के मितव्ययी बना दिया. मुख्यतः आदिवासी क़बीलों के ४५,००० खनिक कभी कभी तीन किलोमीटर तक गहरी संकरी और सुरंगनुमा खदानों में काम करते हैं. सतत वायु संचरण के बावजूद इन खदानों में ३२ अंश सेल्शियस तापक्रम तथा अत्यधिक आर्द्रता बनी रहती है. विपुल सुरक्षा उपायों के बावजूद प्रति वर्ष कोई ४०० खनिक मज़दूर कालकवलित हो जाते हैं.

शासकीय तथा अंतःशासकीय प्रतिष्ठानों के स्वामित्व में लगभग ३८,००० टन सोना राष्ट्रीय

कोषों में संचित है. यह मात्रा विश्व के समूचे स्वर्ण भंडार का ४३ प्रति शत है. २४ प्रति शत स्वर्ण निजी व्यापार पूंजी के रूप में लगा है. संसार के सर्वाधिक भारी स्वर्ण वस्तुओं में १४२.२ किलो का हौज़ एक जापानी होटल के पास है. नृसिंह के आकार के इस हौज़ में स्नान करने का किराया १,००० येन प्रति मिनट है. स्वर्ण पात्र में नहाने से आयु बढ़ती है, इस विश्वास के कारण नहाने वालों का उल्लास बढ़ता है.

आभूषणों के व्यापारी समझ जाते हैं कि हर कांतिमान पदार्थ २४ कैरेट का शुद्ध स्वर्ण नहीं होता. २४ कैरेट शुद्धता का सोना अत्यधिक मुलायम होने के कारण टिकाऊ नहीं होता. अधिकतर गहने १४ से १८ कैरेट तक के होते हैं.

पूंजी नियोजन के लिए लोग स्वर्ण शलाकाएं, स्वर्ण प्रमाणपत्र, स्वर्ण हस्तांतरण पत्र तथा स्वर्ण मुद्राएं ख़रीदते हैं. परंतु स्वर्ण आभूषणों को सारा संसार संकट काल का विश्वस्त साथी मानता है क्योंकि उन का आसानी से परिवहन किया जा सकता है, सुगमता से उन्हें बेचा जा सकता है, राजनीतिक हेराफेरी के दुष्प्रभाव से भी वे मुक्त होते हैं और वही तो एकमात्र स्वर्ण नियोजन है जो सौंदर्यबोध का लाभांश भी प्रदान करता है.

इस प्रकार ६,००० वर्षों के पश्चात आज भी सोना धातुओं के राजपद पर आसीन है



कार्टून धुन

पार्टी से निकलते समय महिला अपने पति से: शादी के बाद पिछले पच्चीस साल से एक ही मकान में रहते आने की डींग हांकने से तो बेहतर था कि तुम सीधे सीधे मेरी उम्र ही बता देते.

—'वाल स्ट्रीट जरनल'

वज़न कम करने वाली महिलाओं की बैठक में एक महिला दूसरी से: मैं ने तो उसी दिन वज़न घटाने का फ़ैसला कर लिया जब अपने बेटे को पड़ोसन के लड़के से यह कहते सुना—जा जा, मेरी मम्मी तेरी मम्मी से चौगुनी हैं.

—'पंच', इंगलैंड

बौखलाया हुआ ड्राइवर पेट्रोल पंप के छोकरे से: दस गैलन, दस लीटर या दस डालर में से जो जल्दी आए डाल दो.

—'फ़ील्ड न्यूज़पेपर सिंडीकेट'

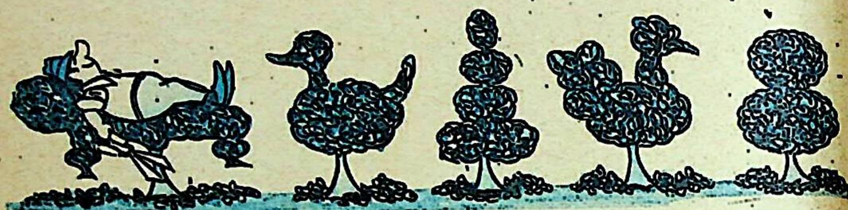
घरेलू कंपूटर की ओर इशारा करते पिता अपने तीनों बच्चों से: ठीक है, अब यह बताओ कि तुम में से किस ने डैडी का 'पूंजी निवेश' कार्यक्रम मिटा कर उस की जगह 'आसमानी घुसपैठ' भरा?

—'वाल स्ट्रीट जरनल'

महिला प्रशासक अपने सहयोगी से: मैं ने कंपनी में बड़ी तरक़्क़ी की—देखते देखते तितली से तोप बन गई.

—मार्था कैंपबेल

जीवन की यह रीत



मैं और मेरा मित्र एक भीड़भाड़ वाली सड़क पार कर रहे थे. तभी एक ट्रक इस तेज़ी से आया कि मैं मरते मरते बचा. हां, उसी वक्त मेरा मित्र चिल्लाया, "संभालो, देख कर चलो."

अब ट्रक तो निकल गया पर मैं ने अपना हस्तरेखा ज्ञान बघारते हुए अपनी हथेली फैला दी कि देखो मेरी जीवन रेखा, "पैंसठ से पहले मौत मुझे नहीं आने की."

मेरा यह कहना था कि मेरा वह मित्र बरस पड़ा, "ठीक है, मैं ने और तुम ने तो देख ली, लेकिन ट्रक वाले को कौन दिखाएगा?"

—टी रमेश, हैदराबाद

"कहो खंजन का सौंदर्य निहार रही हो?" मेरे विहग प्रेमी मित्र ने अपनी पत्नी से पूछा. वह दूरबीन से आंख लगाए रसोई की खिड़की से बाहर तक रही थीं.

"नहीं," उत्तर मिला, "देख रही हूं कि करमकल्ले खाने लायक़ हो गए हैं तो आज वही बना लूं."

—पी ए

हमारे एक मित्र जब देखो अपनी गाड़ी धोते चमकाते रहते हैं, गाड़ी में उखाड़ पछाड़ करते रहते हैं.

एक बार गाड़ी पूरी तरह बैठ गई तो वह परेशान थे कि घर में बैठे करे तो करें, क्या न करें उन की रात दिन की नींद हराम होते देख एक दिन उन की बीवी ने सुझाया, "गराज जा कर पता क्यों नहीं कर लेते. शाम को एक दो घंटे तो अस्पताल वाले भी मिलने जुलने देते हैं."

—एम बी

मेरी चाची एक बार बीमार क्या पड़ीं, उन्हें एक कान से कुछ कम सुनाई देने लगा. अब कोई उस कान के पास मुंह ले जा कर ज़ोर से बोलता या फुसफुसाता तो वह बहुत क्रुद्ध जाया करतीं. एक बार मैं ने भी उन्हें छेड़ा कि कान पर ही कोई तख़्ती लटका लो, तो बात बन जाए. पर वह कुछ नहीं बोलीं, घर लौट गईं.

कुछ दिन बाद वह फिर हमारे घर आईं तो शरारत भरी मुसकराहट के साथ कान मेरी तरफ़ कर दिए. वहां एक खूबसूरत झुमका लटक रहा था और उसी पर हीरे की कनियों से लिखा था: 'कान ख़राब है.'

—श्रीमती एच डब्लू

मम्मी के स्वर्गवास के बाद पापा ने घर का काफ़ी साजोसामान बेच डालने की सोची कि अकेली जान, घर का पूरा तामझाम कैसे संभलेगा. शयन कक्ष का सारा सामान बेचने से संबंधित इश्तहार भी उन्हों ने अख़बार में दिया. पहले ग्राहक ने घर में घुसते ही सारा सामान ख़रीद लिया और २५० ड्यूश मार्क थमा कर चला गया. अगले दिन एक और ग्राहक का फ़ोन आया तो मैं ने पापा को यह कहते सुना, "नहीं साहब, सामान तो

उठ गया. जी हां, जी हां, चार सौ मार्क में.''

मैं चौंका, पापा से पूछा तो उन का उत्तर था, ''मैं ने तो इस ख़याल से दाम अधिक बताए कि उसे क़ीमत अधिक जान कर माल हाथ से जाने का अफ़सोस न होगा.'' —आई आलब्रेक्ट, जरमनी

कुछ वर्ष पूर्व मैं तीर्थ यात्रियों की एक टोली के साथ एक प्राचीन गिरजाघर के दर्शन को गई. हम गिरजाघर में थे, तो दोष स्वीकृति कक्ष में लगी छोटी छोटी मेज़ों की ओर ध्यान गया, उन पर अलग अलग भाषाओं में कुछ खुदा था.

साथ चलते पादरी महोदय ने बताया, ''हम इन तीन भाषाओं में पाप स्वीकृति सुनते हैं.''

''अच्छा!'' मैं ने कहा, ''यह तो मज़े की बात है.''

''हां, सो तो है. पर रोज़ वही पाप सुनने को मिलते हैं,'' उत्तर यों मिला, मानो पापों में विविधता न होने पर पादरी साहब को कोई ऐतराज़ था.

—बी एस, वियना

मैं ने अपने छः साल के बेटे को शतरंज का खेल सिखाना शुरू किया तो उसे विभिन्न मोहरों के हिंदी, अंगरेजी, उर्दू नाम भी बताने शुरू किए कि अंगरेजी में ऊंट को बिशप और उर्दू में फ़ीला कहते हैं..

तभी हम ने मकान बदला तो नए पड़ोसियों की चर्चा चल पड़ी जिन में एक बिशप याने पादरी साहब भी थे.

अब जो हमारे बेटे ने बिशप का शब्द सुना, तो चट चहका, ''देखना मैं उन्हें देखते ही पहचान लूंगा, वो आड़े तिरछे चल रहे होंगे.''

—ए चैटरली

मेरी दीदी और हमारे भावी जीजाजी अपने विवाह और उस के बाद के जीवन की चर्चा कर रहे थे.

बातों में जीजाजी बड़ी से बोले, ''मेरे साथ महिला स्वातंत्र्य वातंत्र्य नहीं चलेगा, यह जान लेना. मैं घर का मालिक रहूंगा और मैं जो कहूंगा, घर में वही होगा.'' इस के साथ ही मैं ने नज़रें उठा कर देखा, वह दीदी की चिरौरी कर रहे थे, ''देखो मान जाओ न.'' —सी सी

हमारे यहां हर साल मीना बाज़ार लगता है. उस में एक प्रतियोगिता होती है—झूठ बोलने की. कुछ साल पहले की बात है, एक से एक झूठ वाचस्पति अपना कमाल दिखा रहे थे और असत्य पर हास्य का अंबार लगा जा रहा था. अंततः विजयश्री हाथ लगी मेरे ही मित्र को जिस ने ये यह सत्य सुनायाः

मेरे यहां दो दो टार्च और दो दो बेटे हैं और चारों काम करते हैं. —पी एम

मेरे एक मित्र को उस के पिता का तार मिला : 'बेड में सफलता पर हार्दिक बधाई.' वह बुरी तरह बौखला गया और माता पिता से उस तार का मतलब पूछने सीधा घर रवाना हो गया.

अंदाज़ा लगाइए कि उस पर क्या बीती जब उसे बताया गया कि सही संदेश इस प्रकार था : 'बी एड में सफलता पर हार्दिक बधाई.' उस की थी और 'बी इडी' का बेड हो गया था.

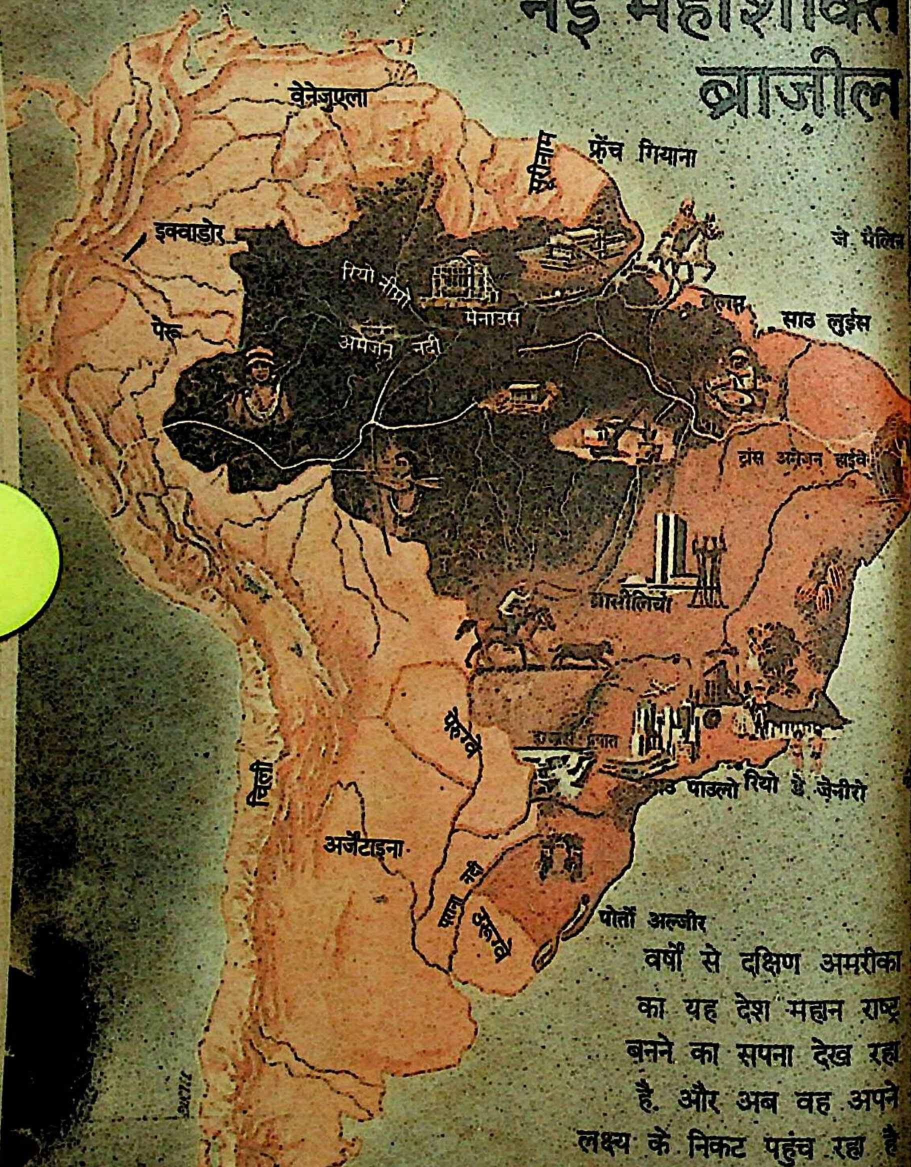
—सुरेंद्र गुप्त, दुर्गापुर

घटना लंदन की है. उस वृद्धा को बस में चढ़ने में बड़ी कठिनाई हो रही थी. बस का कंडक्टर सिख था, जिस ने सिर पर झकझक सफ़ेद पगड़ी बांध रखी थी. उस ने उस महिला को सहारा दे कर चढ़ाया, और एक ख़ाली सीट पर बैठा भी दिया. वृद्धा सारे रास्ते पगड़ी को ताकती रही.

कुछ स्टाप बाद वह उतरने को हुई, तो कंडक्टर ने एक बार फिर उसे सहारा दिया. आख़िर, बस चलने लगी तो वृद्धा ने कंडक्टर को धन्यवाद देते हुए सहानुभूति जताई, ''आशा है तुम्हारे सिर की चोट भी जल्दी ही भर जाएगी.''

—माइकेल डैनियल, कलकत्ता

नई महाशक्ति ब्राज़ील



वर्षों से दक्षिण अमरीका का यह देश महान राष्ट्र बनने का सपना देख रहा है. और अब वह अपने लक्ष्य के निकट पहुंच रहा है

नव वर्ष की पूर्व संध्या पर हज़ारों वूडू (जादू टोना) उपासक समुद्र की देवी इमांज़ा को मोमबत्तियां और भेंट चढ़ाने रिओ डे ज़निरो के समुद्र तट की ओर प्रस्थान करते हैं. हर साल यह कुफ़्र कहां तोला जाता है? विश्व के सब से बड़े काथलिक देश ब्राज़ील में. ब्राज़ील ऐसा देश है.

साउ पाउलो के कारख़ानों से रोज़ हज़ारों की संख्या में कार और ट्रक बन कर निकलते हैं. यह भी ब्राज़ील ही है.

वह भी ब्राज़ील है जहां दक्षिणी प्रदेश के चरागाहों में चरवाहे चौड़ी चौड़ी पतलूनें पहने घोड़ों पर सवार हांक लगाते नज़र आते हैं. वह भी ब्राज़ील है जहां उत्तर पूर्व के रूखे सूखे खेतों में अनपढ़ और भूखे किसान कुछ उगाते दिखाई देते हैं. वह भी ब्राज़ील है जहां रिओ के बाहर गंदी बस्तियां पनप रही हैं और वह भी ब्राज़ील है जहां के भीतरी प्रदेश में नई नवेली राजधानी ब्राज़ीलिया लाल मिट्टी और झाड़ झंखाड़ों में से उदित हो रही है. ब्राज़ील है अमेज़न के जंगल में मंगल. ब्राज़ील वह है जहां दो दो लाख लोग एक साथ फ़ुटबाल का मैच देखते हैं और ख़ुशी से चिल्लाते हैं, तालियां बजाते हैं.

ब्राज़ील यह भी है और वह भी. यह एक ऐसा विशाल देश है जो अनगिनत विरोधाभासों से परिपूर्ण है. एक ऐसा देश है जहां अनगिनत समस्याएं हैं, लेकिन अनेक विकास कार्यों का लाभ भी मिल रहा है यहां के जन साधारण को. ब्राज़ील दक्षिण अमरीका का सब से अधिक घनी आबादी वाला देश है. यहां भांति भांति के लोगों की आबादी है १२ करोड़ और उस में हर साल ३० लाख की वृद्धि होती जाती है. अपने ८५ लाख वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल के कारण यह दुनिया के सब से बड़े देशों में पांचवें नंबर पर आता है. समूचे यूरोप में जितनी ज़मीन पर खेती नहीं होती, उस से ज़्यादा ज़मीन पर खेती कर के ब्राज़ील कृषि का महादेश बन चुका है. ब्राजील एक लंबे अरसे से काफ़ी के अग्रणी उत्पादक के रूप में भी मशहूर था ही, अब अर्जेंटाइना से लगभग दोगुना मवेशी पैदा करता है, क्यूबा से ज़्यादा शक्कर, और पिछले साल तो उस ने जापान को छोड़ विश्व के किसी और देश से ज़्यादा जहाज़ भी बना डाले. इस की अर्थ व्यवस्था विश्व में दसवें नंबर पर है (१९८० में कुल राष्ट्रीय उत्पादन लगभग २४ खरब रुपए) और पश्चिमी गोलार्ध में इस के पास दूसरे नंबर पर सब से बड़ी सैनिक व्यवस्था है. (ब्राज़ील के ही बने हथियारों से लैस हैं २ लाख ७२ हज़ार सैनिक)

महानता की खोज. पिछले चार दशकों से ब्राज़ील का सर्वोच्च राष्ट्रीय लक्ष्य है महानता की खोज. प्रभावशाली स्तंभ लेखक कार्लूस कास्टेलू ब्रांको का कहना है, "इस खोज के रास्ते में जो भी बाधा आई, उसे या तो हटा दिया गया या कुचल दिया गया."

१९६४ की क्रांति के बाद ब्राज़ील में सैनिक शासन की स्थापना हुई. सरकार ने बेहद सक्रिय विरोध के दौरान व्यवस्था संभालने के लिए तेज़ी से क़दम उठाए. वामपंथी आतंककारियों ने अमरीकी राजदूत का अपहरण किया, बैंक लूटे और फ़ौजी प्रतिष्ठानों पर हमले किए. जवाब में छात्रों की राजनीतिक गतिविधियों को दबाया गया, जनता को राजनीतिक अधिकारों से वंचित किया गया और कई लोग देश से निकाल दिए गए. १९७३ तक वामपंथी आतंक समाप्त कर दिया गया.

लेकिन स्थिरता और महानता की खोज में भारी क़ीमत भी चुकानी पड़ी. हालांकि विकास

से समाज के हर वर्ग को लाभ हुआ है, लेकिन ग़रीब और अमीर के बीच की खाई बढ़ी है. आज आबादी का पांचवां हिस्सा दो तिहाई राष्ट्रीय आय का आनंद भोग रहा है. दो करोड़ से ज़्यादा लोग पूरी तरह दरिद्रता का जीवन बिता रहे हैं. दक्षिण अमरीका के अन्य उन्नत देशों की तुलना में ब्राज़ील में निरक्षरता तथा बाल मृत्यु की दर भी ऊंची है.

जिस देश की ९० प्रति शत से अधिक जनसंख्या काथलिक हो, वहां सामाजिक विषमताएं चर्च को अधिक उग्र बनाती जा रही हैं. साउ पाउलो के आर्कबिशप पाउलू ईवेरीस्टो कार्डिनल आर्न्स कहते हैं, "पिछले सालों में स्थिति उग्र इस लिए हुई कि सामाजिक राजनीतिक ढांचा ऐसा है जिस के अंतर्गत आर्थिक विकास का लक्ष्य संपत्ति को कुछ हाथों में केंद्रित करना और शेष जनता को कंगाल रखना है." इस प्रकार देश के हर महत्वपूर्ण समुदाय में पादरीगण ऐसे 'बुनियादी समुदायों' का संगठन कर रहे हैं जिन का लक्ष्य देश में सामाजिक सक्रियता लाना है.

"बहुत ज़्यादा, बहुत तेज़." आर्थिक रूप से समृद्ध होने के लिए ब्राज़ील ने पूंजीवादी मार्ग चुना—लेकिन सरकार ने उस पर पर्याप्त नियंत्रण बनाए रखा. १९७८ में ब्राज़ील की ५०० बड़ी बड़ी फ़र्मों का सर्वेक्षण कराया गया था. उस के अनुसार सारी बिक्री के लगभग एक तिहाई हिस्से पर सरकारी नियंत्रण पाया गया.

ब्राज़ील के औद्योगिक विकास के लिए सरकार शुरू से ही विदेशी पूंजी की ओर उन्मुख हो गई थी. टैक्स जैसे प्रलोभनों और ब्राज़ील की अपेक्षाकृत राजनीतिक व आर्थिक स्थिरता के आकर्षण में अनेक बहुराष्ट्रीय निगम उत्पादन की टेकनालाजी, प्रबंध व विपणन का कौशल लाए. १९७८ तक इन निगमों ने ब्राज़ील के ९९ प्रति शत मोटर उद्योग, ८४ प्रति शत औषधि उद्योग, ७६ प्रति शत शराब व तंबाकू और ६८ प्रति शत कपड़ा उद्योग पर कब्ज़ा कर लिया था.

यद्यपि बहुराष्ट्रीय निगमों ने औद्योगिक विस्तार में मदद की, परंतु विकास का मार्ग समस्याओं से भरा रहा. १९६४ में जब फ़ौजी जनरलों ने सत्ता संभाली, तो मुद्रा स्फीति आकाश छू रही थी अर्थात ९० प्रति शत थी. इसे नीचे लाने में महत्वपूर्ण सफलता तो मिली, लेकिन १९७३ में जब तेल उत्पादक देशों के संगठन (ओपेक) ने तेल की क़ीमतें बढ़ाईं तो मुद्रा स्फीति की दर फिर चढ़ गई. इस समय यह आश्चर्यजनक रूप से ११४ प्रति शत है. ब्राज़ील पर ५५ अरब डालर (लगभग ५ खरब रुपए) का विदेशी ऋण है जो विश्व के किसी भी विकासशील देश से अधिक है.

ऐसा क्यों? योजना सचिवालय के एक वरिष्ठ अधिकारी रूई नूनीस के अनुसार तीन तत्व ज़िम्मेदार हैं."

पहला, "हम ने बहुत तेज़ी से बहुत ज्यादा ख़र्च किया." इस्पात मिलों, पेट्रो रसायन संयंत्रों, बांधों, कृषि सहायताओं और सुरंग पथों जैसे महत्वाकांक्षी योजना कार्यों में पूंजी लगा कर सरकार ने घाटे का ढेर खड़ा कर लिया.

दूसरे, डेढ़ साल में आयातित तेल की क़ीमत लगभग दोगुनी हो गई. ब्राज़ील प्रति दिन लगभग तीस करोड़ डालर का तेल आयात कर रहा है.

तीसरे, प्रतिकूल मौसम के कारण ब्राज़ील की पिछली तीन फ़सलों में से दो नष्ट हो गईं.

व्यावहारिकता और उत्पादन. प्रश्न उठता है, ब्राज़ील सरकार अस्तित्व की बुनियादी समस्या सुलझाने के लिए क्या योजना बना रही

है? नूगीरा कहते हैं, "उस का नाम है व्यावहारिकता. सरकार ख़र्च घटाने, पूंजी निवेश कम करने और राजस्व बढ़ाने के कठोर प्रयत्न कर रही है. हम अर्थ व्यवस्था में सरकारी हस्तक्षेप कम से कम कर रहे हैं. हम ने अधिकांश मूल्य नियंत्रण हटा दिए हैं. हम ने ब्याज की दरों पर से अंकुश हटा लिया है."

सरकार प्रति दिन तेल आयात की सीमा ७,५०,००० बैरल रखने का प्रयत्न कर रही है. पिछले साल प्रति दिन ९,२९,००० बैरल तेल आयात होता था. सरकारी ख़र्च घटाने के लिए नए कर्मचारियों की संख्या पर बंधन लगा दिया गया है. ऋण सुविधाएं बढ़ने और मूल्य नियंत्रण हटने से कृषि का उत्पादन तथा बिक्री बढ़ी है और इस से निर्यात को आम तौर पर बढ़ावा मिला है.

निर्यात, विशेष कर निर्मित माल का निर्यात अर्थ व्यवस्था का उज्ज्वल पक्ष है. एक दशक पहले निर्यात का १५ से २० प्रति शत भाग निर्मित उत्पादनों का होता था; अब ५० प्रति शत से अधिक होता है. सब से अधिक वाहनों का निर्यात होता है — विशेष कर जहाज़ों का. अन्य निर्यात सामग्री में जूते, कपड़े तथा डब्बाबंद मांस शामिल हैं.

महान देश बनने की दिशा में ब्राज़ील ने शस्त्रों के मामले में आत्म निर्भर होने का संकल्प कर लिया है. अब वह अपनी सशस्त्र सेनाओं को आधुनिक किंतु स्वदेशी हथियारों से लैस करता है जिस पर लागत भी अपेक्षाकृत कम आती है. १९८० में तो उस ने ७० करोड़ डालर के हथियार भी निर्यात किए. यूरोपीय देशों के सहयोग से अधिकांश आयुधों का विकास किया गया है. ब्रिटिश टेकनालाजी से ब्राज़ील ने दो युद्धपोत बनाए. बेल्जियम के लाइसेंस के तहत उस ने ९० मिलीमीटर की टैंकमार बंदूक़ें और मशीनगनें तथा नाटो द्वारा अपनाई गई एफ़ ए एल स्वचालित राइफ़लें बनाईं. एक इतालवी कंपनी के लाइसेंस के तहत ब्राज़ील बैरेटा पिस्तौल और सब-मशीनगनें भी बनाता है.

अमेज़न और ऊर्जा. अमेज़न क्षेत्र की संभावनाओं की खोज से ही इस बात का संकेत मिलता है कि ब्राज़ील महान होने के प्रयत्न में है. अमेज़न का ३५ लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र, जहां केवल ६० लाख लोग बसते हैं, अभी तक लगभग अछूता है. कोई नहीं जानता कि इस विशाल प्रांतर में कितने बड़े बड़े स्रोत तथा साधन छिपे हैं. लेकिन सरकार का इरादा उन्हें ढूंढ़ निकालने का है. ब्राज़ील की ७० प्रति शत आबादी आज भी समुद्र तट के १६० किलोमीटर क्षेत्र के भीतर भीतर जमघट लगाए है.

अमेज़न के अविकसित क्षेत्रों में पशु पालन और अन्य कृषिकार्यों के लिए ऋण दिए जा रहे हैं. यह कार्यक्रम बहुत प्रभावी सिद्ध हो रहा है. सरकार बिजली, परिवहन, संचार और साधन विकास पर अरबों ख़र्च कर रही है. पिछले वर्ष पूर्वी अमेज़न में कच्चे लोहे, बाक्साइट, टिन, निकल, तांबा, मैंगनीज़, पोटेशियम और सोने की भारी खोज हुई.

विश्व के कच्चे लोहे का लगभग दस प्रति शत भंडार ब्राज़ील में है. अब वह धीरे धीरे आस्ट्रेलिया की तरह दुनिया का सब से बड़ा कच्चे लोहे का निर्यातक बन रहा है. अमेज़न क्षेत्र से साउ लुईस बंदरगाह तक कच्चा लोहा पहुंचाने के लिए सरकार ८८५ किलोमीटर लंबा रेल मार्ग बना रही है. सरकार को आशा है कि १९८५ तक बाक्साइट का उत्पादन ९० लाख टन वार्षिक होने लगेगा. अतः बाक्साइट परि-शोधन के लिए विशाल टूकूरुई बांध बनाया

जा रहा है जिस से ८,००० मेगावाट बिजली का उत्पादन होगा.

ब्राज़ील की अर्थ व्यवस्था का कमज़ोर पहलू अब तक आयातित तेल है. १९८० में ब्राज़ील में प्रति दिन लगभग ११ लाख बैरल तेल की खपत हुई थी. उस में से केवल २ लाख बैरल तेल का ब्राज़ील में उत्पादन हुआ था. मैदानी इलाक़ों में तेल की खोज बढ़ा कर ब्राज़ील १९८५ तक घरेलू उत्पादन ५ लाख बैरल कर लेना चाहता है.

इसी बीच प्रमुख उद्योगों से कहा गया है कि वे तीन वर्ष के अंदर अंदर तेल के बजाए कोयले का इस्तेमाल शुरू कर दें. रिओ के निकट तट पर वेस्टिंगहाउस द्वारा निर्मित परमाणु ऊर्जा संयंत्र शीघ्र ही चालू होने की उम्मीद है.

जल विद्युत ऊर्जा का भी विकास किया जा रहा है. विश्व के सब से बड़े जल विद्युत ऊर्जा परिसर का काम प्रसिद्ध इग्वासू प्रपात के निकट १९७६ में शुरू हुआ था. पेरूग्वे के साथ चलाए जा रहे इस संयुक्त अभियान पर लगभग एक अरब रुपए ख़र्च होंगे और उस से १२,६०० मेगावाट बिजली पैदा होगी.

पेट्रोल के बजाए अलकोहल से कार आदि चलाने के ब्राज़ील के प्रयत्न ईंधन की कमी वाले देशों के लिए नए और महत्वपूर्ण हैं. १९८० में २,६५,००० अलकोहल चालित कारें बनाई गई. लक्ष्य है ब्राज़ील की बनी ८० प्रति शत कारों को गन्ने के अलकोहल से चलाने का.

जहां पैसा है. विकासशील शक्ति के रूप में ब्राज़ील अपनी मर्यादा के अनुसार, ऐसी विदेश नीति अपना रहा है जो तटस्थ है. इस मामले में भी व्यावहारिकता से काम लिया जाता है. एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी का कहना है कि "हम यह नहीं देखते कि किसी सरकार के सिद्धांत क्या हैं. हम यह भी नहीं देखते कि वह दमनकारी है या नहीं. हम तो केवल उस सरकार के साथ व्यापार करते हैं." ब्राज़ील में रहने वाला एक विदेशी कहता है, "ब्राज़ील वासी तो सिर्फ़ पैसे की तरफ़ भागते हैं."

ब्राज़ील ने सोवियत संघ और जनवादी चीन से संबंध बना रखे हैं. इस समय वह सोवियत संघ को जूते, कपड़े, खालें, शक्कर, कोको और काफ़ी बेचने तथा बदले में उसे से तेल अनुसंधान व बांध बनाने के उपकरण लेने के लिए समझौते कर रहा है. लकड़ी से अलकोहल बनाने और तेल की खोज करने का प्रशिक्षण भी वह सोवियत संघ से लेना चाहता है.

१९६४ में ब्राज़ील ने क्यूबा से संबंध तोड़ लिए थे. अब तक उस ने उन्हें जोड़ा नहीं है. ब्राज़ील के एक अधिकारी का कहना है: "क्यूबा अब भी हस्तक्षेप की नीतियों पर चल रहा है. दक्षिण अमरीका के अन्य देशों ने क्यूबा से फिर संबंध जोड़ लिए हैं, किंतु उस का परिणाम अच्छा नहीं निकला है."

"**शुभारंभ**". जिस प्रकार ब्राज़ील सरकार ने अपनी विदेश नीति ख़ुद गढ़ ली है, उसी प्रकार गृह नीतियां भी फिर से बना रही है. अब एक दीर्घावधि योजना बनाई जा रही है जिसे आम तौर पर 'शुभारंभ' कहा जाता है. इस का मतलब है राजनीतिक जीवन में विरोधी दलों का प्रवेश बढ़ाना. अब देखना यह है कि यह योजना कितनी सच्ची है और इसे बनने में कितना समय लगेगा.

अगस्त १९८० में 'शुभारंभ' के मुख्य आयोजक जनरल गोलबेरी दो कूतो ए सिलवा ने कट्टर दक्षिणपंथी ज़वाउं लेईताउं दो आब्रेउ के पक्ष में केबिनट चीफ़ आफ़ स्टाफ़ के पद

से त्याग पत्र दे दिया था. राजनीतिक प्रेक्षकों का कहना है कि इस से कोई परिवर्तन नहीं आया है, केवल उदारतावादी प्रक्रिया मंद पड़ी है.

वर्कर्स पार्टी के नेता और कांग्रेस के डिप्टी एयरडन सोरेस का कहना है: "सरकार ने परंपरागत तानाशाही छोड़ कर तानाशाही का बाना पहन लिया है. पहले फ़ौज क़ानून बनाती थी, अब वही क़दम कांग्रेस उठाती है. उस के अधिकांश सांसद वही करते हैं जो सरकार कहती है."

लेकिन ब्राज़ील के भूतपूर्व प्रधान मंत्री और अब विरोधी दल 'पापुलर पार्टी' के नेता सीनेटर तांक्रेदो नेवेस का कहना है., "लोकतंत्र की प्रक्रिया को उलटा नहीं जा सकता. जनता जानती है कि क्या हो रहा है और वह सरकार को उलटी दिशा में नहीं जाने देगी."

अब ब्राज़ील के नेताओं ने निश्चय ही छठे दर्शक के अंतिम और सातवें दशक के प्रारंभिक वर्षों के दमन चक्र से हाथ खींच लिया है. १९८० तक बचे खुचे राजनीतिक बंदियों को भी रिहा कर दिया गया था. अब फिर से बिना मुक़दमा चलाए किसी को भी जेल में नहीं रखा जा सकता. जिन लोगों को देश निकाला दे दिया गया था, उन्हें फिर से ब्राज़ील के समाज में स्थान मिल गया है. अब वे सरकारी पदों का कार्यभार भी संभाल सकते हैं. सरकार सामाजिक समस्याओं के लिए कुछ भी करने के लिए प्रयत्नशील है. विशेषकर देश के अविकसित क्षेत्रों के कल्याण के लिए प्रयत्न किए जा रहे हैं.

छिद्रान्वेषियों के अनुसार ब्राज़ील ऐसा राष्ट्र है जिस का भविष्य हमेशा उज्ज्वल रहा है और आगे भी रहेगा. अब तक वे मज़ाक़ उड़ाते रहे हैं, लेकिन अब उन का मज़ाक़ उड़ने वाला है क्योंकि आज के ब्राज़ील वासी महान भविष्य को साकार करने के लिए कृतसंकल्प हैं और अपने विशाल देश की विशाल संभावनाओं को वर्तमान वास्तविकता में बदल देना चाहते हैं.



उलटबांसी

'ओमनी' पत्रिका ने पाठकों को उलटबांसियां भेजने का निमंत्रण दिया, पुरस्कार भी था. प्रस्तुत हैं चार पुरस्कृत प्रविष्टियां :

धूल दो तरह की होती है. काली धूल जो हल्के रंग की चीज़ों पर बैठती है और दूसरी हलके रंग की धूल जो गहरे रंग की चीज़ों पर बैठती है.

—इ स्लिक, फ़्लोरिडा

दो बिंदुओं के बीच की दूरी अभी तक मापी जा रही है. —एन एलिटो, लास एंजलस

आप के पकड़े जाने की संभावना और आप की कारगुज़ारी में निहित बचकानापन परस्पर समानुपातिक होते हैं.

—ए के, स्वीट्ज़रलैंड

काग़ज़ हमेशा परफ़ोरेशन पर से ही सर्वाधिक मज़बूत होता है.

—के एम कौरी, पैंसिलवानिया

अगर जनरल डेक्सटर अपने सैनिकों के साथ आत्म समर्पण कर देता तो हिटलर उस की पत्नी को सूली पर चढ़ा देता. अगर वह लड़ता रहता तो दस हज़ार सिपाही बेमौत मारे जाते . . .

बंधक

सी एस फ़ारेस्टर

मित्र राष्ट्रों की सेनाएं १९४४ के उत्तरार्ध में पितृभूमि जरमनी की ओर बढ़ती चली आ रही थीं. तभी पैदल सेना के जनरल फ्रीडरिक फ्रेन डेक्सटर को नया हुक्म मिला.

वे हुक्मनामा पढ़ रहे थे और पास ही उनकी पत्नी आलोइस निश्चल खड़ी अपनी व्यग्रता छिपाने की कोशिश कर रही थी. डेक्सटर ने हुक्मनामा पत्नी को थमा दिया.

"अभी दस मिनट हैं," जनरल ने कहा, "चलो, घूम आएं."

नुक्कड़ तक पहुंचते पहुंचते आलोइस रह न सकी. उस ने पूछा, "यह सब क्या है?"

"यह हुक्म सीधे फ्यूरर ने जारी किया है," जनरल ने समझाया. "मुझे मोंटाब्रिल क़िले की कमान सौंपी गई है—बेलजियम की सीमा पर इंगलिश चैनल के तट पर."

"कैसा क़िला है वह?"

"पता नहीं, क़िला है भी या नहीं," जनरल ने अपना संदेह प्रकट किया और कहा, "फ्यूरर ने नया तरीक़ा निकाला है. वह किसी भी जगह को क़िले का नाम दे देते हैं और उस पर गैरीसन तैनात कर के उस का एक कमांडर बना देते हैं. हुक्म यह होता है कि आख़िरी आदमी तक डटे रहो."

"तो हालत नाज़ुक है?"

"मेरा काम है हुक्म बजा लाना और देश के लिए लड़ना. फिर जो होना है वह हो. लेकिन घेराबंदी में एक वक़्त ऐसा भी आता है जब लड़ते रहने का कोई मतलब नहीं होता. जब अपनी सुरक्षा पंक्ति कहीं से टूट जाए, जब दुश्मन का तोपख़ाना ज़बरदस्त हो—तब डटे रहने का मतलब है क़त्लेआम. पर कभी कभी यह भी ज़रूरी होता है शायद," जनरल ने समझाया.

दिल ही दिल में आलोइस को विश्वास था कि कोई भी स्थिति ऐसी नहीं हो सकती कि इतनी जानों की क़ुरबानी को ठीक समझा जाए, पर वह चुप रही.

आख़िर आलोइस ने पूछा, "लेकिन, डियर, ऐसे में तुम क्या करोगे?"

"मैं? मैं वही करूंगा जिस का हुक्म है." जनरल की आवाज़ में गंभीर दृढ़ता थी. आलोइस ने देखा कि उन के चेहरे पर निराशा की स्याही पुती है.

द होस्टेज से संक्षिप्त. कापीराइट (१९५४) सी एस फ़ारेस्टर हेरल्ड मेटसन कंपनी इनकारपोरेटेड की अनुमति से प्रकाशित

ज्यादातर लोगों को विश्वास ही नहीं होता था कि डेक्सटर जैसे कम पढ़े लिखे और संकुचित दृष्टिकोण वाले अड़ियल सिपाही से कोई औरत प्यार भी कर सकती है.

शरद ऋतु की उदास मरियल धूप. सड़क पर टहलती साठ साल की औरत और तिरसठ का बूढ़ा. हज़ारों आदमियों की मौत जैसे भयानक विषय पर उन की बातचीत. ऐसे में प्यार की गुंजाइश ही कहां थी? फिर भी उन में प्यार था—वैसे ही जैसे पत्थरों में फूल उग आते हैं.

"जानती हो, डियर," डेक्सटर ने पत्नी से आंखें बचाते हुए पूछा, "हमारे यहां बंधकों का क़ानून लागू है?"

"हां."

जरमनी में इस क़ानून के बारे में सब जानते थे. उस साल की गरमियों में यह प्रथा आम हो गई थी. अगर कोई अफ़सर मोरचे पर पीठ दिखा कर भाग जाए तो उस की मां, बीवी या बच्चे मार दिए जाते थे. युद्ध में कमज़ोरी दिखाने का मतलब था अपने प्रियजनों की मौत को बुलावा देना.

"अब बस, तुम बची हो, डियर," डेक्सटर ने कहा.

पिता का नामराशि नौजवान फ़्रीडरिक फ़ोन डेक्सटर अल अलमेन की लड़ाई में और लोटार फ़ोन डेक्सटर स्टालिनग्राड में काम आ चुका था. ऐर्नेस्ट लापता था, सेना को विश्वास था कि वह रस्तोफ़ के मैदान में वीरगति पा चुका है. अब बस, बुड्ढा बुढ़िया बचे थे. बूढ़ा मोंटाव्रिल की कमान संभालेगा, बुढ़िया घर पर रहेगी—बंधक के तौर पर.

"तुम ने हुक्मनामे में देखा कि मेरा चीफ़ आफ़ स्टाफ़ कौन रहेगा?"

"कोई ग्रूपनफ़्यूरर है, सुरक्षा सेना का अफ़सर. नाम न जाने क्या था."

"उस का नाम है ग्रूपनफ़्यूरर फ़्रे," डेक्सटर ने कहा. "मैं जानता हूं, उसे क्यों लगाया गया है."

"तुम पर नज़र रखने के लिए?"

"नहीं; मुझे मुस्तैद रखने के लिए."

अब तक वे फिर घर के पास पहुंच गए थे. जो कुछ कहना सुनना था, कहा सुना जा चुका था. बस, विदा लेने देने का काम बाकी था. उस के लिए अधिक समय नहीं बचा था. पत्नी का चुंबन ले कर डेक्सटर इंतज़ार करती कार की तरफ़ बढ़े. उस समय उन के मन पर बंधक क़ानून छाया हुआ था.

मोंटाव्रिल की घेराबंदी के सतरहवें दिन मित्र राष्ट्रों की सेनाओं ने तीसरी बार हमला किया. इस बार वे बाहरी सुरक्षा पंक्ति को तोड़ पाने में सफ़ल हो गए. मूसलाधार बारिश में जरमन सेना जी तोड़ युद्ध कर रही थी. ख़ुद जनरल ने इस में आगे बढ़ कर हिस्सा लिया था. उसी की वजह से हालत सुधर सकी थी. उन्हों ने पैदल सेना के टूटते मनोबल में फिर से नई जान फूंक दी थी. रिज़र्व सेना के अंतिम दस्तों को सही मौक़े पर इस्तेमाल कर के उन्हों ने टूटी सुरक्षा रेखा को फिर से मज़बूत कर दिया था.

उन्हों ने दुश्मन पर जवाबी हमला भी किया था. उस में भी उन्हें सफलता मिल जाती, लेकिन अपने पास ही एक बम फटने से वह कुछ देर के लिए बेहोश हो गए थे. दोबारा क़दमों पर खड़े हो पाने तक जवाबी हमला नाकाम हो चुका था.

मोंटाव्रिल में हेडक्वार्टर टूटे फूटे गिरजाघर के तहख़ाने में था. जनरल वहां पहुंचे तो ग्रूपनफ़्यूरर फ़्रे उन के स्वागत में उठ खड़ा हुआ.

"बधाई, जनरल," उस ने अपनी खनकती आवाज़ में गरमजोशी से कहा.

जनरल उसे घूरते रह गए. पिछले कुछ घंटों, दिनों या सप्ताहों में ऐसा कुछ नहीं था जो बधाई के क़ाबिल कहा जा सके. बड़े नाटकीय अंदाज़ से फ़्रे ने धातु की कोई चीज़ जनरल को पकड़ा दी.

"रिटरक्रूज़—वीरता के लिए क्रास! इसे आप



ने अपनी बहादुरी से कमाया है."

"यहां यह आया कैसे?" जनरल ने पूछा.

"आप ने सुबह जहाज़ नहीं देखा—ऊपर से गुज़रता? वही डाक का बंडल गिरा कर गया था."

लड़ाई में व्यस्त रहने के कारण डेक्सटर उसे नहीं देख पाए थे. उन्हों ने पूछा, "बंडल में और भी कुछ था क्या?"

"हां, सुरक्षा सेना हेड क्वार्टर से मेरे लिए आदेश पत्र थे."

"मेरे लिए कुछ था?"

"हां, एक पत्र."

देखते ही डेक्सटर पहचान गए. उन्हों ने प्रे के हाथों से पत्र झपट लिया.

"कोई रिपोर्ट?" डेक्सटर ने पूछा, प पढ़ने से पहले काम की बातें कर लेना ज़रूरी था.

"कुछ ज़बानी रिपोर्टें हैं, सर." सहायक चीफ़ आफ़ स्टाफ़ बुसे ने कहा. गैरीसन के सीनियर मेडिकल आफ़िसर ने रिपोर्ट दी थी कि

मरहम पट्टी का सामान और संज्ञाहीन करने वाली दवाओं का स्टाक ख़त्म हो चुका है. कृत्रिम रक्त भी ख़त्म होने वाला था. "और ५०७वीं आर्टिलरी के एजुटेंट ने रिपोर्ट दी है . . ."

"वह सब छोड़ो," जनरल ने बात काटी. 'मुझे वे रास्ते में मिल गए थे. उन की रिपोर्ट मुझे मालूम है. तोपों के लिए बस, दस दस राउंड बारूद बचा है और कुछ ही तोपें अब काम में लाई जा सकती हैं . . .कुछ और ?"

"कोर्ट मार्शल का फैसला. सर.'

दो सैनिक भागते हुए पकड़े गए थे. गैरीसन को एकजुट रखने के लिए आवश्यक था कि उन के साथ किसी प्रकार की नरमी न बरती जाए और गोली मार दी जाए. इस मामले को तुरंत निपटांना डेक्सटर का कर्तव्य था. आज ही उन्हों ने युद्ध क्षेत्र में शानदार कौशल दिखाया था. कोई और अनाड़ी जनरल होता तो यह मोरचा तीसरे दिन ही हाथ से निकल जाता. आज सतरहवां दिन था. इस रण कौशल के लिए क्या रिटरक्रूज़ काफी है ? क्या वे दो जानें नहीं बख़्श सकते ? दो ही क्यों ? गैरीसन की दस हज़ार जानें बख़्शी जानी चाहिए ? अचानक उन्हें लगा कि फ्रे की आखें उन के चेहरे पर गड़ी हैं.

"श्रीमती डेक्सटर सकुशल तो हैं ?" फ्रे ने पूछा उस की कनकनी आवाज़ और भी कनकनी हो गई थी. उस ने फिर दोहराया, "घर पर कुशल तो है ?" इस बात के मतलब में अब कोई संदेह नहीं रह गया था. सारी गैरीसन को युद्ध में झोंक देने के लिए फ्रे छिपी धमकी दे रहा था. हिटलर और पूरी नाज़ी पार्टी के पागलपन और विनाश लिप्सा का भूत उस प्र पूरी तरह सवार था.

डेक्सटर की पिस्तौल पेटी में लटक रही थी. उन्हों ने चाहा कि पिस्तौल निकाल कर उस पागल को मार डालें. पर इस से आलोइस को कोई फ़ायदा नहीं होगा. इस से वह सुरक्षा सेना के पंजों से नहीं निकल सकेगी. मरने से पहले शायद उसे यंत्रणा कक्ष में भी जाना पड़े. बड़ी कठिनाई से अपने पर नियंत्रण पा कर जनरल ने कहा, "थोड़ी देर आराम कर आता हूं—यही कोई पदरह मिनट."

वे कोने की तरफ़ बढ़े, जहां कंबल लटका कर उन के बिस्तर को ओट दे दी गई थी. अपने साथ मोमबती ले जाना वे नहीं भूले.

डेक्सटर लेट गए. हाथ में पत्र था. एक पल के लिए पत्र न पढ़ने की अविश्वसनीय इच्छा बलवती हो उठी. वे थक चुके थे. उन के मन में एक ऐसी योजना ज़ोर पकड़ रही थी जिस से उन की मुसीबतों का अंत हो सकता था. उस से आलोइस का जीवन भी बच सकता था. युद्ध में उन के वीरगति पाने से सुरक्षा सेना के पागल अधिकारियों की तुष्टि हो जाएगी. न भी हुई तो मृत डेक्सटर को इस बारे में कुछ पता न चलेगा. उन्हें शांति मिल चुकी होगी. उन के बाद अधिकारी आलोइस को . . .नहीं, उन्हें यह सब नहीं सोचना चाहिए.

इस से गैरीसन की समस्या भी हल नहीं होगी. उन के मरने पर कमान फ्रे के हाथ में चली जाएगी और गैरीसन के दस हज़ार सैनिक बलि के बकरे बना दिए जाएंगे. उन्हों ने पत्र खोला.

"माई डियर, यह पत्र तुम पर हर ख़ुशी न्योछावर करे. विवाहित जीविन में मैं ने जितना भी प्यार तुम्हें दिया है, वह सब तुम्हारे नाम. लेकिन डियर, यह पत्र तुम्हारे पास एक बुरी ख़बर ला रहा है.

"इस पत्र के पहुंचने तक मैं इस दुनिया में नहीं रहूंगी. मुझे कैंसर है. कुछ समय पहले तक यह इतना नहीं बिगड़ा था. लेकिन अब मैं और ज़्यादा नहीं जी सकती. दर्द कम करने के लिए डाक्टर मोरनेविट्स मुझे नींद की गोलियां दे रहे थे. मैं ने वे बचा कर रख ली थीं. आज रात यह पत्र भेजने के बाद मैं सारी गोलियां एक साथ खा लूंगी. मैं ने सब

बंदोबस्त कर लिया है और मुझे मालूम है कि मैं मर जाऊंगी.

"बस, डियर, अब तुम से विदा लेना बाक़ी है. तुम मेरे लिए बेहद अच्छे पति रहे, सहानुभूति और प्रेम से भरपूर. मैं ने भी तुम्हें अंतरमन से चाहा. ऐसा पति किसी किसी को ही मिलता है जो प्यार और प्रशंसा दोनों के क़ाबिल हो.

"आज की रात अपने अंत समय मैं तुम्हारे बारे में ही सोचूंगी. अल विदा, डार्लिंग, हमेशा हमेशा के लिए तुम्हारी आलोइस."

डेक्सटर गहन वेदना से भर उठे. आलोइसहीन संसार में वे रहना नहीं चाहते थे. तभी उन्हें अपने यहां आने का कारण याद हो आया. उन का हाथ पिस्तौल की मूठ पर चला गया. उस के ठंडे स्पर्श से उन्हें जीवन के अन्य यथार्थों का भान हो उठा. आलोइस मर गई थी. अब सुरक्षा सेना उस का कुछ नहीं बिगाड़ सकती थी. उन्हें याद आया कि अभी उन्हें एक काम और करना है—वह काम जो इस से पहले नहीं किया जा सकता था.

हाथ में पिस्तौल लिए वे ओट से बाहर आए. फ़्रे और वुसे अभी तक वहां थे. जनरल को इस तरह तेज़ी से आते देख कर वे भौंचक्के रह गए.

"हिले तो गोली मार दूंगा," डेक्सटर ने फ़्रे से कहा.

आदेश मान कर फ़्रे निश्चल खड़ा रहा. उस के होंठ हिले ज़रूर, पर कोई आवाज़ नहीं निकल पाई.

"बुसे," डेक्सटर ने घुड़क कर कहा, "जनरल फ़्यूसल को फ़ोन करो."

"हथियार डालोगे तुम?" फ़्रे की आवाज़ लौट आई थी. उस का शरीर उस समय उत्तेजना से बुरी तरह कांप रहा था.

"हां," डेक्सटर ने कहा.

"लेकिन तुम्हारी बीवी!" फ़्रे ने कहा, "... रखो..."

"मेरी बीवी मर चुकी है."

"लेकिन मेरी बीवी, मेरे बच्चे..."

फ़्रे बुरी तरह चीख़ उठा. उस का हाथ अ... पिस्तौल की तरफ़ बढ़ा. इस से पहले कि ... पिस्तौल निकाल पाता, डेक्सटर की दो गोलि... उसे छेद दिया.

उस रात बीबीसी ने मौंटाव्रिल के आत्मसं... का समाचार प्रसारित किया. मौत की छाया में... निकल कर दस हज़ार सैनिक मित्र राष्ट्रों के युद्ध... शिविरों में आ गए थे. दूर जरमनी में एक उत्तेजित... तानाशाह पागलों की तरह सिर धुन ... था—क्योंकि दस हज़ार सैनिकों ने उस के ... निर्धारित मौत के बजाए जीवन को चुन लिया ...

उसी रात चार आदमियों ने वेल्फ़... मुहल्ले में एक दरवाज़े पर दस्तक दी. एक सम... वृद्धा ने दरवाज़ा खोला. उन की वरदी से ही वे... पहचान गईं.

"मुझे आप लोगों का ही इंतज़ार था," ... ने कहा. वृद्धा का टोप और कोट गैलरी में टंगा ... जल्दी जल्दी उन्हें पहन कर वह बाहर आ गई ... इंतज़ार करती कार की तरफ़ बढ़ी. कैंसर का ... लक्षण उस में दिखाई नहीं दे रहा था. लेकिन ... कि उस ने पत्र में वादा किया था, मरते समय ... अपने पति के बारे में ही सोच रही थी...



किसी मैकेनिक के लिए नरक वह है जहां उसे ग्रीस से काम तो करना पड़े, परंतु हाथ पोंछने... को कार का स्टीयरिंग तक नसीब न हो. —अर्ल विलसन, 'फ़ील्ड न्यूज़ पेपर सिंडीकेट'

मेरा राजा बेटा मेरी रानी बिटिया

आप के बच्चों में एक न एक ऐसा ज़रूर होता है जिस पर आप सारा प्यार लुटा देना चाहते हैं. जानते हैं क्यों?

एर्मा बांबेक

हर मां का एक न एक बच्चा लाड़ला होता है. वह किसी एक बच्चे पर सारा प्यार लुटाने से अपने आप को रोक नहीं पाती. ऐसा इस लिए कि वह भी इनसान है. मैं भी अपवाद नहीं हूं. मेरा भी एक बच्चा है जिस के साथ मैं कुछ विशेष निकटता महसूस करती हूं. उस के साथ मैं ऐसे प्रेम की ज़ंजीर में बंधी हूं जिसे शायद आप समझ न पाएं.

मेरी आंखों का तारा वह है जो अपने जन्म दिन के अवसर पर बीमार था और पार्टी में आइसक्रीम नहीं खा सकता था. मेरा चहेता बच्चा वह है जिसे क्रिसमस के दिनों में खसरा निकल आया था और जिस की एक टांग पर पलस्तर चढ़ा हुआ था. मेरी रानी बिटिया वह है जिसे मैं एक रात १२ बजे के आसपास गोदी में लिए अस्पताल के एमरजेंसी वार्ड में खड़ी थी क्योंकि उस की सांस रुक रही थी.

मेरा दुलारा वह है जिसे क्रिसमस का त्योहार अकेले में मनाना पड़ा था, ख़ाली पेट पेट्रोल की टंकी उठाने की सज़ा मिली थी क्योंकि उस के कारण उस की क्लास बाज़ी हार गई थी.

मेरी आंखों की ठंढक वह है जिस ने पियानो वादन का कार्यक्रम नष्ट कर के रख दिया था, हिज्जों की प्रतियोगिता में एक शब्द के ग़लत हिज्जे बोल गया था, फ़ुटबाल के साथ ग़लत ढंग से दौड़ा था और अपनी लापरवाही से साइकिल की चोरी करवा बैठा था.

मेरा चहेता वही है जिसे मैं ने झूठ बोलने के लिए सज़ा दी थी., उस के बाहर आने जाने पर पाबंदी लगा दी थी क्योंकि वह दूसरों की भावनाओं का ख़याल नहीं रखता था. उसे हम ने यह भी बता दिया था कि वह सब के लिए सिर दर्द बन गया है.

मेरा लाड़ला खिन्न हो कर दरवाज़ा पीटने लगा. रानी बिटिया आंखों से गंगा जमना बहाने लगी. उसे पता नहीं था कि मैं देख रही हूं. राजा बेटे ने मुंह फेर लिया और बोला, "मैं आप से नहीं बोलूंगा."

मेरे बच्चे के बाल हमेशा बढ़े रहते हैं. कभी घुंघराले नहीं होते. शनिवार की रात को उसे किसी लड़की से मिलना नहीं होता. उस ने एक ऐसी कार ख़रीदी जिस की मरम्मत पर पांच हज़ार रुपए उठ गए थे.

मेरा लाड़ला स्वार्थी, अपरिपक्व और बदमिज़ाज था. वह सिर्फ़ अपने बारे में सोचता

था. ज़रा ज़रा सी बात से उस के दिल पर चोट लग जाती थी. वह अकेला था, बिलकुल अकेला. मुंहजली को तो यह तक पता नहीं था कि वह इस दुनिया में क्या कर रहा है.

हर मां का एक न एक बच्चा लाडला होता है. ऐसा बच्चा बदलता नहीं रहता. वह एक ही रहता है. आप से लिपटना हो या आप पर गरजना, ठेस पहुंचानी हो या लल्लो चप्पो करना, दोष लगाना हो या मन का गुबार निकालना—किसी न किसी कारण से आप की ज़रूरत रहती है. जो आप की आंखों से पल भर को भी ओझल न होने दे वही आप का राजा बेटा होता है या आप की रानी बिटिया.

परिचय अपना अपना

जरमन संगीत संचालक हांस फ़ोन ब्यूलो अपने कोमल एवं विवेकपूर्ण व्यवहार के लिए बहुत प्रसिद्ध रहे हैं. एक बार वह किसी सकरी सीढ़ी पर जल्दी जल्दी चढ़े जा रहे थे. और रोशनी थी बहुत कम. फ़ोन ब्यूलो ऊपर से उतरते एक व्यक्ति से टकरा गए. वह गरज उठा, "मूर्ख! गधा!!"

"जी, हां, आप से मिल कर खुशी हुई, श्रीमान," संगीतकार ने हैट उतार कर विनम्रता से कहा, "वैसे मुझे तो हांस फ़ोन ब्यूलो कहते हैं." —'एलजेमाइने त्साइतुंग', फ्रैंकफुर्ट

विज्ञापन विज्ञ

सौंदर्य शत्रुओं ने मियामी के फ़्लैग्लर स्ट्रीट में लगे ताड़ के छः ख़ूबसूरत पेड़ काट डाले, तो डेड काउंटी वालों ने उन की जगह लगाने के लिए छः अन्य पेड़ों का उपहार स्वीकार कर लिया. दरअसल ये पेड़ बहुत महंगे पड़ते हैं. अब पुराने पेड़ साढ़े चार चार मीटर ऊंचे थे अतएव उन के पीछे लगे 'डेल्टा विमान सेवा की ही उड़ान पकड़ें' संबंधी विज्ञापन पट की ख़ूबसूरती को चार चांद लग जाता था. परंतु नए पेड़ चूंकि साढ़े दस मीटर ऊंचे हैं अतएव उन के कारण पुराना इश्तहार पढ़ना कठिन हो गया है. उपहार देने वाली हैं: 'ईस्टर्न एयरलाइंस.'

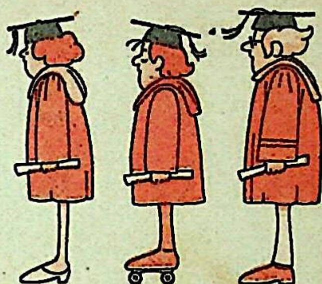
—'ट्रिब्यून', फ़्लोरिडा

नार्थ डकोटा निवासियों को इस बात का गर्व है कि अमरीका के २६वें राष्ट्रपति थियोडोर रूज़वेल्ट ने राज्य के पश्चिम स्थित एक फ़ार्म पर पूरे दो वर्ष बिताए थे. परंतु रूज़वेल्ट को पर्यटक आकर्षण का केंद्र बना कर किसी ने लाभ उठाया है, तो वे हैं साउथ डकोटा वाले. उन्हों ने माउंट रशमोर की चट्टानी ढलानों पर अमरीकी राष्ट्रपतियों वाशिंगटन, जैफ़रसन और लिंकन के साथ उन का भी मुखारविंद तरशवा लिया है.

परंतु नार्थ डकोटा वालों ने विज्ञापनबाज़ी के इस क्षेत्र में नहले पर दहला जड़ दिया जबकि वहां के पर्यटन विभाग ने साउथ डकोटा की सारी चुनिंदा जगहें इश्तिहार लगवाने के लिए किराए पर ले लीं. अब जो इश्तिहार लगे उन में रशमोर पहाड़ी का दृश्य अंकित है और राष्ट्रपति रूज़वेल्ट उन में यह कहते दिखाए गए हैं: 'मैं नार्थ डकोटा में होता तो कितना अच्छा था.'

—जे ई

पाठशाला: हास्यशाला



हमारे क्लास टीचर अपनी बात के बीच दूसरे की टोका टाकी ज़रा पसंद नहीं करते. एक दिन कक्षा में आते ही उन्हों ने सदा की भांति हाजिरी लेनी शुरू कर दी, "दिनेश कुमार, रमेश चंद्र, शकील, संजय . . ."

अपने साथी का नाम सुनते ही एक सहपाठी बोला, "सर, संजय आज नहीं आयगा."

"तुम चुप रहो, वो ख़ुद बताएगा," शिक्षक महोदय का आदेश था.

—शकील रहमान, नैनीताल

विश्वविद्यालय के अनेक व्याख्याता एक ही नोट का प्रयोग सालों करते रहते हैं. हां, कभी कभार उन में थोड़ी बहुत हेरफेर कर लेते हैं, जिस से वे सामयिक हो जाएं.

एक दोपहर कक्षा में लेक्चर सुनते समय मैं ने देखा कि मेरी बग़ल में एक लड़का, बिना काग़ज़ या क़लम के हाथ पर हाथ धरे बैठा है. व्याख्याता महोदय ने भी उसे देखा और इधर से उधर तक सभी विद्यार्थियों पर एक नज़र डालने के बाद उस से पूछा, "आप नोट्स क्यों नहीं ले रहे?"

"मुझे ज़रूरत नहीं, सर," उस ने लापरवाही से उत्तर दिया. "मेरे पिता जी ने आप के जो नोट्स लिए थे, वे सब मुझे मिल गए."

—जोय

रसायनशास्त्र के हमारे प्रोफ़ेसर जैविक क्रिया को सूक्ष्मता से समझाते समय बोले, "ध्यान दो कि क्रिया जब प्रारंभ हुई, तो कार्बन के पच्चीस परमाणु थे. अब केवल चौबीस रह गए हैं?" यहां वह ज़रा रुके, इस आशा में कि शायद विद्यार्थी कुछ कहें. किसी ने कुछ न कहा तो उन्हों ने खुल कर पूछा, "कहां गया एक परमाणु?" वह ज़रा डपटे, "बताओ! आख़िर कहां चला गया एक परमाणु? फिर वही सन्नाटा. तभी हलकी सी आवाज़ आई, "ख़बरदार! इस कमरे से कोई व्यक्ति बाहर न जाए!"

—चंद्रमोहन कुरूप

हमारे कैंपस के पुस्तक भंडार के बाहर लगा सूचना पट तरह तरह की विचित्रताओं से अंटा रहता है. लेकिन नारंगी रंग के बड़े बड़े अक्षरों वाले एक कार्ड ने हर छात्रा का ध्यान आकर्षित किया. उस पर लिखा था:

!!! मुफ़्त !!!

एक सलोने और स्नेही नर को सुखद संग और चौबीस घंटों की सुरक्षा के बदले में अच्छी देखभाल करने वाली छात्रा के कमरे और भोजन की तलाश है. वह कक्षा तक आप के साथ जाएगा और वापस लाएगा, और रात को गरमी प्रदान करेगा. आप की ओर से न्यूनतम निष्ठा के बावजूद निष्ठा की गारंटी. आज से ही साथ रहने को उपलब्ध. दिन के वक़्त २ से ६ बजे के बीच फ़ोन पर संपर्क करें. फ़ोन नंबर . . .

केवल वही लोग संपर्क करें, जो इस प्यारे से छः महीने के जरमन शेफ़र्ड पिल्ले को अच्छा घर देने में सचमुच दिलचस्पी रखते हैं. —टी एच



उस का बेटा नालायक़ नहीं था, वह व्याधिग्रस्त था. उसे वह पढ़ाए लिखाए कैसे? निजी समस्या से जूझते जूझते उस ने अपने जैसी सारी बेबस माताओं की समस्याएं गले लगा लीं

सैली ने बनाया एक अनोखा स्कूल

अर्ल और मिरियम सेल्वी

सात साल का गेरी स्मिथ पहली कक्षा में ही हर सामान्य विषय में फ़ेल हो गया था. वह सरल से सरल शब्द के भी हिज्जे न बता पाता; २ + २ का योग तक न कर पाता. लेकिन अमरीकी इंडियनों (आदिवासियों) के वर्षाकालीन नृत्यों के बारे में पूछे गए एक सवाल का जवाब देने के लिए उस ने हाथ उठा दिया. यूनानी पौराणिक कथाओं से इन नृत्यों की तुलना करते हुए उस ने बताया, "इंडियनों ने सोचा कि नाचने या कहानियां सुनाने से उन की मुरादें पूरी हो जाएंगी . . ."

यह सुनते ही टीचर ने उस के कंधे पकड़ लिए और कहा, "तुम यह तो बता सकते हो, पर सी-ए-टी-कैट नहीं बता सकते?"

टीचर ने समझा कि गेरी में सीखने की क्षमता तो है, लेकिन उस के नंबर इस लिए ख़राब आए कि वह काहिल है.

लेकिन टीचर का ख़याल ग़लत था: गेरी देखने में तो सामान्य बच्चा था पर उस में एक छिपा हुआ विकार था—अधिगम विकलांगता; यानी सीखने की अक्षमता. औसत बुद्धि के बावजूद वह न पढ़ सकता था, न लिख सकता था, न गणित कर सकता था.

सैली स्मिथ जानती थी कि उस का बेटा गेरी बुद्धिमान है; क्योंकि दोनों बड़े भाइयों और मां के साथ खेलते समय उसे जो भी बताया जाता उसे वह समझ जाता और याद रखता. वह यह भी जानती थी कि गेरी अपनी क्लास में अलग थलग महसूस करता है. गेरी के लिए उस ने विकल्प खोजे तो उसे मंदबुद्धि और मानसिक रूप से विकृत बच्चों वाले

सामने के पृष्ठ पर:

(ऊपर बाएं) डिजाइन और छापे बनाने से खेल खेल में ही बच्चों की दृष्टिगत प्रत्यक्षशक्ति का विकास होता है

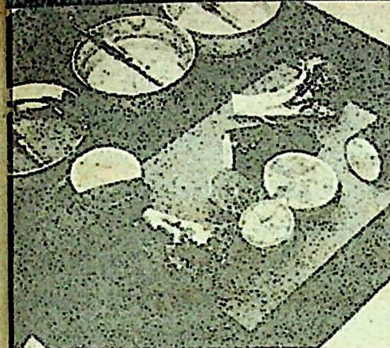
(ऊपर दाएं) लयबद्ध ताल से पढ़ने की योग्यता बढ़ती है

(बीच में) मुखौटे बनाने से बच्चे मुखाकृतियों की बारीकियां अथवा विशेषताएं समझ जाते हैं

(नीचे बाएं) गीत नाटकों द्वारा बच्चे अंतरिक्ष में शरीर को संतुलित रखना, मौखिक आदेश ग्रहण करना और मिलजुल कर काम करना सीखते हैं

(नीचे दाएं) अभिनय द्वारा मध्य युग की पुनर्रचना करते हुए बच्चे

पृष्ठ ४९ के फोटो: जोएल जैकबसन









स्कूल ही मिले. सैली ने साफ़ इनकार कर दिया, "हरगिज़ नहीं. मेरा बेटा न मंद है न विकृत. मैं उसे इन स्कूलों में नहीं भेजूंगी."

"मेरे बच्चे को स्कूल चाहिए!"

१९६७ के वसंत भर सैली प्राइवेट स्कूलों से आरजू मिन्नतें करती रही कि वे गेरी और अधिगम संबंधी विकलांगता से पीड़ित बच्चों के लिए नए पाठ्यक्रम बनाएं. (कुछ शोधकर्ताओं का कहना है कि सिर्फ़ अमरीका में ही ऐसे लगभग एक करोड़ बच्चे होंगे.) स्कूल वाले कहते, "इस में कम से कम एक साल लग जाएगा."

सैली का जवाब था, "मेरे पास एक साल नहीं है. मेरे बेटे को स्कूल फ़ौरन चाहिए."

उस ने किंग्सबरी सेंटर के डाइरेक्टर केनेथ आर ओल्डमैन से भेंट की. वाशिंगटन स्थित यह संस्था पढ़ाई में कमज़ोर बच्चों की व्याधियों का निदान एवं उपचार करती है. वे सैली की बात समझ तो गए, लेकिन उन के पास न जगह थी, न पैसा.

पर कुछ महीने बाद ओल्डमैन ने सैली से कहा कि उन्हें सेंटर के पास ही एक छोटी सी दुमंज़िली इमारत दी गई है; और इस में एक छोटा सा स्कूल चलाया जा सकता है: क्या तुम ख़ुद सीखने में असमर्थ बच्चों को पढ़ाना चाहोगी?

सैली आतंकित हो उठी. वह एम ए पास थी, लेकिन पेशे से वह शिक्षिका नहीं थी. उस ने सोचा, लोग तो अपने बच्चे मेरे सुपुर्द कर देंगे, पर मैं क्या करूंगी? लेकिन फिर उस ने गेरी पर नज़र डाली और तय किया कि वह कोशिश करेगी.

रात भर जाग कर सैली ने अपने नए स्कूल का पाठ्यक्रम तैयार किया. इस के बाद उस ने स्कूल की इमारत साफ़ करने और उस की रंगाई पुताई के लिए स्वयंसेवक जुटाए. फ़र्नीचर दान करने के लिए अपीलें कीं. शिक्षकों के वेतन के लिए सज्जन मित्रों से ७,००० डालर उगाह लाई. और इस प्रकार २५ सितंबर १९६७ को सैली ने किंग्सबरी सेंटर का लैबोरेटरी स्कूल शुरू किया.

अधिगम विकलांगता के अंतर्गत सीखने पढ़ने से संबंधित कई तरह की व्याधियां आती हैं, जैसे सक्रियता संबंधी मस्तिष्क की न्यूनतम विकलता (कार्य वैकल्य) और पठन अवरोध. कारण यह है कि कुछ स्नायु मार्ग यथासमय विकसित नहीं हो पाते. अतः वे ज्ञानेंद्रियों की ज्ञान ग्रहण प्रक्रिया में बाधा डालते हैं, परिणामतः मस्तिष्क के सूचना ग्रहण में भी निरंतर व्यवधान पैदा होता रहता है.

अधिगम असमर्थ बच्चे हमारी शिक्षा प्रणाली के लिए ज़बरदस्त चुनौती हैं. हर एक की अपनी अपनी कठिनाइयां हैं और कठिनाइयों का मान बोध भी निजी है, मगर इन के लक्षण प्रायः एक से होते हैं—अन्यमनस्कता, विसंगति, समय चेतना का अभाव, असंतुलित स्मरण शक्ति, मस्तिष्क को संदेश पहुंचाने की आंखों की दोषपूर्ण प्रणाली, और योजना बनाने की अयोग्यता. इन के अलावा ऐसे बहुत से बच्चे अपरिपक्व, समन्वय में असमर्थ, दुर्घटना-प्रवण या अवांछित रूप से सक्रिय होते हैं.

मगर ऐसे बच्चों के मस्तिष्क प्रायः अक्षत होते हैं. उन की मेधा बहुधा औसत या औसत से अधिक होती है. लेकिन बहुत से स्कूलों का वातावरण ऐसा होता है कि उन्हें हार मान लेने और हिम्मत छोड़ बैठने की आदत पड़ जाती है और वे अपने आप को लाइलाज 'मूढ़' समझने लगते हैं.

सैली स्मिथ ने ठान लिया कि वह यह साबित कर के ही रहेगी कि सामान्य मेधा वाले

किसी भी व्याधिग्रस्त बच्चे को सिखाया पढ़ाया जा सकता है. उस के स्कूल का लक्ष्य होगा कि हर विद्यार्थी कहने लगे, "मैं ऐसा कर सकता हूं."

नव परिवर्तन लाने वाले तरीके

अपनी लक्ष्य सिद्धि के लिए उस ने ऐसे शिक्षक भरती किए जो उसी की तरह यह मानते थे कि पढ़ाई लिखाई सीखने में सहायक बुनियादी निपुणताएं आत्मसात करने के लिए संगीत, नृत्य, नाटक, काष्ठ कला, नाट्य कला और फ़िल्मकारी आदि की शिक्षा को प्रमुखता देनी होगी. मिसाल के तौर पर उन का काष्ठ-कला विभाग कला फला बघारते फिरने का जमघटा नहीं है; उस का छद्म उद्देश्य है यह सिखाना कि आंखों व हाथों की क्रियाओं में तालमेल कैसे बैठाया जाए, विभिन्न काम करते हुए शरीर की विभिन्न मुद्राएं कैसे धारण व नियोजित की जाएं और वस्तुओं को कैसे क्रम दिया जाए. ये सभी निपुणताएं अधिगम के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं. छोटे छोटे बच्चे बोलने से पहले गाते हैं, अक्षरों को छापने से पहले उन की आकृतियां बनाते हैं और कहानियां पढ़ने से पहले उन पर आधारित नृत्य और अभिनय करते हैं. सैली के स्कूल में नए दाख़िल होने वाले बच्चे आधा दिन तो ये कलाएं सीखने में बिताते हैं और बाक़ी आधा दिन शैक्षणिक कक्षाओं में गुज़ारते हैं जिन के पाठ्यक्रम बड़ी सावधानी से तैयार किए गए हैं.

सैली स्मिथ का पाठ्यक्रम उस के अनेक छात्रों के लिए नवजीवन का संदेश लाया है. मिसाल के तौर पर ९ साल का बार्ट अक्षरों की आकृतियों व उच्चारण में घालमेल कर जाता था, इस लिए पढ़ नहीं पाता था. एक संगीत शिक्षिका ने ग़ौर किया कि वह ढोल बजाने का शौक़ीन है. वह उस की इस चाहत का इस्तेमाल उस में वर्णों और स्वरों का साहचर्य स्थापित करने के लिए करने लगी. शिक्षिका ने उस से कहा कि जब मैं लाल चिप्पड़ दिखाऊं तो तुम ढोल पर घड़ाम से मारना; पीला चिप्पड़ दिखाऊं तो हलकी सी थपकी देना. जब वह घड़ाम से 'पीटने' और 'थपकी' में निपुण हो गया तो शिक्षिका ने लाल पीले चिप्पड़ों की सिलसिलेवार पांत बना दी और कहा, "बजाओ!"

वह बार बार चिप्पड़ों का पैटर्न बदल देती; और बार्ट निरंतर अभ्यास करता गया. धीरे धीरे बार्ट को आभास हो गया कि जिस प्रकार चिप्पड़ों की ध्वनियां हैं, उसी तरह शब्दों की भी ध्वनियां होती हैं. इस आभास ने उस की पढ़ाई के दरवाज़े खोल दिए. आज बार्ट विश्वविद्यालय में है.

८ बरस की जैनेट सवाल हल करते समय पूरे सफ़े को रंग डालती थी. नृत्य के विशेष अभ्यास द्वारा उसे अंग संचालन को नियंत्रित करना सिखाया गया. इस 'गति नियोजन' ने उस के दिमाग़ में एक पैटर्न बनाया, और इस पैटर्न ने उसे काग़ज़ का सलीक़े से इस्तेमाल करना सिखा दिया.

एक १२ वर्षीय बालक में दृश्य एकाग्रता की कमी थी. एक से हिज्जे वाले शब्दों—जैसे पान, पानी, पीना—में वह अंतर न कर पाता. उसे कार्टून फ़िल्में बनाने में लगा कर उसे सिखाया गया कि सूक्ष्म निरीक्षण कैसे किया जाता है. छोटे छोटे विवरण याद रखने और कहानियों का घटना क्रम रचने के अभ्यास से उसे दृश्यों का अनुक्रम बैठाना आ गया. ये निपुणताएं उस के शैक्षणिक अधिगम के विकास के लिए महत्वपूर्ण साबित हुईं.

१० वर्षीय हेनरी शिक्षक के निर्देश ही नहीं समझ पाता था. सोचा गया, शायद वह ठीक

ठीक सुनता नहीं होगा. उस की नाट्य शिक्षिका ने एक खेल ईजाद किया : उसे अंतरिक्ष यान इनचार्ज बना दिया गया. हेलमेट पहना कर उसे छात्रों के एक दल के मुख्य पद पर बैठा दिया गया. यात्रा का नियंत्रण (मिशन कंट्रोल) शिक्षिका ने ख़ुद संभाल लिया और उस से कहा गया कि वह निर्देश ध्यान से नहीं सुनेगा तो अंतरिक्ष यान स्वतः 'नष्ट' हो जाएगा. हेनरी चौकस रह कर सभी आदेशों का बड़ी मुस्तैदी से पालन करने लगा. ऐसे ही अन्य व्यायामों ने ध्यान से सुनने की उस की योग्यता को ख़ूब बढ़ावा दिया और वह मौखिक आदेश सही सही मानने लगा.

सैली ने ग़ौर किया कि जो बच्चे कक्षा में नाकारे सावित होते हैं, वे खेल कूद के समय बड़ी बुद्धिमानी से काम लेते हैं. अतः उस ने 'शैक्षणिक क्लब' चलाए. ध्येय यह था कि बच्चों को मनचाहा करने दिया जाए और इस से वे जो भी कौशल सीख सकते हैं उसी को उन की शिक्षा का आधार बनाया जाए. 'क्लब' शब्द उस ने इस लिए चुना कि बच्चे इस से अपनापा महसूस करें. मानसिक विकलांगता के कारण ख़ुद को जात बाहर महसूस करते रहने वाले इन बच्चों में एक स्वागत योग्य उत्साह का संचार हुआ.

'गुहावासी क्लब'

पिछले पतझड़ में एक दिन ६ वर्षीय रोनाल्ड ने स्कूल के तहख़ाने में अपने 'गुहावासी क्लब' के बाहर खड़ी 'गुहा धात्री' से फुसफुसा कर कहा—"चट्टान." शिक्षिका ने कहा, "संकेत सही है." और उसे भीतर चले जाने दिया. भीतर लाल टिशू पेपरों के पीछे से चमचमाती फ़्लैश लाइटें एक प्रकाश पुंज फेंक रही थीं, जिस के गिर्द चीते की खाल जैसे कपड़े के अंगरखे पहने आठ बच्चे बैठे थे. रोनाल्ड भी उन्हीं में जा मिला. यह कक्षा थी; और क़क्षा के दौरान सारे विद्यार्थी गुहावासियों की तरह व्यवहार कर रहे थे; वे पत्थर के औज़ार व हथियार बनाते, भोजन के लिए 'शिकार' करते, और जंगली जानवरों से बचने के लिए 'सुरक्षा व्यवस्था' करते. इस खेल का मक़सद था, उन्हें प्रागैतिहासिक मानव का इतिहास पढ़ाना और उस काल की कला और समाज व्यवस्था के बारे में जानकारी देना.

बड़े होने के साथ साथ सैली के विद्यार्थी अपने क्लबों में मिस्री, यूनानी और रोमन देवताओं और मध्य काल तथा पुनर्जागरण काल के चरित्रों के रूप धरते जाते हैं. इस अभिनय द्वारा वे इतिहास सीखते हैं और विभिन्न युगों की परंपराओं व युगांतरकारी घटनाओं की गहराई से पड़ताल करते हुए अनुसंधान करते हैं.

प्रतिभावान पुस्तकाध्यक्ष अंतोनिएत मेयर ने लैब स्कूल के मीडिया सेंटर की स्थापना और विकास किया है. यहां विद्यार्थी अंधों के लिए बनी 'सवाक पुस्तकें' तथा शिक्षकों द्वारा तैयार किए गए टेप सुनते हैं. सैली ने महसूस किया था कि जो छात्र अभी पढ़ना नहीं जानते उन को मनोरम साहित्य सुनवाना बहुत ज़रूरी है ताकि वे भाषा का समुचित प्रयोग सीख सकें और साथ साथ नए क्षितिजों की यात्राओं का रोमांच अनुभव कर सकें.

मीडिया सेंटर ने सैली के लड़के गेरी में किताबों के प्रति अथाह प्रेम जगाया. सात वर्ष के लंबे श्रमसाध्य, उपचारी पाठ्यक्रम के बाद उस ने पढ़ना सीख लिया. इस के बाद उस ने बाज़ार जा कर पहली बार एक किताब ख़रीदी. तत्पश्चात उस ने हाई स्कूल पास किया.

आज सैली के स्कूल में नौ नियमित शिक्षक और अनेक पार्ट टाइम कलाकार हैं. ६

से १६ वर्ष तक के कुल ८० वच्चे यहां पढ़ रहे हैं. और एक लंबी प्रतीक्षा सूची भी है. अब इस अनोखे स्कूल के पास तीन और दुमंज़िली इमारतें हैं.

१० में से ७ बच्चों के लिए स्थानीय शैक्षिक ज़िले इन विद्यार्थियों की फ़ीस अदा करते हैं, क्योंकि संघीय सरकार का आदेश है कि अपंग बच्चों को समुचित शिक्षा दी जाए. फिर भी सैली को अमले की तनख़्वाहों और निर्धन माता पिता के बच्चों के लिए छात्रवृत्तियां जुटाने के लिए चंदे उगाहने पड़ते हैं.

लैव स्कूल में शिक्षण वड़ा श्रमसाध्य और निचोड़ देने वाला काम है. ९ बच्चों की कक्षा में, हर बच्चे की ज़रूरत के हिसाब से बने ९ विभिन्न उपचारी पाठ्यक्रम जारी रखे जा सकते हैं. मगर यहां की चुनौतियां उन्हें खींच ही लाती हैं जिन्हें शिक्षण से प्यार है. कैरन डंकन सरकारी और ग़ैरसरकारी स्कूलों में समस्याबिद्ध बच्चों को पढ़ाती रही थीं, मगर सैली के स्कूल से वह इतनी प्रभावित हुई कि जितना वेतन पा रही थीं, उस से कहीं कम वेतन पर वह उस के स्कूल की प्रधान अध्यापिका बनने, १९७८ में, यहां चली आईं.

सैली सैकड़ों हताश अभिभावकों के लिए उत्साह का स्रोत और संबल बनी हुई है. कितने ही लोग बच्चों की हालत में किसी तरह के सुनिश्चित सुधार की प्रतीक्षा में प्रायः हलकान हुए जा रहे हैं. उन्हें वह समझाती है कि बच्चों की स्थिति में दूसरे साल के उत्तरार्ध से पहले उल्लेखनीय सुधार नहीं हो पाता. इस के बाद भी वे प्रायः महीनों तक नाम मात्र की प्रगति दरशाते हैं. अभिभावक यह नहीं समझ पाते कि कलाओं में प्रवीण होने पर बच्चों को पढ़ाई लिखाई सीखने में सहायता मिलती है. एक अभिभावक ने कला पाठ्यक्रम से चिढ़ कर सैली से कहा, "खिलवाड़ में वक़्त बरबाद करना बंद करो और पढ़ाओ. मैं चाहता हूं, मेरा बच्चा अख़बार पढ़ने लग जाए."

सैली बोली, "इस साल वह पांच नए शब्द भी सीख ले तो समझिए बहुत बड़ी बात होगी. लेकिन मैं कहे देती हूं, एक दिन आप का बेटा कालेज जा कर रहेगा." और लोग सैली पर भरोसा करते हैं.

गेरी की तरह कितने ही विद्यार्थी साधारण विद्यालयों में फ़ेल होते रहे हैं. लेकिन लैब स्कूल में शिक्षा प्राप्त सैकड़ों बच्चों में ९० प्रति शत विद्यार्थी हाई स्कूल पास करने, नियमित स्कूलों में भी पहुंच ही गए. इन में से बहुतेरों ने कालिजों में भी दाख़िले लिए.

सफलता की सुगंध

सैली पर भरोसा करने वाले संसार भर में दिन पर दिन बढ़ते ही जा रहे हैं. १९७६ में वाशिंगटन की अमेरिकन यूनिवर्सिटी ने सैली को अपने अधिगम अपंगता पाठ्यक्रम का असोशिएट प्रोफ़ेसर इनचार्ज नियुक्त किया. राष्ट्र संघ ने उसे १९१ देशों के प्रशिक्षकों के लिए अधिगम अपंगता पर एक प्रबंध लिखने को कहा है.

अपने अनुभव को सैली ने हाल ही में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'नो ईज़ी आंसर्स' में बड़ी ख़ूबसूरती से पेश किया है.

सत्तरादि के मध्य में अमरीका के राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य संस्थान के निदेशक डा. बरट्रैम एस ब्राउन ने सैली के स्कूल का गहन विश्लेषण करने के बाद कहा, "पहले मैं संशयग्रस्त था. लेकिन मैं ने पाया कि एक निजी समस्या का समाधान खोजते खोजते उस ने बड़े शौर्य के साथ औरों की समस्याएं भी गले लगा लीं. इसी में इस औरत का बड़प्पन और उस के स्कूल की ताक़त छिपी है."

भारत की तरह वहां के गौरवशाली अतीत को भी पश्चिमी पुरातत्व वेत्ताओं ने भ्रामक जानकारियों की धुंध में छिपा पर रखा था. अब कुहरा छंट रहा है

अरब के अतीत की खोज



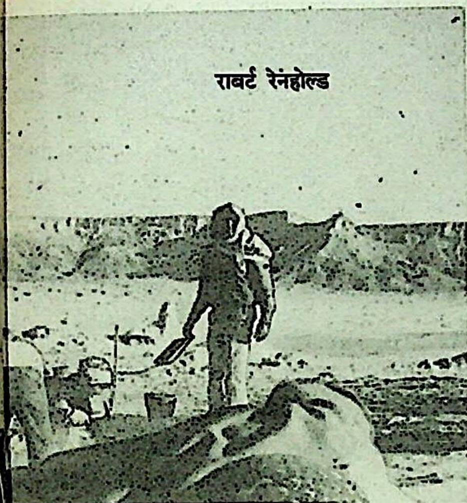
प्राचीन व्यापारिक नगर फाओ की खुदाई का दृश्य

सूर्योदय अरब के हिजाज के रेतीले टीलों में गहरे लाल और नारंगी रंग भर देता है. सूखी धरती के इन विस्मय विमुग्ध कर देने वाले दृश्यों के बीच से बल खाती नई पक्की सड़क सऊदी अरब के शहर मदीना से उत्तर की ओर चली गई है. किसी ज़माने में ठीक इसी राह से ऊंटों के काफ़िले दमिश्क जाया करते थे. यह सड़क मरुस्थल के अनगिनत नखलिस्तानों तथा वादियों के पास बसे छोटे छोटे गांवों से गुज़रती है, जो आज भी विगत युग की भांति अरब जीवन का आधार हैं.

सऊदी अरब के उत्तर पश्चिम में चंद सौ किलोमीटर गुज़र कर अल आला नामक स्थान पर यह सड़क समाप्त हो जाती है. वहां से दस किलोमीटर पर मदाइन सालेह का प्राचीन स्थल है. वहीं से सपाट रेगिस्तान का अंत और बलुआ पत्थरों की चट्टानों का सिलसिला शुरू होता है. उन्हीं चट्टानों को काट कर बनाए, चार मंज़िली इमारत जितने ऊंचे, बड़े बड़े मक़बरे हैं, जिन्हें इसलाम से पहले के वैभवशाली नबातियन अरबों ने बनाया था. इन मक़बरों पर हेलेनी शिल्प की छाप है. इन के दरवाज़े नक़्क़ाशीदार स्तंभों से सुशोभित हैं. उन पर सज्जा के लिए त्रिधारी, गुलाब की लतर, भित्ति स्तंभ, गरुड़ तथा कलश अंकित हैं.

ये और ऐसे ही हज़ारों दूसरे खंडहर, इसलाम से पहले की उन भव्य सभ्यताओं के अवशेष हैं, जो इस विशाल राज्य के रेगिस्तान में पनपी थीं. इने गिने विदेशी पर्यटक तथा पुरातत्व वेत्ता ही इन्हें देखने आए हैं. सऊदी अरब तेज़ी से आधुनिक हो चला है, लेकिन साथ ही वह अपने अतीत पर भी गौरव अनुभव करता है. वह अपने इसलामी तथा उस से प्राचीन काल के ऐतिहासिक अवशेषों

'न्यू यार्क टाइम्स मैगज़ीन' (२३ अगस्त १९८१) से संक्षिप्त, कापीराइट १९८१, द न्यू यार्क टाइम्स कंपनी, न्यू यार्क.



की खोज करने के लिए सैकड़ों पुरातत्वीय ठिकानों पर लाखों सऊदी रियाल ख़र्च कर रहा है.

सऊदी अरब को अपनी इस पुरानी विरासत की खोज की प्रेरणा मक्का के एक सऊदी पुरातत्व वेत्ता अब्दुल्ला एच मसरी से प्राप्त हुई थी. पुरा अवशेषों एवं संग्रहालयों के पैंतीस वर्षीय डायरेक्टर जनरल सऊदी अरब में उठने वाली उन विभिन्न बौद्धिक और सामाजिक विचारधाराओं के प्रतीक हैं जो अपनी परंपरागत मूल्यों को खोए बिना आधुनिक बनने के इच्छुक हैं. मसरी की शिक्षा दीक्षा पश्चिम में हुई है फिर भी उन की बौद्धिकता की जड़ें अरब के अतीत में धंसी हैं.

उपेक्षित गौरव. मसरी के निर्देशन में पुरातत्व वेत्ताओं के अनेक दल सर्वेक्षण में रत हैं. सऊदी अरब उन का ख़र्च उठाता है, और खुदाई के काम की देखरेख करता है. शाह फ़ैज़ल द्वारा १९७२ में संगठित पुरा अवशेष उच्च परिषद ने मसरी को यह अधिकार दे रखा है कि पुरातत्वीय स्थानों की जांच पड़ताल के लिए वह किसी भी स्थान पर औद्योगिक योजनाओं को स्थगित कर सकते हैं और जिन स्थानों पर खुदाई की जानी हो, या जिस स्थान प्र अवशेषों को स्थापित करना हो, वहां के भूस्वामियों को बेदखल करने के अधिकार भी उन्हें प्राप्त हैं. अवशेषों को अपवित्र करने या उन्हें चुराने वालों पर परिषद भारी जुर्माना करती है.

फ़ारस की खाड़ी के कई और देश भी लंबे समय से उपेक्षित अतीत की खोज में लगे हैं. वे विदेशी विशेषज्ञों को बुला कर संग्रहालय बनवा रहे हैं, किलों, मसजिदों और बांधों का जीर्णोद्धार करवा रहे हैं, और भग्नावशेषों का उत्खनन करवा रहे हैं. लेकिन उन सब प्रयासों में, जिन्हें अरब अपनी विरासत की खोज कहते हैं, सऊदी अरब का प्रयास सब से अधिक ज़ोरदार, योजनाबद्ध और आर्थिक दृष्टि से सुव्यवस्थित है. जल्दी ही देश भर के तमाम महत्वपूर्ण स्थानों पर संग्रहालयों का निर्माण हो जाएगा. उन्हीं में एक राष्ट्रीय संग्रहालय भी होगा जो रियाद के बीचोबीच ४० हेक्टेयर ज़मीन पर बन रहा है. मसरी के विभाग को १९८१-१९८५ के लिए लगभग साढ़े तीन अरब सऊदी रियाल की विपुल धनराशि मंजूर की गई है.

खुदाई का काम शुरू ही हुआ है, फिर भी जो प्रमाण मिले हैं उन से पता चलता है कि ७,००० वर्ष पूर्व अरब प्रायद्वीप किसानों और मछेरों का देश था, और उन की ग्राम संस्कृति बड़ी समृद्ध थी. नील और फ़रात नदी की घाटियों के बीच होने के कारण यह क्षेत्र दो महान सभ्यताओं के विकास से जुड़ा था.

लगता यह है कि इस राज्य के पूर्वी प्रांत में ५,००० वर्ष पहले नव पाषाण युग के मानवों की घनी बस्तियां थीं.

१९७० के मध्य में मसरी ने एक ऐसे समाज के प्रमाण ढूंढ़ निकाले जो अनुमान से कहीं ज़्यादा जटिल थे. फ़ारस की खाड़ी के तीन स्थानों—ऐन कन्नास, दोसारियाह, और अबु खमीस—में खुदाई की गई. उस युग के निवासी किसान थे, वे चूने के पलस्तर और सरकंडों से घर बनाते थे, भेड़ बकरियों को बाड़े में रखते थे, और पास के समुद्र से मछलियां पकड़ा करते थे. खुदाई में मिट्टी के जो बरतन मिले, वह सैकड़ों किलोमीटर दूर उत्तर में बने थे, जहां वर्तमान इराक है. इस से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वहां के निवासी अंतरराष्ट्रीय व्यापारी थ, और उन का मेसोपोटेमिया संस्कृति से गहरा व्यापारिक संबंध था.

सात हज़ार वर्ष पहले. "हम ने यह प्रमाणित कर दिया है कि सऊदी अरब ७,००० वर्ष पूर्व की बस्तियों के नक़्शे पर मौजूद था. यहां खेतीबारी होती थी और ढोर डंगर, भेड़ बकरियां पाली जाती थीं," सरी कहते हैं, "हमारे देश को लोग बनजारों का देश मानते चले आए हैं, लेकिन हमारे यहां ग्राम संस्कृति मौजूद थी."

कोई ९,००० वर्ष पहले तक अरब का भीतरी भाग हरा भरा था. यहां झीलें थीं और घास के मैदान थे जहां अनगिनत दरियाई घोड़े थे और झुंड के झुंड हिरन विचरते थे. सऊदी अरब के वर्तमान सूने और उजाड़ दक्षिणी इलाक़े रब्बल खाली में पुरा पाषाण कालीन शिकारी बसे थे, और उन का धंधा ज़ोरों पर चलता था. वही इलाक़ा आज इतना वीरान और झुलसा हुआ है कि वहां जीवन लगभग असंभव है. वहां बारिश पड़नी बंद हो गई और झीलें सूख गईं तो शिकारी वह जगह छोड़ कर भोजन और पानी की तलाश में उत्तर की ओर चल पड़े. अंततः वे फ़ारस की खाड़ी के तट पर पहुंचे जो आज अरब तेल के वैभव से संपन्न 'ईस्टर्न प्राविंस' हैं.

यहां मसरी और उन के सहयोगियों ने १९७१ में वह जगह खोद निकाली, जहां आज से कोई ७,००० वर्ष पहले के पत्थर से बने बढ़िया हथियार, और हरिताभ पीली मिट्टी के प्याले, कटोरे तथा अन्य पात्र मिले. इन पर काले और हलके कत्थई रंग से डिज़ाइन बनी हैं. मिट्टी के ये बरतन इराक के उबैद क्षेत्र में मिले मृद्भांडों से मिलते जुलते हैं, जहां सुमेर संस्कृति के पूर्ववर्ती संस्कृति के लोग थे; उन्हों ने ही पहले पहल लिपि का आविष्कार किया था और विश्व की सर्वप्रथम वास्तविक सभ्यताओं में से एक का विकास किया था.

'किंग सऊद यूनिवर्सिटी आफ़ रियाद' के नए नए खुले पुरातत्व विभाग को ऐसी सफल खोजों से बड़ा संतोष प्राप्त होता है. १९७८ में स्थापित इस विभाग में ३०० विद्यार्थी हैं, और खुदाई के लिए इस का वार्षिक बजट १२ लाख सऊदी रियाल है. प्रोफ़ेसर अब्दुल रहमान अल अंसारी इस के अध्यक्ष हैं, जिन्हों ने १९६६ में सऊदी अरब की इतिहास एवं पुरातत्व सोसाइटी की स्थापना की थी. विश्वविद्यालय के इस विभाग से प्रमुख अरब विद्वान संबद्ध हैं, जैसे प्रोफ़ेसर गमाल मुख़्तार, जो मिस्र की सरकार के पुरा अवशेषों के प्रधान थे. विभाग के विद्यार्थियों में से अनेक उच्च प्रशिक्षण के लिए विदेश भेजे जाते हैं. ईरान, इराक, मिस्र और जोर्डन में तो पुरातत्वज्ञों के दल के दल मौजूद हैं, लेकिन सऊदी अरब में प्रशिक्षण प्राप्त लोगों की बहुत कमी है, क्योंकि पहले वहां पुरातत्व के प्रयासों पर प्रतिबंध था.

प्राचीन व्यापार केंद्र. प्रोफ़ेसर अल अंसारी पिछले दस साल से सऊदी अरब के एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान पर खुदाई के काम का निर्देशन कर रहे हैं, जहां प्राचीन काल में व्यापार केंद्र फ़ाओ स्थित था. यह नगर ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी से ले कर पांचवीं शताब्दी ईसवी तक ख़ूब उन्नति पर था. संभवतः फ़ाओ दक्षिण अरब के प्राचीन राज्य किंडाह की राजधानी भी रहा हो. 'एंप्टी क्वाटर' के भयभीत करने वाले वीरान क्षेत्र के छोर पर बनी ऊंची सी फ़सील की नींव के पास, रेत के सरकते टीलों के नीचे से इस पुरा नगर के अवशेष प्राप्त हुए. अल अंसारी और उन के विद्यार्थियों ने खुदाई कर के इस पुरा नगर के हाट, मंदिर, राजप्रासाद, कुलीनों के समाधि स्थल और निवास भवनों के कुछ भागों को खोज निकाला है. अल अंसारी ने अब तक हज़ारों कलाकृतियां खोज निकाली हैं, जिन में मृद्भांड, सेलखड़ी की मूर्तियां, और ऐसे शिलालेख हैं, जिन से पता चलता है कि फ़ाओ नगर प्राचीन काल में काफ़िले के लिए एक महत्वपूर्ण पड़ाव था.

फ़ाओ सऊदी अरब के उन सैकड़ों स्थानें में से एक है, जो पुरातत्वज्ञों के कुदाल फावड़ों की प्रतीक्षा में हैं. मसालों और सुगंध पदार्थों के परिवहन पर तो शताब्दियों तक अरबों का ही नियंत्रण रहा. इन वस्तुओं का प्राचीन काल में धार्मिक और सामाजिक जीवन में उतना ही महत्व था, जितना आज हमारे लिए पेट्रोल का है. ३,००० ईसा पूर्व में खाड़ी के दिन दूनी रात चौगुनी तरक़्क़ी करते व्यापार के लिए पूर्वी समुद्र तट पर दहरान के पास तारून द्वीप वाणिज्य का महत्वपूर्ण केंद्र था. फिर एक लंबे समय तक गुमनामी की स्थिति रही. लगभग २,००० वर्ष बाद यूनानियों के आगमन के बाद इस द्वीप के दिन दोबारा फिरे. व्यापार के अन्य केंद्र थाज, नजरान, मदाइन सालेह और ओफिर के पहाड़ी इलाक़े में हैं, जहां की खानों से शाह सुलेमान* के लिए सोना निकाला जाया करता था. वहीं वह विलक्षण नगर गेरहा भी है, जिस के बारे में दंतकथाएं प्रचलित हैं कि वह लुप्त हो गया था. वह पूर्वी समुद्र तट का बंदरगाह था और दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के यूनानी भूगोलशास्त्री अगाथरकाइड्स के अनुसार, "वहां के घरों के दरवाज़ों, दीवारों और छतों में हाथीदांत, सोने, चांदी और अनमोल रत्नों को जड़ कर पच्चीकारी की गई थी."

उत्तर पश्चिमी क्षेत्र में ही अरब के लगभग एक हज़ार वर्ष के इतिहास की झांकी मिल जाती है. जैसे प्राचीन काल का व्यापारिक नगर डेडम इसी क्षेत्र में है जो १,००० ई. पू. में दक्षिण अरब से भूमध्य सागर तक मसाले के काफ़िलों का पड़ाव था, या जैसे की अल-बिंत के उस बांध के भग्नावशेष जो पैगंबर मुहम्मद के युग का था.

चंद्रपूजा का गढ़. अरब के उत्तर पश्चिम में पुराने ज़माने की मिदियानी व्यापार केंद्र ताएमा आज भी आबाद है. उस के अधिकांश निवासी ३,००० साल पुरानी बलुआ पत्थर से बनी फ़सील के अंदर रहते हैं, जो छः किलोमीटर तक रेगिस्तान में फैली है. पुरातत्व वेत्ताओं के लिए ताएमा एक पहेली है, क्योंकि बाबुल (बेबीलोन) के अंतिम राजा नाबोनिदस ने इसे ही अपना घर बना लिया था, और चंद्र पूजा का यह गढ़ ५५० ईसा पूर्व के बाद कोई दस साल तक नाबोनिदस के राज कार्य का मुख्यालय रहा था. उस समय के एक शिलालेख के अनुसार, नाबोनिदस ने इस शहर को भव्य बना दिया था और बाबुल स्थित अपने राजमहल जैसा ही एक

---

*बाइबल का प्रसिद्ध राजा सोलेमन

महल यहां बनवाया था. मसरी की देखभरेख में यहां खुदाई होगी तो शायद उस महल के अवशेष भी मिल जाएं.

लेकिन मसरी के अनुसंधान कार्य में बाधाएं भी कम नहीं हैं. कुछ रूढ़िवादी मुसलिम अतीत को प्रकाश में लाना पसंद नहीं करते, क्योंकि उन के विचार में, वह उन का बर्बर युग था. इस लिए मसरी और उन के सहयोगी अच्छी तरह समझते हैं कि उन्हें फूंक फूंक कर क़दम रखना है. एक ओर इसलाम पूर्व के स्थानों की खुदाई हो रही है तो दूसरी ओर इसलामी स्मारकों के जीर्णोद्धार पर भी काफ़ी पैसा ख़र्च किया जा रहा है. इन में विशाल तीर्थयात्रा मार्ग दर्व ज़ुबैदा के अवशेष तथा पानी के हौज़ों का वह सिलसिला भी शामिल है जो आज से हज़ार साल पहले बग़दाद से मक्का जाने वाले मुसलिम तीर्थ यात्रियों के पड़ावों पर बनाए गए थे. फिर पुराने शहर दरियाह की भी नोक पलक सवारी जा रही है. यह १८ वीं शताब्दी में आरंभ हुए वहावी आंदोलन की जन्मभूमि है. और आधुनिक सऊदी राज के संस्थापक स्वर्गीय बादशाह अब्दुल अज़ीज़ इब्न अब्दुल रहमान अल फ़ज़ल अल सऊद के कच्ची ईंट गारे से बने मुरब्बा महल का जीर्णोद्धार भी किया जा रहा है.

अपना इतिहास लिखेंगे. सऊदी विद्वान और विद्यार्थी पिछली कठिनाइयों से घबराए नहीं हैं. "अब सब कुछ बदल गया है." रियाद के शाह सऊद विश्वविद्यालय के पुरातत्व के एक छात्र ने बताया. उस के इस कथन में अनेक नवयुवक सऊदियों की आवाज़ शामिल है. "कुरान में प्राचीन संस्कृतियों के अनेक उल्लेख हैं. हमारे लिए इस इतिहास की खोज आवश्यक है, ताकि हमें पता लग सके कि अतीत में लोग कैसे रहते थे. यूरोप के पुरातत्व वेत्ताओं ने हमारे पुरखों के विषय में ग़लत जानकारी दी है. हम उसे सुधारना चाहते हैं और अपना इतिहास स्वयं लिखना चाहते हैं."

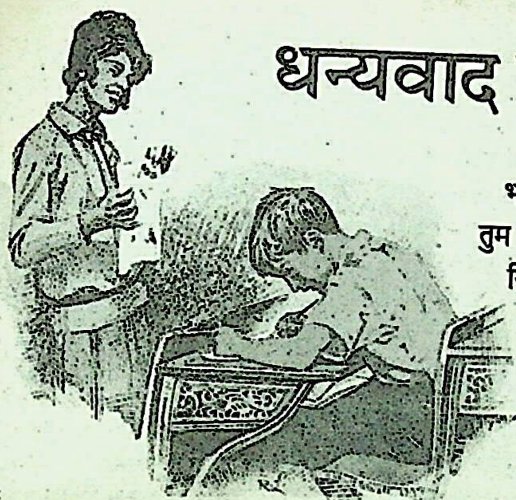
मसरी का अधिकांश काम आदर्श की भावना से परिपूर्ण है. "हमारे यहां के अधिकांश लोग प्रशिक्षित नहीं हैं, न उन्हें आधुनिक तकनीकी की जानकारी ही है." मसरी बताते हैं; "ये संग्रहालय जनता के अज्ञान को दूर कर देंगे, और उन में जानकारी तथा सूझ बूझ भरने में सहायक होंगे."

अरब में इसलाम पूर्व इतिहास की अभी रूपरेखा भर मिलती थी. विद्वानों को आशा है कि भविष्य में उत्खनन से होने वाली उपलब्धियां उस रेखांकन में रंग भर देंगी. जलवायु के ऐसे कौन से परिवर्तन थे जिन्हों ने इस धरती को ऐसा बदल कर रख दिया कि एक उपजाऊ क्षेत्र, जो कभी शेरों, हिरनों, और पाषाण युग के लोगों को पालता था, एकदम रेगिस्तान बन गया? ४,००० ईसा पूर्व में मिस्री राजवंशों के उत्थान पर मेसोपोटेमिया का प्रभाव उजागर है—इस प्रक्रिया में अरब ने दोनों सभ्यताओं के बीच सेतु के रूप में क्या योगदान किया था? २,००० ई. पू. में आबादी ज़्यादा और ईसा के जन्म काल में आबादी कम क्यों थी? ये उन प्रश्नों में से कुछ हैं जिन के उत्तर संभवतः सऊदी अरब के इस नए रोचक पुरातत्व कार्यक्रम से मिल जाएं.

दुनिया से बचाव का अतिरिक्त साधन मात्र है हास्य.

—मेल ब्रुक्स

धन्यवाद मिस हार्नबेक



भटके हुए उस शैतान किशोर को तुम ने ज़िंदगी की राह दिखाई और सिखाया कि श्रेष्ठतम से ज़रा भी कम पर समझौता मत करना

रोजर टोरी पीटरसन

क्लीवलैंड के नगर सभागार में मैं २,००० व्यक्तियों के समक्ष पक्षी-विज्ञान पर भाषण दे कर हटा ही था कि मेज़बानों में से एक शख़्स पके बालों वाली एक नाटी सी महिला को मंच तक ले आया. बोला, ''देखिए, यहां आप की एक परिचिता हैं.'' वह यूं मुसकरा रहा था जैसे लोग अकसर तभी मुसकराते हैं जब उन्हें लगता है कि वे किसी को ख़ुश कर रहे हैं.

मैं क्षण भर उन्हें देखता रह गया. उन की आंखों की चमक कुछ कुछ परिचित लगी, पर मैं पहचान न सका.

अपना दुर्बल हाथ आगे बढ़ाती वह मुसकराई, और बोली, ''ब्लांश हार्नबेक.''

ब्लांश . . .हार्नबेक! मेरी स्मृतियां ३० वर्ष पहले के जेम्सटाउन, न्यू यार्क के सातवीं कक्षा के क्लास रूम में पहुंच गई. वहां, मैं समझता हूं, ईश्वर ने ब्लांश हार्नबेक के ज़रिए मेरी ज़िंदगी बदल डाली थी.

११ वर्ष की उम्र में मैं हाथ से निकल चुका था. सहपाठियों से साल भर छोटा होने के कारण मैं खेलों से अलग कर दिया गया था. अतः मेरा उत्साह शैतानियों के ज़रिए फूटने लगा. सारे बच्चे जब दो दो की पंक्ति में सीढ़ियों के नीचे से निकल रहे होते तो मैं बीच में से खिसक कर रेंगता हुआ पिछले फ़ायर एस्केप तक निकल जाता. क्लास में मैं कभी चुप न बैठता. मेरी हथेलियां सख़्तमिज़ाज मिस डिक्सन की छड़ी की बदौलत हमेशा लाल रहतीं. उन्हों ने मेरी मां से शिकायत की थी कि



'रीडर्स डाइजेस्ट' गाइडपोस्ट मैगज़ीन' (मार्च १९८३) से संक्षिप्त, कापीराइट १९८३ ...

मेरे जैसा हठी लड़का उन्हों ने कभी नहीं देखा.

तभी मैं आया सातवीं. कक्षा में. सुनहरे बालों वाली हमारी ख़ूबसूरत टीचर स्कूल में नई नई ही आई थीं. उन्हों ने मुझे महसूस कराया कि ज़िंदगी में जेम्सटाउन की फ़ैक्टरियों और गलियों के सिवा भी बहुत कुछ है. हम सब से वह बोलीं, "ईश्वर को तुम अपने चारों ओर देख सकते हो. जहां भी तुम्हें सुंदरता, या सौम्यता, या प्यार, या करुणा मिले, समझ लो वहां ईश्वर भी है."

मेरे जीवन पर मिस हार्नबेक का बहुत गहरा प्रभाव हुआ. किसी से भी सर्वोत्तम का तक़ाज़ा करने और उसे पाने का उन का अपना तरीक़ा था. कहतीं, "गुज़र बसर का जुगाड़ तो सभी कर लेते हैं. लेकिन जीवन में वास्तविक संतुष्टि तभी मिलती है, जब आप अपने लिए उच्चतम मानदंड बनाएं और उन्हीं के अनुसार जिएं भी!"

मिस हार्नबेक ने ही "ईश्वर की सब से सुंदर रचनाओं में से एक, पक्षियों से" हमारा परिचय कराया. उन्हों ने एक पक्षी क्लब बनाया. दस सेंट सदस्यता शुल्क देने पर हमें बटन होल में टूंगने के लिए तामचीनी का एक ब्रोच भी मिलता जिस पर लाल परों वाली श्यामा चिड़िया अंकित होती. रंगीन चित्रों की सहायता से उन्हों ने हमें भांति भांति की चिड़ियां पहचानना सिखाया. एक बार ईलान ए ईस्टन की प्रख्यात पुस्तक 'बर्ड्स आफ़ न्यू यार्क' में बनाया लुई अगासी फ़्वर्टास द्वारा अंकित नीलकंठ का चित्र दिखा कर उन्हों ने मुझ से कहा. "रोज़र* इस का चित्र बना कर इस में जितनी अच्छी तरह से हो सके, रंग भरो." पक्षियों को पहचानने का यह सब से बढ़िया तरीक़ा है.

मैं ने बड़ी होशियारी से नीलकंठ के नीले पंख रंगे, और काले तथा सफ़ेद रंगों से उसे उभार निखार दिया, उस की बांकी कलंगी और रोमिल भूरी छाती बनाई. इसे देख कर जब मिस हार्नबेक ने कहा, "वाह! क्या कहने रोज़र!" तो मैं रोमांचित हो उठा.

एक बार. अप्रैल के शुरू शुरू के दिन थे. शनिवार की कुहरीली सुबह मैं जंगल में चलता चला गया. एक बड़े से पेड़ की शाख पर, आंख की सीध में मैं ने एक चूज़ा सा देखा, जिस की गरदन पंखों के बीच छिपी थी. मेरा दिल डूबने लगा; लगा वह मर चुकी है.

नज़दीक पहुंच कर मैं ने उस की रोमिल पीठ छुई. और लो, अचानक एक सुनहरा विस्फोट सा हुआ—और वह उड़ गई. उस की छाती की काली चकत्ती और लाल चाप से मैं पहचान गया कि यह नर कठफोड़वा था, जिसे शायद प्रवास उड़ान ने निढाल कर डाला था.

उस पक्षी को पहचान लेने से मेरा हृदय छलक उठा. वह सत्र समाप्त होने पर मिस हार्नबेक कहीं और चली गईं; किंतु मेरे भीतर वह एक ज्योति जगा गई थीं. मैं ने अपनी किताबों कापियों के हाशिए पक्षियों के रेखांकनों से भर डाले.

हाई स्कूल के बाद मैं कामर्शियल आर्ट पढ़ने लगा, लेकिन १९३१ में मासाचूसेट्स आने पर मैं प्रकृति विज्ञान तथा कला पढ़ाने लगा. यहीं मेरे एक मित्र ने मुझ से पक्षियों पर एक पुस्तक लिखने और उस के चित्र बनाने का आग्रह किया. और ताज्जुब कि २,००० प्रतियों का इस का पहला संस्करण सप्ताह भर

*उड़नी चिड़ियों को पहचानने की ... र टोरी पीटरसन की प्रणाली ने पक्षियों के लाखों नए रसिक पैदा किए हैं. उन की क्लासिक पुस्तक 'ए फ़ील्ड गाइड टु द बर्ड्स' के ५० से भी अधिक मुद्रण हो चुके हैं. उन की लेखनी अथवा कूची से प्रकृति संबंधी १४ अन्य गाइडें भी प्रसूत हुई हैं.

में ही बिक गया. यह एक गाइड बुक थी. कालांतर में इसे तीन बार संशोधित व पा वर्धित किया गया. इस बीच आडोवन सोसाइटी (पक्षी क्लब) के शिक्षा निदेशक की हैसियत से मैं ने अनेक व्याख्यान दिए.

ऐसे ही एक व्याख्यान के बाद छोटे क़द व भूरे बालों वाली इस महिला से मुझे मिलाया गया था. मिस हार्नबेक ने हंसते हुए स्वीकार किया कि मेरी लिखी गाइड बुक कुछ दिन तक इस्तेमाल करने के बाद ही उन्हें बाद में पता चला कि इस का लेखक वही ११ वर्षीय लड़का है जिसे उन्हों ने एक बार नीलकंठ का चित्र दिखाया था.

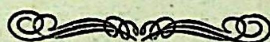
"कितनी तो मैं ख़ुश हुई, रोजर,' उन्हों ने भावविह्वल हो कर कहा. "वैसे, यह सच है कि उस पक्षी का चित्र बनाने में मन प्राण जुटा दिए थे तुम ने. उसे यथासंभव श्रेष्ठ बनाने के लिए कड़ी मेहनत की थी."

मेरे प्रकाशकों ने मुझे इस गाइड का चौथा संस्करण तैयार करने को कहा तो ये शब्द मुझे पुनः याद आ गए. गाइड का संशोधन एक दुष्कर कार्य सिद्ध हुआ—क्योंकि और भी किताबें लिखने को पड़ी थीं, भाषण भी देने थे और दुनिया भर की असंख्य चिड़ियों का अध्ययन करना था. लेकिन पहले पहल जब मेरी गाइड छपी थी, तब से अब तक मैं फ़ील्ड गाइडों के और पक्षियों के बारे में बहुत कुछ सीख और जान चुका था, और कहीं बेहतर चित्रकार बन चुका था. मैं यथासंभव श्रेष्ठतम से नीचे काई समझौता नहीं करना चाहता था.

सारे काम छोड़ कर मैं लगभग १,००० पक्षियों के १३६ रंगीन चित्र दोबारा बनाने पर जुट गया. मैं ने ३८४ पृष्ठों के ले-आउट बनाए. मेरी पत्नी वर्जीनिया ऋतु के अनुसार पक्षियों के अवास क्षेत्रों की जानकारी देने वाले ३९० नक्शे बनाने में जुट गई. तीन वर्ष तक हम लोग रोज़ाना दस दस घंटे काम करते रहे.

अंततः १९८० में जब 'ए फ़ील्ड गाइड टु द बर्ड्स ईस्ट आफ़ द राकीज़' प्रकाशित हुई तो अपने आप में नई ही पुस्तक बन चुकी थी.

एक प्रारंभिक प्रति को खोल कर पृष्ठ १९१ पर बने पीली पूंछ वाले एक कठफोड़वे को देखना मुझे कभी नहीं भूलेगा. इस ने सब कुछ एक सूत्र में पिरो दिया था: वसंत के दिनों में जंगल में जाना, अचंचक उड़ान का वह सुनहरा विस्फोट और ब्लांश हार्नबेक जिन्हों ने मेरी घुट्टी में उतारा था कि यथाश्रेष्ठ ही यथेष्ट है.



दिशा सूचक

होटल वालों को चाहिए कि अपने सभा कक्षों के नाम कंपास की दिशाओं के नाम पर रखने से पहले कुछ सोच विचार कर लिया करें. 'नार्थ रूम' और 'साउथ रूम' जैसे नाम कल्पनाशीलता का अभाव दरशाते हैं. वैसे भी नाम रखते समय बहुत सी दूसरी बातों का ध्यान रखना चाहिए. अन्यथा . . .

किसी होटल में आयोजित सभा में भाग लेने गई एक महिला ने जल्दी में एक व्यक्ति से 'वेस्ट रूम' का रास्ता पूछा तो उस ने वेस्ट का 'रेस्ट' सुना और आप समझ ही गए होंगे कि उसे कहां भेज दिया गया—शौचालय.

—'जरनल', आयोवा

आस्ट्रेलियाई फ़िल्मों की नई लहर

जे पामर

पिछले कुछ वर्षों में आस्ट्रेलिया की फ़िल्मों ने समालोचकों और सिने प्रेमियों को समान रूप से आंदोलित किया है

न्यूयार्क शहर की एक गरम और उमस भरी शाम. लोग एक ऐसी फ़िल्म देखने के लिए लाइन लगाए खड़े हैं जिस के विज्ञापन में कहा गया है: "एक ऐसी जगह की फ़िल्म जिस के बारे में आप ने कभी सुना न होगा . . .एक ऐसी कहानी जिसे आप कभी भुला न पाएंगे." फ़िल्म का नाम है 'गैली-पोली.' बाक्स आफ़िस पर सफलता प्राप्त करने वाली शायद यह आस्ट्रेलिया की पहली अंतर-राष्ट्रीय फ़िल्म है.

अगर १९४० का दशक इटली की फ़िल्मों का माना जाए (जिस में रोसालीनी और डी सीका चमके), १९५० का दशक फ़्रांसीसी फ़िल्मों का (गोदार और त्रूफ़ो) तथा १९६० का दशक पूर्वी यूरोप की फ़िल्मों का (फ़ारमैन तथा पोलांस्की) तो १९७० के दशक का कुछ भाग आस्ट्रेलिया की फ़िल्मों का अवश्य माना जा सकता है. वहां की सरकार द्वारा संरक्षित फ़िल्म उद्योग में प्रतिभाशाली युवा फ़िल्म निर्माताओं का दल उभरा. चरित्र चित्रण, कथानक तथा छवि, हर दृष्टि से इन की फ़िल्मों में एक स्तरीय सौंदर्य था. इन फ़िल्मों की कहानियां उस महाद्वीप की भव्य पृष्ठभूमि पर आधारित थीं जिस से आस्ट्रेलिया वासी स्वयं अनभिज्ञ थे.

इन फ़िल्मों को फ़िल्म समारोहों में तो सफलता मिली, लेकिन वे व्यापारिक सफलता नहीं पा सकीं. यहां तक कि पीटर वियर कृत 'पिकनिक ऐट हैंगिंग राक', गिलियन आर्म-स्ट्रांग की 'माई ब्रिलियंट कैरियर' तथा ब्रूस बेरिजफर्ड निर्मित 'ब्रेकर मोरांट' जैसी फ़िल्मों की सराहना तो बहुत हुई, लेकिन अन्य विदेशी फ़िल्मों की तुलना में ये कुछ अर्जित नहीं कर पाईं. १९७२ से १९७९ के दौरान प्रति वर्ष १५ के लगभग बनने वाली अन्य फ़िल्मों का भी यही हश्र हुआ.

इस का कारण? आस्ट्रेलिया की डेढ़ करोड़ की आबादी से तो बहुत कमाई हो नहीं सकती और विदेशों के बड़े वितरकों ने कम जाने माने निर्देशकों, कलाकारों और उन की कहानियों में अभी तक रुचि नहीं दिखाई है. जब तक निर्माण व्यय कम था और अधिकांश ख़र्च सरकार उठा रही थी, तब तक तो चिंता की बात नहीं थी, पर अब फ़िल्म निर्माण का बजट बढ़ता चला जा रहा है. केवल सरकारी सहायता से काम नहीं चलने वाला. इसी लिए

टाइम (२८ सितंबर १९८१) से संक्षिप्त, कापीराइट १९८१ टाइम इनकार्पोरेटेड

फ़िल्म उद्योग के अस्तित्व के लिए विदेशी आय का महत्व एकाएक ही बढ़ गया है.

सफलता की ओर? इस दृष्टि से तथा अन्य कारणों से भी वियर कृत 'गैलीपोली' कसौटी बन गई है. इस फ़िल्म में राबर्ट स्टिगवुड तथा रूपर्ट मरडोक ने अपना पैसा लगाया था. यह पहली स्थानीय फ़िल्म है जिस का वितरण विदेशों में पैरामाउंट जैसा फ़िल्म वितरक कर रहा है. इस का बजट भी अब तक की सारी फ़िल्मों में सर्वाधिक था—३० लाख अमरीकी डालर. अगर यह फ़िल्म सफल हो जाती है तो पूंजी लगाने वालों को यह भरोसा हो जाएग कि अंतरराष्ट्रीय ख्याति के बड़े बड़े सितारों के विना और अपनापन न छोड़ते हुए भी आस्ट्रेलिया की फ़िल्में पैसा कमा सकती हैं. अगर यह फ़िल्म भी असफल हो गई तो आस्ट्रेलियाई फ़िल्मों की नई लहर बुलबुला बन कर रह जाएगी.

आस्ट्रेलियाई फ़िल्म क तौर पर पीटर वियर की जिस फ़िल्म को पैरामाउट ने वितरण के लिए चुना है, उस से अच्छा चुनाव और नहीं हो सकता था. २१ अगस्त १९४४ को जनमा, ३८ वर्षीय गोरा छरहरा यह पहला फ़िल्म निर्देशक है जिसे 'द कार्स दैट एट पेरिस' (१९७४), 'पिकनिक ऐट हैंगिंग राक' (१९७५) तथा 'द लास्ट वेव' (१९७७) नामक फ़िल्मों के कारण अन्य आस्ट्रेलियाई निर्देशकों की अपेक्षा विदेशों में सब से अधिक ख्याति प्राप्त हुई है. इस पर भी उसे 'गैलीपोली' के निर्माण के लिए पैसा जुटाने में बड़ा संघर्ष करना पड़ा. पैसा लगाने वालों को एतराज़ था कि यह फ़िल्म बहुत अधिक आस्ट्रेलियाई है, कि इस में नामी सितारे नहीं हैं, कि इस की कहानी आस्ट्रेलिया की उस ऐतिहासिक घटना पर आधारित है जो शायद ही किसी ने पढ़ी सुनी हो. वियर का कहना है, "सब यही समझते थे कि आस्ट्रेलिया की अन्य फ़िल्मों की तरह यह भी बुरी तरह असफल रहेगी."

वियर तथा दूसरे निर्देशकों के सौभाग्य से बहुत सी बातें उन के पक्ष में रहीं. आस्ट्रेलिया में सुप्रशिक्षित तथा अनुभवी छायाकार और फ़िल्म टेकनीशियन ख़ासे हैं. छायाकार और टेकनीशियनों का यह वर्ग पचासादि दशक के अंतिम भाग में उस समय तैयार हुआ था जब सरकार, यूनियन और फ़िल्म उद्योग ने मिल कर तय किया था कि टेलीविज़न के लिए बनने वाली सारी विज्ञापन फ़िल्में आस्ट्रेलिया वासियों द्वारा ही निर्मित होनी चाहिए. सामान्यतः फ़िल्मों पर बहुत कम लागत आती थी. १९७६ में निर्मित डोनाल्ड क्रोंबी की सफल फ़िल्म 'कैडी' पर केवल ४,००,००० डालर की लागत आई थी जबकि 'ब्रेकर मोरांट' जैसी फ़िल्म पर ९,६०,००० डालर ख़र्च हुए थे. यह लागत इतनी कम थी कि आश्चर्य होता था क्योंकि औसत अमरीकी फ़िल्म पर उन दिनों भी ६० लाख से ८० लाख डालर तक उठ जाते थे.

आस्ट्रेलिया में बनने वाली बाल फ़िल्मों से ले कर अश्लील फ़िल्मों तक में एक बात समान है और वह है उत्तम निर्देशन तथा देश की जीवंत दृश्यावली. उच्चारण, हास्य तथा विचार—हर दृष्टि से ये फ़िल्में पूर्णतः आस्ट्रेलियाई हैं.

भोलापन और उत्साह. अभिनेता ब्रायन ब्राउन का कहना है, "हमारी फ़िल्में अमरीकी फ़िल्मों जैसी चुस्त और टेकनिकल दृष्टि से दोषहीन तो नहीं होतीं, लेकिन उन में संवेदनशीलता ज़रूर होती है." निर्माता फ़िलिप एडम्स

का कहना है, "हम तो बच्चों के से कलाकार हैं. भोलापन और उत्साह ही हमारे गुण हैं." सारी ताज़गी के बावजूद आस्ट्रेलिया का फ़िल्म उद्योग नवजात नहीं माना जा सकता. यह तो ८६ वर्ष पहले शुरू हो गया था. १८९६ में आस्ट्रेलिया के नगरों की रोज़मर्रा की ज़िंदगी पर छोटी छोटी फ़िल्में बनने लगी थीं. दस साल बाद आस्ट्रेलिया में बनी वह फ़िल्म जिसे कुछ फ़िल्म इतिहासकार दुनिया की पहली फ़ीचर फ़िल्म मानते हैं. वह फ़िल्म थी 'द स्टोरी आफ़ द कैली गैंग'. यह एक घंटे की फ़िल्म थी और मेलबर्न, सिडनी तथा एडिलेड में पांच हफ़्तों तक चली. हाल हमेशा खचाखच भरे रहते थे. १९०७ में यह फ़िल्म इंगलैंड पहुंची, तव इस की ख्याति 'दुनिया की सब से लंबी फ़िल्म' के रूप में थी.

१९१० से १९२० के बीच आस्ट्रेलिया का फ़िल्म उद्योग प्रति वर्ष लगभग १५ फ़ीचर फ़िल्में प्रदर्शित करता रहा. इन में १९१९ की 'द सेंटिमेंटल ब्लोक' जैसी बढ़िया फ़िल्म भी थी. इस के बाद ज़माना आया बोलती फ़िल्मों का और हालीवुड का आधिपत्य छाने लगा. एरल फ़्लिन और पीटर फ़िंच जैसे आस्ट्रेलियाई अभिनेताओं ने अपना उच्चारण छोड़ा और हालीवुड के सितारे वन गए. उस समय आस्ट्रेलिया का वितरण व्यवसाय लगभग सारे का सारा विदेशियों के हाथ में था. फ़िल्मों में पूंजी लगाना तो दूर, उन्हें आस्ट्रेलियाई फ़िल्मों को प्रदर्शित करने तक में रुचि न रही. १९५६ में टेलीविज़न आने पर हालत और विगड़ गई. अमरीका में तैयार कार्यक्रमों की लोकप्रियता से यह भ्रम और भी पक्का हो गया कि आस्ट्रेलियाई लोग ख़ुद ही परदे पर अपने आप को देखना सुनना पसंद नहीं करते.

साठादि दशक में यह मांग उठाई गई कि फ़िल्म उद्योग को सरकारी सहायता मिलनी चाहिए. १९६९ में जब जान गोर्टन प्रधान मंत्री थे, तब यह मांग पूरे ज़ोर शोर से की गई. हालांकि वे कोई सिनेमाप्रेमी नहीं थे, लेकिन इस सुझाव से सहमत थे कि पर्यटन पोस्टरों या ब्रोशरों की अपेक्षा फ़िल्मों से राष्ट्र को ज़्यादा अच्छी तरह प्रतिविंबित किया जा सकता है.

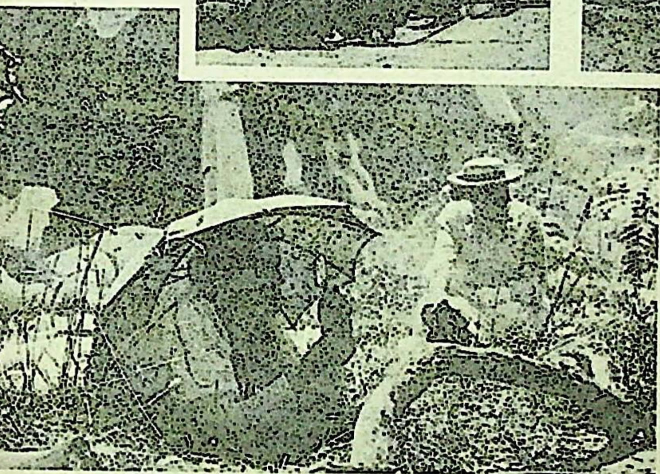
विकास निगम. सत्तरादि दशक के प्रारंभ में गोर्टन सरकार ने आस्ट्रेलिया के फ़िल्म तथा टेलीविज़न स्कूल को वित्तीय सहायता देने का वादा किया. आज आस्ट्रेलिया के अनेक ख्यातिप्राप्त निर्देशक इसी स्कूल की देन हैं. इस के अलावा गोर्टन सरकार ने ४० लाख डालर की पूंजी से आस्ट्रेलिया के फ़िल्म विकास निगम की स्थापना की. गोर्टन की एक विशेष हिदायत थी, "यह निगम सिर्फ़ उन्हीं लोगों की सहायता तक सीमित न रहे जो बौद्धिक और अति कलात्मक फ़िल्में बनाने में विश्वास रखते हैं." इस निगम का नाम बाद में 'आस्ट्रेलियन फ़िल्म कमीशन' रख दिया गया. उक्त आदेश के अलावा अनुदान, ऋण या विनियोग द्वारा फ़िल्म बनवाने के संबंध में ऐसी कोई रोकटोक नहीं रखी गई जो भविष्य में मुनाफ़े की दृष्टि से बाधक होती.

इस आयोग के सदस्यों में निर्माता, निर्देशक, अभिनेता और वितरक सभी शामिल थे. प्रारंभ से ही आयोग की नीति थी कि किसी भी फ़िल्म को ५० प्रति शत, सामान्यतः ३० प्रति शत से अधिक सहायता न दी जाए. आयोग ने इस बात पर भी बल दिया कि फ़िल्मों में, अपवाद छोड़ कर, अभिनेता, निर्देशक तथा टेकनीशियन आस्ट्रेलिया के ही हों. यह मांग भी की गई कि सभी फ़िल्मों की शूटिंग आस्ट्रेलिया में ही की जाए और पैसा लगाने वाले आस्ट्रेलियाई नागरिक ही हों. शीघ्र ही

पीटर वियर की फिल्म "गैलीपोली" के दो दृश्य







पीटर वियर की ही दूसरी फिल्म "पिकनिक ऐट हैंगिंग राक" में ऐन लैंबर्ट

"माई ब्रिलिएंट कैरियर" में सैम नील के साथ जूडी डेविस



"ब्रेकर मोरांट" में एडवर्ड ऊड और ब्रेयन ब्राउन



राज्य सरकारों ने भी अपने अपने आयोग बना लिए और पैसा लगाने वाली ग़ैरसरकारी पार्टियां भी सामने आ गईं.

हालांकि शुरू शुरू की फ़िल्में प्रभावशाली नहीं बन पाईं, पर धीरे धीरे फ़िल्मों में सुधार नज़र आने लगा. 'पिकनिक' के छाया निर्देशक रसल बायड को १९७७ में ब्रिटिश एकेडमी आफ फ़िल्म एंड टेलीविज़न का सर्वश्रेष्ठ छायाकारी का पुरस्कार मिला. चार वर्ष बाद जूडी डेविस को 'माई ब्रिलियंट कैरियर' में अभिनय करने के फलस्वरूप सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का ब्रिटिश पुरस्कार प्राप्त हुआ. इस पर भी अंतरराष्ट्रीय स्तर के बड़े वितरकों ने आस्ट्रेलियाई फ़िल्मों में रुचि नहीं ली. इस कारण फ़िल्मों को विदेशों में छोटे छोटे स्वतंत्र वितरकों के ज़रिए ही बेचना पड़ा. फ़िल्म का प्रचार बजट भी बहुत कम था—केवल ५०,००० डालर, जबकि 'ब्लो आउट' जैसी अमरीकी फ़िल्म के लिए यह ख़र्च था ९० लाख डालर.

इस तरह आस्ट्रेलिया की फ़िल्में नियमित रूप से देश विदेश के छोटे छोटे कला थियेटरों में दिखाई जाने लगीं, लेकिन प्रथम प्रदर्शन के दौरान शायद ही किसी आस्ट्रेलियाई फ़िल्म को मुनाफ़ा हुआ हो. १९७९ में आयोग ने घोषणा की कि भविष्य में किसी भी फ़िल्म को सहायता देने से पूर्व उस की व्यावसायिक सफलता की संभावना की कड़ाई से जांच की जाएगी. इस से अधिकांश पैसा लगाने वाले लोग घबरा गए. स्टिगवुड और मरडोक जैसे लोग अपवाद स्वरूप हैं. मई १९८० में उन्हों ने एसोसिएटेड आर ऐंड आर फ़िल्म्स की स्थापना की. यह कंपनी लाखों डालर की लागत वाली और अधिक फ़िल्मों में पैसा लगाएगी. मरडोक के लिए पहली फ़िल्म 'गैलीपोली' में पैसा लगाने का व बिलकुल निजी था. १९२१ में मेलबर्न 'हेरल्ड' का संपादक बनने से पहले उस पिता कीथ ने ब्रिटिश सरकार के सा गैलीपोली कांड का परदाफ़ाश कर के नाम कमाया था.

१९८० में फ्रेज़र सरकार ने आयोग पूंजी बढ़ाने के लिए करों में रियायत प्रस्ताव रखा. फ़िल्म उद्योग में पूंजीपतियों आकर्षित करने के लिए यह छूट रखी गई वे अपने विनियोजित धन का १५० प्रति फ़िल्म पूरी होने से पहले ही अपने करों में काट सकते हैं. लेकिन जून १९८० में प्रस्ताव अंततः स्वीकृत हुआ, वह इतना आ र्षक नहीं था. मुख्य संशोधन यह हुआ जब फ़िल्म से आय होने लगेगी, तभी क से कटौती हो पाएगी. इस संशोधन के क ही अनेक फ़िल्मों की योजनाएं ठप हो

नाजायज. इस के अलावा यह डर भी कि कूटबुद्धि व्यापारी कर बचाने के लिए फिल्में बनाने लगेंगे जिस से फ़िल्मों की गु वत्ता पर बुरा असर पड़ेगा. कनाडा की सरक करों में ख़ूब कटौती कर के ही फ़िल्म उ को सहायता प्रदान की थी. 'गैलीपोली' पटकथा लेखक डेविड विलियमसन का क है: "इन रियायतों के कारण कनाडा के व्यवसायी निर्माता नाम मात्र की ऐसी कह पर इतनी फ़िल्में बनाने लगे, जैसे 'मां के बेटे के नाजायज़ संबंध—पिता का अंत कनाडा को 'उत्तरी हालीवुड' कहा जाने ल

सब से बड़ी बात है अमरीका की बड़ी फ़ि और ऊंचे वेतनों के आकर्षण में प्रतिभाओं बाहर चले जाना. जूडी डेविस और अभि जैक टांपसन अब गोल्डा मेयर की ज़िंदगी अमरीकी टेलीविज़न के लिए बनाई जा

एक फ़िल्म में काम कर रहे हैं. राक एंड रोल नृत्य पर आधारित संगीतप्रधान फ़िल्म 'स्टार-स्ट्रक' पूरी कर लेने के बाद आर्मस्ट्रौंग को अमरीका में दो और फ़िल्में बनानी हैं. बेरिज़फ़र्ड ने पैरामाउंट के लिए बाइबिल पर आधारित एक फ़िल्म बनाना स्वीकार कर लिया है, लेकिन इस से पहले वह टेक्सास में एक फ़िल्म की शूटिंग पूरी करेगा.

आस्ट्रेलिया में इस समय ऐसी २१ फ़िल्में बन रही हैं जो शूटिंग या संपादन के विभिन्न चरणों में हैं. उन का बजट भी 'गैलीपोली' के समान है. कुछ में बड़े बड़े नाम वाले विदेशी अभिनेताओं को ले कर यह कोशिश की गई है कि बाक्स आफ़िस की सफलता निश्चित हो जाए. जिस तरह 'द लास्ट वेव' में अमरीकी अभिनेता रिचर्ड चेंबरलेन और 'ब्रेकर मोरांट' में ब्रिटेन का एडवर्ड वुडवर्ड था, उसी तरह 'द मैन फ़्राम स्नोई रीवर' में जैक टांपसन के साथ अमरीका के किर्क डगलस को रखा गया है. इसी प्रकार 'ए बर्निंग मैन' में ब्रिटिश अभिनेता जेम्स मेसन है.

इस के साथ ही साथ एक बुनियादी बहस बराबर चल रही है कि अपने देश के लिए ही फ़िल्में बनाना अच्छा है या अंतरराष्ट्रीय बाज़ार के लिए फ़िल्में बनाना. क्रौंबी का कहना है, "हम अपने उच्चारण और नामी सितारों के अभाव में अमरीकी बाज़ार में पूरी तरह नहीं छा सकते." इसी संदर्भ में फ़िलिप एडम्स का विचार है, "जब तक हम ऐसे बाज़ार में नहीं पहुंच जाते जहां हमारी फ़िल्मों की समीक्षा केवल इन्हीं शब्दों तक सीमित न हो कि 'फ़िल्म में आस्ट्रेलिया के महत्वपूर्ण, नवोदित फ़िल्म उद्योग की पूरी झलक मिलती है,' तब तक पूंजी लगाने वालों को अपना पैसा मुश्किल से ही वापस मिलेगा."

कुछ लोग इस से असहमत हैं. बेरिज़फ़र्ड की चेतावनी है कि "अगर फ़िल्म निर्माता अर्ध अंतरराष्ट्रीय होने की कोशिश करते हैं तो उन की फ़िल्मों में वही गुण समाप्त हो जाएगा जिस के बल पर उन्हें ख्याति मिली है." ब्रिटिश अभिनेता जेम्स मेसन का कहना है: "ब्रिटिश फ़िल्म उद्योग का ह्रास सिर्फ़ इसी लिए हुआ कि उस ने अमरीकी फ़िल्मों के बाज़ार को जीतने की कोशिश की थी.'

फ़िल्म उद्योग में आई यह तेज़ी निर्माताओं के कौशल और उत्साह पर ही स्थायी रह सकती है. क्रौंबी का कहना है, "हमें केवल अपनी श्रेष्ठ प्रतिभाओं का सदुपयोग करना चाहिए और उस के फलस्वरूप लाभ की आशा करनी चाहिए." 'गैलीपोली' की उपलब्धि यही है.



कमर तोड़

वसंत आ चुका था सो घर की सफ़ाई के मोर्चे पर डटी पत्नी ने अपने सेवामुक्त पति को भी काम में लपेट लिया. पति ने बाग़ की गोड़ाई कर के पौधे रोपे, खिड़कियां साफ़ कीं, नालियों की सफ़ाई की; और इतना सब कर के वह निढाल हो गया. आराम करने की ग़रज़ से वह बरामदे में लगे झूले पर आ बैठा. पत्नी को कमानियों की चरमराहट सुनाई दी तो वह भीतर से चिल्लाई, "तो आप पसर गए?"

पति ने तत्काल उत्तर दिया, "हां, मगर चिंता मत करो. मैं ने अभी कमर नहीं टिकाई."

—'गज़ेट', चार्ल्सटन



लड़ाकू विमान एफ़-१५ में रोमांचक उड़ान

वायु सेना का मेजर डिक एंडरेग अमरीकी रक्षा मंत्रालय पेंटागन में काम करता है. उस दिन वह मुझ से बोला, "अगर तुम 'उकाबों' के साथ उड़ना चाहते हो, तो तुम्हें इस की कीमत भी चुकानी होगी."

अमरीकी वायु सेना अपने आलोचकों का दिल मेहमाननवाज़ी और टेकनिकल टीमटाम के बूते पर जीतने के लिए मशहूर है. मैं अधिक से अधिक जटिल, घातक और खर्चीले शस्त्रों की दिशा में अमरीकी सेना के बढ़ते चले जाने की नीति के दुष्परिणामों के बारे में लिख कर इस आतिथ्य का पात्र बन चुका था. जिन अस्त्रों की मैं ने आलोचना की थी उन्हीं में से एक था उकाब, यानी 'ईगल', यानी एफ़-१५ लड़ाकू विमान. लेख छपने के बाद वायु सेना ने विमान चालकों तथा अन्य अधिकारियों के साथ मेरी कई बैठकें रखीं, जिन में इन सब ने 'ईगल' की अद्‌भुत क्षमताओं के गुण गाए. एक बैठक के अंत में मैं कह बैठा कि यह विमान अगर इतना चमत्कारी है, तो इस की सवारी बड़ी दिलचस्प होगी. इस पर वायु सेना के डायरेक्टर आफ़ आपरेशंस ने मुझे मेयर एंडरेग के हवाले कर दिया.

जेम्स फ़...

एंडरेग जिस 'क़ीमत' की बात कर रहे थे, ह थी उड़ान से पहले के परीक्षणों तथा शेक्षण की शृंखला. इन में से एक थी कड़ी क्टरी जांच. फिर नंबर आया एंड्रूज एयर र्स बेस पर 'दैहिक प्रशिक्षण' का. इस में ताया जाता है कि अत्यधिक ऊंचाई पर उड़ने ले विमान में, निम्न दाब और कम ाक्सीजन वाले वायुमंडल में उड़ान भरने से नुष्य के शरीर पर क्या प्रभाव पड़ते हैं. एक स्ट चेंबर में इस तरह की कृत्रिम स्थितियां दा की जाती हैं.

चेंबर में सार्जेंट क्लार्क मिटन ने कम दाब ा कानों तथा शरीर के अंदर की गैसों पर होने ाले प्रभाव का बाक़ायदा प्रदर्शन किया. वायु-ंडलीय दाब धीरे धीरे इतना (कम) कर दिया ाया, जितना कि लगभग १०,५०० मीटर की ंचाई पर होने की संभावना थी. सार्जेंट ने मुझे क जार दिखाया जिस के मुंह पर डाक्टरी स्ताना लगा था. हवा का दाब समुद्र तल जतना करने पर दस्ताने में झोल पड़ा था; परंतु ०,५०० मीटर की ऊंचाई करने पर वह किसी ास्केट बाल जितना फूल गया. मुझे लगा मानो चमुच कोई बास्केट बाल मेरे उदर में समा ाया है.

इस के बाद सार्जेंट मिटन ने आक्सीजन की कमी के प्रभावों का प्रदर्शन किया, ताकि मैं रिस्थिति को बख़ूबी समझ लूं. यह काम कठिन नहीं था. ७,५०० मीटर की ऊंचाई जितना दाब होने पर सार्जेंट ने मुझे आक्सीजन मास्क उतार देने को कहा, और मुझे एक विवरण पत्र थमा दिया. इस के बाईं ओर गिनतियां भरने तथा तर्कशक्ति की जांच करने वाली अन्य चीज़ों के ख़ाने थे; दाहिनी ओर के कालम में लक्षणों की सूची थी, करना यह था कि अंक पहेलियां सुलझा कर प्रासंगिक लक्षणों के गिर्द घेरे बना दिए जाएं. ३० सेकंड में एक गणित पहेली को हल करना ख़ासी चुनौती थी. एक मिनट बाद मैं लक्षणों की सूची में 'चक्कर आ रहे हैं' और 'नींद आ रही है' के गिर्द टेढ़े मेढ़े गोल घेरे बना रहा था.

'माइकेलिन टायर मैन'. इस के बाद मैं वर्जीनिया की लैंगेल एयर फ़ोर्स बेस पर गया. उड़ान वाले दिन मुझें ये चीज़ें दी गईं: एक आक्सीजन मास्क; एक हेलमेट, जिस के ऊपर नेत्रों की रक्षा के लिए वाइज़र था और जिस के कपाल शिखर पर पसीना सोखने के लिए नरम नरम रूई की एक परत थी; एक पैराशूट हार्नेस, जिसे पहन कर गुरिल्ले की तरह झुके झुके चलना पड़ता है; और एक जी-सूट (गुरुत्वरोधी परिधान).

जी-सूट कवरआल (एकल परिधान) का लघु रूप है. धड़ को पसलियों से टखनों तक ढकने वाला यह परिधान फूलने वाले रबड़ की थैलियों का बना होता है. ये थैलियां पीठ के निचले हिस्से, कूल्हों व पिंडलियों के नीचे बिछी होती हैं. लड़ाकू विमान जब घातक हमला करते हैं तब इस के चालकों को सामान्य गुरुत्वाकर्षण से कई गुना अधिक बलवती शक्ति के झटके लगते हैं. जी-सूट इन झटकों की आघात शक्ति कम कर देता है. विमान में जी-सूट एक जातीय प्रणाली से जुड़ा होता है जो उच्च गुरुत्वाकर्षी शक्तियों के सक्रिय होते ही रबड़ की थैलियों को अपने आप फुला देता है. एक सार्जेंट ने साइकिल में हवा भरने वाले पंप से जी-सूट में हवा भरते हुए कहा, "आप को कुछ ऐसा महसूस होगा." जी-सूट फूलने पर मुझे लगा मानो मेरे गिर्द गुब्बारों के कुशन हों.

मेरे प्रशिक्षण में एक और चीज़ शामिल थी,

शनल डिफ़ेंस के लेखक जेम्स फ़ैलोज़ 'अटलांटिक ंथली' के वाशिंगटन संपादक हैं.

'अटलांटिक मंथली, नवंबर १९८१ से संक्षिप्त. कापीराइट जेम्स फैलोज़.

फोटो: हरमान काकेनन

जिसे आपातकालीन निष्क्रमण प्रशिक्षण कहते हैं. लेफ़्टिनेंट एड कैंटवेल ने मुझ बताया कि बहुत ऊंचे उड़ाते विमान से निकलने के लिए मुझे सिर्फ़ सीट पर पीठ के बल टिक जाना होगा; बाक़ी काम स्वचालित यंत्र अपने आप कर लेंगे. १०,५०० मीटर की ऊंचाई का मतलब होता है हवाई जहाज़ के बाहर तापमान शून्य से ६५ डिगरी फ़रेनहाइट नीचे है. यानी वायुमंडल में सांस लेना शब्दशः असंभव है. उड़ाके को अगर इस ऊंचाई पर विमान त्यागना हो तो उसे ४,००० मीटर की ऊंचाई तक ख़ुद यूं गिरते चले जाना होगा जैसे आसमान से कोई पत्थर ज़मीन पर गिर रहा हो. यानी छः किलोमीटर तक बिना पैराशूट के लुढ़कना, जिस में क़रीब तीन मिनट लगेंगे. इस दौरान एक छोटा सा छतरीनुमा हवाई लंगर अपने आप खुल जाएगा जो कुरसी को सीधा साधे रहेगा. इस कुरसी में विशेष संवेदी यंत्र लगे होते हैं, जो ठीक वक़्त पर (सही वायुमंडल के आते ही) पैराशूट खोल देते हैं. मेरे ख़याल से इन लड़ाकू विमानों के चालक बेहद आस्थावादी रहे होंगे.

उड़ान से पहले कैप्टन डोनाल्ड रास ने कुछ जानकारियां दीं. वे जो एफ़-१५ उड़ाने वाले थे, उसी के पीछे पीछे लेफ़्टिनेंट कर्नल टामस बारबर के एफ़-१५ में मैं उड़ने वाला था. इन दोनों उड़ाकों को रूस के फ़्लागर विमानों की भूमिका निभाने वाले एफ़-४ लड़ाकों से निपटना था. अभ्यास की रूपरेखा यूं थी: 'फ़्लागर' नाटो के एक हवाई अड्डे की ओर बढ़े जा रहे हैं. एफ़-१५ उक़ाबों को उन्हें लक्ष्य तक पहुंचने से पहले ही मार गिराना था. यह अभ्यास अतलांतिक सागर के ऊपर किए जाने वाले इस अभ्यास में यह दिखाया जाना था कि एफ़-१५ की इलेक्ट्रानिक और राडार पद्धति से कैसे बहुत दूर पर उड़ते विमानों को खोज लेती है और कैसे राडार के निर्देश से तरह तरह के प्रक्षेपास्त्र विमानों को नष्ट करने के लिए छूट नि[illegible] हैं.

शत्रु की छाया: आख़िर विमानों में सवार[illegible] की घड़ी भी आई. यूं तो लड़ाकू विमानों की [illegible] में ये उक़ाब बहुत बड़े हैं, लेकिन यात्री विमान[illegible] देखने के आदी लोगों को ये छोटे ही नज़र आ[illegible] टाम बारबर, जो विमान में क़दम रखने से [illegible] मौन की प्रतिमा बना हुआ था, सहसा सक्रि[illegible] उठा : रेडियो से आदेश निर्देश देता, और उड़ा[illegible] की पड़ताल सूचियों की जांच करता. जल्दी [illegible] सारे विधान ख़त्म हुए और इंजन चालू हो[illegible]

दोनों उक़ाब, इस अभ्यास के लिए जिन[illegible] नाम स्पैड-१ तथा स्पैड-२ रखा गया था, [illegible] पट्टी के अंतिम छोर तक आ कर अगल बग़[illegible] गए ; और दौड़ते दौड़ते जब उड़े तो एक दूस[illegible] एकदम समानांतर थे. मुझे लगा, रास का वि[illegible] हमारे विमान से रगड़ खाने ही वाला है; मैं ने बा[illegible] से पूछा : "दोनों में फ़ासला कितना है?" [illegible] बोला, "दोनों के पंखों के सिरे एक दूसरे से क[illegible] तीन मीटर दूर हैं." गति धारण करने के लि[illegible] मिनट भर तक दोनों आकाश में एकदम [illegible] ऊपर चढ़ते गए.

अतलांतक सागर के ऊपर उड़ते वक़्त, जब[illegible] हमारे विमान एक दूसरे से दूर होते जा रहे थे, [illegible] का दृश्य मुझ केक के टुकड़े जैसा लगा. हमारी [illegible] ८८५ किलोमीटर प्रति घंटा थी, मगर सब [illegible] शांत और सहज था.

बारबर ने 'शत्रु' विमानों को खोजने के [illegible] राडार संवीक्षक दुरुस्त किया. बारबर ने बताया [illegible] शत्रु विमान की छाया दिखते ही वह दुश्मन को [illegible] में लेने वाले विध्वंसक यंत्र का 'घोड़ा' सही बै[illegible] लगेगा. राडार के परदे के दाहिनी ओर कई सं[illegible] चिह्न थे जो यह बता सकते थे कि दुश्मन का वि[illegible] अब प्रहार क्षेत्र में है और उस पर हमला किया [illegible]

सकता है. हर चीज़ यंत्र सम्मत होने पर बारबर बटन दबाएगा और शत्रु के हवाई जहाज़ पर 'प्रहार' कर देगा. वास्तविक युद्ध की स्थिति में राडार से निर्देशित एक प्रक्षेपास्त्र दागा जाता; इस अभ्यास के तहत जैसे ही कंपूटरचालित कमांड सेंटर को यह संकेत मिलेगा कि बारवर ने अपना काम कर दिया है, यानी उक़ाव के प्रक्षेपास्त्र ने पीछा करते 'दुश्मन' को नष्ट कर दिया है तो राडार परदे से शत्रु के विमान की छाया (विलय) तत्काल तिरोहित हो जाएगी.

रह रह कर उलटी. जैसे ही वारबर ने मुझे समझाना ख़त्म किया, रेडियो सेट तिड़तिड़ा पड़ा. स्पैड-१ से रास बोल रहा था: उस ने फ़्लागर देखे हैं. युद्ध शुरू हो गया.

अगले मिनटों में जो कुछ हुआ, वह सब बड़ा गड्डमड्ड और तकलीफ़देह था. अभ्यास समाप्त होने पर, पूरे घटनाक्रम का कंपूटरीकृत विवरण देख कर ही मैं पूरे कांड को तरतीव दे पाया. एफ़-१५ फ़्लागरों को झपटने को लपके; जवाब में फ़्लागरों ने रुख़ बदल लिया; एफ़-१५ प्रहार सीमा तक उन पर पिलते चले गए, और तब उन्हों ने नक़ली प्रक्षेपास्त्र दाग दिए. सब कुछ योजनानुसार ही हुआ था.

मुझे बताया गया था कि एफ़-१५ में उड़ने के दौरान अकल्पनीय 'शारीरिक' थकान होती है. लेकिन उच्च गुरुत्वाकर्षण के झकझोरों तथा विमान के रह रह कर सहसा रास्ता बदलने से मस्तिष्क को जिस दिशाकाल संबंधी विस्मृति की त्रासदी से गुज़रना पड़ता है, उस की मिसाल सामान्य जीवन की कोई विपदा नहीं हो सकती. कठोरतम गुरुत्वाकर्षी शक्तियां तब आघात करती हैं जब विमान एकदम मुड़ता है. मुझे तो ऐसा लगा जैसे कोई दानव मुझे अपनी मुट्ठी में भींचे चला जा रहा हो. पांच गुना—५ जी—गुरुत्व का दबाव पड़ने पर मेरा सिर सीने तक मुड़ता चला गया. छः गुना गुरुत्व पर मेरे गाल ठुड्डी की ओर खिंच गए. बहुत से विमान के चालकों को ९ गुनी गुरुत्व शक्ति का आघात सहना पड़ता है. और इस दौरान उन्हें अविकल, अविचलित रूप से विमान चलाते रहना पड़ता है, निशाना तय करना पड़ता है, और दुश्मन का निशाना बनने से बचते रहना पड़ता है.

गुरुत्व शक्ति के सतत प्रबल झटकों से भी तकलीफ़देह था विमानों का सहसा दिशा बदलना. विमान में चढ़ते समय मैं ख़ासा हट्टाकट्टा था. लेकिन युद्ध छिड़ने के २० मिनट वाद मुझे जानलेवा मतलियों ने धर दबोचा. बारबर, रेडियो पर रास से कहतां 'नाइंटी लेफ़्ट' जिस का मतलब था कि दोनों विमान ९० अंश का कोण बनाते हुए बाएं मुड़ेंगे. रास ने कहा, "स्पैड ज़ीरो वन इज़ इन." इस का सीधा मतलब यह था कि उक़ाब चिंघाड़ते हुए फ़्लागरों की दिशा में हवाई ग़ोता मारेंगे. यह अच्छी तरह समझ लेने पर कि इन वहशी लड़ाकों के मुड़ने का मतलब क्या होता है, मैं उन की बातचीत में हिस्सा लेने लग गया.

"स्पैड ज़ीरो वन, नाइंटी लेफ़्ट को!"

"स्पैड ज़ीरो टू भी नाइंटी लेफ़्ट!"

"भगवान बचाए!"

उड़ान से पहले ही एक सार्जेंट ने मुझे समझा दिया था: "अगर तुम ने मास्क में उलटी की तो सफ़ाई तुम्हें ही करनी होगी" विमान जैसे ही ऊपर उठने लगा, मेरी हालत बिगड़ने लगी. मैं हेलमेट से कसे मास्क की हुक खोलने के लिए संघर्ष करने लगा. मैं तय कर चुका था कि उलटी करने से पहले मास्क चेहरे से हटा दूगा. डिक एंडरेग ने पहले ही होशियारी बरती थी—मेरे जी-सूट के पायचों के पास उस ने गठरी सी टांक दी थी, जिस मे प्लास्टिक के चार झोले थे. ऐन आड़े वक़्त एक मेरे हाथ पड़ गया. उड़ान के अंतिम २० मिनटों में मेरे दोनों हाथ बड़ा सतुलित व सामंजस्यपूर्ण कौशल करते रहे. बाएं हाथ में मैं ने आक्सीजन मास्क पकड़

रखा था. जिसे सांस लेने के लिए मैं रह रह कर चेहरे से चिपका लेता. और मेरे दाएं हाथ में था प्लास्टिक का झोला, जिसे मैं सांस लेते ही मुंह से सटा लेता. एक बार उल्टी करता तो एक बार सांस ले लेता. उलटी और सांस, उलटी और सांस . . .

·आख़िरी दौर. हमारा उक़ाब एक ख़ास अंदाज़ से नीचे उतर रहा था कि इंटरकाम से बारबर की आवाज़ आई :

"इस का कमाल देखना चाहते हो ?"

"श्योर!" इतना सब तो मैं झेल ही रहा था, और (अभी अभी तय किया था कि) फिर मुझे इस के फेर में कभी पड़ना नहीं था, तो क्यों न सारे कमाल आज ही देख डालूं ?

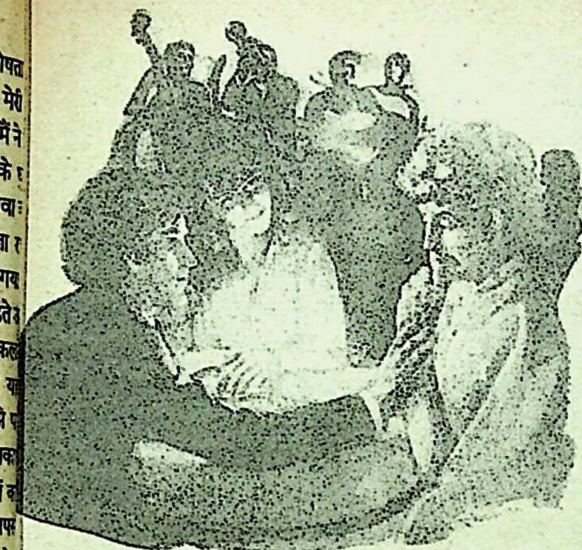
सो, हम फिर ऊपर की ओर चले. १८ हज़ार किलो के एफ़-१५ में दो इंजन होते हैं. प्रत्येक में १० हज़ार किलो वज़न को ठेलने की क्षमता होती है. यूं दोनों २० हज़ार किलो को आकाश में ठेल सकते हैं. प्रघात और वज़न के इस अनुपात का परिणाम यह होता है कि एफ़-१५ विमान आसमान में पूरी गति से एकदम आड़ा उड़ सकता है. बारबर ने मुझे इस 'शीर्षाभिमुखी कौशल' के कुछ नमूने दिखाए. ४,५०० मीटर से ११,५०० मीटर तक—छः किलोमीटर से ज़्यादा की—कुलांच भरने में हमें कुछ ही सेकंड लगे. इस के बाद फिर नीचे आ कर हम लोग विमान को एकदम समतल रखते हुए सीधे ऊपर उड़ने लगे. तब, प्रायः उलटा हो कर समतल स्थिति में ही विमान नीचे उतरने लगा. शीर्षाभिमुखी हवाबाज़ी से ऐन पहले या ऐन बाद की घटनाओं के बारे में मेरी स्मृति फिर धुंधली है. युद्ध का यह आख़िरी दौर था. इस में उक़ाब फ़्लागरों को खोज कर ऐन पास से मार गिराने वाले थे, यह सब से वीभत्स करतब था; और इस से एफ़-१५ के उड़ाकों की एक और विशेषता आई. सामान्य मानदंडों के अनुसार मेरी बिलकुल ठीक हैं, लेकिन रास को जब मैं ने से कहते सुना कि "यही है फ़्लागर के लकीर!" तो मुझे कोरे आसमान के सिवा दिखा. जबकि बारबर बार बार पूछे जा र "देखा ? देख रहे हो न ?" मैं कहता गय अतः बारबर 'दुश्मन' की ओर उड़ते उड़ते धुआं छोड़ने की पनाली से ऊपर निकल स्थिति तक बढ़ता ही चला गया. और य सिर्फ़ उसे दिख रहा था. आख़िरकार मुझे एक छोटा सा विमान उड़ता दिखा. जो आक नीलिमा में प्रायः खोया हुआ था. फ़्लागरों संहार कर के स्पैड-१ और स्पैड-२ वाप गए. उड़ान से पहले वायु सेना के फ़ोटोग्राफ़र ने मेरी अनेक मुसकराती तसवीरें खींची थीं. हमारे लौटने तक वे थीं. लौट कर लड़खड़ाता हुआ मैं काकपि निकला तो निगेटिवों समेत इन फ़ोटुओं साथ साथ 'उक़ाब का उड़ाका' बनने के स्वरूप, एक प्रशस्ति पत्र मुझे और थमा गया. और वही फ़ोटोग्राफ़र, अब, 'लौटने बाद' फिर मेरी तसवीरें लेने लगा था.

उस के चेहरे से मुझ बलि के बकरे प्रति ख़ासा तरस झलक रहा था. वे फ़ोटो उन के निगेटिव, आज तक एयर फ़ोर्स के ही रखे हैं.

उड़ान से निपटने के बाद मैं ने महसूस किया एफ़-१५ के बारे में मेरी पूर्व जानकारी में तो थोड़ी वृद्धि हुई है, पर इसे उड़ाने वालों के मेरी निष्ठा पुष्ट हो गई थी.

पार्टियां देने के लिए विख्यात एलसा मैक्सवेल का कहना है : किसी बोर व्यक्ति को भोज देना ही पड़े तो खाना उस के घर भिजवा दीजिए.

—अनीत



उपासना का मर्म

अर्डिस व्हिटमैन

थेंस की एक वसंती शाम थी. रात्रिभोज के बाद हम में से कुछ होटल छत पर चले आए. हंसी मज़ाक करता हर ई मुंडेर से नज़ारा लूटने का अच्छा सा ान ढूंढ़ने लगा. इतने में एक चिल्लाया. देखो, देखो !'' और उस ओर नज़र डालते हम सब मंत्रबिद्ध से रह गए.

शहर के आसमान पर चांद तैर रहा था. की उजास ने झीने से कोहरे को सुनहरी लके में बदल दिया था और में से क रही थी नीचे फैले महानग सी दी. चांदनी, दूर, नगर दुर्ग की ऊंची पहाड़ी बने पार्थनान* मंदिर के रहस्य और भव्यता उजागर कर रही थी. और यहां, हमारे ीप यही चांदनी एंक जैतून वृक्ष की रुपहली लियों पर जगमगा रही थी. एक पल को लगा, नगर मानो स्वर्ग का बैठकखाना हो. हर वस्तु से मानो दिव्य संगीत फूट रहा हो. मेरे पास खड़ा दोस्त फुसफुसाया, ''कितनी पुनीत बेला है!''

ऐन मारो लिंडबर्ग ने अपनी पुस्तक गिफ़्ट फ्राम द सी में ऐसे ही एक अनुभव का उल्लेख किया है. वह किसी निर्जन सागर तट पर बनी कुटिया में छुट्टियां मना रही थीं. उन के साथी थे महज़ गल (मुर्गाबिया), पेलिकन (हवासिले) और सैंडपाइपर (टिटहरियां) आदि कुछ समुद्री पक्षी. इन के बीच उन्हें लगा, ''जैसे मैं सृष्टि में घुल गई हूं, खो गई हूं. जैसे कोई गिरजे में अनजाने भक्तों के वंदना गान की गूंज में खो जाता है.''

मैं जब भी सहज उपासना के बारे में सोचती हूं, मुझे एक संगीतकार की याद आ जाती है. गरमियों में एक दिन वह और उस की पत्नी मासाचूसेट्स की सब से ऊंची चोटी पर बनी मीनार देखने गए. यहां से उन्हें तीन राज्य—कनेटीकट, मासाचूसेट्स और न्यू

र ईसा पूर्व में बने एथीना देवी के इस मंदिर का वास्तु डोरिस शैली का है. विद्या और प्रज्ञा की देवी एथीना की सरस्वती और रोम की मिनर्वा जैसी है. यूनान की धानी एथेंस का नाम संभवतः एथीना से ही पड़ा है.

यार्क—दिखाई पड़ रहे थे, तथा घाटियों, जंगलों और झीलों पर छाई थी तेज़ धूप.

इस भव्य दृश्य से वह ऐसा अभिभूत हुआ कि लपक कर कार से कार्नेट उठा लाया और लगा विभोर हो कर बजाने—अपने सुख के लिए, आते जाते पर्यटकों के आनंद के लिए, ईश्वर के यशोगान के लिए.

प्राचीन स्वरूप. उपासना मंदिर, मसजिद या गिरजे की दीवारों तक सीमित नहीं रह सकती; क्योंकि यह जीवन के प्रति एक रुझान है, सृष्टि के प्रति हमारी सहज प्रतिक्रिया है. उपासना का सार है विस्मय दार्शनिक जेराल्ड हर्ड के अनुसार यह "गहन विस्मय और सुधबुध भुला देने वाले अतिशय विस्मय का ऐसा समागम है, जो आत्मा का उन्नयन और उद्धार करता है." सोसाइटी आफ़ फ्रेंडस* के सूफ़ी सदस्य संत रूफ़स जोंज़ ने लिखा है, "जिस तरह आंख की पुतली प्रकाश के प्रति संवेदनशील होती है, उसी प्रकार मनुष्य का हृदय भगवान के प्रति संवेदनशील है "

सहज उपासना का प्राचीन स्वरूप कैसा था? कर्मकांड के अभ्युदय से पहले आदि मानव सूर्यास्त के समय वृक्षों की फुनगियों को दहकते या आकाश में असंख्य तारों को असीम ऐश्वर्य लुटाते देख अचरज और उत्कंठा से अवश्य ही भर उठते होंगे. प्रकृतिवेत्ता लारां आइज़ले के अनुसार, "जब से मनुष्य अंधेरी गुफ़ाओं में पशु आदि के चित्र बनाने लगा है, तभी से वह पावन और पारलौकिक के प्रति, अस्तित्व और जीवन के रहस्यों के प्रति अभिव्यक्तिशील रहा है."

*जार्ज फ़ाक्स द्वारा १६५० ई. में इंगलैंड में स्थापित सोसाइटी आफ़ फ्रेंड्स एक ईसाई संप्रदाय है. इस के 'मतावलंबी 'क्वेकर' भी कहे जाते हैं. ये परंपरागत ईसाई कर्मकांड को नहीं मानते. इन में पादरी भी नहीं होते.

सहज उपासना की अनुभूति के आस्तिकों को ही नहीं होती. एक बार मैं मेरा एक पुराना मित्र, चिकित्सा शास्त्र का विद्यार्थी, एक फ़ोटो संग्रह देख रहे थे. ह आंखें एक फूल के चित्र पर टिकी रह गई पारभासी सा था और उस के हृदयस्थल अनगिनत सुनहरे लघुसूर्यों की छवि जग रही थी; मेरा दोस्त बरबस, विलियम ब्लेक ये पंक्तियां गुनगुना उठा :

जंगली फूल के मुखड़े में स्वर्ग को दे
है हथेली में अनंत को समेटना

मैं चकरा गई. क्योंकि स्वर्ग आदि मेरे श्वरवादी दोस्त की विचारधारा के अंग थे. मुझे मुंह बाए देख उस ने कहा, " हैरान हो रही हो न? असल में एक नौज के ब्रेन ट्यूमर का आपरेशन देखते देखते कायापलट हो गया. पहली बार मैं ने मनु का मस्तिष्क देखा था और वह मुझे सा सृष्टि सा लगा था. आपरेशन थिएट निकलते समय मेरा मन आराधना के छटपटाने लगा. ऐसा धार्मिक तो मैं अभी बना, पर अब जब भी ख़ुर्दबीन से फूल मानवीय कोशिका जैसी किसी सजीव वस्तु देखता हूं तो उस में एक चमत्कार दि पड़ता है.

एक दूसरे से प्रेम करने की क्षमता से आराधना की लौ फूट सकती है. अपने के देहांत के कुछ महीने बाद, एक मानवीय प्रेम की एक क्षणिक दीप्ति मुझे भगवान के अत्यंत समीप ले आई. मेरी पोती और उस का ब्वाय फ्रेंड मेरा मन की गरज़ से मुझे नाइट क्लब ले गए.

मैं उन के प्रति आभारी हुई, और माहौ रमने की कोशिश करने लगी, लेकिन याद एक गाने से मेरी रुलाई फूट पड़ी. तल

दोनों ने मेरे हाथ अपने हाथों में ले लिए. उन की यह सद्भावना इतनी निर्मल, निश्चेष्ट और स्नेहिल थी कि मैं ने अपने आप को चैन के एक ऐसे घेरे में पाया, जहां प्यार ही प्यार था.

आश्चर्य नहीं कि किसी के दिल में समा जाने के बाद हमारे लिए स्वर्ग मानो धरती पर उतर आता है. मानवीय प्रेम सोनमाटी से झरते सोने की चमक सा होता है—अपने परिवेश से इतना अलग कि हमें एक बेहतर दुनिया में होने का अहसास होता है. कवींद्र रवींद्र के शब्दों में, "तुम्हारे जाने के बाद मैं ने अपने आंगन में दर्शन किए ईश्वर के पदचिह्नों के."

आराधना के लिए हमें मानव की विलक्षण कृतियों—वास्तु शिल्प, चित्रांकन, काव्य और संगीत आदि—से अधिक प्रेरणा और कोई चीज़ नहीं देती. बहुधा हमें इन में एक महत्तर शक्ति की अनुभूति होती है.

पदार्थ और आत्मा. श्रेष्ठ कला का अर्थ है प्रतीकों की भाषा. धर्मशास्त्री पाल टिलिक ने कहा है, "मनुष्य की चरम भावना प्रतीकों द्वारा अभिव्यक्त होनी चाहिए, क्योंकि प्रतीक ही चरम को अभिव्यक्त कर सकते हैं." मेरी एक मूर्तिकार मित्र एक नई मूर्ति गढ़ रही थी. मैं ने उस से पूछा, क्या हो रहा है? वह बोली, "पदार्थ को आत्मा में बदल रही हूं."

दैनिक जीवन में सहज ही फूट पड़ने वाली उपासना मानव अस्तित्व के अर्थ और रहस्य का एक अंग है. इस आस्था और आभार की हमें आवश्यकता भी है; इस से जीवन के प्रति हमारी श्रद्धा बढ़ती है और हम सृष्टि के चमत्कारों को सराहना सीखते हैं.

कैंसर से पीड़ित कवि ब्रेडफ़ोर्ड स्मिथ, जिन्हें यह आभास था कि जीवन संध्या आ पहुंची है, तो आकाश में भोर फूटती देख आनंद विह्वल हो उठे थे और उन्हों ने लिखा:

मेरे प्रभु, कितनी सुंदरता से निज सृष्टि में
तुम भरते उजास
किस आन बान से भव्य मधुरता बिखराता
आता प्रकाश

उन्हें श्रद्धांजली अर्पित करते हुए उन के साथी कवि मार्क वान डोरेन ने कहा था कि स्मिथ ने जीवन का हर दिन ऐसे जिया था कि अस्तित्व का कोई गोपनीय आनंद उन से अनजाना न रह जाए.

यही उपासना का मर्म है.

दुर्दर्शक

• इंगलैंड के स्कारबारो में 'थिएटर-इन-द-राउंड' नाम की नाट्यशाला है और उस का आत्मीय वातावरण दर्शकों को सचमुच अभिभूत कर लेता है. सामने की कतारों में बैठे दर्शक तो कई बार इतने द्रवित हो जाते हैं कल्पना को ही वास्तविकता समझ लेते हैं.

उन दिनों इसी नाट्यागार में एलन आइकबोर्न के नाटक 'जस्ट बिटवीन अवरसेल्व्ज़' का मंचन चल रहा था. नाटक के प्रथम अंक की समाप्ति के समय मुख्य चरित्र डेनिस अपनी पत्नी को उन्मादी चीत्कारों के बीच छोड़ कर चल देता है. उस रात प्रथम अंक समाप्त होते होते वह दर्शक आवेश में उठ खड़ा हुआ और डेनिस का हाथ पकड़ कर बोला, "भगवान के लिए मत जाओ डेनिस! तुम्हारी जगह मैं होता, तो ऐसा कभी न करता." —'संडे टाइम्स मैगजीन', इंगलैंड

बीसवीं शती का भीम

टेरी टाड



उस का नाम है आंद्रे. २२५ सें.मी. लंबा और २२५ किलो वज़न. जानते हैं, उस की कलाई कितनी चौड़ी है?—३० सें.मी. किंतु हफ़्ते में एक दिन वह सामान्य आकार का व्यक्ति बनने के लिए तरसता है

फ़्रांस के एक खेतघर में एक बच्चे ने जन्म लिया. देख कर उस के पिता बोले, "कितने बड़े बड़े हाथ हैं इस के. यह तो मेरे पिता के जोड़ का होगा."

"पर आप ने तो कहा था कि आप के पिता भीमकाय थे," पत्नी ने मुसकराते हुए कहा, "सात फ़ुटे और वज़न २५० किलो."

"हां, मैं भीमकाय बाप का बेटा हूं," पिता ने उत्तर दिया, "और अब भीमकाय बेटे का पिता."

बच्चा बड़ा होने लगा. १२ वर्ष की उम्र तक उस का क़द हो गया १९० सें.मी. और वज़न ९० किलो. एक दिन वह अपने पिता के साथ घासफूस बटोर रहा था कि खेत के पास से एक रोल्स रायस गाड़ी गुज़री.

"एक दिन मेरे पास भी ऐसी गाड़ी
ऊंचे लंबे बच्चे ने शांत स्वर में कह

"ख़्वाब मत देखो," बाप ने
"तुम्हारा ख़्वाब तुम से भी बड़ा है

दो साल बीत गए. समय के साथ
उस का शरीर पल्लवित होता गया, साथ
सपना भी. १४ साल की उम्र में वह
आज़माने घर से निकल पड़ा.

पांच साल बीत गए. एक दिन तीसरे
उस की मां ने दरवाज़े पर दस्तक
दरवाज़ा खोला तो चौखट पर एक भारी
व्यक्ति दिखाई पड़ा. सब कुछ तो भारी
था—क़द काठी, हाथ पांव; मुसकान
भौंचक्की सी रह गई.

"घर के मालिक हैं?" अजनबी ने

स्पोर्ट्स इलस्ट्रेटेड (२१ दिसंबर १९८१) से संक्षिप्त. कापीराइट १९८१ टाइम इनकारपोरेटेड, न्यू यार्क.
फ़ोटो: स्टीफन ग्रीन-आर्मिटेज

"हां. कहिए, मैं आप की क्या सेवा कर सकता हूं?" पति ने सावधानी से पूछा.

"आप बताएंगे, आप को यह गाड़ी कैसी लगी?" भीमकाय व्यक्ति ने पूछा. वह एक तरफ़ हो गया/और उस ने अपने भारी भरकम हाथ से बाहर खड़ी चमकती रोल्स रायस गाड़ी की तरफ़ इशारा किया.

"बहुत ख़ूबसूरत है, पर इस से हमारा क्या मतलब?" पति ने आशंकित मन से पूछा. फिर उस ने आगंतुक की चमकती आंखों में झांका और पत्नी की ओर मुड़ कर बोला, "अरे, यह तो हमारा बेटा है—आंद्रे. मेरे पिता का पोता."

मां बाप से अलग होने के बाद नौजवान आंद्रे पेरिस पहुंचा और वहां फ़रनीचर बनाने वाली एक फ़र्म में काम करने लगा. जब वह १७ साल का हुआ तो एक व्यायामशाला में बहुत से पेशेवर पहलवानों की नज़र उस पर पड़ी. उन्हों ने उसे दांव पेच दिखाए और यात्रा तथा साहस की कहानियों से उस का मनोरंजन किया. एक पहलवान के ज़ख़्मी होने पर जोड़ के लिए किसी दूसरे को लेने का अवसर आया तो आंद्रे से पूछा गया. आंद्रे सफल रहा.

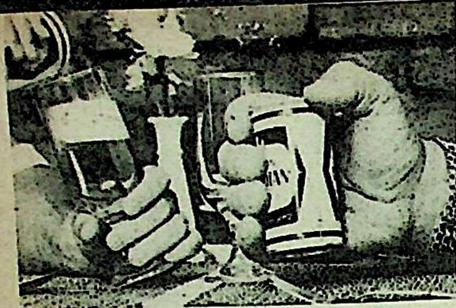
पेशेवर पहलवान के रूप में आंद्रे रूसीमोफ़, जो 'ज़ां फ़्रैं' नाम से कुश्ती लड़ता था, दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करता चला गया. आज ३५ वर्ष की अवस्था में उस का क़द ७ फ़ुट ४ इंच और वज़न लगभग २२५ किलो है. वह दुनिया भर में कुश्तियां लड़ रहा है. वह सब से ज़्यादा कुश्तियों में भाग लेने वाला और सब से ज़्यादा पैसा पाने वाला पहलवान है. मुहम्मद अली को छोड़ दें तो आज वह दुनिया में सब से अधिक लोकप्रिय है.

क़ुदरत का कमाल. फ्रैंक वाल्वा आज कल क्विबेक में कुश्तियां करा रहा है. वह उस रात आंद्रे के साथ था जब वह पहली बार अखाड़े में उतरा था. बाद के कुछ वर्षों में भी वह ज़्यादातर उस के साथ रहा. वाल्वा का कहना है, "आंद्रे कमाल का बंदा है. एक दिन पेरिस में उसे आभास हुआ कि वह अकेला एक छोटी कार को यहां वहां खिसका सकता है. इस खोज के बाद जब कभी उस के यार दोस्त कहीं खा पी रहे होते तो वह बीच में उठता और उन की कारें जहां खड़ी होतीं, वहां से हटा कर किसी लैंपपोस्ट और इमारत के बीच की छोटी सी जगह में खड़ा कर देता या फिर उन के मुंह विपरीत दिशा में बदल देता." इस तरह वह काफ़ी समय तक मनोविनोद करता रहा.

केन पेटरा अमरीका का चार बार भारोत्तोलन चैंपियन रह चुका है. आंद्रे के साथ कई बार उस की कुश्ती हो चुकी है. उस का कहना है, "वह क़ुदरत का कमाल है. ११३ किलो के आदमी को ओवरकोट की तरह उठा लेता है. याद है वेपनर के साथ क्या किया था?"

वेपनर? हां, १९७६ में एक बार न्यू यार्क के शी स्टेडियम में घूंसेबाज़ बनाम पहलवान प्रतियोगिता में मुहम्मद अली के ताश के साथी चार्ल्स "चक" वेपनर का आंद्रे के साथ मुक़ाबला था. पहले दो राउंड में घूंसेबाज़ ने आंद्रे के गिर्द चक्कर लगाते हुए इस ढंग से घूंसे बरसाए जैसे कोई पर्वतारोही चोटी पर पहुंचने की संभावना का अनुमान लगाता है.

तीसरे राउंड में अपने घूंसों का बराबर जवाब न पा कर वेपनर ने सचमुच घूंसा जमाया. इस पर आंद्रे ने सहसा अपने प्रतिस्पर्धी को ऊपर उठाया और रिंग की रस्सियों की बाड़ के ऊपर फेंक दिया. इस तरह खेल ख़तम हुआ.



भीमकाय आंद्रे के चौड़े चंकुल हाथ में ३३० ग्राम का बियर का टिन खिलाना सा लग रहा है.

संतुलित दानवीय आकार. आंद्रे १९७१ में पहली बार उत्तर अमरीका स्थित मांट्रिअल आया. वहां दो साल बिताने के बाद वह पेशेवर कुश्ती के पहले अलम बरदार विंस जे मैकमाअन से मिलने न्यू यार्क गया. मैकमाअन को लगा कि ज़ां फ़ैरे का नाम भीड़ को आकृष्ट नहीं कर पाएगा. तो फिर कुश्ती के दीवानों में कौन सा नाम हलचल मचा पाएगी! नाम चुनना बड़ा मुश्किल काम था. उस समय तक कुश्ती का इतिहास व्हिस्कर्स सैवेज और अब्दुल्ला द बूचर से ले कर गोरिल्ला मानसून जैसे नामों से भरा पड़ा था. ऊंचे लंबे फ़्रांसीसी पहलवान को उस ने सीधा सादा सटीक नाम देना ही उचित समझा. आंद्रे फ़ैरे अब 'आंद्रे द जायंट' (भीमकाय आंद्रे) के नाम से पुकारा जाने लगा.

मैकमाअन की भविष्यवाणी क अनुसार यह नाम जल्द ही भीड़ आकृष्ट करने लगा. आंद्रे अब साल में ३०० कुश्तियां लड़ने के लिए लगभग ३ लाख डालर पाता है. मैकमाअन साल में तीन बार जापान, दो बार आस्ट्रेलिया, दो बार यूरोप, सत्तरह बार कनाडा और बाक़ी समय अमरीका के प्रमुख अखाड़ों में आंद्रे की कुश्तियों का आयोजन करता है. हर पहलवान और आयोजक आंद्रे को कुश्तियों में चाहते हैं क्योंकि उस के नाम से हर किसी को पैसा बनाने का मौक़ा मिलता है.

आंद्रे का वज़न देखने वालों में जि प्रभाव पैदा करता है, उतना उस का क़द करता. दुनिया में सातफ़ुटे तो बहुत से होंगे, पर उन का वज़न आम तौर पर किलो होता है, जबकि आंद्रे का वज़न उ दोगुना है. इस पर भी वह ज़्यादा वज़नी दि नहीं देता.

आंद्रे का भीमाकार उस की छोटी और असाधारण रूप से भारी हड्डियों के का परिणाम है. उदाहरणस्वरूप उस की क की परिधि लीजिए. सामान्यतः वयस्क पुरु कलाई १८ सें.मी. होती है. २० सें.मी. कलाई बहुत बड़ी कहलाती है. आंद्रे कलाई की परिधि लगभग ३० सें.मी. है. की उंगलियां इतनी बड़ी बड़ी हैं कि उस अंगूठी में से चांदी का लक्ष्मी गणेश सिक्का आसानी से पार हो जाएगा.

२०० सें.मी. या उस से अधिक ऊंचे व्यक्तियों का शरीर छोटा, लेकिन टांगें होती हैं. आंद्रे की गठन का अनुपात सा है यानी १७० सें.मी. के व्यक्ति के समान उस का क़द अपने वज़न के कारण सा व्यक्ति के क़द से ६० सें.मी. अधिक क्योंकि आम तौर पर टांगों की अपेक्षा के धड़ की लंबाई का वज़न प्रति अधिक होता है.

विशाल भौंहों, चेहरे पर कुश्तियों ज़ख़्मों के निशान तथा काले काले मोटे के कारण उस का सिर और भी वि दिखाई देता है और पूरी तरह से उसे दानव रूप प्रदान कर देता है.

बियर का शौक़ीन. मज़े की बात है आंद्रे बच्चों के बीच बहुत ख़ुश रहता अखाड़ा हो या कोई और जगह, बच्चे उसे रहते हैं और उस के पीछे पीछे चलते हैं

का कहना है, "मैं बच्चों के साथ बड़ी नरमी से पेश आता हूं. मैं यह नहीं चाहता कि वे मुझ से डरें. जब कभी मैं बच्चों वाले किसी घर में जाता हूं तो वे मुझ से दूर दूर भागते हैं. मैं जानता हूं, ऐसा क्यों होता है, फिर भी मुझे दुःख होता है."

आंद्रे किसी रेस्तोरां या शराबघर में घुसता है तो लोग बातें करते करते रुक कर ठगे से उसे देखते रह जाते हैं. कभी कभी उस के आकार से जानवर भी डर जाते हैं. दो बार तो ऐसा हुआ कि उसे देखते ही चौकसी करने वाले डरावने कुत्ते भी दुम दबा कर भाग निकले और कहीं जा छिपे.

आंद्रे की सब से बड़ी समस्या यह है कि इतिहास के अन्य भीमकाय व्यक्तियों की तरह वह सामान्य व्यक्तियों जैसा जीवन जी नहीं पाता. वह व्यग्र होने पर भी फ़िल्म नहीं देख पाता क्योंकि सिनेमाघर की कुरसी में समा नहीं सकता. शो विंडो में सुंदर सुंदर कपड़े देख कर लालच भले आए पर वह ख़रीद नहीं सकता क्योंकि उसे पता है कि दुकान में उस की नाप के कपड़े नहीं मिलेंगे.

रोज़मर्रा की ज़िंदगी में भी दिक़्क़त आन खड़ी होती है. टेलीफ़ोन का डायल घुमाने के लिए आंद्रे को पेंसिल काम में लानी पड़ती है क्योंकि उस की उंगलियां डायल के छेदों में घुस नहीं सकतीं. कुरसी भी देखभाल कर चुननी पड़ती है. घूमने वाले दरवाज़े से गुज़रते वक़्त उसे झुक कर और पैर घसीट कर चलना पड़ता है. उत्तर कैरोलिना स्थित उस के सुंदर मकान में हर चीज़ उस की ज़रूरत के मुताबिक बनाई गई है, सजाई गई है; लेकिन ऐसे घर में अगर आप साल में पांच दस रोज़ के लिए जाएंगे तो उस का आराम कहां से पा सकेंगे?

हाल ही में न्यू यार्क में हुए एक दंगल के बाद आंद्रे ने दानवाकार व्यक्तियों के जीवन की कठिनाइयों का उल्लेख किया. "कभी कभी तो यह जीवन दुष्कर हो जाता है अगर मुझे सप्ताह में एक दिन भी सामान्य आकार के व्यक्ति की ज़िंदगी जीने को मिल जाए तो मैं मुंहमांगी रक़म दे दूं. उस दिन मैं दुकानों में जाऊं, सिनेमा देखूं, स्पोर्ट्स कार में बैठ कर चक्कर लगाऊं, फ़िफ़्थ एवेन्यू पर मटरगश्ती करूं और तफ़रीहन दूसरे लोगों को घूरूं. एक और बियर देना, यार!"

खाना खाने में चार घंटे. आंद्रे को वाक़ई बियर बहुत पसंद है और बियर गटकने के उस के अनगिनत क़िस्से मशहूर हो चुके हैं. उस का एक साथी क़सम खा कर कहता है कि १९६९ में एक दिन फ्रांस के मलूज़ नामक शहर में आंद्रे जरमन बियर की ११७ बोतलें गटक गया. एक बार मैं एक हफ़्ते तक उस के साथ सफ़र में रहा. सफ़र के दौरान मैं ने उसे रोज़ाना २४ बोतलें बियर, खाने के साथ दो बोतलें वाइन, ब्रांडी के सात आठ पेग, टमाटर या संतरे के रस के साथ वोदका के छः गिलास और कभी कभी फ्रांसीसी शराब पेरनो का एकाध गिलास भी चढ़ाते पाया, और उसे नशे में चूर कभी नहीं देखा.

आप सोचेंगे कि ऐसा आदमी ख़ूब खाता भी होगा, लेकिन नहीं, वह खाता बहुत कम है. हां, कभी कभी वह इस दिशा में भी अपने जौहर दिखाता है. एक बार एक साधारण रेस्तोरां में उस ने अपनी क्षुधा का प्रदर्शन किया था. "एक वेट्रेस बराबर मेरी तरफ़ इशारा किए जा रही थी और दूसरे खाने वालों से मेरे बारे में बातें कर रही थी. फिर उस ने ऊंची आवाज़ में मुझ से पूछा, 'तुम्हारे लिए

एक प्याला सूप और एक क्रैकर काफ़ी रहेगा?' और यह कह कर वह हंसी. 'नहीं,' मैं ने कहा. 'मुझे बहुत भूख लगी है. ऐसा करो—आज जो कुछ बना हो, वह सब ले आओ, लेकिन एक एक कर के.' वह सारा खाना खाने में मुझे चार घंटे लग गए.''

अच्छा नसीब. सफ़र के दौरान मुझे सब के साथ उस का अच्छा व्यवहार देख कर बहुत खुशी हुई. वह जहां भी दंगल में जाता, हमेशा सभी पहलवानों और विशेष कर अखाड़े में उतरने वाले प्रारंभिक पहलवानों से ज़रूर बातचीत करता. शराबघरों में वह उन लोगों की तरफ़ ज़रूर ध्यान देता जो उस की एक नज़र के लिए तरस रहे होते. आदमियों से वह हाथ मिलाता और महिलाओं के कंधों या बालों को छू कर अपना स्नेह प्रदर्शित करता. आंद्रे जहां भी जाता है, औरतें मौजूद होती हैं और वह उन के साथ बड़े अच्छे ढंग से पेश आता है.

आंद्रे अपना ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त दोस्त बनाने, बातचीत करने और खाने पीने में बिताना चाहता है. वह जानता है कि उस के आकार के अधिकांश व्यक्ति समय से पहले ही चल बसे. उसे मृत्यु का डर नहीं है. उस का कहना है, ''मैं भाग्यशाली रहा हूं. इस जीवन के लिए परमपिता का आभारी हूं. अगर मैं कल मर जाऊं तो मुझे कोई मलाल नहीं होगा. मैं ने अच्छा खाया है, अच्छी बियर और एक से एक बढ़िया शराब पी है. और इतनी दुनिया देखी है जो बहुत कम लोगों को देखने को मिलती है. इस दुनिया में मुझे बीवी बच्चों को छोड़ कर सब मिला है. एक दिन मुझे वे सब भी मिलेंगे और कौन जाने, मेरा पोता भी मुझ जैसा भीमकाय निकले!''



प्रविष्टि

पहाड़ी पदयात्रा पर जाते समय मैं ने क्लब की अभियान पुस्तिका में दो बोलती टिप्पणियां देखीं :

जोन ओसगुड : मेरे पैरों में छाले पड़ गए. कंधे दुखने लगे, पीठ भी दुख रही है. हम रास्ता तक भूल गए. रास्ते में रीछ भी मिला. ऊपर से सारी रात बारिश होती रही और मैं बुरी तरह भीग गई.

पीटर ओसगुड : जोन को छोड़ कर सब ठीकठाक रहा.

—ए जे आर

पेशेवर

जूनियर बेसबाल टीम के प्रशिक्षक ने बताया कि उन की टीम का सर्वाधिक तेज़ और सधा हुआ गेंदबाज़ एक बार किसी बड़े लड़के के साथ मैदान में आया.

''तुम्हारे साथ यह कौन है?'' प्रशिक्षक ने जानना चाहा.

''मेरे बड़े भाई,'' लड़के ने उत्तर दिया.

''शुक्र है!'' प्रशिक्षक ने सुख की सांस ली. ''मैं तो समझा तुम अपने मैनेजर के साथ आए हो.''

—'गज़ेट', चार्ल्सटन

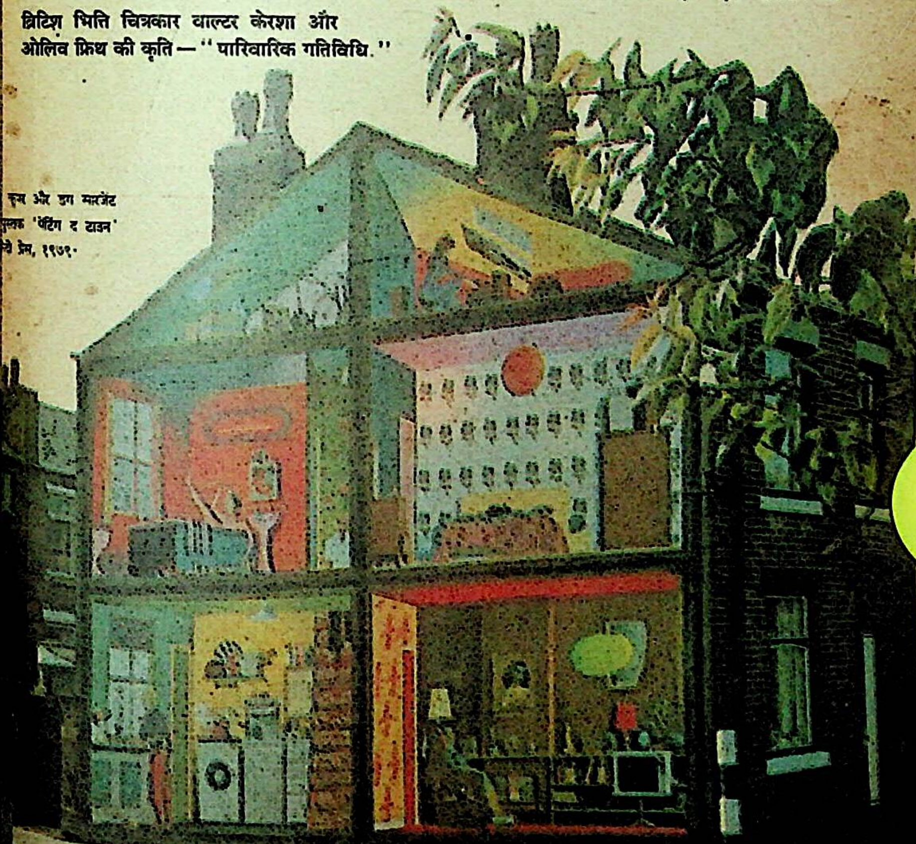
पुरानी दीवार : आधुनिक चित्रकार

फ्रांसिस शैल

एक दिन १९७६ में सुप्रसिद्ध ब्रिटिश भित्ति चित्रकार वाल्टर केरशा एक मचान पर चढ़ कर लंकाशायर स्थित रोशडेल में एक मकान की दीवार पर चित्र बनाने लगे. ब्रिटिश ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन द्वारा प्रायोजित इस परियोजना में घर का मालिक बहुत रुचि ले रहा था. प्रमुदित पड़ोसी जब तब रुक कर केरशा का उत्साह बढ़ाते और एकाध सुझाव भी दे डालते. तीन पूर्णकालिक सहायकों, स्थानीय कलाकारों और छात्रों की सहायता से केरशा और ओलिव फ्रिथ ने यह भित्ति चित्र तीन सप्ताह में पूरा कर डाला. इस भित्ति चित्र में एक ऐसे परिवार का

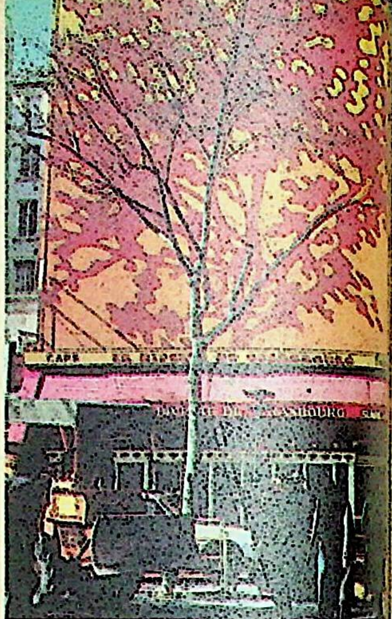
ब्रिटिश भित्ति चित्रकार वाल्टर केरशा और ओलिव फ्रिथ की कृति — "पारिवारिक गतिविधि."

...स और डग मारजेंट
...स्तक 'पेंटिंग द टाउन'
...े प्रेस, १९७९.



पेरिस के एक कैफ़े के सामने खड़े पेड़ की पत्तियां कभी नहीं झड़तीं क्योंकि यह दीवार पर चित्रित हैं. चित्रकार हैं ताना जाको

ग्री लेगोर्ट, फोटोग्राफिक सर्विस

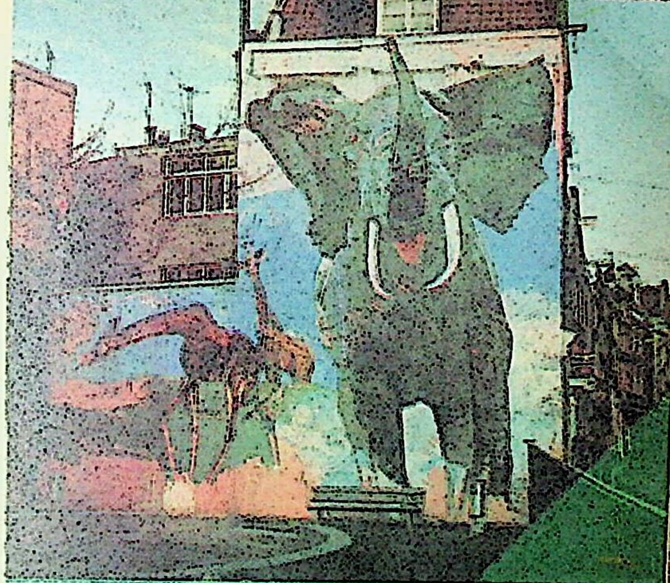


तब और अब : पश्चिम जरमनी स्थित म्यूनिक की एक बदसूरत इमारत का कायाकल्प. अमरीकी कलाकार रिचर्ड हास की तूलिका के कमाल से पहले यह मकान छोटे चित्र जैसा लगता था.



ऊट हैरट्सोक, फोल्कर

पुराने अम्सटर्डम स्थित एक खेल के मैदान की दीवार पर 'जंगल' शीर्षक चित्र में धावा बोलता गजराज. इस के चित्रकार हैं हांस हेमर्स और वर्ट ग्रीविंक.



जिम ब्रेग

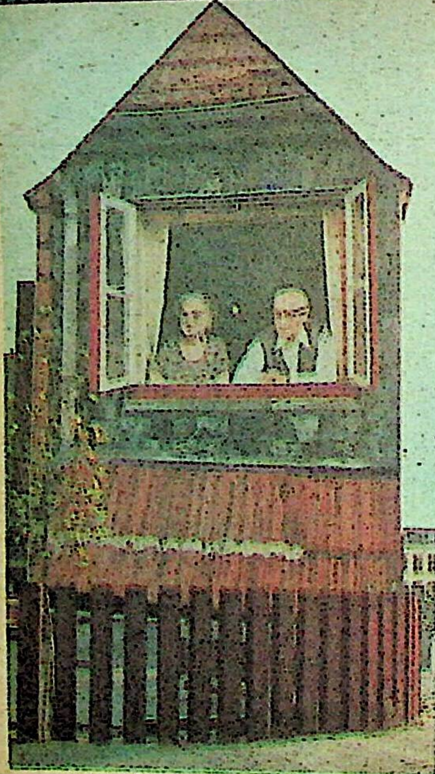
मिशिगन स्थित फ्लिंट में चित्रकार ब्लू स्काई ने घर की ख़ाली दीवार पर कार पार्क का चित्र बना डाला.

चिल सील

चित्रण है जिस के सदस्य विभिन्न गतिविधियों
व्यस्त दिखाए गए हैं : दादी टेलीविज़न देख
है, मां रसोईघर में है, बेटा नहा रहा है,
बिल्ली बिस्तर पर ऊंघ रही है, बेटी परछत्ती
रिकार्ड सुन रही है. इस भित्ति चित्र की टे
विज़न और समाचार पत्रों में सर्वत्र चर्चा हु

आज दुनिया में बहुत से स्थानों पर ऐसे
बिरंगे भित्ति चित्रों का निर्माण बढ़ता जा रहा
पेरिस की नगरपालिका ने आंखों को खटक
वाली २० गंदी और बदसूरत दीवारें चुनी
अब इसी तरह के रंगबिरंगे चित्र बना कर
नयनाभिराम बनाया जाएगा. जापान में तो
स्थित एक डिपार्टमेंट स्टोर के अधिकारी नि

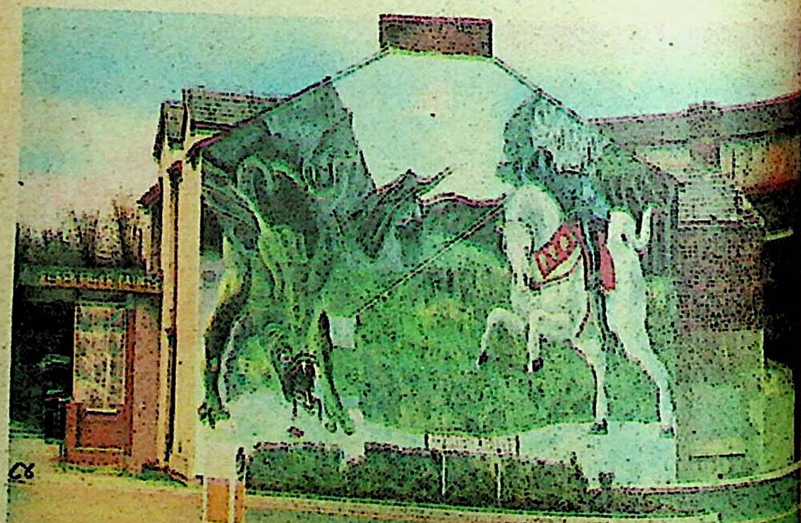
पृष्ठ ९१ दे

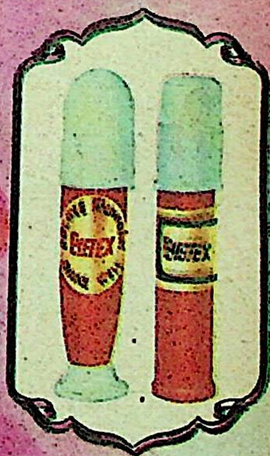


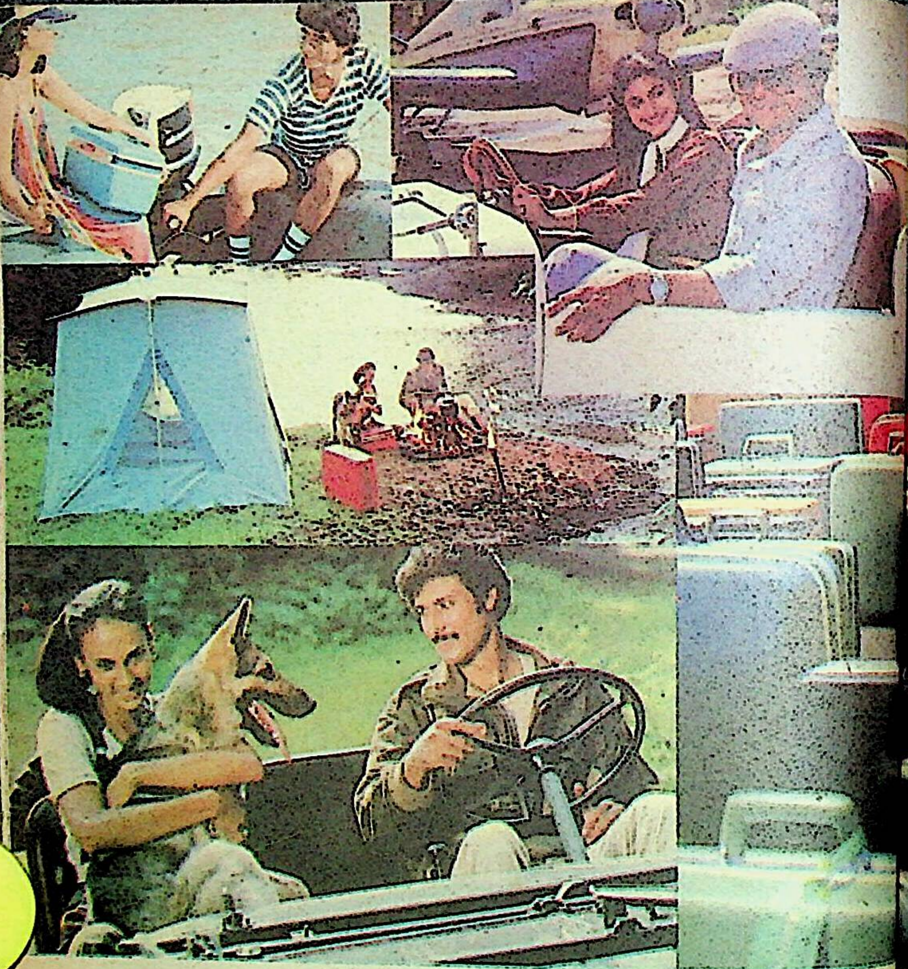
जान कूपर और डग सारजेंट की पुस्तक 'पेंटिंग द टाउन' से. फेदों प्रेस, १९७२.

पश्चिम जरमनी स्थित ब्रेमन के एक वृद्ध आवास
दीवार पर चित्रित खिड़की से ब्रेमन के व्यस्त चौ
की ओर देखते वृद्ध दंपती. चित्रकार :
पीटर कौर हेलमुट स्ट्रीक और आटो फाल्कर

स्विनडन, इंगलैंड की एक दीवार पर संत
द्वारा ड्रेगन की हत्या का दृश्य. कला
उचलो के चित्र पर आधारित यह भित्ति
स्थानीय छात्रों ने बनाया







जी चाहे जहाँ...ट्रैवेलाइट के साथ वहाँ!

आसमान हो धरती या पानी...जहाँ भी हो आप, एक ख़ास स्टाइल, एक ख़ास अदा के साथ। बेफ़िक्री का आलम, साथ में हमदम!

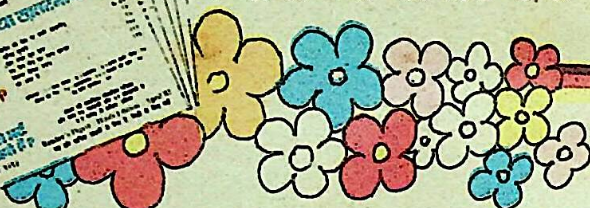
ये ट्रैवेलाइट के साथ ही मुमकिन है। क्यों कि मोल्डेड लगेज से आपकी जो भी उम्मीद या ज़रूरत होगी, ट्रैवेलाइट के साथ वो एक ख़ास अन्दाज़ से पूरी होगी।

हल्का इतना कि आप पर ज़रा भी बोझ न बने।



ऐसा अनोखा उपहार जो बार बार आप, याद दिलाए.

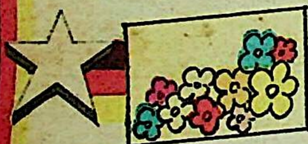
इस दीपावली पर अपने मित्रों व संबंधियों को भेंट करें.



हर साल दीपावली के शुभ पर्व पर आप अवश्य असमंजस में पड़ जाते होंगे, अबकी क्या उपहार दिया जाए.

चूंकि आप 'सर्वोत्तम' के पाठक हैं और हमारे मित्र, हम आप को एक ऐसा उपहार पेश कर रहे हैं जो न केवल मनोरंजक है, बल्कि ज्ञान का भी ख़ज़ाना है.

पेश है 'सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट' की 5 स्टार उपहार सेवा:

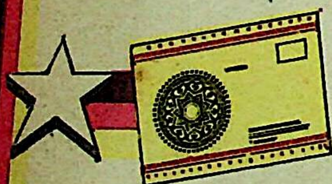


आपके उपहार का ऑर्डर मिलते ही हम आपके मित्र को आपकी ओर से एक ख़ूबसूरत बधाई कार्ड भेजकर आपके उपहार की ख़ुशख़बरी देंगे.

आप जब 'सर्वोत्तम' भेंट करते हैं, तो अपने लिए पाते हैं— 1983 की एक आकर्षक 'रीडर्स डाइजेस्ट' डायरी– मुफ़्त.

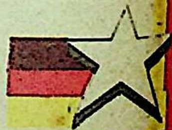






साथ साथ, एक सलोने आवरण में सर्वोत्तम का ताज़ा अंक आपके मित्र को प्रेषित किया जाएगा तथा नियमित रूप से अंक हर माह उन के पास पहुंचते रहेंगे.

आप अपने सबसे प्रिय मित्र व संबंधी को साल भर के लिए सर्वोत्तम पठन सामग्री भेंट कीजिए. आप का उपहार एक बार नहीं, बल्कि हर माह आप के मित्र को आप का सस्नेह स्मरण दिलाएगा.



सार्वजनिक [illegible] एवं नए गैर परंपरावादी आंदोलन के प्रतीक बन गए.

भित्ति चित्र कला को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है : एक है सामाजिक संदेश और दूसरा है साज सज्जा. दोनों ही श्रेणियों के चित्र शहरी परिदृश्य की एकरसता को भंग करते हैं और अप्रत्याशित स्थान पर अप्रत्याशित दृश्य चित्रित कर नगरवासियों को न केवल चक्कर में डालते हैं बल्कि उन का मनोविनोद भी करते हैं.

यह नई कला शैली कलाकारों को पारंपरिक कलावीथियों और संग्रहालयों की परिसीमा से बाहर निकालने, अपनी कलाभिव्यक्ति के लिए कहीं व्यापक चित्रफलक उपलब्ध कराने और कहीं ज़्यादा दर्शकों को आकर्षित करने में सफल हुई है. इस नई शैली में काम करना सरल नहीं है : वर्षा में रंग बह निकलते हैं, धूप में अवांछनीय परछाइयां आ धमकती हैं और सधे हुए हाथ तेज़ हवा में हिल जाते हैं. यही नहीं, आधुनिकतम रंगों के प्रयोग के बावजूद, ये कलाकृतियां संभवतः २५ वर्ष से अधिक समय तक टिक नहीं पाएंगी. फिर भी सुफल की कमी नहीं है.

मारिस रावेल के भित्ति चित्र का एक अंश जो श्मिट म्यूज़िक कं., मिनियपलिस, की दीवार की शोभा है

फोटो : जार्ज गरस्टर/फोटो रिसचर्स

ऑर्डर कैसे दें ?

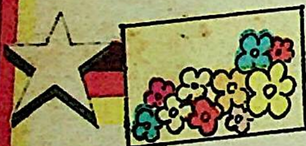
१. संलग्न ऑर्डर फार्म में अपना पूरा नाम व पता अंग्रेजी में स्पष्ट लिखें.
२. नीचे के खाने मे अपने उस मित्र वसंबंधी का नाम व पता जिसे आप सर्वोत्तम पठन सामग्री भेंट देना चाहते हैं, अंग्रेज़ी में स्पष्ट लिखें.
३. ऑर्डर कार्ड को पृष्ठ से अलग करें और डाक में डाल दें— बस, आज ही.
४. आप के ऑर्डर के प्राप्त होने पर हम आपको 'रीडर्स डाइजेस्ट की 1983 पाकेट-डायरी वी. पी. पी. द्वारा भेजेंगे. साथ साथ आप के मित्र को आप का बधाई कार्ड तथा वार्षिक उपहार के 12 अंकों का पहला अंक भेज दिया जाएगा. वी. पी. पी. आते ही आप डाकिये को 43 रुपए देकर उसे छुड़ा लें. डाकघर से आपका शुल्क प्राप्त होने पर आप के मित्र को शेष 11 अंक नियमित रूप से हर माह भेजते रहेंगे.

गारंटी सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट ' यदि पूर्णतः आप को संतुष्ट न कर सके, तो किसी वक्त आप अपनी सदस्यता समाप्त कर के, बकाया रुपए वापस ले सकते हैं।

हर साल ...
अबकी क्या उपहार दिया जाए.

चूंकि आप 'सर्वोत्तम' के पाठक हैं और हमारे मित्र, हम आप को एक ऐसा उपहार पेश कर रहे हैं जो न केवल मनोरंजक है, बल्कि ज्ञान का भी ख़ज़ाना है.

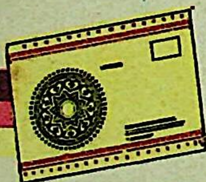
पेश है 'सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट' की 5 स्टार उपहार सेवा:



आपके उपहार का ऑर्डर मिलते ही हम आपके मित्र को आपकी ओर से एक ख़ूबसूरत बधाई कार्ड भेजकर आपके उपहार की ख़ुशख़बरी देंगे.

आप जब 'सर्वोत्तम' भेंट करते हैं, तो अपने लिए पाते हैं— 1983 की एक आकर्षक 'रीडर्स डाइजेस्ट' डायरी – मुफ़्त.





साथ साथ, एक सलोने आवरण में 'सर्वोत्तम' का ताज़ा अंक आपके मित्र को प्रेषित किया जाएगा तथा नियमित रूप से अंक हर माह उन के पास पहुंचते रहेंगे.

आप अपने सबसे प्रिय मित्र व संबंधी को साल भर के लिए सर्वोत्तम पठन सामग्री भेंट कीजिए. आप का उपहार एक बार नहीं, बल्कि हर माह आप के मित्र को आप का सस्नेह स्मरण दिलाएगा.



मित रूप से युवा कलाकारों को अपनी दीवारों पर चित्र बनाने के लिए आमंत्रित करते हैं. इसी प्रकार उरावा नगर के बंदी अपने बंदीगृह की एक दीवार पर चित्र बना कर बाह्य जगत को बंदीगृह के भीतर ले आए हैं. आस्ट्रेलिया स्थित सिडनी में बसे विभिन्न राष्ट्रीयता वाले लोगों ने एडिसन रोड कम्यूनिटी सेंटर के बाहरी भाग को अपने अपने देश के दृश्यों से रंग डाला है. आज सारी दुनिया में जगह जगह चित्रकारों ने तेल की टंकियों, कारखानों की चिमनियों और यहां तक कि पुल आदि की दीवारों पर अमूर्त आकृतियों, लोगों, पशु पक्षियों और पेड़ पौधों के ऐसे ऐसे आश्चर्यजनक चित्र बना डाले हैं जिन्हें देख भ्रम होता है कि वे सचमुच के हैं.

प्रागैतिहासिक मानव द्वारा निर्मित प्रस्तर चित्रों के समय से ही दीवारों पर चित्र बनाने का प्रयत्न चला आ रहा है. लेकिन वर्तमान भित्ति कला का उद्‌भव साठादि दशक में अमरीका के उस स्वच्छंदतावादी दौर से हुआ जब पौप कला, दीवारों पर खिंचे रेखाचित्र और सड़कों पर बने साइकेडेलिक ग्राफ़िक एक नए ग़ैर परंपरावादी आंदोलन के प्रतीक बन गए.

भित्ति चित्र कला को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है : एक है सामाजिक संदेश और दूसरा है साज सज्जा. दोनों ही श्रेणियों के चित्र शहरी परिदृश्य की एकरसता को भंग करते हैं और अप्रत्याशित स्थान पर अप्रत्याशित दृश्य चित्रित कर नगरवासियों को न केवल चक्कर में डालते हैं बल्कि उन का मनोविनोद भी करते हैं.

यह नई कला शैली कलाकारों को पारंपरिक कलावीथियों और संग्रहालयों की परिसीमा से बाहर निकालने, अपनी कलाभिव्यक्ति के लिए कहीं व्यापक चित्रफलक उपलब्ध कराने और कहीं ज़्यादा दर्शकों को आकर्षित करने में सफल हुई है. इस नई शैली में काम करना सरल नहीं है : वर्षा में रंग बह निकलते हैं, धूप में अवांछनीय परछाइयां आ धमकती हैं और सधे हुए हाथ तेज़ हवा में हिल जाते हैं. यही नहीं, आधुनिकतम रंगों के प्रयोग के बावजूद, ये कलाकृतियां संभवतः २५ वर्ष से अधिक समय तक टिक नहीं पाएंगी. फिर भी सुफल की कमी नहीं है.

मारिस रावेल के भित्ति चित्र का एक अंश जो शिमट म्यूज़िक कं., मिनियपलिस, की दीवार की शोभा है

फोटो : जार्ज गास्टर/फोटो रिसचर्स

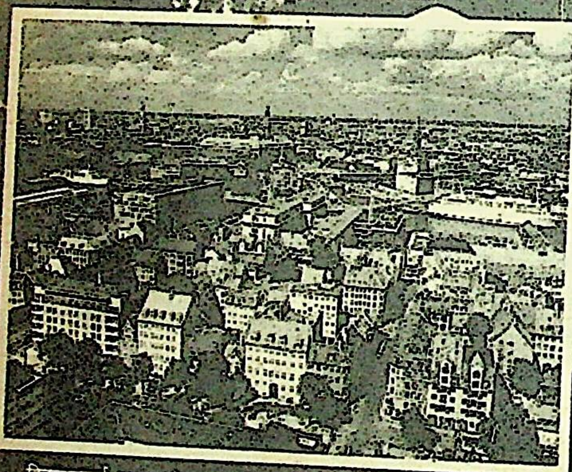
जहां समाजवाद और पूंजीवाद गले मिलते हैं

कोपेनहेगन

अनूठे स्वतंत्र नागरिकों का एक भरापूरा कुनबा जो भरपूर टैक्स दे कर अपने साथियों और अपने शहर के अनुपम जीवन स्तर को ऊपर उठाना अपना फ़र्ज़ समझता है

क्रिस्टोफ़र लूकास

रात के समय टिवोली उद्यान की हज़ारों रोशनियां अपनी जगमगाहट से शहर पर जादू सा बिखेरती रहती हैं



क्रिस्त्यानबर्ग महल को एकटक निहारते कोपेनहेगन का एक हवाई दृश्य

डेनिश भाषा के एक आकर्षक पोस्टर में एक मादा बतख बड़ी अकड़ से अपने सात चूज़ों को कोपेनहेगन की व्यस्ततम सड़क पार करती दिखाई गई है. और यह दृश्य कपोल कल्पना नहीं है. मैं ने दो बार अपनी आंखों से देखा है: सख्त आवाजाही की वेला में मुसकराते हुए हवलदार ने भीड़ और यातायात को रोक दिया. एक डेनिश मित्र ने इस पर टिप्पणी की, "दूसरों की तरह उन के भी तो अधिकार हैं या नहीं?"

अधिकांश नगरों में बतखों की नियति होती है जीभ के चटखारों के लिए संतरे की चटनी के साथ अपनी बोटियां नुचवाना. कोपेनहेगन में उन की नियति है नागरिक अधिकारों के प्रतीक स्थापित करना. मुझे कोपेनहेगन पसंद है. नहीं, मुझे इस से प्रेम है, क्योंकि कोपेनहेगन, डेनिश लोगों की प्रिय अभिव्यक्ति के अनुसार, 'ह्यूगली' है—यानी 'उष्म और आरामदेह.'

कोपेनहेगन का मतलब है पीले रंग की साइकिलों पर सवार सिंदूरी जाकटों वाले डाकिए, कोपेनहेगन का मतलब है सिर पर टोप पहने स्याह चेहरों वाले चिमनी बुहारने वाले. कोपेनहेगन का मतलब है, भीमकाय गुड्डों जैसे सिपाहियों वाली, मार्च पास्ट करती महारानी की सुरक्षा गारद. यह शहर है परीकथाओं जैसे राजमहलों का, फुहारें उछालते और चमचमाते फव्वारों का, १७वीं सदी की हलकी हरी छतों और गुंबदों का, और १८वीं सदी के खूबसूरत, गुलाबी, हलके भूरे और हलके नीले शहरी मकानों की कतारों का.

डेनमार्क के ४०६ द्वीपों में से सब से बड़े ज़ीलैंड (शेलान) के पूर्वी तट तथा अंशतः



कोपेनहेगन के अनेक जलमार्गों में से एक—नाइहावन नहर

छोटे से आमेगर के उत्तरी भाग पर बसा कोपेनहेगन समुद्र से ब्याहा हुआ है. हर सड़क समुद्र तट पर खुलती है, चिमनियों के जंगलों से जलपोत झांकते रहते हैं, और दोलते झूलते मस्तूल मानो ख़ुद बख़ुद लंगरगाह का निर्माण करते रहते हैं.

डेनमार्क की यह 'कुनकुनी और आरामदेह' राजधानी, स्कैंडेनेविया का दूसरा व्यस्ततम बंदरगाह है; शहरी ह्रास के इस युग में यह अपने ढंग का विरल शहर है. कोपेनहेगन के ४,९८,००० खिलंदड़े नागरिकों में स्कैंडेनेवियाई गंभीरता के बजाय लातीन मस्ती ज़्यादा है. ट्रैफ़िक हलका, फ़ुरसतपरस्त और बाअमन है. गंदी बस्तियां यहां नहीं हैं. सार्वजनिक परिवहन वक़्त की रफ़्तार जैसा शांत, सहज और अबाध है. प्रदूषण यहां ज़माना पहले ख़त्म कर दिया गया था.

राजसी वैभव. इस क़दर बेझंझट होने के कारण कोपेनहेगन सुस्त भी हो सकता था. पर नहीं. अपने महत्वपूर्ण विश्वविद्यालय, लाजवाब बैले और आपेरा, चार आर्केस्ट्राओं, २० से अधिक सिनेमाघरों, ४० से अधिक संग्रहालयों और असंख्य जाज़ क्लबों, चमक दमक वाली डिस्कोज़ और नाइट क्लबों पर इसे बड़ा गर्व है. यहां के २,००० मदिरालयों, कहवाघरों, और रेस्तोराओं में लज़ीज़ खाने मिलते हैं. डेनमार्क में १०० से ज़्यादा क़िस्मों की बियर और कोई २०० क़िस्म के खुले स्मौरेब्रौड सैंडविच बनते हैं; और मिलती है एक बहुत तेज़ शराब, जिसे पीने के बाद अनजान पियक्कड़ों की खोपड़ी झुनझुने की तरह बजती ही चली जाती है.

जी हां, कोपेनहेगन अद्भुत है—मेरे जाने घूमे शहरों में सब से सुखद, निरापद, मैत्रीपूर्ण और स्वतंत्र स्वभाव नगर. विशुद्ध आनंद से परिपूर्ण. और यह एक मंत्रमुग्धकारी सम्मिश्रण भी है: इस में पेरिस की सी तेज़ी, स्फूर्ति और लालित्य है, लंदन का सा राजसी वैभव है, और हैवेनिस की काव्यमयी स्वप्निलता. वह स्वच्छ है, पर कीटाणुनाशकों की तरह नहीं गंधाता; समृद्ध है पर चौंधियाता नहीं, अलमस्त है, पर तक़ल्लुफ़ की 'धत-तेरे' की नहीं करता. वर्जनाओं से मुक्त है, पर बेलगाम नहीं. विवेक और उल्लास का यहां मिला जुला साम्राज्य है.

समुद्री डाकुओं के युग में कोपेनहेगन में मछुआरों का सिर्फ़ एक गांव था—हावन. ११६७ में लड़ाकू पादरी, बिशप आपसैलोन ने वहां एक महल बनवाया और समुद्री लुटेरों से रक्षा के लिए गांव के गिर्द एक ऊंची फ़सील खड़ी कर दी. हावन तब कोपेनहावन ('सौदागरों' का बंदरगाह) कहलाने लगा. यही कोपेनहेगन का शैशव काल था.

१५वीं शताब्दी में नार्डिक राजवंश का एक शासक दल बल सहित कोपेनहेगन में आ बसा, परिणामतः नगर शक्तिशाली नार्डिक साम्राज्य की गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बन गया. नारवे, अधिकांश स्वीडन और जरमनी के उत्तरी प्रदेश सम्मिलित रहे कई बार इसी साम्राज्य के अधीन रहे; बाल्टिक सागर पर भी इसी का नियंत्रण रहा. तथापि, बारंबार के युद्धों ने डेनमार्क की शक्ति निचोड़ ली. नेपोलियन से डेनमार्क की मित्रता के कारण, १८०७ में, एक ब्रिटिश बेड़े ने तीन दिन तक कोपेनहेगन पर बर्बरतापूर्ण बम वर्षा की. धुएं के बगूले छंटे तो पुराने कोपेनहेगन का नाम मात्र ही बचा मिला.

सूर्यसम्राट की इमारतें. बचे हुए ऐतिहासिक स्मारकों में से अधिकांश डेनमार्क के 'सूर्यसम्राट' क्रिस्लान चतुर्थ (१५८८-

पृष्ठ ९२-९३ के फ़ोटो: टाम नैबिया. इनसेट: मैसरश्मिट/एफ पी जी; इनसेट: जानसन/डेविड हरिस ग्रोर्ड



भ्रमण स्थली स्टोर्क फ़ाउनटेन. इनसेट : पीते पिलाते ग्राहकों की मेज़ के ऊपर लहराता डेनमार्क का राष्ट्रध्वज

१६४८) के समय के थे. नगर का विस्तार दुगुना करने के अतिरिक्त इस संस्कृतिचेता सम्राट ने लाल ईंटों वाला रोज़नबर्ग महल बनवाया, जिस में आजकल इस राजवंश के रत्न रखे हुए हैं, और हरे तांबे के चार नाग दैत्यों की परस्पर गुंथी दुमों से बने बुर्ज वाले खंड में है कोपेनहेगन का बोर्सन (शेयर बाज़ार). इस की ११० फ़ुट ऊंची गोल मीनार मूलतः खगोलशास्त्रीय वेधशाला थी. ये सारी इमारतें भवन शिल्प की दृष्टि से जानी मानी हैं.

इसी तरह अमालियनबर्ग महल के चार लालित्यपूर्ण, अत्यलंकृत मुखद्वार भी स्थापत्य की दृष्टि से अनूठा है जिस की एक जैसी प्रतिमाएं बटिया पत्थर क एक अष्टकोण में से प्रतिबिंबित होती हैं. इस के खंभों की नक़्क़ाशी अद्वितीय है और समूचा प्रासाद डेनमार्क के राजवैभव के इतना अनुकूल है कि आज भी यह वर्तमान महारानी मारग्रेट द्वितीय का आवास है. ज़िंदादिल मारग्रेट का यह आवास आज के यूरोप का सब से ख़ूबसूरत घर माना

एम लुइज़े ब्रिमबर्ग/डेनिश टूरिस्ट बोर्ड. इनसेट : टाम नेबिया/वुडफ़िन कैंप एंड एसोसिएट्स

जाता है. ये प्राचीन भवन कोपेनहेगन शहर को ख़ूब फबते हैं, पर कोपेनहेगन के वासी कभी भी प्राचीनताप्रेमी नहीं रहे. १८४९ में डेनमार्क ने बड़ी निर्भीकता से व्यापक मताधिकार पर आधारित संविधान अपनाया था. १८९१ में कोपेनहेगन ने ही बेरोज़गारों, अपंगों और बूढ़ों के लिए सामाजिक बीमा योजना का सूत्रपात किया. तीसादि में डेनमार्क लोक कल्याणकारी राज्य बनने की दिशाा में अग्रसर हुआ.

आज कोपेनहेगन एक ऐसे देश की राजधानी है जो सामाजिक दृष्टि से संसार के सब से उन्नत और सही अर्थों में राजतांत्रिक है. यह एक प्रगतिशील समाज है जो गर्भावस्था से ले कर क़ब्र तक अपने नागरिकों की देखभाल में सक्षम है. प्रत्येक डेन विश्वविद्यालय तक निःशुल्क शिक्षा, निःशुल्क चिकित्सा, संतति भत्ते, किराए में इमदाद और उदार पेंशन का हकदार है; और इन सारे ख़र्चों को पूरा करने के लिए वह जो आय कर देता है (औसतन ५० प्रति शत, अधिकतम ७५ प्रति शत) वह संसार की सर्वोच्च आय कर दरों में से है. इस के वावजूद यहां का छोटा वड़ा, हर तरह का व्यापार घोर पूंजीवादी रीति नीति से चलता है. प्रत्येक डेन की औसत आय (अनुमानतः १,१०,००० रुपए) संसार में चौथे नंबर की औसत (प्रति व्यक्ति, प्रति वर्ष) आय है, जो एक अमरीकी की औसत आय से कहीं अधिक है.

कुछ भी करें, अगर...यह समृद्धि कोपेनहेगन को ईर्ष्याजनक स्थिरता और शांति प्रदान करती है. इस के वावजूद डेन लोग अपने बारे में गंभीर नहीं हैं. वे सहनशील, आतिथ्यप्रिय, हंसमुख, आरामतलब, ईमानदार और सरल हृदय होते हैं. साइकिल सवारों के जत्थे के जत्थे बीच बाज़ार में ट्रैफ़िक के बीच घुस पड़ते हैं, लेकिन किसी की त्यौरियां नहीं चढ़तीं. टैक्सी चालक 'धन्यवाद' लुटाते फिरते हैं; परिचारिकाएं ग्राहकों को ख़ुश करने के लिए सब कुछ करने को तैयार रहती हैं. सब से बड़ी बात यह कि सुखवादी डेन उन्मुक्त हैं और उन की राजधानी भी उन्हीं जैसी उन्मुक्त है. वे न तो अभद्र हैं, न फूहड़; वे महज़ उन्मुक्त और आमोदप्रिय हैं. यदि कोई डेन फुटपाथ पर बैठ कर भोजन करना चाहता है तो करे, और यदि वह बियर पीता है और सड़क पर ज़ोर ज़ोर से गाता घर लौट रहा है तो भी ठीक है. और यदि दो व्यक्ति विवाह किए बिना साथ साथ रहना चाहें तो वे इस के लिए भी स्वतंत्र हैं. एक डेन संपादक ने मुझ से कहा, "हम जो भी करना चाहें, करने के लिए स्वतंत्र हैं. जब तक हम कर चुका रहे हैं, तब तक हर चीज़ के लिए स्वतंत्र हैं."

कोपेनहेगन के नागरिकों को अपने नगर पर बेहद गर्व है, विशेषतः टिवोली पर जो विश्व का प्रख्यात प्रमुख आमोद उद्यान है, नगर के बीचोबीच, हरे भरे सवा तीन हेक्टेयरों पर फैले इस उद्यान में स्वप्न मानो धरती पर उतर आए हैं. अलीबाबा के जमाने की मसजिदें, सजधजपूर्ण चीनी मंदिर और पगोडे—सब कुछ देवदारों, शाहबलूत और नीबुओं के झुरमुटों में दुबका दुबका और शहर के चारों आर्केस्ट्राओं के संगीत से गूंजता झंकारता. इस सब के अतिरिक्त वसंत और ग्रीष्म में यहां एक लाख फूल खिलते हैं, आतिशबाज़ियां चलती हैं, तफ़रीहन घुड़सवारियां की ज़ाती हैं. मदारी और बाज़ीगर करतब दिखाते हैं; और यहां के २२ रेस्तरां प्रायः हर तरह का भोजन परसते हैं.

मगर कोपेनहेगन के नागरिकों को सब से अधिक गर्व इस बात पर है कि उन का नगर अत्यंत सुचारु रीति से चलता है. १९५९ में

प्रबुद्ध कोपेनहेगन वासियों ने इस धारणा का डट कर विरोध किया कि बड़ी इमारतें बढ़िया भी होती हैं, और गगनचुंबी इमारतों के निर्माण पर पाबंदी लगवा दी. लार्ड मेयर (महापौर) ईगोन वाइदेकांप कहते हैं: "हम कोपेनहेगन की पारंपरिक शैली और स्वरूप बनाए रखना चाहते हैं. हम मानते हैं कि जनसंख्या की रोकथाम द्वारा ही हम नगरीय अर्थव्यवस्था की रोकथाम कर सकते हैं."


हांस क्रिस्त्यान आनरसन

जितना ही मैं कोपेनहेगन में घूमता फिरता हूं. स्थायित्व का यह गहन भाव उतना ही स्पष्ट होता जाता है—शहर की ठोस, सुगढ़ इमारतों के माध्यम से; और यहां के भद्र, शालीन लोगों की आत्मविश्वास भरी चाल के माध्यम से, जो यह मानते हैं कि किसी भी समाज के बारे में राय इस आधार पर बनानी चाहिए कि वह अपने निर्बलतम सदस्यों के प्रति कैसा व्यवहार करता है. मैं समझता हूं कि इस शहर के सातत्य और दिशाबोध को छला नहीं जा सकता.

वस्तुतः १९५७ से कोपेनहेगन की आबादी में ३,००,००० की कमी हुई है. यूं योजनाकारों को उन पुरानी इमारतों को, जो गंदी बस्तियों का निमित्त बन सकती थीं, गिरा कर नए हवादार आवास और अधिक उद्यान आदि बनाने का अवसर मिल गया. परिणामतः यहां के नागरिक विश्व के अन्य किसी भी नागरिक की अपेक्षा श्रेष्ठतर घरों में रहते हैं.

संकट वेला. फिर भी कोपेनहेगन की अपनी समस्याएं हैं. सब से बड़ी समस्या है धन की. कोपेनहेगन कई वर्षों से बेहद ख़र्च करता रहा है. और उसे दिए जाने वाले क़र्ज़ में हाल ही में कटौती कर दी गई. समाचार पत्र संपादक हरबर्ट पुडिंक कहते हैं: "संकट वेला आई तो सब को लगा कि अव्यवस्था फैल जाएगी. परंतु हुआ यह कि जीवन स्तर की रक्षा और ज़रूरतमंदों की सहायता के लिए जन साधारण ने एक लोकप्रिय मुहिम छेड़ दी. अधिकांश मध्यमवर्ग को क़ीमतों में बढ़ोतरी और आमदनी में गिरावट का सामना करने के साथ साथ अपनी अपेक्षाओं को भी सीमित कर देना पड़ा. लेकिन, बगावत नहीं हुई.

एक गुनगुने इतवार के दिन टहलता टहलता मैं लांगलिनी निकल जाता हूं. तफ़रीहबाज़ गरमियों की धूप के चंद आख़िरी घंटों के मज़े लूटते मिलते हैं. यहां पहुंच कर सब से पहले वे अपने अपने हैट उठा कर, हांस क्रिस्त्यान आनरसन* की कल्पना के अनुरूप, गीली चट्टान पर शरमाई सी बैठी कांसे की मत्स्य-कन्या—लिटिल मरमेड—का अभिवादन करते हैं, तब नज़र डालते हैं बंदरगाह के नीले पानी में दौड़ लगाती नावों पर. ढेरों नौकाएं वहशियाना अंदाज़ से एक साथ दौड़ती हैं, और चमचमाते पानी पर तितर बितर हो जाती हैं. मेरे पास खड़ा एक बुजुर्ग मुसकरा उठता है; और मैं जानता हूं, क्यों. वह इस बात पर ख़ुश हो रहा है कि वह 'कुनकुने और आरामदेह' शहर का वासी है, जहां सपने देखने की घड़ियां और सुविधाएं आज भी मयस्सर हैं.

*डेनमार्क के विश्व प्रसिद्ध परीकथाकार आन्‌रसन (१८०५-७५) की 'लिटिल मरमेड' एक लोकप्रिय कृति भी है.

फ़ोटोः कापीराइट १९७९ फ़िम हार्ट/ब्लैक स्टार

परिवार नियोजन के इस बहु प्रचारित साधन के बारे में आप के मन में जो प्रश्न बार बार उठते हैं, यहां प्रस्तुत हैं उन के उत्तर . . .

नसबंदी और पौरुष

शिवानंद कारकल

तीस वर्ष पहले बहुत कम लोगों को नसबंदी का महत्व समझ में आता था. आम आदमी इसे ऐसा क़दम समझता था जिसे उसी हालत में उठाया जा सकता है जब प्रजनन करने की क्षमता को हमेशा हमेशा के लिए छोड़ देने का निश्चय कर लिया जाए. संतति निरोध के लिए नसबंदी कराना तो पुरुषों को विशेष रूप से अमान्य था. इस का एक कारण यह था कि अधिकांश पुरुषों का विचार यह है कि गर्भ धारण करना तो स्त्रियों का कर्तव्य ही है. और दूसरा यह कि नसबंदी से संबंधित आपरेशन और बाद में शरीर पर उस के प्रभावों के बारे में बहुत सी ग़लत बातें फैली थीं.

पचासादि में जब भारत सरकार ने राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम के अभिन्न अंग के रूप में नसबंदी शुरू की, तब स्त्री पुरुष दोनों ने इस का विरोध किया. धीरे धीरे यह विरोध कम होता गया. निःशुल्क सुविधाओं तथा आर्थिक लोभ के कारण नसबंदी कराने वालों की संख्या धीरे धीरे बढ़ती गई. इस का नतीजा यह हुआ कि पचासादि में जहां सारे देश में नसबंदी करानेवालों की संख्या कुछ हज़ार ही थी, वहां १९६८ तक दस लाख से भी ज़्यादा लोग नसबंदी करवा चुके थे.

कुछ लोगों ने इसे सरकार का प्रभावशाली कार्यक्रम माना और बाक़ी लोगों ने, जिन में डाक्टर और जनगणनाविद् भी थे, इसे सरकार की ओर से जबरन लागू किया जाने वाला कार्यक्रम समझा. १९७६ में जब श्रीमती इंदिरा गांधी की सरकार ने आपातकाल लागू किया, तब ६२ लाख भारतीय पुरुषों की नसबंदी की गई. इस से नसबंदी का विरोध और तीव्र हो गया और १९७७ के चुनाव में इंदिरा सरकार के पतन का मुख्य कारण उत्तर भारत के कुछ राज्यों में ज़ोर ज़बरदस्ती से की गई नसबंदी को ही माना गया.*

* नसबंदी के विरुद्ध प्रचार का यह असर हुआ कि नई सरकार इस कार्यक्रम की ओर से इतनी उदासीन हो गई थी कि अगले वर्ष नसबंदी करानेवालों की संख्या घट कर १.९ लाख रह गई. लेकिन १९८० से इस कार्यक्रम में फिर तेज़ी आ रही है. अब हर वर्ष लगभग पांच लाख लोग नसबंदी करवा रहे हैं.

जोन रैटनी हाइलमेन के एक लेख पर आधारित

इंदिरा सरकार के पतन का एक महत्वपूर्ण कारण यह भी था कि आम लोगों के मन में यह धारणा घर करती जा रही थी कि पुरुष के भावनात्मक जगत और शरीर पर नसबंदी का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है. क्या इस से सचमुच पुरुष की कामेच्छा और उस से प्राप्त होने वाली तुष्टि कम हो जाती है? क्या सचमुच नसबंदी के कारण पुरुषत्व कम हो जाता है?

डाक्टर और सेक्स विशेषज्ञों ने उन लोगों को ऐसे बहुत से सवालों के जवाब दिए हैं जिन्हों ने संतति निरोध का यह तरीक़ा अपनाया है. यह सिद्ध हुआ कि प्रायः सभी पुरुष नसबंदी करवा कर ख़ुश हैं.

यौन जीवन पर प्रभाव

बंबई के एक बैंक में काम करने वाले युवा क्लर्क अशोक रानाडे ने नसबंदी कराने के कारण के बारे में बताते हुए कहा, "हमारे बीच तीन बच्चे हैं और हम इस से ज़्यादा बच्चों का पालन पोषण नहीं कर सकते. पहले पहल मुझे डर था कि आपरेशन के बाद सेक्स का आनंद नहीं मिलेगा, लेकिन मेरे एक सहयोगी ने इस डर को बेबुनियाद बताया. उस ने नसबंदी करवा रखी थी और उस पर इस का कोई बुरा असर नहीं पड़ा था."

ये चिंताएं निराधार हैं. केवल नसबंदी कराने से पति या पत्नी के सामने सेक्स की कोई नई समस्या नहीं उठ खड़ी होती. बंबई के एक सेक्स विशेषज्ञ डा. प्रकाश कोठारी का मत है, "नसबंदी का कामेच्छा या पुंसत्व पर कोई बुरा असर नहीं पड़ता और आपरेशन के बाद पुरुष के यौन जीवन में कोई परिवर्तन नहीं आता." सही बात तो यह है कि संतान होने की संभावना नष्ट हो जाने पर या गर्भ निरोधक उपायों के दुष्प्रभाव की चिंता समाप्त हो जाने पर बहुत से दंपतियों के यौन संबंध अधिक निश्चिंत और सहज हो जाते हैं. ज़्यादातर मामलों में तो यौन सुख तथा संभोग की दर बढ़ जाती है.

विशेषज्ञ यह मानते हैं कि नसबंदी कराने के लिए किसी पर भी दबाव नहीं डाला जाना चाहिए. बंबई के स्त्री रोग विशेषज्ञ तथा फ़ेमिली प्लानिंग एसोसिएशन आफ़ इंडिया के चिकित्सा सलाहकार डा. महिंदर वत्स का कहना है, "आदर्श स्थिति यह होगी कि नसबंदी कराने वाले व्यक्ति को अपने संदेह और भय का निराकरण करने के लिए पहले सलाह ले लेना चाहिए. ऐसे सलाह मशवरे से मानसिक रूप से रुग्ण उन व्यक्तियों को भी मदद मिल जाती है जो सिर्फ़ इस लिए नसबंदी कराते हैं ताकि पत्नी को बच्चों से वंचित रख कर बदला चुका सकें. इस बात पर भी सब सहमत हैं कि अगर पत्नी राज़ी न हो तो पुरुष को नसबंदी नहीं करानी चाहिए."

आदमी के मन में आपरेशन की प्रक्रिया या कुछ ग़लत कट जाने का डर स्वाभाविक है, लेकिन वास्तविकता यह है कि नसबंदी के आपरेशन में इतनी पीड़ा भी नहीं होती जो दांत निकलवाने में होती है

पुरुष हारमोन

आपरेशन के दौरान क्या होता है? सब से पहले सर्जन प्रजनन भाग को संज्ञाहीन करता है. उस के बाद अंडकोष के दोनों ओर या शिश्न के ठीक नीचे चीरा लगाया जाता है. शुक्राणुवाहिका को सावधानीपूर्वक पहले एक ओर और फिर दूसरी ओर, बाहर निकाला जाता है. इस के बाद उसे काट दिया जाता है ताकि अंडकोष से निकलने वाले शुक्राणु वीर्य में मिलने न पाएं. इस के बाद चीरे को सी दिया जाता है. हालांकि आपरेशन के बावजूद

शुक्राणु उत्पन्न होते हैं, लेकिन उन का वीर्य तक जाने का रास्ता रोक दिया जाता है. वे शरीर में ही घुलमिल जाते हैं. शरीर में पुरुष हारमोन उसी तरह बनते रहते हैं जैसे पहले बनते थे, उतनी ही मात्रा में बनते रहते हैं.

आपरेशन के बाद आम तौर पर मरीज़ को दो दिन तक आराम करने की सलाह दी जाती है. हो सकता है, जननांग में दर्द हो जाए, लेकिन यह दर्द ऐसा नहीं है जो एस्पिरीन खा कर या बर्फ़ की थैली रख कर दूर न हो. कभी कभी ऐसा भी होता है कि नसबंदी से कोई छूत लग जाए, सूजन हो जाए, विवर्णता या पीड़ा आ घेरे, चीरे वाली जगह के पास रक्त का थक्का बन जाए या अंडकोष में पानी भर जाए, लेकिन इन सब का आसानी से इलाज हो जाता है.

फिर से जोड़ना संभव

नसबंदी कराने के हफ़्ते दस दिन बाद पुरुष रतिक्रिया में लिप्त हो सकता है, हालांकि उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि आपरेशन से पूर्व अंडकोष में जो शुक्राणु जमा थे, उन के कारण अनचाहा गर्भ भी ठहर सकता है. ऐसी स्थिति से बचने के लिए पुरुष को चाहिए कि वह तब तक रतिक्रिया में लिप्त न हो जब तक वीर्य परीक्षा से यह सिद्ध न हो जाए कि अब शुक्राणु शेष नहीं हैं. इस में दो तीन महीने लग जाते हैं. इस दौरान दंपती चाहे तो गर्भ निरोधक काम में ला सकते हैं.

नसबंदी पर ३०० से ले कर १००० रुपए तक ख़र्च होते हैं. यह ख़र्च क्लीनिक या अस्पताल के साधारण या बढ़िया होने पर निर्भर करता है. सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं में नसबंदी मुफ़्त की जाती है.

नसबंदी कराने के बाद अगर कोई व्यक्ति फिर संतान चाहे तो क्या होगा? आम तौर पर डाक्टर यह सलाह देते हैं कि नसबंदी उन्हीं लोगों को करानी चाहिए जो भविष्य में और संतान पैदा न करने का निश्चय कर चुके हों. लेकिन बंबई के मूत्र विज्ञान सर्जन डाक्टर फ़रदून सूनावाला का कहना है, "भारत जैसे विकासशील देश में, जहां आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में बाल मृत्यु दर ऊंची है, नसबंदी करवा चुका आदमी फिर से पिता बनने की कामना कर सकता है." सौभाग्य से शुक्रवाहिका के सिरों को फिर से जोड़ना संभव होता जा रहा है. यह जुड़ते ही शुक्राणु फिर से वीर्य में प्रवेश करने लगते हैं. डा. सूनावाला ४०० से अधिक लोगों की नसबंदी खोल चुके हैं, उन का कहना है कि नई सूक्ष्म शल्य चिकित्सा द्वारा दस में से ऐसे नौ लोगों की नसें पुनः जोड़ी जा सकती हैं जिन्हों ने पिछले दस वर्षों के अंदर नसबंदी कराई.

लेकिन नसबंदी खोलने की विधि लंबी और महंगी है. भारत में कुछ ही डाक्टर इस क़िस्म का आपरेशन करने के योग्य हैं. शत प्रतिशत सफलता की गारंटी भी नहीं. डा. सूनावाला का कहना है, "पुरुष की उम्र और सर्जन की योग्यता महत्वपूर्ण बात है. अगर पांच वर्ष की अवधि के भीतर नसबंदी खुलवाई जाती है तो शुक्राणुओं की संख्या जल्दी ही बढ़ जाती है तथा स्त्री के मां बनने की संभावना अधिक हो जाती है. अगर नसबंदी १० साल से पहले हुई तो वीर्य में शुक्राणुओं के मिलने की गति धीमी और अपूर्ण होती है. बंबई के के ई एम अस्पताल के मूत्र विज्ञान के प्रधान तथा प्रोफ़ेसर डा. देवपरदानानी का कहना है कि ज़्यादा समय बीत जाने पर अंडकोषों से जो कुंडलित नली शुक्रवाहिका तक जाती है, वह शुक्राणुओं के परिपक्व होने में बाधा डाल सकती है और आपरेशन के बावजूद पुरुष की प्रजनन क्षमता को लौटा नहीं पाती.

कोई ख़तरा नहीं

बंबई नगर निगम के परिवार कल्याण विभाग

के विशेष-प्रमुख अधिकारी तथा परिवार नियोजन के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त डा. दत्त पै का कहना है, "पीछे जो विरोध हुआ सो हुआ, लेकिन अब अगर हम अपने यहां के पुरुषों को यह विश्वास दिला सकें कि नसबंदी कराने में कोई ख़तरा नहीं है, कि यह तरीक़ा प्रभावशाली है, कि भविष्य में नसबंदी खोली भी जा सकती है तो संतति निरोध का यह ढंग धीरे धीरे आम हो जाएगा." अगर नसबंदी कराने वाले व्यक्ति को इस के बारे में पूरी पूरी जानकारी हो, उसे ठीक ठीक सलाह मिली हो, डाक्टर ने ठीक ढंग से आपरेशन किया हो तथा बाद में उस की ठीक ठीक देखभाल की गई हो तो तो इस का वैवाहिक जीवन पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है.



हास्य ध्वस्त

हमारे चर्च की गायक मंडली हमें नज़र नहीं आती. पूरे मंच के सामने मख़मल से ढंका जंगला लगा है. अतः मंडली के कुछ कल्पनाशील सदस्यों को यह युक्ति सूझी कि वे आरंभिक समूह गान के बाद बग़ल के दरवाज़े से बाहर निकल जाएं और नुक्कड़ की दुकान से ताज़े क्रीम भरे बन ले कर चुपचाप अपना स्थान ग्रहण कर लें.

उस सुबह अधेड़ उम्र के भद्र से दिखने वाले एक गायक बाहर जाने में तो सफल हो गए, परंतु वापस लौटते समय उन्हें लगा कि अपनी सीट तक पहुंचने के लिए उन्हें बन का लिफ़ाफ़ा दांतों में दबा कर रेंगना होगा. ख़ैर, वह अभी आधी ही दूरी तय कर पाए थे कि ज़ोर का ठहाका पड़ा. वह चौंके तो देखा कि वह जंगले के इस ओर रेंगे चले जा रहे थे.

—जे रावर्ट विल्स, जूनियर

वाक्य ध्वस्त

कहते हैं कि बरतानवी पुरातत्ववेत्ता, सैनिक और लेखक टी ई लारेंस एक काकटेल पार्टी में उपस्थित थे कि एक महिला उन के पास आईं. उन्हें देख कर उन की उम्र का कोई अनुमान लगा पाना कठिन ही था और वह बड़े बड़े लोगों को अपने परिचितों में गिनाने के लिए कुख्यात थीं. अतः लारेंस का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए वह भयंकर गरमी पड़ने का ज़िक्र ले बैठीं, "ज़रा सोचिए कर्नल, बानवे यानी हालत बानवे (डिगरी फ़ारेनहाइट) तक पहुंच गई."

फिर क्या था लारेंस ने भी सुर मिलाया, "वाह वाह, जन्म दिन मुबारक हो! बानवे की हो कर भी आप बानवे की नहीं लगती."

—'द लास्ट वर्ड' (स्टर्लिंग)



आदत पुरानी एढैसिव टेप की तरह होती है जो आसानी से चिपक तो जाती है, परंतु जितनी देर तक चिपकी रहती है उतनी ही देर से छूटती है. और अंत में जब इसे उखाड़ा जाता है तो अपने साथ खाल बाल भी लिए चली आती है.

—सिडनी जे हैरिस, 'फ़ील्ड न्यूज़पेपर सिंडीकेट'

उस नन्हे ज़ेब्रा की ज़ान बचाने का एक ही उपाय था कि उन्हीं पुराने औज़ारों द्वारा वह नाज़ुक आपरेशन कर दिया जाए

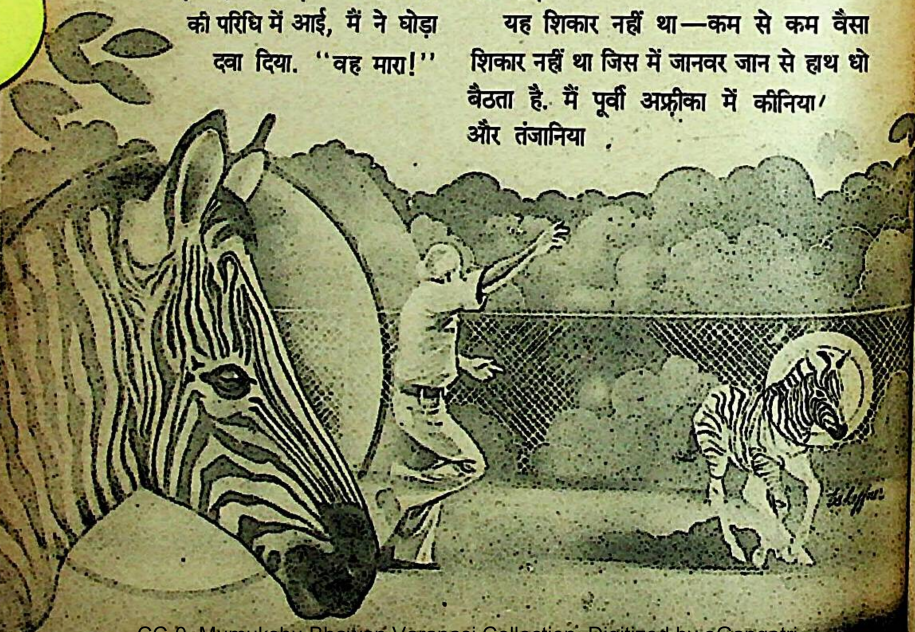
टाटू क्यों रोए . . .

डेविड टेलर

वह दृश्य जान वेन की किसी फ़िल्म का लगता था. मैं हेलीकाप्टर के दरवाज़े से पट्टों से बंधा नीचे लटका था. हेलीकाप्टर के पंखों की तेज़ हवा के थपेड़े मुझे लग रहे थे. मैं बंदूक़ ताने निशाना साध रहा था. नीचे धूप से तपते मैदान पर दौड़ती एक मादा ज़ेब्रा जैसे ही लक्ष्य की परिधि में आई, मैं ने घोड़ा दबा दिया. "वह मारा!"

अगले ही क्षण हेलीकाप्टर धूल उड़ाता ज़मीन पर उतर पड़ा. थोड़ी दूर पर वह मादा ज़ेब्रा घुटनों के बल गिरी और एक तरफ़ लुढ़क गई. लाल बालों और दाढ़ी वाले कीनियाई चालक लूई ने रेडियो पर यह निर्देश दिया कि ट्रक आ कर उस ज़ेब्रा को उठा ले जाए.

यह शिकार नहीं था—कम से कम वैसा शिकार नहीं था जिस में जानवर जान से हाथ धो बैठता है. मैं पूर्वी अफ़्रीका में कीनिया और तंजानिया



सीमा पर स्थित चिड़ियाघर के जानवरों का डाक्टर था और जानवरों का व्यापार करने वाले एक डच के लिए जेब्रे पकड़ रहा था. जानवरों के पीछे पीछे ट्रक दौड़ा कर उन्हें रस्से के फंदे से पकड़ने की बजाय हम डार्ट राइफ़ल द्वारा ऐसी सीरिंज मारते थे जिस में बेहोशी की तेज़ दवा भरी होती थी. वह सप्ताह बड़ा सफल रहा था. हम ने ३० ज़ेब्रे पकड़े. इस अभियान में न कोई ज़ेब्रा मरा, न किसी की हड्डी पसली टूटी और न हमारे किसी आदमी को कोई चोट आई. सभी ज़ेब्रों को जल्द ही मोंबासा भेजा जाने वाला था. वहां वे तब तक अलग थलग रखे जाने वाले थे जब तक उन्हें केप का चक्कर लगा कर रोटरडम नहीं पहुंचा दिया जाता. यह मादा ज़ेब्रा उस खेप का अंतिम नग थी.

सवाल का जवाब. जल्द ही हमारा हेलीकाप्टर बबूल की फुनगियों को छूता हुआ फिर उड़ान भरने लगा. नीचे धरती पर अधिक जानवर दिखाई नहीं दे रहे थे. यहां वहां कुछ हाथी दोपहर की तेज़ धूप से बचने के लिए साए में बैठे थे, एक जंगली सूअर पंकिल तट से निकल कर भाग रहा था, मटमैले रंग का एक मसाई (कीनिया और तंज़ानिया में उच्च भूभाग का निवासी) बैओबाब के तने से टेक लगाए किसी रोमन सीनेटर की तरह खड़ा था.

फिर हमें कुछ ज़ेब्रे दिखाई दिए. उन का सरदार मुड़ा और तेज़ी से भागने लगा. बाक़ी ज़ेब्रे भी उस के पीछे पीछे दौड़ पड़े. वे कुल मिला कर दस थे. उन में से तीन बच्चे थे. हम भी उन के पीछे पीछे उड़ चले. सामने जंगली आग से झूलसे बबूल के ठूंठ खड़े थे.

वृक्षों की ओर भागते ज़ेब्रे दो टुकड़ियों में बंट गए. एक टुकड़ी दाहिनी ओर दूसरी बाएं को मुड़ गई. वृक्षों से आगे निकलने के बाद वे दोबारा एक हो गए—सिर्फ़ एक बच्चे को छोड़ कर. वह तेज़ी से बबूल के एक पेड़ की ओर दौड़ रहा था. वह पेड़ से कोई छः मीटर दूर रहा होगा कि तीर की तरह एक ठूंठ से जा टकराया और वहीं धराशायी हो गया.

"नीचे उतारो," मैं चिल्लाया. लूई पहले ही हेलीकाप्टर को नीचे उतारने लगा था. जब तक हम भाग कर पेड़ के नीचे पड़े उस बच्चे के पास पहुंचे, ज़ेब्रों की टोली ग़ायब हो चुकी थी. मैं ने झुक कर बच्चे की छाती पर हाथ रखा. वह ज़िंदा था. उस का दिल धड़क रहा था. उस की नाक से ख़ून बह रहा था. मैं ने सावधानी से उस के सिर की हड्डियों को टटोला. कोई हड्डी टूटी नहीं लगती थी. बच्चे की उम्र कोई तीन सप्ताह की रही होगी.

"समझ में नहीं आता कि यह पेड़ से कैसे जा टकराया?" लूई ने सोचते हुए कहा.

मैं ने बच्चे का एक पपोटा खोल कर उस की आंख की जांच की. फिर दूसरा पपोटा उठाया. "यह देखो," मैं ने बच्चे की आंखों की ओर इशारा करते हुए कहा, "यह रहा तुम्हारे सवाल का जवाब."

लूई ने झुक कर बच्चे की आंखों की पुतलियों के अंदर उन नीले सफ़ेद धब्बों को देखा जिन की ओर मैं ने संकेत किया था. बच्चे को मोतियाबिंद था और वह अंधा था.

बच्चे ने हौले से सिर हिलाया. वह होश में आ रहा था. मैं ने उसे एक इंजेक्शन लगाया ताकि उस को ज़्यादा दर्द न हो. हम वहीं तपती ज़मीन पर बैठ गए, और तब तक उसे देखते रहे जब तक वह उठ कर बैठ नहीं गया.

कमाल की बात थी कि वह इतनी देर से ज़िंदा था. जंगल में जो शक्तिशाली होता है, वही बचता है. यह लकड़बग्घे या शेर का शिकार बन सकता है. कुएं या तालाब में डूब सकता है. सूखे दरिया में गिर कर अपनी गरदन तोड़ सकता है या ऐसी ही किसी दुर्घटना का शिकार हो सकता है. मैं ने फिर उस की अंधी आंखों में झांका. इतने में सूरज की एक किरण उस की पुतली पर पड़ी तो आंख ज़रा मिंच सी गई.

चित्र : टेरी शोफ्नर

रोशनी कौंधने का मतलब था कि असली दृष्टिपटल कहीं पीछे है.

"अब इस का क्या करें?" लुई ने पूछा.

"इसे साथ लिए चलते हैं," मैं ने कहा. यह सुन कर लूई ख़ुश हो गया और उसे हेलीकाप्टर तक ले जाने में मेरी मदद करने लगा.

नैरोबी के बाहरी भाग की ओर उड़ रहे थे. मैं ने हर संभावना पर विचार किया. स्नातकोत्तर पढ़ाई के दौरान मैं ने कई पालतू कुत्तों के मोतियाविंद का आपरेशन किया था. अगर यह आपरेशन भी सफल हो जाए तो हो सकता है हमारा जानवरों का व्यापारी इस बच्चेको भी ले ले. मुझे केवल १४ दिन और कीनिया में रहना था, इस लिए यह सब तुरंत करना होगा.

लूई ने अपने फ़ार्म में लकड़ी के एक बड़े बक्से में उस बच्चे के रहने का प्रबंध कर दिया. जब मैं वहां पहुंचा तो कीकूयू क़बीले का एक नौजवान अधखुले दरवाज़े में से ज़ेब्रे के उस बच्चे को ताक रहा था.

"मेरा नाम आगस्टीन है," उस ने पूरी बत्तीसी दिखाते हुए कहा, "मिस्टर लूई ने कहा है कि मैं इस बच्चे की देखभाल में हाथ बटाऊं."

मैं ने आगस्टीन को बच्चे के ख़ान पान के लिए कुछ हिदायतें दीं. वह मेरी बताई हुई चीज़ें और दूध पिलाने की बोतल लाने चला गया. ज़रा देर बाद वह बड़ी होशियारी के साथ उस बच्चे को बोतल से दूध पिला रहा था. हम ने उस बच्चे का नाम टाटू रख दिया जिस का अर्थ स्वाहीली में 'तीन' होता है. हम ने यह नाम इस लिए रखा था कि उस के माथे पर तीन काले धब्बे थे और वह तीन सप्ताह का था. आगस्टीन के रूप में उसे एक अच्छा पालनहार मिल गया था.

लूई और मैं कार ले कर शहर पहुंचे. आंख के आपरेशन के लिए मुझे अन्य डाक्टरी औज़ारों के साथ साथ कुछ छुरियों, चिमटियों, सूइयों और रेशमी धागे की ज़रूरत थी. बड़े अस्पताल के नेत्र विशेषज्ञ स्काटलैंड के रहने वाले थे और स्काटिश उच्चारण से ही बोलते थे. मैं ने उन्हें अपनी समस्या बताई. "अगर मैं ये सर्जिकल औज़ार देते पकड़ा गया तो बड़ा हल्ला मच जाएगा." वे बोले, "लेकिन हां, मैं इतना कर सकता हूं कि अपना औज़ारों का बैग तुम्हें दे दूं. औज़ार हैं तो पुराने क़िस्म के, लेकिन तुम्हारा काम चल जाएगा."

उन के औज़ार संग्रहकर्ताओं के लिए ख़ुशी का बायस बनते : हाथीदांत के हत्थे वाले और महीन फल वाले मोतियाबिंद निकालने के चाक़ू, पुतलियों को निकालने वाले लूप और हुक तथा सूइयां रखने के छोटे छोटे डब्बे. एक दूसरे से मेल खाते ये सारे औज़ार लकड़ी के एक ऐसे पीतल मंडित डब्बे में रखे थे जिस की भीतरी दीवारें मख़मल से मढ़ी थीं. फिर मैं नैरोबी के जानवरों के एक डाक्टर से मिलने गया. वह घोड़ों के इलाज के लिए मशहूर था. आपरेशन के बाद मेरे चले जाने पर वह टाटू की देखभाल के लिए राज़ी हो गया.

असली परीक्षा. दो दिन बाद आगस्टीन और लूई ने टाटू को पकड़ा, और मैं ने उस के गले की नस में बेहोशी का इंजेक्शन लगा दिया. तीन मिनट बाद वह मीठी नींद सो गया. तब मैं ने उस की दोनों आंखों में सुन्न करने वाली दवाई डाली. फिर हम ने उसे उठा कर मेज़ पर लिटा दिया.

चीरा लगाते ही उस के कार्निया का एक तिहाई भाग कट गया. अब काम होशियारी से करने का था. लेंस पुतली के पीछे रबड़ जैसी जैली के कड़े तंतुओं पर टिका होता है. सब से पहले मुझे उस लेंस को संभालना था. यह काम ऐसा ही है जैसे किसी छोटे से चिकने सूअर को पकड़ पाना. आख़िर मैं रबड़ के एक छोटे लट्टू और धातु की चुसनी नली की सहायता से उसे पकड़ने में सफल हो गया. लेंस को छुड़ाने के लिए मैं ने उसे बहुत धीरे धीरे हिलाया. वह नहीं छूटा तो मैं ने चिपके हुए

भाग को घुलाने के लिए उस पर दवा डाली. प्रतीक्षा की घड़ियां बड़ी लंबी लगीं. मैं ने उसे फिर हिलाया. कमाल! लेंस छूट गया और मैं ने चुसनी नली के छोर से उसे आंख से बाहर निकाल लिया.

हम ने टाटू को दूसरी करवट दिलाई और मैं ने फिर वही सारा काम किया. दूसरी आंख का आपरेशन पहली की तरह ही सफल रहा. बेहोश किए जाने के डेढ़ घंटे बाद टाटू की आंखें मोतियाबिंद से छुटकारा पा चुकी थीं.

"क्या कहने हैं तुम्हारे!" लुई बोला. मैं टाटू की दोनों आंखों में एंटीबायोटिक क्रीम लगा रहा था. फिर हम उसे उसी हालत में उठा कर उस के बक्से में छोड़ आए.

दिन बीतते गए. आगस्टीन उसे खिलाता पिलाता रहा, उस की आंखों में क्रीम लगाता रहा और उस की देखभाल के सिलसिले में हाय तांबा मचाता रहा. ऐसे आपरेशन के बाद कार्निया का धुंधलापन साफ़ होने लगता है. पांचवें दिन मुझे पहली बार उस के दृष्टिपटल की झलक दिखाइ दी. वह ठीक ही लग रहा था, लेकिन असलियत तो दस दिन बाद टांके खोलने पर ही मालूम होगी.

जिस दिन मुझे टांके खोलने थे, उस दिन सूर्योदय से पहले ही आगस्टीन ने टाटू को बाहर निकाला और मैं ने उस को बेहोशी का इंजेक्शन लगा दिया. जब वह बेहोश हो गया तो मैं ने औपथलमोस्कोप (नेत्रपटल दर्शी) से उस की आंखों के अंदर झांका. जैसे ही उस यंत्र की रोशनी आंख के पिछले भाग पर पड़ी, उस की पुतली थोड़ी सी सिकुड़ गई. बहुत खूब! चिमटियों और कैंचियों की सहायता से मैं ने रेशम की गांठें पकड़ी, उन्हें काटा और धागे खींच लिए. बेहोशी की दवा के तोड़ का इंजेक्शन देने के पांच मिनट के भीतर ही टाटू अपने पांव पर खड़ा हो गया.

असली परीक्षा तो अब होनी थी. पास ही एक ख़ाली बाड़ा था.

"इसे वहां छोड़ दो," मैं ने आगस्टीन से कहा.

मैं, लुई और आगस्टीन बाड़ के ऊपर बैठ कर उत्सुकता से ज़ेब्रे की चालढाल देखने लगे. टाटू धीरे धीरे बाड़ के भीतर घूमने लगा. उस के कई क़दम बीच बीच में लड़खड़ा जाते, फिर वह खड़ा हो गया और सवेरे की हवा सूंघने लगा.

दूसरे बच्चों के समान. इतने में सूर्योदय की पहली किरण ने पूरब की ओर की धरती के टुकड़े को उजागर किया. हवा में रोशनी कौंधी और एक सुनहरी रेखा टाटू के बाएं भाग पर पड़ी. जब उस ने रोशनी की किरण को देखने के लिए अपना सिर घुमाया तो मेरी ख़ुशी का ठिकाना न रहा. वह आश्चर्यचकित सा पलकें झपकाता रहा.

"वह देखने लगा, वह देखने लगा!" आगस्टीन चिल्लाया.

लूई भी चीख़ा. मैं ने मारे ख़ुशी के बाड़ से नीचे छलांग लगा दी. आगस्टीन अब भी चिल्लाए जा रहा था, "वह देखने लगा, वह देखने लगा." मैं सावधानी से बच्चे के पास पहुंचा. मैं विश्वास कर लेना चाहता था कि हम यूं ही बग़लें नहीं बजा रहे हैं.

टाटू मेरे रास्ते से हट गया. उस ने बाड़ की ओर क़दम बढ़ाए और उस के पास पहुंच कर ठिठक गया. फिर वह फुरती से मुड़ा. मुझे विश्वास हो गया कि वह देख सकता है. संभवतः उस को धुंधला धुंधला दिखाई दे रहा हो क्योंकि लेंस के बिना आंख टिक नहीं पाती. जंगल में उसे ज़रूर कठिनाई होगी, लेकिन चिड़ियाघर में वह ज़ेब्रा के अन्य बच्चों की तरह ही रहेगा.

"अच्छा बच्चे, अब तुम से रोटरडम में मुलाक़ात होगी," मैं ने कहा. ज़ेब्रा पर आख़िरी नज़र डालते हुए मैं ने उस के आगे अपनी ओपथलमोस्कोप हिलाई. उस ने शब्दों में तो जवाब नहीं दिया, लेकिन जो मैं जानना चाहता था, वह उस ने मेरे हाथ की ओर अपनी बड़ी बड़ी भूरी आंखों से ताक कर कह दिया. ❖



बढ़ती का नाम दाढ़ी

इसे खुला छोड़ देने का मतलब है कि यह आप के चेहरे के साथ साथ समूचे व्यक्तित्व को बदल कर रख दे

फ़्रांस्वा नूरीसिए

आदमी की दाढ़ी की क़ुदरती बनावट जंगल जैसी है. जब वह उसे मुंड़वा लेता है तो लगता है जैसे चेहरे पर बुलडोज़र फेर दिया गया हो. फिर वह नज़ारा क़ुदरती नहीं रह जाता. इस लिए दाढ़ी रखते ही आदमी क़ुदरती हालत में लौट जाता है. दाढ़ी बनाना है भी झंझट का काम. ख़्वाहमख़्वाह कई तरह की तकलीफ़ें होती हैं. कभी मुंह कट जाता है, कभी खुजली होती रहती है और कभी उस्तरे या सेफ़्टी रेज़र की ऐसी जलन होती है जिसे आफ़्टर शेव लोशन की कई कई बोतलें भी दूर नहीं कर पातीं. दाढ़ी रखने पर भी तकलीफ़ होती है, लेकिन सिर्फ़ शुरू शुरू में. आठवें दिन की खुजली ख़त्म होने पर आप दाढ़ी से होने वाली उलझन के बारे में सब भूलभाल जाते हैं.

पांच साल पहले एक दिन आईने में अपनी शक्ल देख कर मुझे सहसा ख़याल आया कि क्यों न मैं दाढ़ी रख लूं. बचपन से ही मुझे अपना चेहरा कभी अच्छा नहीं लगा. मेरा चेहरा बदली में छिपे चांद जैसा गोल और विवर्ण है. कभी कभी बस शर्म से लाल होता है. गोरा रंग हाल ही में नमक मिर्ची हो गया है. यह सब मुझे कभी अच्छा नहीं लगा. दो

'लैज़ीम द लेक्सपानसिओं' (नवंबर १९८१) से संक्षिप्त. कापीराइट १९८१ [illegible]

तीन बार जब मैं बीमारी की हालत में कमरे से बाहर नहीं निकला या जब मैं ने कुछ दिन नौयात्रा में बिताए तो दाढ़ी को बढ़ने दिया. तब हर दस मिनट बाद मैं बेसब्री से आईने में यह देखता कि मेरी दाढ़ी कैसे बढ़ रही है, लेकिन मैं ने एक सप्ताह से ज़्यादा कभी इसे बढ़ने नहीं दिया.

दाढ़ी का फ़लसफ़ा

१९७६ के दो महीनों में मैं ने अंतिम रूप से बिना किसी झिझक या पछतावे के दाढ़ी रखनी शुरू कर दी. दाढ़ी सिर्फ़ रखी ही नहीं, जल्द ही लहराती दाढ़ी रखने का इरादा भी कर लिया.

और तब मुझे पता चला कि अगर आप दाढ़ी को अपने हाल पर छोड़ दें तो उस में भी एक ख़ास नशा होता है. साल बीतते बीतते मुझे अपने ही चेहरे पर इस बात का सबूत देख कर अचंभा हुआ कि अगर दाढ़ी को बेरोकटोक बढ़ने दिया जाए तो वह अपने आप कुछ ऐसा रूप ले लेती है जिसे मैं आवारागर्दों, पैग़ंबरों और पहाड़ी गड़रियों में देख कर प्रभावित होता रहा हूं. अगर मेरी बीवी बच्चों ने मुझ पर सामाजिक दबाव न डाला होता तो आज मेरी दाढ़ी भी वैसी ही होती जैसी ऐतिहासिक चित्रों में दिखाई देती है. (इतना आगे बढ़ जाने पर कोई पीछे नहीं लौटता.) समाज में उठने बैठने के लिए अपनी दाढ़ी को नाई के हवाले कर देना या रेज़र से साफ़ कर देना मुझे क़तई गवारा नहीं था. मैं ने जो फ़लसफ़ा अपनाया था, वह यह था कि केवल दाढ़ी की लंबाई को ही सीमित किया जाना चाहिए, उस की कुदरती बनावट को नहीं.

मैं ऐसी दाढ़ी का हिमायती हूं जो बेलगाम, घनी, लहरियादार और सख़्त हो, या बालों की क़िस्म के मुताबिक़ रेशमी हो या बिलकुल जंगल जैसी हो. आदमी की दाढ़ी ऐसी होनी चाहिए कि वह लोगों के कहने सुनने की उपेक्षा करती सी दिखाई दे, कि परिस्थिति विज्ञान के आदर्शों को फूल चढ़ाती सी लगे. जिसे रख कर टाई असुंदर और जाकेट आकर्षक हो जाए, ऐसी होनी चाहिए आदमी की दाढ़ी. यही कारण है कि छोकरों की जगह बड़े बूढ़े ऐसी दाढ़ी में ज़्यादा आराम महसूस करते हैं.

दाढ़ी ऐसी नहीं होनी चाहिए जो छोटी कार के हबकैप या दूल्हे की मूंछ जैसी लगे. दाढ़ी से सजने संवरने की ख़ुशी तो मिलती ही है, लेकिन उस से उस समझौते का इज़हार भी होना चाहिए जो आदमी ज़िंदगी में कभी अपने शरीर, कभी अपनी उम्र या कभी अपने अनजान भविष्य के साथ करता है. दाढ़ी से अच्छाई को बढ़ावा मिलता है, सामाजिक व मानवीय संबंधों के पनपने में मदद मिलती है, यहां तक कि बूढ़ा होने का ग़म भी आहिस्ता आहिस्ता कम हो जाता है.

प्रौढ़ता की निशानी

अब एक नाज़ुक सवाल का जवाब भी दे ही दूं. हां, दाढ़ी रख कर आदमी 'बुज़ुर्ग' लगने लगता है. इसी लिए नौजवान एकाउंटेंट, विकार और प्रोफ़ेसर दाढ़ी बढ़ा लेते हैं ताकि वे प्रौढ़ दिखाई दें, हालांकि अपनी कोशिश में नाकाम रहते हैं. चूंकि दाढ़ी रखने से आदमी बुज़ुर्ग दिखाई देने लगता है, इस लिए जब आप ५० के पेटे में आ कर दाढ़ी बढ़ाते हैं तो उस से दो अलग अलग दृष्टिकोणों की अभिव्यक्ति होती है. पहला : "अब मैं दूसरों के लिए जगह ख़ाली कर रहा हूं." दूसरा होता है विद्रोह से भरा : "बूढ़ा हो गया हूं? हां, मैं

बूढ़ा हो गया हूं, मैं गड़रिए के कुत्ते जैसा दिखाई देता हूं, लेकिन अब भी तुम जैसे जवान भेड़ियों को खदेड़ सकता हूं."

हां, अगर दाढ़ी में सफ़ेदी आ जाए तो फिर लंपट व्यक्ति की भूमिका निभाना कठिन हो जाता है. खिचड़ी दाढ़ी तो गले में लटकी ऐसी तख़्ती के समान है जिस पर लिखा हो: "जवान लड़कियों को दूर रखें." दाढ़ी वाले आदमी के नंगा होने की कल्पना करना तो और भी मुश्किल है. कुछ ही लोग होते हैं जो दाढ़ी होने पर भी दूसरों को मोहक लगते हैं.

क्या समाज के लिए दाढ़ी का कोई विशेष महत्व है? मुझे नहीं पता और न मैं जानना चाहता हूं. मुझे तो दाढ़ियों में जीने का एक ऐसा ढंग दिखाई देता है जो हर कोई अपनी अपनी तरह काम में लाता हैं. समाज ने एक ज़माने से स्त्रियों को श्रृंगार प्रसाधनों और नक़ली उपादानों के उपयोग करने का अधिकार दे रखा है, लेकिन पुरुषों को ऐसा अधिकार देने में भारी कंजूसी बरती गई है. हां, सहजता की चरम सीमा दाढ़ी से पुरुषों को वही लाभ प्राप्त हो जाता है जो स्त्रियों को मेकअप से मिलता है.

मुझे यह सोच कर बहुत ताव आता है कि ३० वर्षों तक मैं उस निधि से वंचित रहा जो मेरी त्वचा के भीतर ही भीतर कुलबुला रही थी और मुझ से, जैसी कि कहावत है, "अपना जन्म सिद्ध अधिकार मांग रही थी."



स्तंभक

एल्कटन, मैरीलैंड, के 'स्वैप शापर' में व्यक्तिगत विज्ञापन: ४२४ नंबर (इलाक़ा स्पष्ट है) में रहने वाले बच्चे के माता पिता से—कृपया बेटे के नफ़ीरी के रियाज़ के लिए कोई ढंग का समय चुनिए वरना हम भी अपनी बेटी को ढोल ख़रीद देंगे.

ब्लूम्ज़बर्ग, पेंसलवानिया, के 'प्रेस' में: विकाऊ है—एकदम नया, कुत्ते का बड़ा दड़बा. कुत्ते द्वारा सर्वथा अप्रयुक्त. केवल मालिक द्वारा तीन बार प्रयुक्त.

सिएटल के 'लेक सिटी जरनल' में: इस रविवार को गराज में लगी सेल से पैसों वाली संदूकची ख़रीदने वाली महिला फ़ोन करें—५५५ १२३४.

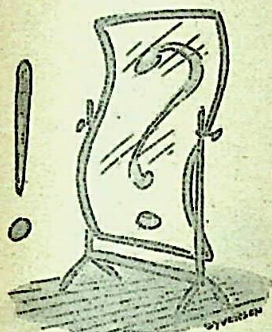
मौडेस्टो, कैलीफ़ोर्निया, के 'थ्रिफ़्टी शापर न्यूज़' में: विकाऊ है—चेहरे की जालीदार नक़ाब और पीछे की झालरयुक्त नई वैवाहिक पोशाक. केवल एक बार ग़लती से पहन ली गई थी.



दृढ़ मति

हास्य अभिनेत्री मिनी पर्ल की मां बहुत दृढ़ महिला थीं. एक बार बेटी सब के सामने पियानो बजाते हिचकिचा रही थी, तो उन्हों ने कहा: यह मत कहो कि तुम्हें पियानो बजाना नहीं आता. पियानो पर जा कर बैठ जाओ, और सब को बता दो कि तुम्हें सचमुच बजाना नहीं आता.

—'कूरियर जरनल मैगज़ीन', लुईज़विल, कनाडा



सोचने की बात

स्टेनली बाल्डविन, इंगलैंड के भूतपूर्व प्रधान मंत्री ने एक बार संसद में कहा था:

यश के कपाट सदा खुले रहते हैं और उन पर भीड़ भी सदा बनी रहती है. हां, कुछ लोग इस में घुसपैठ कर के जाते हैं और कुछ धकिया कर.

राल्फ़ वाल्डो एमरसन, अमरीकी कवि:

दुनिया में रह कर दुनिया की लीक चलना आसान है तो जंगल में रह कर अपनी मस्ती की ज़िंदगी जीना, अपनी पृथक अस्मिता को बनाए रखना भी. पर महान व्यक्ति वे हैं जो सब के बीच रह कर भी अपनी अस्मिता की स्वतंत्रता को बखूबी अक्षुण्ण बनाए रहते हैं.

मार्था ग्राअम, समकालीन नृत्य जगत की अग्रणी सदस्या, का कहना है:

किसी भी नर्तक की तैयारी में लगभग दस वर्ष लगते हैं. यह प्रशिक्षण ऐसा नहीं कि आज किया किया, कल नहीं किया. इस के लिए दैनिक अभ्यास ज़रूरी है. आप को क्रमिक रूप से निरंतर आगे बढ़ना पड़ता है और तब, दस साल बाद कहीं जा कर आप नर्तक बन पाते और किसी वाद्ययंत्र में भी पारंगत हो पाते हैं. इस तरह आप मानव अंगों के संचालन संबंधी अजूबों को भी जान लेते हैं. वास्तव में मानव शरीर से बढ़ कर आश्चर्य की कोई चीज़ है भी नहीं. अगली बार आप दर्पण के सामने हों, तो ज़रा कल्पना करें: सिर के नीचे दो कान लगे हैं, कनपटी तक वाल आए हुए हैं. ज़रा कलाई की छोटी छोटी हड्डियों के बारे में सोचें और ध्यान दें नन्हें से पावों के उस कमाल पर जिस पर आप के शरीर का सारा भार टिका है. वास्तव में यह सब बड़ा अद्‌भुत है और इसी चमत्कार का संचालन है नृत्य.

लिन यूतांग, चीनी लेखक एवं विद्वान:

इस में दो राय नहीं कि अपने बंधु बांधवों और समाज के प्रति भी हमारे कुछ कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व हैं. पर यह बात बड़ी अजीब है कि आज के आधुनिक, पर विक्षिप्त समाज में आदमी की सारी शक्तियां जीवन को जीने के बजाए इस के निर्वाह में लगी जा रही हैं. ऐसे में, स्पष्ट शब्दों में खुल कर यह कहने के लिए ख़ासा साहस चाहिए कि जीवन का उद्देश्य उस का आनंद लेने में निहित है.

—'द प्लेज़र्स आफ़ ए नानकनफ़र्मिस्ट'

मौरिस एल वेस्ट:

मानव जीवन में पूर्णता पाना सहज नहीं. इस की क़ीमत अदा करनी पड़ती है और इस योग्य साहस व बुद्धि बल विरलों में ही होता है. वस्तुतः इस के लिए किसी भी प्रकार की सुरक्षा व सुनिश्चितता को तिलांजलि देनी पड़ती है और अपने हाथ को ही जगन्नाथ मानने की चुनौती स्वीकारनी पड़ती है. विश्व को प्रेमिक रूप में अपना कर पीड़ा को अस्तित्व के आधारस्वरूप अंगीकार करना पड़ता है. ज्ञान के साधन रूप में संदेह और अंधकार का आलिंगन करना होता है. और चाहिए होता है वह दृढ़ संकल्प जो तनाव और चुनौती की अवस्था में डटा रहे और जीवन मरण की हर परिणति की पूर्व स्वीकृति के लिए सदा प्रस्तुत रहे. —'द शूज आफ़ द फ़िशरमैन' (डेल)

इटली का यह अद्वितीय नगर प्रकृति एवं समय की मार के साथ साथ इनसान की विध्वंसक प्रवृत्तियों का भी शिकार रहा है. लेकिन इसे विनाश के चंगुल से छुड़ाने के लिए समूची मानव सभ्यता जूझ रही है

वेनिस की रक्षा

● डेविड होल्डन

कलात्मक स्तंभों की लंबी शृंखला से घिरा हुआ है वेनिस का सैन मार्को चौक. उसी स्तंभावलि के बीच स्थित ऊंचे मेहराबदार दरवाज़े से भूरे प्रांगण में पहुंचने का रास्ता है. पत्थर की सीढ़ियों की दो पांतों को पार करने पर इमारत का वह हिस्सा है, जो कभी इटली के शाही परिवार का निवास स्थान था. अब उस में यूनेस्को का एक उप कार्यालय है, जहां से इतिहास की सब से बड़ी संरक्षण परियोजना चलाई जा रही है:

वेनिस नगर की सुरक्षा के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रयत्नों से संबद्ध परियोजना.

नवंबर १९६६ से पहले इस विषय में किसी को कोई विशेष ख़बर नहीं थी. परंतु उस वर्ष जब समुद्री बाढ़ से नगर में १९४ सेंटीमीटर से भी अधिक गहरा खारा पानी भर गया, तब खलबली सी मच गई—यदि तत्काल कोई प्रभावशाली यत्न न किया गया तो वेनिस का विनाश अवश्यंभावी है. और तीन वर्ष बाद तो समुद्र की कुछ सतह कोई २०० बार नहरों के किनारों के ऊपर पहुंच गई. फिर तो स्पष्ट ही हो गया कि वेनिस जिस सागर ताल में खड़ा है, उसी की तली में धंसना शुरू हो गया है. और खोजकर्ताओं ने यह तथ्य खोज निकाला कि नगर की बुनियाद १८९७ से अब तक २५ सेंटीमीटर नीचे जा भी चुकी है.

और तब शुरू हुआ धंसाव के लिए एक के बाद एक जटिल सफ़ाइयों का दौर. जिन पर गरमागरम बहस मुबाहसे चले. मगर दो कारणों को सब से महत्वपूर्ण माना गया. एक तो यह कि नगर की मेस्त्रे और मारगेरा उपनगरियों में नवस्थापित भारी उद्योग धंधों ने सतत रूप से बढ़ते भूमिगत पानी को स्रोत कूपों से सोख लिया था. नतीजा यह निकला था कि वेनिस के नीचे की भूमि सूखते हुए स्पंज की तरह सिकुड़ रही थी. दूसरा यह कि दुनिया के मौसम में परिवर्तन के कारण सर्दियों में अधिकाधिक तूफ़ान आने लगे थे, जिस से उत्तरी एड्रियाटिक में पानी का स्तर व्यापक रूप से ऊंचा हो गया था.

सौंदर्य का केंद्र. लेकिन ख़तरा अकेले समुद्र से ही नहीं था. नगर के विख्यात शिकारों का स्थान मोटर से चलने वाली नावें ले रही थीं, जिन के द्वारा फेंके गए पानी की ज़बरदस्त मार ने पुश्तों की जड़ें हिला कर रख दी थीं. प्रदूषण अपना महसूल अलग वसूल रहा था. मुख्य भूमि पर नव स्थापित उद्योगों और तेल से चलने वाली ताप व्यवस्थाओं से निकलने वाले धुएं व गैसों से भरपूर हवा वेनिस की कलात्मक विरासत को प्रायः ६ प्रति शत प्रति वर्ष

के हिसाब से चबाती जा रही थी.

अगर वेनिस कोई आम शहर होता तो इस दारुण विनाश को बड़ी आसानी से यह कह कर टाल दिया जा सकता था कि यह तो प्रगति की अपरिहार्य परिणति है, मगर वेनिस तो वेनिस है—अतीत और वर्तमान, दोनों ही दृष्टियों से बेजोड़. यह ठीक है कि आधुनिक नगर स्तर की दृष्टि से यह शहर बहुत छोटा है और इस की जनसंख्या २ लाख से ऊपर शायद ही कभी रही हो; परंतु समूचे संसार में वेनिस मानव निर्मित सौंदर्य का शायद सब से बड़ा केंद्र है. सैन मार्को चौक से मात्र १,५०० मीटर की परिधि में ही ४०० से अधिक राजमहल हैं, १२० गिरजाघर हैं और चित्रकला एवं मूर्ति शिल्प के लगभग १६,००० नमूने हैं—अनेक ऐसे कलाकारों द्वारा रचित जो पाश्चात्य सभ्यता के सब से विख्यात शिल्पियों में से थे. ये कलाकृतियां सदियों से अद्वितीय रही हैं.

और यह असाधारण विरासत ख़तरे में पड़ गई थी, सो इतालवी सरकार के अनुरोध पर यूनेस्को ने वेनिस नगर के लिए निधि जुटाने के निमित्त विश्व व्यापी अपील जारी कर दी. देखते ही देखते आधा दर्जन देशों में 'वेनिस बचाओ' समितियां गठित हो गईं और आज १६ वर्ष बाद बारह देशों में कम से कम ३० ग़ैर सरकारी संस्थाएं और धर्मार्थ संगठन इस कार्य में जुटे हैं. आपस में मिल कर उन्हों ने ७५ से अधिक पुनर्स्थापन परियोजनाएं पूर्ण कर ली हैं तथा २० और परियोजनाओं पर काम चल रहा है.

इस सहायता के कई उत्साहवर्धक परिणाम सामने आए हैं. इस का एक उदाहरण है वेनिस के गौरव स्थल सैन मार्को चौक में किया गया कार्य—संत मार्क गिरजाघर के विशाल घंटाघर की जड़ में स्थित सोलहवीं सदी की अलंकृत किंतु नष्टप्राय कला दीर्घा का जीर्णोद्धार ब्रिटेन की 'वेनिस ख़तरे में' नामक निधि द्वारा किया गया. उस से चंद मीटर की दूरी पर स्थित डोज महल के मुख्य द्वार का जीर्णोद्धार भी उसी संगठन की सहायता से किया गया है.

गिरते फ़रिश्तों से सावधान. फ़्रांसीसी वेनिस सुरक्षा समिति ने बारीक वास्तु शिल्प के संगमरमर के उस विपुल खंडों को पुनःस्थापित करने का कार्य पूरा कर लिया है, जो कभी सांता मारिया डेला सैल्यूट गिरजे के नाम से जाना जाता था. कहना न होगा कि ग्रैंड कैनाल के प्रवेश द्वार पर इस गिरजे का श्वेताभ गुंबद नगर की प्रायः तमाम तसवीरों पर छाया होता है. १९७० तक उस के नीचे ख़तरे की सूचनाएं लगी रहती थीं: 'टूट कर गिरते फ़रिश्तों से सावधान!' मगर १९७६ में काम पूरा हो जाने के बाद गिरजे के पत्थरों पर बने ये फ़रिश्ते (पंखों वाले बुत) अपने स्थानों पर मज़बूती के साथ जड़े हैं. यहां यह जोड़ना आवश्यक है कि सांता मारिया डेला रोज़ारियो नामक गिरजे की सत्रहवीं शताब्दी की प्रसिद्ध वाद्य दीर्घा का पुनरुद्धार भी फ़्रांसीसी सहायता से ही किया गया है. इस का उद्घाटन पिछले मार्च में ही किया गया था.

पश्चिम जरमनी की सहायता से भी अनेक गिरजों का जीर्णोद्धार हुआ है. उन में जवाहरातों से जड़ी पुनर्जागरण कालीन शिल्प कृति सांता मारिया डि मिराकोली भी शामिल है—लाल हरे माणिक्यों से जटित संगमरमर की चमचमाती अभिरचना, सैल्यूट गिरजे के आगे वाले विगत सैन ग्रिगोरियो गिरजे में ब्रिटेन वालों ने पुराने चित्रों के जीर्णोद्धार के लिए जो प्रयोगशाला स्थापित की है, उस में जरमनी का सहयोग भी रहा है.

वेनिस से संबद्ध इतालवी संस्था ने स्कूला डि सैन जिओर्जिओ दोली शिआवोनी का जीर्णोद्धार किया है. साथ ही वेनिस के सर्वोत्तम चित्रकारों में से एक कार्पेशियो की विख्यात

चित्र कृतियों की सफ़ाई की है. इन तसवीरों में संत जेरम और संत जार्ज की जीवनियों से संबद्ध प्रसंगों को चित्रित किया गया है.

नई प्रयोगशाला. हाल में ही अमरीका के क्रेस फ़ाउंडेशन ने मिज़ेरिकोर्डिया के विहार में एक नई जीर्णोद्धार संबंधी प्रयोगशाला स्थापित करने के लिए धनराशि जुटाई है. जो दूसरी योजनाएं अमरीकी सहायता से हाथ में ली गई हैं, उन में टिंटोरेटो द्वारा चित्रित स्कूला दि सैन रोको की, ५६ विशाल कलाकृतियों का पुनरुद्धार भी शामिल हैं. उन चित्रों में उस की प्रसिद्ध कृति 'क्रूसीफ़िक्सन' (क्रूसारोहण) भी है. यह कलाकृति सब से मर्मस्पर्शी विशालतम चित्रों में गिनी जाती है. काफ़ी दिनों से टलता काम—वेनिस के तीन भव्य गिरजाघरों का उद्धार भी अमरीकी धनराशि से हुआ. उन में स्वयं वेनिस के ठीक उत्तर में स्थित कांच के निर्माण केंद्र छोटे से मुरानो द्वीप पर बना डैन डोनाटो का यूनानी शैली का गिरजाघर भी शामिल है. मेरे ख़याल से उन तीनों में सर्वोत्कृष्ट यही हैं.

वेनिस के विशाल भवनों को बचाने के लिए किए गए प्रयासों में सैन डोनेटो में किया गया कार्य अपनी ही क़िस्म का है. विगत वर्षों में फ़र्श के नीचे मिट्टी में से उभरते नहरी पानी ने महीन पच्चीकारी को प्रायः नष्ट ही कर दिया था. गिरजे के मध्य भाग में लगे विशाल स्तंभों को संभाले रहने के लिए १९७३ में उन के नीचे स्क्रू जैक लगाए गए. तब पुराने फ़र्श के स्तर से एक मीटर नीचे तक पूरे अंदरूनी हिस्से की खुदाई की गई. पानी का रिसाव इतना ज़्यादा हो गया कि पादरी साहब नाव से ही अंदर पहुंच सकते थे. धीरे धीरे रिसाव रोक दिए गए और उस पर कंकरीट बिछा दी गई. उपतल तैयार हो गया तो उस पर पालीरिथीन प्लास्टिक की तह जमाई गई और उस के ऊपर सुर्ख़ी का बहुत बारीक चूरा. इस प्रकार गिरजे के भीतरी भाग को जलरोधक बनाया गया.

उस के बाद विशेषज्ञों ने बारीक पच्चीकारी वाले फ़र्श को फिर से बैठाना शुरू किया. एक क्रमबद्ध योजना द्वारा उस विशाल जटिल पहेलीनुमा फ़र्श को नए सिरे से बैठाया गया. यह काम दो वर्ष लगा कर अगस्त १९७६ में पूरा किया गया और उस पर वेनिस में सक्रिय अमरीकी संस्थानों में से एक 'अमेरिकन सेव वेनिस इनकारपोरेटेड' ने लगभग ३० लाख रुपए ख़र्च किए.

नया क़ानून. यूनेस्को के दबाव पर इटली की सरकार ने अप्रैल १९७३ में वेनिस के लिए एक विशेष क़ानून पास किया. उस क़ानून के अंतर्गत एक नवीन नगरीय योजना के लिए दिशा निर्देश निश्चित किए गए तथा यूनेस्को की सहायता से उस योजना को व्यवहार में लाने के लिए विदेशों से लगभग ४ अरब ७५ करोड़ रुपए ऋण के रूप में प्राप्त किए गए.

इस क़ानून का एक सुखद तथा आश्चर्यजनक परिणाम यह निकला कि मारगेरा में और अधिक औद्योगिक विस्तार की योजनाएं ठप्प हो गईं. उस का दूसरा परिणाम था सरकारी इमदादी योजना, जिस के द्वारा नगर की पुरानी ताप व्यवस्था के स्थान पर प्रदूषण रहित बिजली अथवा गैस से चलने वाले साज सामान की व्यवस्था. साथ ही ग्रैंड कैनाल पर स्थित एक प्राचीन महल में बहुत बड़ा कंप्यूटर लगा दिया गया, जो सागर ताल के पानी व मिट्टी में मिनट दर मिनट होने वाली हलचल की पूर्णतः वैज्ञानिक जानकारी देता था.

इटली की सरकार ने एक नई जल प्रणाली बनाने के लिए आर्थिक सहायता भी जुटाई, जिस के द्वारा पुराने भूमिगत स्रोतों के बजाए

आल्प्स पर्वत के स्रोतों से ताज़ा पानी लाया जा सके. सरकार ने इंजीनियरी की किसी ऐसी योजना के लिए एक अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता का भी आयोजन किया, जिस के द्वारा सागर ताल में भरने वाले पानी को नियंत्रण में रखा जा सके. परियोजना का अंतिम प्रारूप नवंबर १९८१ में लोक निर्माण मंत्रालय को भेजा गया था. वह अभी विचाराधीन है.

वैसे कुछ उत्साहवर्धक परिणाम सामने आए हैं: वायु प्रदूषण कम हो गया है. हज़ारों कुओं को बंद कर के आल्प्स की नदियों का पानी काम में लाया जा रहा है, इस कारण वेनिस के धंसने की गति भी धीमी पड़ गई. साथ ही असाधारण रूप से तूफ़ान रहित मौसम चक्र के कारण विनाशकारी बाढ़ों से भी वेनिस नगर को थोड़ी राहत मिल गई. किंतु यह स्थिति सत्तरादि दशक के कुछ वर्षों तक ही रही. दुर्भाग्य से १९७९ में वे अच्छे दिन ख़त्म हो गए और पिछली सर्दियों में वेनिस फिर असाधारण रूप से बाढ़ों का शिकार हो गया.

अब तक चाहे जितनी भी सफलता मिल चुकी हो, यथार्थवादी वेनिस निवासी यह समझते हैं कि अपने महबूब शहर को बचाने की लड़ाई जीतने के लिए अभी उन्हें कई फाटक तोड़ने होंगे.

१९७३ के वेनिस ऋण की राशि ख़र्च हो चुकी है. अब तो सागर ताल में इंजीनियरी की कोई भी बड़ी योजना लागू करने के लिए नया ऋण उठाना होगा—दो खरब रुपयों से भी ज़्यादा राशि का ऋण. इस मामले में एक दूसरी कठिनाई है वेनिस के भौतिक संरक्षण और उस के निवासियों की तत्कालीन समस्याओं के बीच संघर्ष. इस उलझन को विदेशी धन जुटाने वाले और यूनेस्को के अधिकारीगण अच्छी तरह समझते हैं. यूनेस्को के दिवंगत महानिदेशक रेने मेह्यू ने एक बार कहा था, "इस शहर का मुक़ाबला किसी कवचधारी प्राणी से किया जा सकता है. हम कवच को बचाने में सफल हो सकते हैं, लेकिन उस में रहने वाले जीव को भी तो बचाना ज़रूरी है."

शव संरक्षण. सवाल यह है कि कैसे? यह शहर, जो कभी समुद्र के कारण ही ज़िंदा था, अब समुद्र के कारण ही मर रहा है. पिछले तीस वर्षों में वेनिस की आबादी घटती घटती ४० प्रति शत रह गई है—एक लाख से भी कम. युवा वर्ग समुद्र से आक्रांत तथा आधुनिक अवसरों से शून्य शहर का त्याग कर नवीनतम औद्योगिक रोज़गार, नए आवास एवं सामाजिक जीवन की तलाश में बाहर चला गया है. आर्थिक अवमूल्यन का दुष्चक्र संरक्षण की प्रक्रिया से जुड़ कर और अधिक विषम हो सकता है. उदाहरण के लिए, वेनिस के आधे मकानों—तकरीबन १९,००० को तो फ़ौरी मरम्मत की ज़रूरत है और १० प्रति शत रहने के सर्वथा अयोग्य हैं. तो भी जैसी स्थिति है, उस में न तो व्यापक पैमाने पर प्रतिस्थापन ही संभव है और न ऐसे नए उद्योगों की स्थापना ही, जिन से रोज़गार की नई संभावनाएं पैदा हों तथा नवीनीकरण के लिए धन हाथ लगे. वेनिस के वाणिज्य मंडल की एक बैठक में मुझे बताया गया: "विगत शताब्दियों में स्थिति कुछ और थी. तब पुरानी इमारतें गिराने तथा नई इमारतें बनाने की खुली छूट थी. यह हमारे शहर की मृत्यु नहीं—इस के शव संरक्षण की प्रक्रिया है."

अनेक वेनिस निवासी तो इस बात से बहुत चिढ़े हुए हैं कि उन के नगर को विदेशी सौंदर्य प्रेमियों अथवा पर्यटन व्यवसाय के नाम पर ऐतिहासिक स्मारक का रूप दिया जा रहा है.

नगर के डिप्टी मेयर सिन्योर जिआनी पेलिकानी एक ओर हर प्रकार की विदेशी सहायता का स्वागत करते हैं, दूसरी ओर कहते हैं कि "वेनिस को अमीरों के लिए अजायबघर बना कर नहीं रखा जा सकता. आख़िर यहां जीते जागते इनसान भी तो रहते हैं."

कला बनाम इनसान. सिटी हाल में संयुक्त साम्यवादी समाजवादी शासन नगर के प्रशासन को चुस्त बना कर वहां के इतिहास में पहली बार नगरपालिका की देख रेख में मर्यादित पैमाने पर मकानों की मरम्मत आदि का काम शुरू कर रहा है. वेनिस की रक्षा का संघर्ष आर्थिक, प्रौद्योगिक या राजनीतिक होने के साथ साथ एक ऐसे नैतिक असमंजस से भी संबद्ध है, जिस से छुटकारा संभव नहीं. प्रश्न यह है कि वर्तमान की क़ीमत पर कितने अतीत को सुरक्षित रखने की कोशिश उचित होगी तथा मनुष्यों और उन के रहन सहन के हितों के मुक़ाबले में कला और सौंदर्य के महत्व को किस स्तर पर आंका जाना चाहिए?

१९८० में स्विस समिति ने लकड़ी की तिपाइयों, तसवीरों और वाद्य दीर्घा सहित अठारहवीं शताब्दी के सैन स्टे गिरजे का पूरी तरह जीर्णोद्धार कराया है. उधर इटली और बवेरिया की संस्थाओं द्वारा जुटाई गई धनराशि से सोलहवीं सदी की एक कार्यशाला में गोंडोला निर्माण शिल्प को जीवन दान दिया गया है. (कभी वेनिस में १०,००० शिकारे हुआ करते थे, अब ले दे कर ४०० रह गए हैं). यूनेस्को की देख रेख में हर तीसरे वर्ष वेनिस में पांच सप्ताही प्रशिक्षणों का भी आयोजन किया जाता है. इन में स्थानीय एवं विदेशी शिल्पियों को पत्थर की मरम्मत का काम सिखाया जाता है. इस का अगला सत्र १९८३ में पड़ेगा. 'स्मारकों के लिए अंतरराष्ट्रीय निधि' नामक वाशिंगटन की एक संस्था पंद्रहवीं शताब्दी के स्केला कांटेरिनी डेल बाबोलो—एक लघु पीसा मीनार—की मरम्मत के लिए धन जुटा रही है. यह मीनार नगर के ऐतिहासिक केंद्र में स्थित है. अमरीका की वेनिस कमेटी को २५० रुपए का अनुदान देने वालों के लिए अमरीकी क्रेडिट कार्ड की सुविधा अब भी उपलब्ध है. उधर मेक्सिको और बेल्जियम ने भी 'वेनिस बचाओ' समितियों का गठन कर लिया है.

दिल्ली के शास्त्री भवन संस्थान ने भी यूनेस्को द्वारा संचालित पाषाण पुनरुद्धार पाठ्य-क्रम में शामिल होने की पेशकश की है.

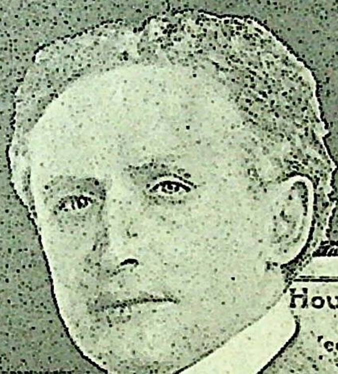
महोत्सव. दूसरी ओर १९७९ में सिटी हाल और वेनिस की दूसरी अधिकृत संस्थाओं ने शताब्दियों पुराने विख्यात कार्निवाल महोत्सव को फिर से आरंभ करने का बीड़ा उठाया. यह परंपरा १७७४ से रुकी पड़ी थी. अब तो स्थिति यह है कि हर वर्ष फ़रवरी मास में १० दिनों के लिए वेनिस एक विशाल रंगशाला का रूप ले लेता है. उन दिनों लोग मुखौटे पहनते हैं तथा विशेष वेशभूषा धारण करते हैं. विभिन्न चौकों चौराहों पर नृत्योत्सव आयोजित किए जाते हैं. वेनिस की पांचो रंगशालाओं में खचाखच भरे दर्शकों के लिए सुबह १० बजे से ले कर सांझ तक सांस्कृतिक कार्यक्रम चलते रहते हैं. इस आयोजन से स्वभावतः अनेक लाभ हुए हैं, जिन में दो तो स्वतःसिद्ध हैं: एक तो वेनिस की दम तोड़ती मुखौटा निर्माण कला में जान आ गई है और दूसरे शीतकालीन पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हो जाने के कारण नगर की व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला है.

विनाश की अनिवार्य प्रक्रिया से आक्रांत वेनिस रक्षा के इस अभियान ने मनुष्य की रचनात्मक शक्ति का विश्वव्यापी प्रतीक खड़ा कर दिया है. ●

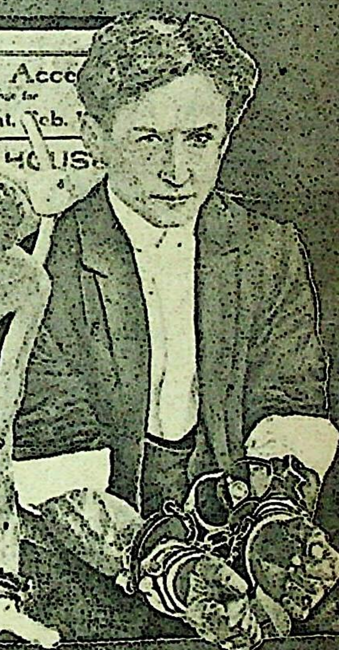
सर्वोत्तम पुस्तक

जादूगर हूदिनी

मौत की धार पर



रेमंड फ़िट्ज साइमंस
की पुस्तक से संक्षिप्त



जादूगर हूदिनी

मौत की धार पर



रेमंड फ़्रिट्ज साइमंस
की पुस्तक से संक्षिप्त

कोई यंत्र, कोई हथकड़ी, बेड़ी, शिकंजा, सीलबंद ताबूत या मज़बूत संदूक़ उसे बंदी नहीं बना सकते थे. बहुत से लोगों के लिए उस के असाधारण खेल अलौकिक शक्ति के कारनामे थे. उदाहरण के तौर पर वह अपने आप को अपदार्थ बना कर लोहे, लकड़ी और ईंटों के बीच से बिना किसी कठिनाई के गुज़र सकता था. और वास्तविक जीवन में भी अंतिम दिनों में वह एक के बाद एक मृतात्माओं को बुलाने की बैठकों में भाग लेता हुआ सत्य की तलाश में निडरता से तंत्र मंत्र की रहस्यमयी कलाओं की खोज करता रहा.

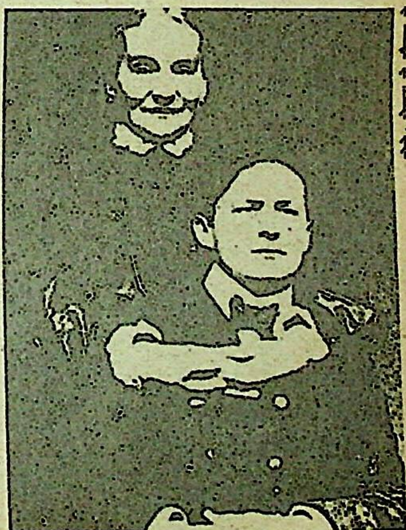
उस का देहांत १९२६ में हो गया था. लेकिन आज भी वह आदमी जिसे दुनिया हूदिनी के नाम से जानती थी, अनगिनत पुस्तकों और पत्र पत्रिकाओं में चर्चा का विषय बना रहता है. आज भी वह लोगों के दिल में उसी सजीवता से बसा है जिस से उस ने विश्व के मंच पर आ कर लोगों को हैरत में डाल दिया. उस के जीवनी लेखक रेमंड फिट्ज़साइमंस ने 'असंभव' कारनामों और चकित कर देने वाले व्यक्तित्व पर नए सिरे से प्रकाश डाला है जिस ने हूदिनी को सदा सदा के लिए अमर बना दिया है.

हम तो शुरू से ही उसे हूदिनी कहेंगे, हालांकि यह उस का जन्म का नाम नहीं था. २४ मार्च १८७४ को उस ने बुडापेस्ट के निवासी सेमुअल बीस और उस की पत्नी सेसिलिया के घर जन्म लिया. माता पिता ने उस का नाम ऐहरिच रखा. उस की मां का कहना था कि शैशव काल में वह कभी नहीं रोया. कभी उसे तकलीफ़ होती तो सेसिलिया उसे छाती से लगा लेती और मां के वक्ष की धड़कनों से वह शांत हो जाता.

उस के जन्म के कुछ दिन बाद ही परिवार समुद्री रास्ते से न्यू यार्क चला गया. वहां से रेल, नाव और स्टीमर द्वारा ये लोग विस्कान-सिन में जा बसे. वहां एपलटन नामक स्थान में सेमुअल एक यहूदी उपासना गृह का पादरी बन गया. लेकिन उसे वहां का कोलाहल भरा नया जीवन रास नहीं आया. मानो स्थान परि-वर्तन ने उस की शक्ति और आशा छीन ली हो. वह एक सभ्य सुसंस्कृत आदमी था. उम्र कुल ४५ वर्ष थी. फिर भी उस ने अंगरेजी सीखने की कोशिश नहीं की न ही उस की पत्नी ने इस ओर कोई प्रयास किया. नतीजे के तौर पर हूदिनी ने घर में जरमन भाषा और बाहर बोल चाल की व्याकरणहीन अमरीकी स्लैंग के माहौल में परवरिश पाई.

घर का वातावरण आनंदमय और स्नेह-सिक्त था. सेसिलिया घर के काम काज करते समय हंसती, मज़ाक़ करती रहती जिस से सेमुअल का रोना झींकना दब जाता. हूदिनी मां की विनोदी हरकतों को निहारता रहता. उस की हमेशा यही कोशिश रहती कि मां प्रसन्न रहे. सभी बच्चों को अपने माता पिता क मरने का भय सताता रहता है जो बढ़ती उम्र के साथ कम होता जाता है. लेकिन हूदिनी के साथ इस का उलटा मामला था. बढ़ती उम्र के साथ यह भय और बढ़ता गया. और जब दुःख बरदाश्त से बाहर हो जाता तो वह अपना सिर मां के वक्ष में छिपा देता. मां के धड़कते दिल की आवाज़ उसे हमेशा की तरह बहुत शांति देती और वह ईश्वर से प्रार्थना करने लगता कि मां के दिल की धड़कन बंद होने से पहले उस की मृत्यु हो जाए.

सेमुअल इस आशा से न्यू यार्क लौट आया कि वहां काफ़ी संख्या में यहूदी रहने के कारण उस जैसे यहूदी मर्मज्ञ का जीवन यापन सहज हो जाएगा. लेकिन वहां भी उस की आय कम ही रही. उस के बच्चों को काम पर जाना पड़ता. नवंबर १८८८ में, जब हूदिनी १४ वर्ष का ही था, उसे एच रिचटर्स संस के यहां टाई के अस्तर काटने का पक्का काम मिल गया. यहीं उस का परिचय जादूगरी से हुआ.



मां बेटे :
सेसिलिया और हूदिनी

१९वीं शताब्दी के अमरीका में जादूगरी का धंधा रंगमंचीय मनोरंजन का एक प्रकार था. इस के स्तर को ऊंचा उठाने वालों में कार्ल हरमन का बड़ा योगदान रहा. वह इस कला के प्रदर्शन के लिए यूरोप के सारे नगरों में घूमा और उस ने कई स्थानों पर राजाओं और रानियों के सामने चमत्कारों का प्रदर्शन किया. राजघरानों के सदस्यों पर जादूगरी के करिश्मे सीखने का शौक चर्राने लगा. कुछ को हरमन ने इस क़ला के रहस्यों में दीक्षा दी तो उन्हों ने अमूल्य भेंटों और जवाहरात से उस का घर भर दिया.

कठिन अभ्यास

आरंभ में हूदिनी ने ताश और सिक्कों के कुछ खेल दिखाने शुरू किए. उस के साथ-काम करने वाले जैकब ह्यइमन को भी यही लत थी. दोनों कठिन अभ्यास करते और सोचते कि जादूगरी को अपना पेशा बना लें. हूदिनी को उम्मीद थी कि एक दिन जादू की कला उसे भी कार्ल हरमन की तरह राजघरानों तक ले जाएगी और इस के माध्यम से वह अनेक देशों का भ्रमण कर सकेगा. इस के साथ ही वह यह भी जानता था कि हरमन तथा अन्य महान जादूगरों की तमाम उप-लब्धियों और ख्याति के बावजूद उन का दर्जा केवल भांड का था और हूदिनी इतने से संतुष्ट होने वाला नहीं था.

इन्हीं दिनों हूदिनी और जैकब की मुलाक़ात जो रिन से हुई उसे भी जादू में रुचि थी. जो ऐसी रहस्य बैठकों में भाग ले चुका था, जहां कुछ लोगों का दावा था कि उन्हों ने मृतात्माओं को धरती पर वापस बुला कर उन से बातचीत की है. लोगों को अदृश्य हाथों का स्पर्श महसूस होता था, साज़ अपने आप बजने लगते थे और मेज़ें हिलने लगती थीं. हूदिनी इन बातों की सच्चाई जानने के लिए बेचैन था और उस ने इस विषय पर जो से कई प्रश्न किए. जो को इन दावों पर संदेह था, उस की राय में अधिकांश तांत्रिक माध्यम बेईमान जादूगर थे, जिन्हों ने ग़लत रास्ता अपना कर यह दावा किया था कि उन के क़ब्ज़े में अलौकिक शक्तियां हैं. उस का कहना था कि ईमानदार जादूगर अपने चमत्कारों को रहस्य का परदा तो उढ़ाते हैं पर यह स्पष्ट बता देते हैं कि उन के करतब पूर्णतः इहलौकिक हैं.

१८९१ के आरंभ में हूदिनी ने जो को इस बात के लिए राज़ी कर लिया कि वह उसे ऐसी एक रहस्य गोष्ठी में ले जाए. जो और हूदिनी मिन्नी विलियम्स के घर गए. वह चारों ओर भारी परदों से घिरी केबिनट में जा बैठी और समाधि में जाने के भाव प्रदर्शित करने लगी.

थोड़ी देर बाद केबिनट से आकृतियां उभरना शुरू हुईं, कभी एक, कभी दो. वहां बैठे लोगों में से कुछ को उन में अपने प्रिय संबंधी व मित्र नज़र आए जो इस दुनिया से जा चुके थे. आत्माओं के लौटते समय फ़र्श चरमरा उठा. इस से हूदिनी को संदेह हुआ कि ये आकृतियां ठोस हाड़ मांस की बनी थीं. वह हैरान था कि लोग इतनी आसानी से मूर्ख बनने को तैयार हो जाते हैं!

कुछ दिनों बाद जो ने हूदिनी को एक नव प्रकाशित पुस्तक दिखाई जिस में मृतात्माओं के आगमन की हर चालाकी का भांडा फोड़ा गया था. हूदिनी को सब से ज़्यादा आकर्षित किया उस रहस्य ने जिस में रस्सों से बंधा आदमी आंख झपकते आज़ाद हो कर फिर दोबारा पाश में बंध सकता है. रस्सों से अपने आप को बंधवाना उस समय के कुछ माध्यमों का

.रिवाज था ताकि लोगों को विश्वास हो जाए कि आत्माओं को बुलाने में माध्यम कोई धोखाधड़ी नहीं कर रहा है. रस्सों से निकलने व दोबारा उन में बंधने की विधि पुस्तक में स्पष्ट रूप से समझाई गई थी. हूदिनी और जैकब अभ्यास कर के शीघ्र ही इस कला में निपुण हो गए.

हूदिनी को पूरा भरोसा नहीं था कि जादूगरी के द्वारा वह अपनी मंज़िल तक पहुंच सकेगा. तभी उस ने ज्यां-यूजीन राबर्ट-हूदिन के संस्मरण पढ़े और उस का दिग्भ्रम दूर हो गया.

राबर्ट-हूदिन ने १८४५ में पेरिस में पुराने पैले-राया (राज भवन) के एक थिएटर में कल्पनातीत शामें (स्वारे फ़ंतास्तीक) नाम से कार्यक्रम शुरू किया था, जिस में वह शानदार मायावी भ्रम उत्पन्न कर पाता था. हूदिनी इस बात से बहुत प्रभावित हुआ कि राबर्ट-हूदिन की ख्याति केवल मनोरंजन जगत तक ही सीमित नहीं रही. १८५६ में अल्जीरिया में मुसलमान संतों का एक संप्रदाय मरबूत वहां के क़बायलियों को फ्रांसीसी शासन से आज़ाद होने के लिए उकसा रहा था. बग़ावत के जवाब में अपने जादू से अल्जीरिया वासियों को प्रभावित करने के लिए फ्रांसीसी सरकार ने राबर्ट-हूदिन को वहां भेजा.

राबर्ट-हूदिन के जादू से क़बायली सरदार हक्का बक्का रह गए. वे इस नतीजे पर पहुंचे कि मरबूतों के चमत्कारों का फ्रांस के जादू से कोई मुक़ाबला नहीं. फलस्वरूप वहां शांति स्थापित हो गई और विजयी राबर्ट-हूदिन गर्व से सिर ऊंचा किए पेरिस लौटा.

इस पुस्तक ने हूदिनी के जीवन लक्ष्य को निर्धारित कर दिया. उस ने तय किया कि राबर्ट-हूदिन की तरह वह भी जादू के माध्यम से विश्व में भूमिका निभाएगा.

इस प्रकार वह १७ वर्ष की उम्र में व्यावसायिक जादूगर बन गया. इस में जैकब उस का साझीदार था. जादू प्रदर्शन के लिए एक नाम की ज़रूरत थी. हूदिनी पर लगातार राबर्ट-हूदिन का भूत सवार था. बार बार वह उस की चर्चा करता. अनजाने ही वह राबर्ट-हूदिन के नाम में से राबर्ट काट चुका था और उसे मात्र हूदिन कहा करता था. जैकब का विचार था कि नाम के पीछे 'ई' लगा देने से इस में यूरोपियन शैली में मतलब हो जाएगा 'उस जैसा'. अतः उस ने सलाह दी कि वे अपना नाम हूदिनी ब्रदर्स रख लें.

शुरू शुरू में उन्हों ने सस्ते शराबघरों में अपने खेल पेश किए. ये स्थान व्यावसायिक दृष्टि से सब से निचले स्तर के माने जाते हैं, जहां केवल दादागीरी करने वाले लोग नज़र आते हैं. पियक्कड़ जन समूह किसी भावुक गाने या किसी हास्य अभिनेता के अभिनय को तो शांत हो कर देख लेते, लेकिन अन्य कलाकारों को हुल्लड़ का सामना करना पड़ता.

चमत्कारी कायाकल्प

१५ मिनट के शो के अंत में हूदिनी ब्रदर्स ट्रंक में बंद आदमी के बदल जाने का जादू दिखाते. यह लकड़ी का एक पुराना संदूक था जिस में एक ख़ुफ़िया तख़्ता अंदर की तरफ़ खुलता था. संदूक़ को बंद कर के ताला लगाने और रस्से से बांधने के बावजूद इस के अंदर बंद आदमी बिना किसी कठिनाई के बाहर निकल सकता था. यह जादू २५ वर्ष पहले एक ब्रिटिश जादूगर नेविल मस्केलीन ने लोकप्रिय किया था. उसे अंदर बंद कर के बकस पर ताला लगा दिया जाता. फिर बकस पर रस्सा लपेट कर उसे एक परदे के पीछे रख देते. इस के तुरंत बाद नेविल परदे के पीछे से

स्टेज पर आ कर खड़ा हो जाता. इस के बाद परदा हटा दिया जाता और दर्शकों के सामने ताला लगा, रस्से से लिपटा बकस रखा होता.

हूदिनी ने इस खेल को सुधार कर शानदार कर लिया था. वह दर्शकों में से कुछ लोगों को स्टेज पर बुलाता, जो रस्से से उस के हाथ पीठ पर बांध देते. फिर वे लोग उसे बोरी में बंद कर के, बोरी के मुंह पर मुहर लगा देते. उस के बाद उसे बकस में डाल, ताला लगा कर बाहर से रस्सा लपेट दिया जाता. पीतल के पाइप के बने गहरे नीले मखमली परदे वाली केबिनट को सरका कर बकस के सामने रख दिया जाता. जैकब केबिनट के अंदर जाता. अगले क्षण जैसे ही परदे हटाए जाते तो जैकब ग़ायब मिलता और उस के स्थान पर हूदिनी खड़ा नज़र आता. उस के पास रस्सों से लिपटा तालाबंद बकस पड़ा होता. स्टेज पर दर्शकों में से आए लोग रस्सा खोलते. ताला खोलते. फिर बकस के अंदर रखे सीलबंद थैले का मुंह खोलते तो वहां रस्सों से बंधा जैकब मिलता. उस के हाथ पीठ पर बंधे होते. दर्शक अभिभूत हो जाते क्योंकि बकस में एक आदमी को बंद कर के परदे के पीछे ले जाने में मुश्किल से एक मिनट लगता, फिर इतने कम समय में बंधा हुआ आदमी मुक्त और मुक्त आदमी कैसे बंधा हुआ बकस में मिलता था?

हूदिनी ने इस खेल का नाम रखा 'मेटामारफ़ोसिस' अर्थात 'कायाकल्प'. बोरे में बंद होते ही हूदिनी हाथ के बंधन खोलना शुरू कर देता था. बकस का ढक्कन बंद होते ही वह बोरे की तली को चाकू से फाड़ देता. जैसे ही बकसा परदे के पीछे सरकाया जाता वह बोरे से बाहर आ जाता. उधर हूदिनी खुफ़िया तख़्ता हटा कर बाहर आता और ठीक उसी समय जैकब बकस में घुस जाता और हूदिनी परदे से बाहर प्रकट होता. इस बीच जैकब बकस के अंदर जकड़े जाने के काम में व्यस्त रहता. और जब दर्शकों में से कोई बकस का ढक्कन खोलता, वह बोरे में बंद बैठा मिलता. वह अपनी जगह से हिलने की कोशिश न करता, इस से किसी को यह शक भी नहीं होता था कि बोरा नीचे से कटा है.

'कायाकल्प' की सफलता फ़ुरती से काम करने पर निर्भर करती थी. हूदिनी इसे जल्दी से जल्दी पूरा करना चाहता था जबकि जैकब इस गति से बकस में काम करने में असमर्थ था. फलस्वरूप चार महीने बाद दोनों की साझेदारी टूट गई.

अब हूदिनी ने अपने भाई थियो को अपने साथ शामिल कर लिया. यह बात पिता सेमुअल की सोच से भी परे थी कि उस के दोनों बेटे जादूगर का व्यवसाय अपनाएंगे. उन के लिए सारा संसार एक पहेली बन कर रह गया था. १८९२ में एक दिन सेमुअल ने हूदिनी को बुलाया और मां की सेवा करते रहने का वह वादा दोहरवाया जो उस ने अपने १२वें जन्मदिन पर किया था. कुछ सप्ताह बाद सेमुअल की मृत्यु हो गई.

१८९३ में हूदिनी और थियो शिकागो में वर्ल्ड्स कोलंबियन एक्सपोज़ीशन में तमाशा दिखाने गए. वहां हूदिनी ने एक जादूगर को हथकड़ियों से आज़ाद होते देखा.

हथकड़ियों का जादू हाथ की मामूली सफ़ाई थी. जादूगर के हाथ में हथकड़ियां लगा दी जातीं और दोनों हाथों को एक बड़े रूमाल से ढक दिया जाता. रूमाल के नीचे वह दूसरी चाबी से हथकड़ियां खोल लेता.

हूदिनी ने इस खेल का कई बार अभ्यास किया. उस ने सोचा कि अगर वह हथकड़ी चाबी से खोलने की बजाए कोई और तरकीब

लड़ाने में सफल हो जाए तो इस खेल में नया चमत्कार और रहस्य पैदा हो जाएगा.

१८९४ में ग्रीष्म ऋतु में हूदिनी बंधुओं ने न्यू यार्क के मनोरंजन उपवन में प्रदर्शन का प्रोग्राम बनाया. इस शो का प्रमुख आकर्षण था कुछ लड़कियों का एक समूह जो फ़्लोरल सिस्टर्स के नाम से नाच और गाने पेश करता था. थियो उन बहनों में से एक से लगातार मिलने लगा. उस का परिचय उस ने हूदिनी से भी करवाया. वह सुंदर, आकर्षक और इकहरे शरीर वाली छोटे क़द की लड़की थी. उस का नाम था विल्हेल्मीना बीएट्रीस रानेर—संक्षेप में बैस. वह एक जरमन आप्रवासी की बेटी थी. हूदिनी पहली नज़र में ही उसे दिल दे बैठा. दो सप्ताह के अंदर अंदर वे दांपत्य जीवन में बंध गए. तब वह था २० वर्ष का और वह थी १८ वर्ष की.

अपनी मां के घर पर हूदिनी ने बैस को अपने सपने सुनाए. किस प्रकार उस के पास दो घंटे तक पेश किया जाने वाला जादू का पूरा शो होगा, और कैसे वह सर्वोत्तम थिएटरों में जादू के खेल करेगा, कैसे राजा और रानियां उस का सम्मान करेंगे और जब उस की लोकप्रियता चरम सीमा पर पहुंच जाएगी तो फिर वह संसार के विशालतर मंच पर आएगा और मानवता की सेवा के लिए कुछ अनूठे काम करेगा.

वह मुग्ध सी सब कुछ सुनती रहती. हूदिनी ने बैस में वह सब खूबियां देखी थीं जो एक सुघड़ पत्नी में होनी चाहिए. उस स्त्री की निष्ठा और सहयोग के बल पर वह जीवन भर आगे बढ़ सकता था.

शीघ्र ही बैस को मालूम हो गया कि अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए हूदिनी किस हद तक मेहनत करने को तैयार था. वह



हूदिनी दंपती

रात पांच घंटे से ज़्यादा न सोता. दिन के बाक़ी घंटे अभ्यास करते, रस्सियों और हथकड़ियों को खोलते बांधते और सिक्कों व ताश पर उंगलियां रवां करने में गुज़रते. वह चाहता था कि उस की पत्नी शो में भाग ले. उस ने उसे शो में साथी की भूमिका समझाई. साथ ही उस ने 'कायाकल्प' में गति के महत्व पर भी ज़ोर दिया. वे अपने बेडरूम में बैठे घंटों चमत्कारों का अभ्यास करते रहते.

कुछ ही दिनों में हूदिनी दंपती खेल करने के लिए पूरी तरह तैयार हो गए. जब बकस को परदे की आड में छिपाया जाता तो बैस दर्शकों से कहती, "मैं जब तीन बार ताली बजाऊंगी तो एक चमत्कार हो कर रहेगा." वह परदे के पीछे लपकती और तीन बार ताली बजने की आवाज़ आती. ताली हूदिनी बजाता

फोटो: लेखक के सौजन्य से

था, जो इस समय तक बकस से बाहर आ चुका होता था. वह परदा हटाता. ताला लगा ट्रंक जैसे का तैसा पड़ा दिखाई देता. उस पर उसी प्रकार रस्सा बंधा होता लेकिन बैस ग़ायब होती. यह सब कुछ तीन सेकंड के बीच घट चुका होता.

लोग आश्चर्य से हक्के वक्के मुंह में उंगली दबा लेते. ताला लगे और रस्से से बंधे सीलबंद बकस में दो जन स्थान परिवर्तन कर चुके होते—वह भी इतनी तेज़ी से कि सिर चकरा जाए. यह प्रभाव पैदा कर पाना ही हूदिनी का उद्देश्य था. उस की तकनीक ने भौतिक बाधाओं को पार कर के एक चमत्कार सर्जित कर लिया था.

इस खेल के साथ हूदिनी दंपती ने पूरा अमरीका घूम डाला. अब उन के खेल शराबघरों से थोड़े ऊंचे स्तर के स्थानों में होते थे जहां संसार की विलक्षण वस्तुओं के संग्रह नाम मात्र के टिकट पर दिखाए जाते थे. फिर भी कभी कभी उन्हें बेकारी के दिन देखने पड़ते.

जकड़जामे की गिरफ़्त में

कार्यक्रमों के दौरान ख़ाली समय में हूदिनी हथकड़ी वाले खेल में महारत हासिल करने के प्रयत्नों में लगा रहता. जगह जगह कबाड़ियों और लोहे की दुकानों की ख़ाक छानता, और जहां भी उसे कोई हथकड़ी नज़र आती, उसे ख़रीद लाता. वह उन्हें बंद करता, खोलता, हिस्सा हिस्सा अलग कर डालता और ऐसी तरक़ीब की तलाश में रहता कि उन्हें बिना चाबी खोला जा सके.

इतनी मेहनत के बाद भी स्टेज पर हथकड़ी वाला खेल लोगों को बहुत प्रभावित नहीं कर पाता था. वह दर्शकों में से कुछ लोगों को हथकड़ियों के मुआयने के लिए बुलाता, ताकि वे उसे बंद कर के और खोल कर अपनी तसल्ली कर लें. फिर वह परदे के पीछे जाते ही उनसे मुक्त हो जाता और नाटकीय ढंग से उन्हें उठाए स्टेज पर लौटता. फिर भी लोगों को इस में चमत्कार पर संदेह था. वे इस खेल से प्रभावित न हो पाते.

१८९६ में हूदिनी ने अपने आप को नोवा स्काटिया के एक स्थान पर बेसहारा पाया. उस के लिए यह बड़ा दुःखदायी समय था. एक ओर असफलता दुःख बढ़ा रही थी, दूसरी ओर सैकड़ों मील दूर घर पर मां के मरने की आशंका मन को बेचैन रखती. उसे लगता कि मां के बिना वह पागल हो जाएगा. इस विचार ने उस के मन में पागल लोगों की हालत देखने की सनक पैदा कर दी. वह एक पागलख़ाना देखने गया. वहां उस ने एक भयानक दृश्य देखा. एक पागल को सलाख़ों-दार कोठरी में बंद किया जाता था. कोठरी में दीवारों पर रूई भरे गद्दे लगे थे जिस से वह पागल अपना सिर टकरा कर फोड़ न मरे. पागल को बांधे रखने के लिए स्ट्रेट जाकेट या जकड़ जामा पहनाया गया था. वह उस से निकल पाने के लिए बेतरह जूझ रहा था. इतनी छटपटाहट और संघर्ष इस से पहले हूदिनी ने नहीं देखा था.

अगले दिन हूदिनी बाज़ार से अपने लिए एक पुराना जकड़ जामा ख़रीद लाया, और अपने आप को उस में बंदी बना कर मुक्त होने की कोशिश करने लगा. उसे देख कर बैस को ज़रूर लगा होगा कि वह पागल हो गया है. घंटों संघर्ष के बाद वह निढाल हो फ़र्श पर लेट गया. दिन प्रति दिन यह क्रम चलता रहा. यहां तक कि उस के शरीर पर खरोंचें और घाव उभर आए और उस के हाथों

से लहू रिसने लगा. सातवें दिन उसे मुक्त होने में सफलता मिली. मात्र आत्म बल और धैर्यपूर्वक प्रयास के कारण वह अपने बंधे बाज़ुओं को शरीर के सामने लाने में सफल हो गया. फिर उस ने दांतों की सहायता से आस्तीन पट्टे के बकसुए खोल दिए. अभी तक उस के बाज़ू बंधे थे, लेकिन उन्हें पीछे कर के उस ने बाकी बकसुए भी खोल डाले और जकड़ जामा फ़र्श पर फेंक दिया. उस के शरीर का रोम रोम मुक्ति की भावना से पुलकित हो उठा. यह आभास उसे पहली बार हुआ था, जैसे उसे जकड़ जामे से ही नहीं बल्कि कई प्रकार के भयों से मुक्ति मिल गई हो.

•

उस का अस्थिर व्यवसाय इसी प्रकार घिसटता रहा. आख़िर १८९९ में शिकागो के प्रदर्शन हाल कोहल एंड मिडलटंस ने हूदिनी को कुछ सप्ताह शो करने का निमंत्रण दिया. अभी उस के दिमाग़ में हथकड़ी से मुक्ति का भूत सवार था. उसे विश्वास था कि अगर वह किसी प्रकार इस खेल को नाटकीय बना सके तो वह दर्शकों को प्रभावित करने में सफल हो जाएगा. कोहल एंड मिडलटंस में कुछ प्रेस संवाददाताओं से उस ने कहा कि वह पुलिस की किसी भी हथकड़ी या दूसरे यंत्र से स्वयं को मुक्त करा सकता है. वे उसे पुलिस स्टेशन ले गए, जहां उस ने पुलिस की किसी भी हथकड़ी से आज़ाद हो पाने का दावा किया. पलक झपकते वह पुलिस की सभी हथकड़ियों से मुक्त हो गया. ५ जनवरी १८९९ को इस घटना का ब्योरा 'जरनल' पत्र में छपा.

फिर तो हूदिनी की बन आई. कोहल एंड मिडलटंस की स्टेज से वह दर्शकों को चुनौती देता कि कोई भी हथकड़ी या बेड़ी एक क्षण से ज़्यादा उसे बांध नहीं सकती. दर्शक चक्कर में आ गए. उन्हें भरोसा था कि दर्शकों में से दी गई हथकड़ी नक़ली नहीं हो सकती. हथकड़ी से मुक्ति वाले खेल की सफलता का रहस्य आखिरकार हूदिनी के हाथ लग ही गया.

इस के बाद मिनीसोटा राज्य के सेंट पाल नगर में हूदिनी सफलता की अगली सीढ़ी पर चढ़ा. वहां उस का खेल मार्टिन बैक नाम के एक व्यक्ति ने देखा. विविध मनोरंजन के कार्यक्रम अमरीका के नगरों में दिखाने वाले कई संगठन हुआ करते थे जिन्हें वाडेविल सरकिट कहा जाता था. ये इन कार्यक्रमों के लिए कलाकार तय कर के एक के बाद एक नगर भेजा करते थे. पाल मार्टिन ऐसी एक कंपनी आरफियम में बुकर अर्थात कलाकार बुक करने वाला था. मार्टिन बैक ने हूदिनी का हथकड़ी वाला चमत्कार देखा. उस ने हूदिनी को ६० डालर प्रति सप्ताह के पारिश्रमिक पर शो करने की पेशकश की. उस ने उसे यह भी जता दिया कि उस के शो में जादू कम होना चाहिए और केवल दो रोमांचकारी खेल—कायाकल्प और हथकड़ियों से मुक्ति—होने चाहिए.

हूदिनी ने कभी अपने आप को बुनियादी तौर पर मुक्ति कलाकार नहीं माना था. लेकिन वह आरफियम सरकिट की पेशकश को ठुकराने की स्थिति में नहीं था. बैस को अपनी सहायिका का दर्जा देते हुए उस ने अपना नाम रखा, 'हूदिनी : हथकड़ियों का बादशाह'. इस खेल को बेहद सफलता मिली. शीघ्र ही उस का साप्ताहिक वेतन ६० डालर से बढ़ा कर ९० डालर कर दिया गया.

सान फ्रांसिस्को में शो के दौरान वह पुलिस स्टेशन पर कई हथकड़ियों से मुक्त हो गया. अब यह उस का प्रचार का आम तरीका हो

गया था. उस के शहर छोड़ देने के बाद 'एक्ज़ामिनर' समाचार पत्र ने एक लेख प्रकाशित किया, जिस में दावा किया गया कि हथकड़ी से मुक्ति में कोई चमत्कार नहीं था. इसे खोलने के लिए एक अतरिक्त चावी या कील की आवश्यकता थी.

वापसी पर जब वह सान फ्रांसिस्को रुका तो उस ने पुलिस को चुनौती दी कि उन के पास जितनी भी जैसी हथकड़ियां हों, उसे पहना दें. उस समय वहां मंजे हुए पुलिस अफ़सरों के साथ प्रेस संवाददाता भी थे. हूदिनी को कपड़े उतारते देख वे भौचक्के रह गए. बिलकुल नंगा हो कर उस ने उपस्थित लोगों से कहा कि अब वे तसल्ली कर लें कि कहीं उस ने कोई चाबी या कील तो नहीं छिपा रखी है. सब के चेहरों से मुसकान गायब हो गई —लगा जैसे कोई महामानव सामने हो, जो महान कारनामे कर के दिखाने वाला हो.

हूदिनी के हाथ पीठ की ओर मोड़ कर हथकड़ियों में जकड़ दिए गए. पांवों में बेड़ियां डाल दी गईं. दस हथकड़ियों को एक दूसरे में डाल कर लड़ी बनाई गई. इस लड़ी से उस के हाथों व पैरों के बंधन कस कर जोड़ दिए गए. उसे एक कमरे में ले जाया गया. जहां पहले ही तलाशी ली जा चुकी थी. वहां उसे छोड़ दिया गया. दस मिनट बाद वह मुक्त हो कर प्रकट हुआ.

चमत्कारों की धूम

नई शताब्दी के आरंभ में हूदिनी की साप्ताहिक आय १२५ डालर तक पहुंच चुकी थी लेकिन दो मुख्य वाडेविल सरकिट आरफियम और कीथ की राय में उस ने अपने इस खेल का पूरा पूरा लाभ उठा लिया था. अब और संभावनाएं नहीं थीं. अब हूदिनी ने भी वही किया जो उस से पहले अनेक अमरीकी कलाकार कर चुके थे. यूरोप का दौरा करो, वहां ख्याति पाओ और लौट कर अमरीका की दिग्विजय करो.

३० मई १९०० को वह ब्रिटेन के भ्रमण के लिए रवाना हुआ, जहां उस ने लंदन के सब से श्रेष्ठ मनोरंजन थिएटर अलहंब्रा के मैनेजर सी डुंडास स्लेटर को यह खेल दिखाया. स्लेटर पर इस का कोई प्रभाव नहीं पड़ा. हूदिनी के दावे खोखले मालूम देते थे. ब्रिटेन में शिकागो और सान फ्रांसिस्को के पुलिस अधिकारियों द्वारा दिए गए प्रमाणपत्रों का कोई महत्व नहीं था.

हूदिनी तैयार था. अमरीका छोड़ने से पहले उस ने ब्रिटिश हथकड़ियों को अच्छी तरह आज़मा लिया था : ब्रिटेन में हथकड़ियों के आठ माडल थे और उन में से किसी से भी मुक्त होना उस के लिए कठिन काम न था. उस ने सलाह दी कि स्लेटर लंदन के किसी पुलिस स्टेशन की हथकड़ी से मुक्त होने का मौका दे. स्लेटर ने लंदन के सब से प्रसिद्ध पुलिस संस्थान स्काटलैंड यार्ड को इस कार्य के लिए चुना. वहां के अधीक्षक ने स्वयं हूदिनी की बांहों से एक धातु स्तंभ को घेर कर हथकड़ी लगा दी और कहा कि वह दो घंटों बाद लौट कर उसे मुक्त कर देगा. अधीक्षक अभी दरवाज़े तक भी नहीं पहुंचा होगा कि हूदिनी आज़ाद हो गया.

इंगलैंड में एक अजनबी की भांति आया हूदिनी तीन सप्ताह में ही अलहंब्रा थिएटर में 'हथकड़ी का बादशाह' के नाम से पेश हुआ. उस के नाम की धूम मच गई और स्लेटर ने उस से वहां अपने शो दिखाने के लिए अनिश्चित काल का अनुबंध कर लिया. हर सप्ताह अपने प्रदर्शन में नाटकीय हेर फेर करते

रहने के कारण हूदिनी लोगों की रुचि बनाए रखने में सफल रहा. यद्यपि उस ने सभी चुनौतियों को पूरा करने का दावा किया लेकिन वह मुक्त होने का वही ढंग अपनाता जिसे वह पहले अच्छी तरह जांच परख कर देख चुका होता. अर्थात वह दिन भर ताले वालों और कबाड़ियों की दुकानों पर घूमता रहता और तरह तरह की बेड़ियों और हथकड़ियों की खोज करता रहता. जुलाई के आरंभ से अगस्त के अंत तक वह दर्शकों से खचाखच भरे हालों में शो देता रहा. अगर वह चाहता तो कुछ और समय तक इंगलैंड में रह सकता था, लेकिन उस ने जरमनी में प्रदर्शन की बुकिंग कर ली थी.

ड्रेसडेन नगर में वह पहले प्रदर्शन में मैथिलडेनस्ट्रास जेल की १८ किलो वज़नी बेड़ियों और हथकड़ियों की जकड़न से मुक्त हो गया. इस के बाद वह बर्लिन गया. यहां उस ने अपना सारा खाली समय मज़बूत जरमन तालों के रहस्य जानने में लगाया. कुछ ही दिनों में वह इतना दक्ष हो गया कि कुछ ताले तो उस का हाथ लगने मात्र से खुलते मालूम पड़ने लगे.

दिसंबर में वह लंदन लौट आया और अलहम्ब्रा थिएटर में उस ने फिर अपने चमत्कारों की धूम मचा दी.

फ़रवरी में हूदिनी ने इंगलैंड के प्रांतों का भ्रमण किया, और फिर जरमनी के लिए रवाना हो गया. जरमनी के जादूगरों ने उस के प्रदर्शन से पैदा हुए शौक़ का पूरा लाभ उठाते हुए हथकड़ियों से मुक्त होने का प्रदर्शन जगह जगह करना शुरू कर दिया था. इस से हूदिनी उत्तेजित हो उठा क्योंकि वे नक़ली हथकड़ियां इस्तेमाल करते थे और उस की कला को बदनाम कर रहे थे. उस ने निश्चय किया कि उस की कला से फ़ायदा उठाने का अधिकार केवल उस के भाई को ही मिलेगा. उस का भाई थियो हार्डीन के नाम से अलग से जादू के प्रदर्शन कर रहा था. हूदिनी ने तार द्वारा उसे यूरोप आने की सलाह दी.

थियो के जरमनी आने के कुछ काल बाद हूदिनी ने मां को हैमवर्ग आने का किराया भेज दिया. मां के आगमन से हूदिनी को बहुत शांति मिली. कई कई घंटे वह मां के पास बैठा उसे अपने कारनामे सुनाता रहता. कभी कभी वह अपना सिर मां की गोद में रख देता और वह उस के बालों को उंगलियों से सहलाती रहती; कभी कभी वह अपना कान मां के दिल के साथ लगा कर धड़कनें सुनता और आश्वस्त हो उठता. वह मां को उस के आदि देश हंगरी में ले गया. राजधानी बुडापेस्ट के सब से बड़े होटल में फ़व्वारों और ताड़ वृक्षों वाले लान में उस की मां ने राजसी ठाठ बाट के साथ अपने पुराने संबंधियों और मित्रों का स्वागत किया तो वह आनंद विभोर हो उठा. हूदिनी के जीवन का यह सर्वाधिक संतोष और हर्ष का दिन था.

मौत की छलांग

अब अमरीका उसे बुला रहा था. वास्तव में वहां के लोग उस के लिए बेक़रार थे. अगले दो वर्षों में उस ने सभी फ़र्स्ट क्लास वाडेविल थिएटरों का भ्रमण किया, सभी चुनौतियों को स्वीकार किया, और हर प्रकार के बंधनों से स्वयं को मुक्त करने में दक्षता प्राप्त की. बहुत सी चुनौतियां उसी के मस्तिष्क की देन थीं. लेकिन विज्ञापन के तौर पर नगर में लगे पोस्टरों से ऐसा लगता कि इन चुनौतियों में उस का हाथ नहीं है बल्कि वह अपने सम्मान और ख्याति को बेदाग़ रखने के लिए उन्हें स्वीकार कर रहा है.

बस, उस की एक ही शर्त थी कि बकस उस की हिदायतों के मुताबिक़ बनाए जाएं और शो से कुछ दिन पहले थिएटर में भिजवा दिए जाएं. ऐसे बकस और पात्र थिएटर की लाबी में रख दिए जाते ताकि लोग उन की जांच पड़ताल कर सकें. और वही रात के अंधेरे और एकांत में हूदिनी अपने हिसाब से उन की कीलों, नटों और बोल्टों में अदृश्य परिवर्तन कर सकता था.

वह वास्तविक चुनौतियों से सतर्क रहता, मात्र इस लिए नहीं कि वह जोखिम उठाने से कतराता था, इस लिए भी कि इस प्रकार की चुनौतियों में कई बार नाटकीयता की कमी होती थी और वे न तो दर्शकों की भीड़ इकट्ठा कर सकती थीं, और न दर्शक उन से प्रभावित हो सकते थे. हूदिनी के अलावा और कौन था जो ऐसी ऐसी चुनौतियां सोच निकालता जिन्हों ने अगले दो वर्ष तक पूरे अमरीका को आश्चर्य चकित रखा.

बोस्टन में कीथ थिएटर की स्टेज पर छः लुहार हाथ में जलती लपटें लिए लोहे के विशाल बायलर में अंतिम रिपिट लगा रहे थे. हूदिनी जब बायलर में घुसा तब भी वह गरम था. ऊपर से लोहे का ढक्कन लगा दिया गया. बड़े ढक्कन के छोर बायलर के मुंह पर कुछ सेंटीमीटर नीचे तक टोप की तरह झुके थे. ढक्कन के इस बढ़े भाग और बायलर में कठोरतम इस्पात की दो छड़ें आड़ी तिरछी डाल दी गईं, और उन के ऊपर ताला लगा दिया गया. बायलर को केबिनट में रख दिया गया और आरकेस्ट्रा बजने लगा. एक घंटे के संघर्ष के बाद हूदिनी मुक्त हो कर परदे के आगे आ खड़ा हुआ. उस के मुंह और कपड़ों पर बायलर की कालिख लगी थी, कपड़े अस्त व्यस्त थे.

दर्शक चकित थे कि वह बायलर में से मुक्त कैसे हो गया. इस बारे में वे जितना सोचते उतना ही विस्मय बढ़ता जाता. उन्हें पता नहीं था कि बायलर के थिएटर में रखे रहने के दौरान उस में कुछ तबदीली कर दी गई थी. सख़्त इस्पात की छड़ों के स्थान पर नरम इस्पात की छड़ें बदल दी गई थीं जो देखने में एक जैसी लगती थीं. असली छड़े कक्ष में छिपा दी गई थीं. हूदिनी छोटी सी आरी से नरम सलाख़ें काट कर बायलर से मुक्त हो गया था. फिर उस ने उन के स्थान पर असली सलाख़ें लगा दीं और नरम कटी हुई सलाख़ों को छिपा दिया. लेकिन दर्शकों के लिए यह अद्भुत करिश्मा था, जिस का कोई तर्क या जवाब नहीं था.

नवोन्मेष

वह लगातार मुक्ति के नए नए तरीक़े खोजता रहा. इस का उद्देश्य ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को थिएटर की ओर आकर्षित करना था. हालांकि ऐसा करने से ये तरीक़े दिन प्रति दिन पेचीदा होते जा रहे थे. वह जानता था कि उसे अपने चमत्कारों को वह स्तर प्रदान करना है जहां तक नक़लची पहुंच ही न सकें. इस लिए उस ने प्रसिद्ध प्रदर्शन—पुलों से छलांग—का आविष्कार किया.

डेट्रायट में २७ नवंबर १९०६ को उस ने इस का पहला प्रदर्शन किया. वह हथकड़ियां पहन कर एक पुल से कूदा और पानी में डुबकी लगा कर उस ने अपने आप को मुक्त कर लिया. मई १९०७ में वह हाथ पांव में बेड़ियां डाल कर न्यू यार्क के एक पुल से कूदा. दो सप्ताह बाद उस की अगली छलांग का प्रदर्शन पिट्सबर्ग में हुआ जिसे ४०,००० दर्शकों ने देखा था.

वह जानता था कि छलांग लगाने के बाद

ज़्यादा देर पानी के अंदर रहने से लोग रोमांचित हो उठते हैं. इस के लिए उस ने अपने घर में एक गहरा तालाब बनवाया जहां उस ने पानी के नीचे ज़्यादा से ज़्यादा देर तक रहने का अभ्यास किया. गरमियां आने तक उसे काफ़ी देर तक पानी के नीचे रहने का अभ्यास हो गया. वह लगभग पांच छः मिनट तक नीचे रह लेता, लेकिन स्वयं उस के अनुसार, वह तीन मिनट से ज़्यादा देर पानी में नहीं रह सकता था. छलांग का प्रदर्शन लोगों में इतना लोकप्रिय था कि उस ने सर्दियों में भी इस खेल को जारी रखने का निश्चय किया. इस लिए घर के तालाव के पानी में उस ने बर्फ़ की सिल्लियां रखना शुरू कर दिया ताकि उसे ठंढे पानी में रहने की आदत पड़ जाए.

नई नई तरक़ीबों के कारण वह अभी तक नक़लचियों से बहुत आगे था. फिर भी हथकड़ियों से आज़ाद होने के तरीक़े इतने नहीं थे कि कभी ख़त्म न हों. १९०७ के मध्य में उसे एहसास हो गया कि उस के लिए कायाकल्प का नया तरीक़ा खोजना बहुत ज़रूरी है—विशेषकर कोई ऐसा करिश्मा जो लोगों के लिए कभी पुराना न पड़े. इस लिए उस ने पानी के कनस्तर में से आज़ाद होने की नई तरक़ीब निकाली जिस का पहला प्रदर्शन २७ जनवरी १९०८ को सेंट लुइस के कोलंबिया थिएटर में किया गया.

स्टेज पर तिरपाल बिछा दी गई. इस के बीच में कनस्तर रखा गया. हूदिनी ने दर्शकों में से कुछ लोगों को स्टेज पर आ कर बरतन की जांच करने की प्रार्थना की. उन्हों ने देखा कि यह बरतन गालवनाइज़्ड आयरन का बना था और इस के जोड़ों पर रिपिट लगी थी. इसे बंद करने के लिए धातु का एक ढक्कन था जिस में छः ताले लगाने की व्यवस्था थी. कनस्तर की ऊंचाई १०७ सेंटीमीटर थी और ऊपर से इस का कंधा ढलावदार था और गरदन गोल यह दूधियों के बड़े डब्बे जैसा था. इस का आकार इतना बड़ा था कि आदमी इस में समा सके.

हूदिनी ने घोषणा की कि डब्बे को पानी से भर दिया जाएगा और वह उस के भीतर प्रवेश करेगा. दर्शकों की समिति ढक्कन को ताला लगा कर चाबियां अपने पास रखेगी. अगर दर्शक चाहें तो अपने ताले लगा सकते हैं! इस के पश्चात हूदिनी परदे के पीछे चला गया और कर्मचारी उस के सहायक फ्रांज कुंकोल को निर्देशन में डब्बों को पानी से भरने लगे. पानी भर चुकने के बाद हूदिनी स्टेज पर तैराकी के कपड़े पहने आया और उस ने बताया कि कोई भी आदमी कुछ ही देर के लिए पानी के अंदर रह सकता है और वह पहले यह प्रदर्शन करेगा कि वह कितनी देर तक पानी में रह सकता है. उस ने लोगों से कहा कि वे सांस रोक कर अनुमान लगाएं कि ख़ुद वे कितनी देर पानी में रह सकते हैं.

स्तब्ध दर्शक

वह डब्बे में उतरा. पानी किनारों से बाहर छलक आया. दर्शकों ने सांस रोकी. कुछ लोग एक मिनट में ही दम तोड़ बैठे. दो मिनट तक तो सभी ने सांस छोड़ दी. हूदिनी अभी तक पानी में था. वह तीन मिनट तक पानी में रहा. फिर उस का सिर उभरा. उस ने दर्शकों को बताया कि अब वह पानी में डुबकी लगा कर तालाबंद डब्बे में हथकड़ियों से मुक्त होने का प्रयास करेगा.

स्टेज पर उपस्थित दर्शकों की समिति में से एक ने उस के हथकड़ियां लगाईं, और हूदिनी

डब्बे में उतर गया. समिति के सदस्यों ने डब्बे पर ढक्कन लगाया और छः ताले लगा कर बंद कर दिए. कुकोल ने परदा आगे सरका कर डब्बे को उस की ओट में कर दिया. एक अकेली स्पाट लाइट परदे के आगे थिरक रही थी, और आरकेस्ट्रा से प्यारी सी धुन.

पहले दो मिनट तो दर्शक शांतिपूर्वक बैठे रहे, लेकिन तीन मिनट पूरे होते ही उन्हों ने फुसफुसाना शुरू किया. 'तीस सेकंड और गुज़र गए. अब उत्सुकता असह्य होती जा रही थी. तभी हूदिनी परदे के पीछे से स्टेज पर प्रकट हुआ. उस के भीगे शरीर से पानी टपक रहा था. उस के पीछे तालाबंद डब्बा अब भी वैसे का वैसा पड़ा था.

यह सब उस ने कैसे किया? वह डब्बे के ऊपरी भाग को एक ओर धकेल कर बाहर निकल आया था. डब्बे का कंधे और गरदन वाला भाग अलग हो गया था क्योंकि उन्हें जोड़ने वाली रिपिटों में बड़ी ख़ूबी से छेड़छाड़ कर दी गई थी. उसे बस इतना करना था कि अपने कंधों के ज़ोर से डब्बे के ऊपरी भाग को ऊपर धकेल दे. बाहर निकल कर उस ने फिर दोनों हिस्सों को जुड़े भाग की तरह रख दिया था. बाहर से देखने वालों को यह पानी से भरा साबुत डब्बा नज़र आ रहा था. ताले भी अपनी जगह लगे थे.

एक प्रश्न ने हमेशा हूदिनी को परेशान किया, जोकि प्रायः कायाकल्प के प्रदर्शन के बाद उस के दिमाग़ में आता था. क्या टेकनीक के कठिन प्रयोग से जादू का भ्रम उत्पन्न होता है या कहीं ऐसा तो नहीं कि टेकनीक की प्रवीणता से ऐसी परामनोवैज्ञानिक शक्तियां उद्वेलित हो उठती हैं कि उन के प्रभाव से सचमुच के जादू का जन्म हो जाता है.

हूदिनी जब कभी न्यू यार्क में होता, इस विषय पर हमेशा अपने मित्र जो रिन से बात करता. जो ने परामनोविज्ञान में ख्याति पाई थी. उस ने इस प्रश्न को अध्यात्मवादियों के दावों से जोड़ दिया था. उस ने हूदिनी को बताया कि वह अभी तक स्पिरिचुअलिस्टों (अध्यात्मवादियों) के दावों की सच्चाई के बारे में किसी निर्णय पर नहीं पहुंच पाया है. अनेक शोधकर्ताओं का मत था कि अधिकांश स्पिरिचुअलिस्ट धोखे-बाज़ होते हैं. पर कई परामनोवैज्ञानिक घटनाएं वास्तविक होती हैं. हूदिनी का विचारशील मस्तिष्क इसे बकवास मानना चाहता था, लेकिन उस का प्रश्न वैसे का वैसा था. उसे एक उचित उत्तर की तलाश थी.

इस बीच उसे यूरोप से फिर बुलावे आने लगे थे. १० अगस्त १९०८ को वह बैस के साथ जरमनी के लिए रवाना हुआ. उस समय वह भरपूर जवानी में था—३४ वर्ष की उम्र, वज़न ७२ किलोग्राम और सुंदर स्वास्थ्य. उस के लिए ये गुण ज़रूरी थे क्योंकि उस का नया खेल बहुत ही कठिन और जानलेवा था. इतना भयानक खेल उस ने पहले कभी पेश नहीं किया था. और कभी कभी तो वह एक दिन में इस के तीन शो तक कर डालता.

जनवरी १९१० में वह मार्सेल से आस्ट्रेलिया के लिए रवाना हुआ. इस भ्रमण के बाद वह प्रशांत सागर पार कर के अमरीका पहुंचा और जुलाई में न्यू यार्क आ गया. यह उस की मां के ६९वें जन्मदिन का अवसर भी था. वह एक महीने से भी कम वहां रहा, फिर यूरोप के लिए रवाना हो गया.

गरमियों में वह पूर्वी राज्यों के भ्रमण के लिए अमरीका लौट आया. नवंबर में डेट्रायट में एक शो के बाद उस की जंघाओं में तेज़ दर्द रहने लगा और पेशाब में ख़ून आने लगा.

फिर भी उस ने प्रदर्शन जारी रखे, लेकिन तीन सप्ताह बाद पिट्सबर्ग में उस की हालत बिगड़ गई. डाक्टर ने इस का कारण गुरदे में एक नस का फट जाना बताया और उसे कुछ महीने के लिए पूर्ण विश्राम की सलाह दी, साथ ही शो का काम भी रोकने के लिए कहा. हूदिनी ने दो सप्ताह तक आराम किया, लेकिन दिसंबर में उस ने फिर काम शुरू कर दिया. सख्त परिश्रम वाले काम से बचने के बजाए उस ने ज़्यादा ज़ोर शोर से इस ओर ध्यान देना शुरू किया.

चीनी जल यातना पात्र

अगले साल वह फिर यूरोप के भ्रमण पर निकल गया. लंदन में वह कुछ दिन अपने नए करतब दिखाने के लिए रुका, फिर बर्लिन के लिए रवाना हो गया. वहां उस ने पहली बार चीनी जल यातना पात्र (चाइनीज़ वाटर टार्चर सेल) से मुक्ति की योजना बनाई. यह उस के जीवन का सब से महान करतब था.

स्टेज पर खड़े हो कर उस ने पात्र की ओर इशारा किया. यह पात्र महोगनी लकड़ी का बना बड़े कनस्तर जैसा था जिस के अंदर की ओर पीतल की चादर लगी थी और सामने वाले पार्श्व में शीशा लगा हुआ था. वह कहता कि यह शीशा इस लिए है कि अगर वह बेहोश हो जाए या उस का साहस छूट जाए तो शीशे को तोड़ कर उसे बाहर निकाला जा सके. "आख़िरकार आप लोग यह तो नहीं चाहते कि मैं डूब कर मर जाऊं! कठिनाई की हालत में मेरे सहयोगी कांच तोड़ डालेंगे और मुझे बचाने की पूरी कोशिश करेंगे."

दर्शकों की कमेटी को बुला कर वह यातना पात्र की जांच करवाता. उन की तसल्ली के बाद यातना पात्र पानी से भर दिया जाता. तैराकी के कपड़े पहने वह स्टेज पर आता. हूदिनी स्टेज के फ़र्श पर लेट जाता. उस के दोनों पांव लकड़ी के तख़्ते के सुराख़ों में जकड़ दिए जाते. तख़्ता लोहे की जंज़ीरों से कसा होता. ये जंज़ीरें छत की ओर उठने लगतीं. धीरे धीरे हूदिनी छत से उलटा लटक जाता.

हूदिनी गहरा सांस ले कर ताली बजाता. फ्रेम का नीचे उतरना शुरू होता. हूदिनी का सिर यातना पात्र के पानी में समा जाता. फिर धड़. फिर पैर. हूदिनी के पैरों पर कसा तख़्ता इस यातना पात्र का ढक्कन बन जाता: इस के ऊपर लोहे का जंगला कस दिया जाता. दर्शकों की समिति के सदस्य इस में ताले जड़ देते. अब हूदिनी को दर्शक कांच के द्वारा देख सकते थे. वह पानी में उलटा लटका होता, पांव ऊपर तख़्ते में कसे हुए. पूर्णतः असहाय. इस के बाद परदे वाली केबिनट में यातना पात्र को छिपा दिया जाता. बाहर दो सहायक सावधान खड़े रहते. उन के सिर पर अग्निशामकों वाला हेलमेट होता, शरीर पर लंबा बरसाती कोट. पैरों में रबड़ के जूते और हाथ में कुल्हाड़ी.

आरकेस्ट्रा बजने लगता. एक मिनट. दो मिनट. दर्शक बेचैन हो उठते. तीन मिनट. घबराहट फैल जाती. बेचारा हूदिनी पानी में सीलबंद है. उलटा लटका है और पांव जकड़े हुए हैं. उस की स्थिति की निपट असहायता भयानक थी. दर्शकों में से कुछ लोग चीख़ने लगते: 'बचाओ, हूदिनी को बचाओ'. सहायक कुल्हाड़ियां उठा लेते. तभी परदा हटा कर हूदिनी बाहर आ खड़ा होता. उस के पीछे होता यातना पात्र, पहले की ही तरह तालाबंद, लेकिन ख़ाली. राहत, प्रशंसा और हर्ष से दर्शक तालियां बजाने लगते.

१९१३ की गरमियों में उस ने न्यू यार्क में दो सप्ताह के कार्यक्रम के लिए यूरोप का भ्रमण अधूरा छोड़ दिया. इस के पीछे उस का

मुख्य उद्देश्य था अपनी ७२ वर्षीया मां से मिलना, जो अब बहुत कमज़ोर हो चुकी थीं.

८ जुलाई को अधूरा भ्रमण पूरा करने के उद्देश्य से वह फिर यूरोप के लिए रवाना हुआ. मां उसे जलपोत की सीढ़ियों तक विदा करने आई. मां से लिपट कर उस ने प्यार की झड़ी लगा दी. फिर वह सीढ़ियां चढ़ता हुआ जहाज़ के ऊपर चला गया. फिर तेज़ी से नीचे उतरा और मां से लिपट गया. चाहता हुआ भी वह अपने आप को मां से अलग न कर सका. आख़िरकार मां ने ही उसे प्यार से अलग किया. नौ दिन बाद कोपनहेगन में उसे तार मिला. पढ़ कर वह पछाड़ खा कर गिर पड़ा. उस की मां अब नहीं थी.

अज्ञात संदेश

वह तत्काल घर के लिए रवाना हो गया. थियो ने मां के अंतिम समय की सारी बातें उसे बताईं. मां को लकवा मार गया था. मौत से एक रात पहले परिवार के सभी सदस्य उस के पास बैठे थे. मां उन्हें हूदिनी के लिए कुछ संदेश देने की कोशिश करती रही. मगर शब्द गले में ही अटके थे. आधी रात गए पंदरह मिनट पर उस ने प्राण त्याग दिए.

हूदिनी को विश्वास था कि यह संदेश परिवार की एक उलझन के संबंध में था, जोकि उस के यूरोप भ्रमण से कुछ पहले पैदा हुई थी. उस के भाई नैट की पत्नी सैडी ने पति को छोड़ कर दूसरे भाई लियोपोल्ड से शादी कर ली थी. परिवार के लिए यह एक भयानक पाप था. हूदिनी लियोपोल्ड को बहुत चाहता था, लेकिन इस मामले में वह उसे माफ़ न कर पाया. उस ने मां को बता दिया था कि इस मामले में उस का मार्गदर्शन उस के लिए अंतिम शब्द होगा. लेकिन अब वह राय देने से पहले ही मर गई थी.

क्या उस की मां भाई को माफ़ करने के लिए कुछ कहने की कोशिश कर रही थी? वह क्या कहना चाहती थी? क्या यह शब्द था · फ़ारगिव? क्षमा कर दो? इस रहस्य से हूदिनी विक्षिप्त सा हो गया.

अकसर वह मां की क़ब्र पर जाता. कभी कभी रात के सवा बारह बजे, जब मां मरी थी. वह धरती पर लेट कर. क़ब्र को आलिंगन में बांध लेता. चेहरा धरती से सटा लेता. मां से बात करता. अनुनय करता—मुझे वह संदेश दे दो, मां.

सारी रात बार बार उसे मां को पुकारते सुनती उस की पत्नी बैस. वह उसे अपनी बांहों में लपेट लेती. सांत्वना देती. अपनी पहली मुलाक़ात के मधुर क्षणों की याद दिलाती. उस वसंत में वे दोनों एक लोकप्रिय गीत गाया करते थे. वह गीत अब बैस गुनगुनाती.

"रोज़ाबेल, मिट्ठी रोज़ाबेल
कैसे तुझे बताऊं तुझ से
कितना प्यार मुझे है
तू ने मुझ पर कर डाला है जादू
तुझ से प्यार मुझे है,
ओ मेरी रोज़ाबेल."

यह हूदिनी का प्रिय गीत था. शादी के अवसर पर जो अगूंठी उस ने बैस को दी थी, ये शब्द उस ने उस पर भीतर की तरफ़ खुदवा दिए थे. यह गीत वह जीवन भर बैस को सुनाता रहा. इस तरह बैस उसे कुछ हद तक सामान्य स्थिति में लाने में सफल हो गई. अगस्त मास के अंत में उसे ने यूरोप के अधूरे भ्रमण को पूरा करने का निश्चय किया. न्यूयार्क छोड़ते समय उस का आख़िरी काम मां की क़ब्र पर प्रार्थना करना था.

उस ने काफ़ी पैसा कमाया था, फिर भी

उसे काम जारी रखना पड़ा क्योंकि वह पैसा जमा न रख सका था. उसे पता था कि अब भारी काम उस के बस का नहीं था. पुरानी ताक़त जा चुकी थी. बैस जानती थी कि मां की मौत के बाद हूदिनी पहले जैसा नहीं रहा था. रात को आंख उचटने पर वह हूदिनी को बड़बड़ाते सुनती, ''मां, तुम आ गई ?'' पर मां नहीं लौटी थी. वह निढाल सा तकिए पर गिर जाता. उसे यही धुन थी कि किसी तरह मां से संपर्क कर पाए. केवल स्पिरिचुअलिस्ट ही इसे संभव बताते थे. लेकिन हूदिनी के ख़याल में सभी माध्यम नक़ली और झूठे थे. मां से संपर्क पैदा करने की उस की आवश्यकता ने उस की बुद्धि पर क़ाबू पा लिया. उस ने प्रण किया कि अगर इस संसार में कोई सच्चा माध्यम है तो वह उस तक पहुंचने में कोई क़सर न उठा रखेगा.

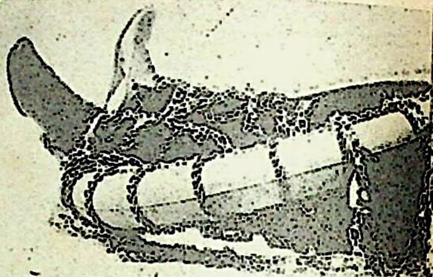
यहां से उस की अजीब तलाश शुरू हुई. उस ने बेताब नज़रों और एकाग्रता से बहुत सी आध्यात्मिक बैठकों में भाग लिया. लगातार निराश होने के बावजूद, जब कभी वह और बैस किसी नए माध्यम की रहस्य सभा में जाते तो वह पहला भजन आंखें बंद कर के और एकाग्रचित हो कर गाता. हर बैठक में वही घिसी पिटी बातें होतीं, लोकबद्ध संदेश आते और भुतहा वातावरण होता. उस की आखों की एकाग्र उत्सुकता मंद पड़ जाती. उन में निराशा छा जाती. सहानुभूति से पत्नी बैस छटपटा कर रह जाती. कभी कभी वह चाहती कि माध्यम को गुप्त शब्द 'फ़ारगिव' बता दे, जिसे सुनने के लिए हूदिनी आतुर था. लेकिन वह उस के विश्वास को झुठलाना नहीं चाहती थी. रात भर वह उसे बड़बड़ाते सुनती, "मां, तुम्हारी आवाज़ मुझे सुनाई नहीं देती.''

उस के मस्तिष्क पर आत्माओं से संपर्क के प्रश्न को सुलझाने की धुन सवार थी. उस ने अपने कई मित्रों से क़रार की कि जो भी पहले मरेगा, वह दूसरे से संपर्क स्थापित करने की कोशिश करेगा. उस ने कई गुप्त कोड बनाए और हाथ मिलाने के गुप्त तरीक़े निश्चित किए जो किसी माध्यम को मालूम न हों. अगर कोई माध्यम ये गुप्त शब्द बता सके तो उस की सचाई में जीवित व्यक्ति को भरोसा हो जाएगा. और जो क़रार उस ने अपनी पत्नी बैस से किया वह सब से गंभीर था.

उस ने और उस की पत्नी बैस ने क़सम खाई कि जो भी पहले मरेगा, वह दस शब्दों पर आधारित गुप्त संदेश भेजेगा. पहला शब्द था 'रोज़ाबेल', जिस का दोनों के लिए बहुत महत्वपूर्ण अर्थ था. बाक़ी नौ शब्द अंकों पर आधारित थे जो अंगरेजी वर्ण माला में अक्षरों के स्थान के संकेत मात्र थे. ये शब्द थे: **आनसर टेल प्रें आनसर लुक टेल आनसर आनसर टेल.** इस प्रकार पूरा संदेश था: **'रोज़ाबेल बिलीव.'**.

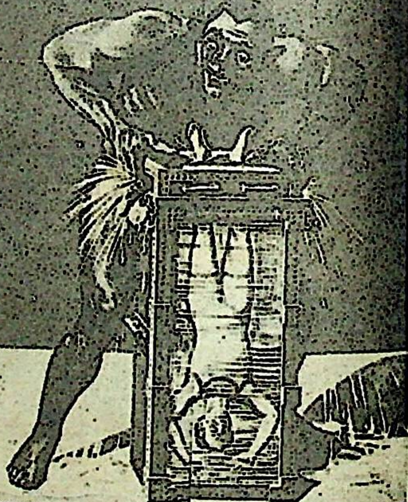
हूदिनी का विश्वास था कि पहले वह मरेगा और उस ने तय कर लिया था कि अगर लौट कर संपर्क करना संभव है तो वह ऐसा कर के रहेगा. वह मृतात्माओं से संपर्क की संभावना को सिद्ध कर के रहेगा ताकि किसी प्रकार का संदेह बच न रहे.

दिसंबर १९१९ में वह ब्रिटेन के दौरे पर रवाना हुआ. उसे यह देश अपने निराशा के मूड के अनुकूल नज़र आया. युद्ध ने अनगिनत लोगों के संबंधियों और प्रियजनों को निगल लिया था. लोगों में अध्यात्म के प्रति रुचि पैदा हो गई थी. बड़े बड़े लोगों का रुझान इधर हो गया था और वे इस के पक्ष में धड़ाधड़ लिख रहे थे. इन सब में सर आर्थर कानन डायल एक ऐसा प्रसिद्ध व्यक्तित्व था जिस ने लोगों

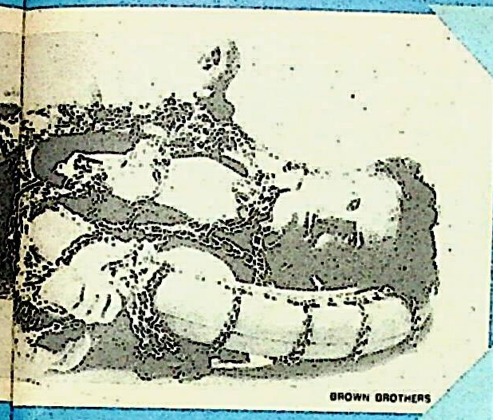




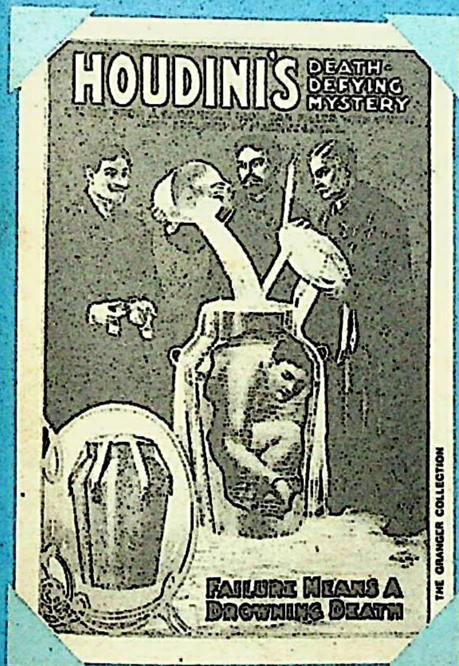
हाथ पांव में बेड़ियां लिए हूदिनी न्यू यार्क बंदरगाह के जल में उतरने को तैयार



हूदिनी के "चीनी जल यंत्रणा" नामक खेल से संबंधित पोस्टर



सिर से पांव तक जकड़ा हूदिनी
इस सारे ताम झाम से
बिना चाबी के
मुक्त हो सकता था.



पानी भरे पीपे से
निकल आने के
करतब का पोस्टर



पांव ऊपर और
सिर नीचे, फिर भी
जकड़जामे से
निकल आने का कमाल

को बहुत प्रभावित किया. तीक्ष्ण बुद्धि वाले जासूस शिरोमणि शरलक होम्स की रचना करने वाला यह कथाकार स्पिरिचुअलिज़्म के मामले में पूर्णतः अंधविश्वासी था. उस की दृष्टि में तर्क का इस से कोई संबंध नहीं था, अध्यात्म एक उद्घाटित सत्य था.

हूदिनी ने डायल को लिखा. वे मिले और पहली बार ही मित्र बन गए. आरंभ में ही हूदिनी ने उसे बताना उचित समझा कि अध्यात्म के बारे में उस का दृष्टिकोण क्या है. उस ने बताया कि उसे इस पर क़तई विश्वास नहीं है, पर सही माध्यम मिलने पर वह अपना विचार बदलने को प्रस्तुत है.

डायल ने बताया कि सबूत की कमी नहीं रहेगी. "लेकिन इस में धोखे की भी तो गुंजाइश है," हूदिनी ने पूछा. "हां, है." डायल ने स्वीकार किया. "इस में धोखा भी है, लेकिन इतना नहीं जितना लोग सोचते हैं." हूदिनी की तलाश में सहायता के लिए डायल ने ऐसे माध्यमों की सूची दी जिन्हें वह ईमानदार समझता था.

ब्रिटेन में छः महीने के आवास के दौरान हूदिनी ने १०० रहस्य सभाओं में भाग लिया. माध्यमों ने उस की मां के घिसे पिसे अस्पष्ट संदेश सुनाए. लेकिन कोई भी उसे वह संदेश न दे सका जो वह चाहता था या जिस की सच्चाई पर वह विश्वास कर पाता.

हूदिनी के इंगलैंड के दौरे के समाचार डायल ध्यान से पढ़ता रहता—कैसे हूदिनी चीनी जल यातना पात्र से तथा अन्य कठिन स्थितियों में से बच निकलता था. हूदिनी ने उसे विश्वास दिलाया था कि उस के सारे चमत्कार हाथ की सफ़ाई हैं. लेकिन डायल को इस पर संदेह होने लगा था.

उस ने हूदिनी को लिखा कि जब वह स्वयं आध्यात्मिक शक्ति का प्रदर्शन कर रहा है, तो फिर उसे अलौकिक शक्ति के उद्घाटन की क्या आवश्यकता थी? उस ने उसे आत्मंथन का सुझाव दिया. उस ने लिखा कि हूदिनी अपनी अलौकिक शक्तियों का उपयोग अनुचित रूप से कर रहा है, इस लिए आत्माओं से संपर्क के स्रोत उस से काट लिए गए हैं. अपनी विलक्षण क्षमताओं को मात्र हस्तलाघव बता कर हूदिनी जनता को दिग्भ्रमित कर रहा है.

अनजाने में डायल ने हूदिनी के उस विराट प्रश्न को छू दिया था जो शुरू से उस के व्यावसायिक जीवन को सालता आया था.

३ जुलाई को हूदिनी भ्रमण पूरा करने के बाद घर लौट आया. अगले वर्ष सर आर्थर कानन डायल अपनी पत्नी और परिवार के साथ न्यू यार्क में आध्यात्मिकता पर भाषण देने आया. उस समय अमरीका में संभवतः दस लाख लोग अपने आप को अध्यात्मवादी बताते थे, और डायल को आशा थी कि उस के भाषणों के बाद इस संख्या में बहुत वृद्धि हो जाएगी.

जून में डायल और उस का परिवार अटलांटिक सिटी में आराम कर रहा था. हूदिनी और बैस भी उन के पास पहुंच गए. एक दिन हूदिनी और बैस समुद्र तट पर बैठे धूप सेंक रहे थे. डायल उन के पास आया. उस ने हूदिनी को बताया कि उस की पत्नी तत्काल ही उसे आध्यात्मिक संपर्क के लिए बुला रही है. उस ने बैस से माफ़ी मांगते हुए कहा कि इस बैठक में केवल हूदिनी ही शामिल हो सकेगा.

हूदिनी उस के साथ होटल लौट आया जहां श्रीमती डायल उन की प्रतीक्षा कर रही थी. श्रीमती डायल ने अपने दाएं हाथ में पेंसिल ली. उस का हाथ अपने आप हिलने लगा जैसे कांप रहा हो. उस ने बताया कि एक आत्मा

गहन शक्ति के साथ उस के शरीर में प्रवेश कर गई है. उस ने आत्मा से पूछा कि क्या उस का ईश्वर में विश्वास है. तीन बार उस का हाथ मेज़ पर अपने आप बजा. इस का अर्थ था, हां. उस ने पैड पर क्रास का चिह्न बनाया. फिर उस ने पूछा कि क्या वह हूदिनी की मां की आत्मा थी. उत्तर में उस का हाथ फिर तीन बार मेज़ से टकराया. श्रीमती डायल तेज़ी से पैड पर कुछ लिखने लगी. पूरा पन्ना भरने के बाद डायल ने उसे फाड़ कर मेज़ के दूसरे छोर पर बैठे हूदिनी की ओर बढ़ा दिया. उस में लिखा था :

'ओह, माई डार्लिंग, भगवान का शुक्र है, आख़िर मैं ने सीमा पार कर ली. मैं ने कितनी बार कोशिश की. अब मैं ख़ुश हूं. मैं अपने प्यारे बेटे से बात करना चाहती हूं. मित्रों, इस सब के लिए मेरी ओर से आप का बहुत बहुत धन्यवाद.''

डायल ने एक और पन्ना फाड़ कर हूदिनी की ओर बढ़ा दियाः

''मेरी पुकार—मेरे बेटे की पुकार—तुम ने सुनी. भगवान उस का भला करे—हज़ार बार—ऐसा बेटा हर मां को नहीं मिलता—उस से कहो—ग़म न करे. जल्दी उसे सबूत मिलेगा.''

श्रीमती डायल बड़ी तेज़ी से एक के बाद दूसरा पन्ना लिखती गई और डायल उसी फुरती से पन्ने फाड़ फाड़ कर हूदिनी की ओर बढ़ाता रहा, जो उड़ी रंगत और सुते हुए चेहरे से उसे पढ़ता रहा. आख़िर संदेश समाप्त हो गया.

हूदिनी अंधेरे कमरे से उठा. उस के हाथ में उस की मां का तथाकथित संदेश था—एक अस्पष्ट संदेश जिस में ऐसा कोई संकेत नहीं था कि वह उस पर विश्वास कर सकता. उस की मां यहूदी थी पर संदेश पर उस ने ईसाइयों का धर्मचिह्न क्रास बना कर हस्ताक्षर किए थे. उस की मां लिखना तो दूर, बस, टूटी फूटी अंगरेजी बोल पाती थी. यह संदेश फर्राटे की अंगरेजी में था. इसी लिए वह बैठक में इतना गंभीर और ख़ामोश था. वह अपनी निराशा और खीझ डायल दंपती से छिपा रहा था. अगर उस की मां को आना होता तो वह उस पवित्र अवसर पर अवश्य आती जब उस का बेटा दो अन्य नेक इनसानों के साथ उस के आने की प्रार्थना कर रहा था. लेकिन वह नहीं आई थी. अव विश्वास करने की कौन सी वात बाक़ी थी ?

परदाफ़ाश

पतझड़ आते आते हूदिनी को बस एक धुन रह गई थी—माध्यमों का परदाफ़ाश. वह नागरिक संस्थाओं में भाषण देता, कहता कि इस विषय पर उस से ज़्यादा किसी और को ज्ञान नहीं है. उस ने सभी माध्यमों को चुनौती दी कि अगर वह उन के किसी चमत्कार को न दुहरा पाया तो वह उस माध्यम को ५,००० डालर इनाम देगा.

अचानक चारों ओर अध्यात्म की चर्चा होने लगी. पैसा कमाने की गुंजाइश के कारण, स्पिरिचुअलिस्ट आंदोलन से पूरा फ़ायदा उठाया जाने लगा. 'साइंटिफिक अमेरिकन' पत्रिका के प्रबंधकों ने वैज्ञानिक नियंत्रण में परामनोविज्ञान का भौतिक प्रदर्शन करने वाले को २,५०० डालर के इनाम की घोषणा की.

प्रार्थियों की जांच के लिए एक समिति का गठन किया गया. इन के सदस्यों में जादूगर के स्थान पर हूदिनी को रखा गया.

'साइंटिफ़िक अमेरिकन' समिति के लिए चुना जाने के समय वह पश्चिम अमरीका के छः मास के भ्रमण के क़रारनामे पर हस्ताक्षर कर चुका था. फिर भी उस ने समिति के आग्रह को प्राथमिकता देते हुए वादा किया कि जब भी समिति की बैठक में उस का उपस्थिति आवश्यक होगी वह अपने भ्रमण के वे कार्यक्रम रद्द कर देगा. दो बार उस ने अपने कार्यक्रम रद्द किए. पहले केस में तो समिति यह सावित कर चुकी थी कि माध्यम नक़ली और धोखेबाज़ था, लेकिन हूदिनी ने समाचार पत्रों को यह ख़बर इस ढंग से दी, मानो उसी ने माध्यम की जांच कर के उसे धोखेबाज़ सावित किया हो. उस के व्यवहार से समिति को धक्का लगा, क्योंकि उस की बातों से स्पष्ट था कि बाक़ी सब मूर्ख थे, एक अकेला वही समझदार था.

दूसरे केस में संभवतः हूदिनी ने समिति के सदस्यों को नक़ली माध्यम के धोखे से बचाया. इस बार भी समिति के सदस्यों को महसूस हुआ कि वह स्वयं ही हर बात का श्रेय ले रहा है.

उस के जीवन की धारा बिलकुल बदल गई थी. फ़रवरी १९२४ में उस ने पूरे अमरीका में २४ भाषण देने के अनुबंध पर हस्ताक्षर किए. उसे वह उद्देश्य मिल गया था, जिस के लिए वह उम्र भर भटकता रहा—इस महान संसार में निभाने के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका, एक ऐसा काम जो वह मानवता के लिए कर रहा था.

फिर भी जब हूदिनी भाषण भ्रमण पर निकला तो वह अपने कलाकार व्यक्तित्व को पीछे नहीं छोड़ आया था. हमेशा की तरह भीड़ जमा करने के लिए उस ने कई चमत्कार दिखाए और मुक्ति के लिए कई चुनौतियां स्वीकार कीं. उस के भाषण मनोरंजन और उपदेश का सुंदर मिश्रण थे. उस ने न केवल यह बताया कि माध्यम कैसे चमत्कार दिखाते हैं, साथ साथ उन का प्रदर्शन भी किया. मेजों का हवा में तैरना, वाद्य यंत्रों का अपने आप बजना और ख़ाली स्लेटों पर संदेशों का उभर आना; सो भी किसी आदमी की सहायता के बग़ैर. दर्शक उस पर निसार थे.

इस प्रकार हूदिनी सभी माध्यमों के लिए मुसीबत का सबब बना हुआ था. वे उस से घृणा भी करते थे और डरते भी थे. उन्हों ने उसे बदनाम करने में कोई क़सर नहीं उठा रखी. उन लोगों ने यह अफ़वाह फैला दी कि वह शराबी है, नशीली दवाएं खाता है, व्यभिचारी है, उसे हर मास पोप से तनख़्वा मिलती है, वह एक यहूदी षड्यंत्रकारी गिरोह का गुप्तचर है और ईसाई धर्म ख़त्म करने के लिए जाल फैला रहा है. उन्हों ने कहा कि वह आत्माओं को सता रहा है और इस पाप का फल उसे भोगना पड़ेगा.

इधर हूदिनी को भी सर्वनाश का आभास हो रहा था. सितंबर १९२६ में भ्रमण पर निकलते समय उसे आभास हुआ कि मौत मंडरा रही है. उस के बजाए ७ अक्तूबर को बैस बीमार पड़ गई. डाक्टरों ने एक प्रकार की विषाक्तता बताई. हूदिनी ने न्यू यार्क से वह नर्स बुलाई जो पहले भी बैस की तीमारदारी कर चुकी थी. ८ अक्तूबर को वह रात भर बैस के पास बैठा रहा. १९ अक्तूबर को बैस पति के साथ अलबानी जाने लायक़ हो गई. उस के साथ सेवा के लिए अब नर्स भी मौजूद थी. हूदिनी के मन का संताप अब मिट चुका था. वह ज़रूरी काम से कुछ दिनों के लिए न्यू यार्क लौट आया.

वह सोमवार को लौटा और बड़ी देर तक बैस के पास बैठा बातें करता रहा. बस थिएटर में शो के समय उठा. पिछली तीन रातें एक तरह उस ने जाग कर गुज़ारी थीं.

शो में मध्यांतर के बाद वह जल यातना से मुक्ति की तैयारी कर रहा था कि एकदम थकावट महसूस हुई और शरीर बेजान सां हो गया. कालिंस उसे तख्तों में जकड़ कर कक्ष में लटकाने की तैयारी में था. हूदिनी ने कालिंस को रोका नहीं. तभी उसे बाएं टखने में असहय पीड़ा हुई. उतार कर उस के पांव की बेड़ियां खोल दी गईं. एड़ी की हड्डी टूट गई थी. डाक्टर ने उसे तत्काल अस्पताल जाने की सलाह दी. लेकिन उस ने मना कर दिया. एड़ी पर पट्टी बांध दी गई और वह लंगड़ाता हुआ शो के लिए स्टेज पर पहुंच गया. शो पूरा किया.

बाद में अस्पताल में एड़ी की हड्डी जमा कर प्लास्तर चढ़ा दिया गया. उसे प्रदर्शनों के लिए मना किया गया लेकिन वह इस के लिए राज़ी न हुआ. रात भर वह पीड़ा के सबब सो न सका और टख़ने को सहारा देने के लिए चमड़े की पेटी बनाता रहा, ताकि पूरे सप्ताह वह कार्यक्रम दे पाए. रविवार को उस की पार्टी मांट्रियल के लिए रवाना हुई. सोमवार को प्रिंसेस थिएटर में शो शुरू हुआ. उस की एड़ी में बेहद दर्द था. लेकिन वह बैस के लिए चिंतित था जो अभी तक गंभीर रूप से बीमार थी.

उस ने अपने आप को आराम का कोइ अवसर न दिया. मंगलवार को उस ने मैकगिल विश्वविद्यालय में आध्यात्मिक ढकोसले पर भाषण दिया. बाद में जोश से भरे छात्रों के समूह ने उसे घेर लिया. उन में से एक छात्र सेमुअल स्माइली ने उसे उस का रेखाचित्र दिखाया जो उस ने भाषण के दौरान तैयार किया था. हूदिनी उसे मंच के पीछे अपने कक्ष में ले गया और अन्य स्केच करने को कहा.

शुक्रवार को २२ तारीख़ थी. तीसरे पहर स्माइली तथा एक अन्य छात्र जैक प्राइस हूदिनी के ड्रेसिंग रूम में आया. कोच पर बैठा हूदिनी अपनी डाक देख रहा था. स्माइली उस का रेखाचित्र बनाने लगा. तभी दरवाज़े पर दस्तक हुई और एक छात्र ने प्रवेश किया. उस का नाम था जे गौर्डन वाइटहैड. बाइबल में लिखे चमत्कारों के बारे में वह हूदिनी का मत पूछने लगा. चिट्ठियां देखते हुए हूदिनी ने उसे कुछ अस्पष्ट उत्तर दिया. वाइटहैड एक के बाद दूसरा प्रश्न करता रहा. उस ने यह भी पूछा कि क्या यह सच है कि वह ज़ोरदार मुक्के का पेट पर प्रहार बिना किसी नुक़सान के बरदाश्त कर सकता है. हूदिनी ने हां में सिर हिला दिया और कहा, बशर्ते उसे इस बारे में पहले से पता हो. वाइटहैड ने पूछा कि क्या सबूत के तौर पर वह मुक्कों के प्रहार के लिए तैयार है. हूदिनी पत्र पढ़ता पढ़ता उठा. इस से पहले कि वह तैयार हो पाता, वाइटहैड ने एक भरपूर घूंसा उस के पेट में जमा दिया. हूदिनी पीड़ा से कराह उठा. वाइटहैड ने उस पर तीन बार प्रहार किया. ऐसा लगता था, वह पागल हो गया है. स्माइली और प्राइस ने उसे पकड़ कर एक तरफ़ घसीट लिया.

नाड़ियों में ज़हर

हूदिनी का पेट दुखने लगा. शाम तक गहरा दर्द होने लगा. उस रात उस ने पीड़ा से छटपटाते हुए शो दिया. दर्द इतना तेज़ था कि वह रात भर सो न सका, लेकिन उसे विश्वास था कि यह केवल पुट्ठों का दर्द है. अगले दिन, शनिवार को उस ने किसी न किसी तरह दोपहर और शाम के शो दिए. शो के बाद कंपनी डेट्रायट नगर के लिए रवाना हो गई, जहां उन्हें दो सप्ताह तक कार्यक्रम पेश करना था. गाड़ी चली तो दर्द इतना बढ़ चुका था कि

बरदाश्त से बाहर हो गया. उस ने बैस को घूंसों वाली घटना सुनाई. उस की नर्स ने थर्मामीटर लगाया. १०२ डिग्री बुख़ार था.

डेट्रायट में डाक्टर ने पीड़ा का कारण विकृत अपेंडेसाइटिस बताया और एंबुलेंस मंगवाई. लेकिन हूदिनी ने उस समय अस्पताल जाने से मना कर दिया. शो की सारी टिकटें बिक चुकी थीं और वह दर्शकों को निराश नहीं करना चाहता था. इस हठ का उसे क्या मूल्य चुकाना पड़ेगा, कोई नहीं जानता था, लेकिन उस ने रोज़ की तरह शो दिया.

२५ तारीख़ के प्रातःकाल तीन बजे उसे अस्पताल ले जाया गया. दोपहर को आपरेशन कर के फटा हुआ अपेंडिक्स निकाल दिया गया. लेकिन तीन दिन तक ज़हर उस की नाड़ियों के रास्ते शरीर में फैल चुका था. आंतों की झिल्ली का रोग गंभीर रूप धारण कर चुका था और डाक्टरों की राय में वह १२ घंटे से ज़्यादा जीवित नहीं रह सकता था.

सात दिन तक हूदिनी मौत से संघर्ष करता रहा और डाक्टरों के अनुमान झुठलाता रहा. रविवार को ऐसा लगा, जैसे उस ने हथियार डाल दिए: उस ने बैस का हाथ पकड़ कर अपने सीने से भींच लिया और पुराना वादा याद दिलाया कि दोनों में से जो भी पहले मरेगा, दूसरे से ज़रूर संपर्क स्थापित करेगा. उस ने उसे उन्हीं शब्दों को दुहराने के लिए कहा, रोज़ाबेल और उस के बाद का वह कोड जिस से बनता था एक शब्द 'बिलीव'. उस ने बताया कि जब कभी भी वह इन शब्दों को सुने तो समझ जाए कि वह उस से संपर्क कर रहा है.

बीमार बैस सारा दिन उस के सिरहाने बैठी रही. आधी रात आई और चली गई. वह तब भी उस के पास बैठी थी. अचानक उसे लगा, हूदिनी उस से छूट रहा है. उस ने झुक कर उसे अपनी बांहों में भर लिया. वह बोल नहीं सकता था, लेकिन आंखें उस के चेहरे पर टिकी थीं—साफ़, चमकती हुई आंखें अपने ढेर सारे प्रश्न समेटे. फिर उस ने आंखें बंद कर लीं और सदा के लिए मौन हो गया. दोपहर १ बज कर २६ मिनट हुए थे और ३१ अक्तूबर का दिन था वह.

अक्षत रहस्य

अपने अकेले शांत घर में बैस उस की प्रतीक्षा करती. हर रविवार, जिस समय हूदिनी की मृत्यु हुई थी, वह प्रार्थना के समय अकेली होती. उस समय वह आध्यात्मिक बैठकों में भाग लेती. कभी कभी माध्यम उस के संदेश भेजते. कभी वे हूदिनी की आवाज़ में बात करते. लेकिन कोई भी वह गुप्त संदेश नहीं दोहरा पाया.

पंदरह महीने गुज़र गए. संदेशों की संख्या में कमी होने लगी. बैस की आशा निराशा में बदल गई. ८ फ़रवरी १९२८ को एक अद्भुत घटना घटी. आर्थर फ़ोर्ड नामक एक माध्यम अपने कुछ मित्रों के साथ रहस्य गोष्ठी में था. उस का मार्गदर्शन करने वाली आत्मा का नाम डेविड फ़्लेचर था.

फ़ोर्ड समाधि में चला गया. उस के माध्यम से फ़्लेचर ने घोषणा की कि इस समय उस के साथ एक महिला है, जिसे उस ने कभी पहले नहीं देखा. उस महिला का कहना है कि वह हूदिनी की मां है और वर्षों तक उस का बेटा उस के एक शब्द की प्रतीक्षा करता रहा है. उस का शब्द था 'फ़ारगिव'. उस ने कहा कि यह शब्द बैस को बताया जाए, जो इस की सचाई की पुष्टि कर सकेगी.

बैस और हूदिनी के बीच का द्वार खुल

गया था. इसे बनाए रखने के लिए फ़ोर्ड तथा उस के मित्रों ने आध्यात्मिक बैठकों का सिलसिला शुरू किया. नौ महीने तक कोई नतीजा नहीं निकला. नवंबर में गुप्त संदेश का पहला शब्द रोज़ाबेल मिला. पूरे संदेश की प्राप्ति में आठ बैठकें लगीं. मार्गदर्शक आत्मा डेविड फ़्लेचर को एक एक कर के उलटे सीधे क्रम में एक एक कर के शब्द प्राप्त हुए. अंततः ५ जनवरी १९२९ को एक बैठक में उस ने घोषणा की कि उसे सही क्रम मिल गया है. शब्द थे: रोज़ाबेल आनसर टेल प्रे आनसर लुक टेल आनसर आनसर टेल.

८ जनवरी को बैस फ़ोर्ड के साथ बैठी थी. हूदिनी उस से सीधे बात कर रहा था. वह यह बता रहा था कि जो संदेश वह भेजना चाहता था वह है 'रोज़ाबेल बिलीव'.

यह समाचार आग की तरह चारों ओर फैल गया और दोपहर में प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों ने उसे संसार के कोने कोने तक पहुंचा दिया. हूदिनी लौट आया! वह अब भी जीवित है! मौत के बाद जीवन और आत्माओं से संपर्क की सचाई का प्रत्यक्ष प्रमाण!

जो रिन ने भी यह समाचार सुना. उस ने तय किया कि यह सारी घटना बनावटी है और इस का परदाफ़ाश किया जाना चाहिए. बैस को फ़ोर्ड की आध्यात्मिक बैठक की सचाई पर पूरा विश्वास था. रिन और हूदिनी के कुछ मित्रों ने उसे याद दिलाया कि वह भावुकता के क्षणों में कुछ बातें भूल गई थी. हूदिनी की मां की ओर से मिले संदेश में विशेष शब्द 'फ़ारगिव' का प्रयोग किया गया था. लेकिन फ़ोर्ड की बैठक से एक साल पहले ब्रुकलिन के समाचार पत्र 'ईगल' के १३ मार्च १९२७ के अंक में छपा था कि बैस कहती है कि हूदिनी की मां की ओर से प्राप्त होने वाले सही संदेश में 'फ़ारगिव' शब्द का होना बहुत आवश्यक है. संभव है कि फ़ोर्ड ने यह लेख पढ़ रखा हो. बैस को यह भी याद दिलाया गया कि हूदिनी द्वारा प्रयोग किए जाने वाले सांकेतिक शब्द हूदिनी की एक जीवनी में छप चुके हैं जो एक वर्ष पहले प्रकाशित हुई थी और इस के प्रकाशन में बैस ने सहयोग दिया था. बैस को मानना पड़ा कि वह यह बात भूल चुकी थी. साथ ही रहस्य गोष्ठी के समय वह बीमार और शारीरिक रूप से अक्षम थी और भावुकता के बहाव में बह रही थी.

आध्यात्मिक बैठक के दो दिन बाद १० जनवरी को न्यू यार्क के पत्र 'ग्राफ़िक' ने लिखा कि हूदिनी का संदेश धोखा था. बैठक से २४ घंटे पहले उस के एक संवाददाता के कब्ज़े में वे सांकेतिक शब्द थे. फ़ोर्ड ने भी यह स्वीकार किया कि वह कुछ दिनों से बैस का मित्र बना हुआ था. वास्तव में वह और बैस एक संयुक्त भाषण भ्रमण की योजना बना रहे थे, जिस में पैसा फ़ोर्ड खर्च करने वाला था और बदले में बैस ने उसे सांकेतिक शब्द बता दिए थे.

पहले तो बैस ने बहुत ज़ोर शोर के साथ इस का खंडन किया और कहा कि उस ने कभी भी हूदिनी के विश्वास को ठेस नहीं पहुंचाई. बाद में बीमारी से ठीक होने पर उस ने फ़ोर्ड के संदेश को उसी प्रकार अस्वीकार कर दिया.

समय बीतता गया और संदेशों की संख्या में कमी होने लगी. हर वर्ष हूदिनी के पुण्य दिवस पर वह आध्यात्मिक बैठक का आयोजन करती. आख़िरी बैठक ३१ अक्तूबर १९३६ को बुलाई गई. यह हूदिनी की दसवीं पुण्य तिथि थी. इस के बाद उस ने फिर कभी उस से संपर्क स्थापित करने की कोशिश नहीं

अगले महीने

अमरीका की गरदन पर रूस का चाकू

क्यूबा और रूस के गठबंधन ने अमरीका के लिए ऐसी समस्याएं पैदा कर दी हैं जिन का समाधान सरल नहीं है

क़ुस्तनतीनिया से कलकत्ता और कलकत्ता से क़ुस्तनतीनिया पांव पांव

यह दौड़ लगाई थी १९ वीं सदी में नार्वे वासी अर्नेस्ट मेंसेन ने जिस के करतबों ने दर्शकों को ही नहीं, शरीर विज्ञानियों को भी हैरत में डाल दिया था

मैं हूं आप का कान

मई में आप ने मानव मस्तिष्क पर लेख पढ़ा था. इस अंक में पढ़िए कान के बारे में जिस पर अगर आप आज कान धरेंगे तो कल कान नहीं मलेंगे

चंडीगढ़ का राक गार्डन

नेकचंद की कल्पना का जीता जागता रूप जिसे देख कर एक फ़्रांसीसी क्यूरेटर ने उस के निर्माता की तुलना ईश्वर से कर डाली थी

अंधों का देश

शाश्वत संदेश लिए सुविख्यात लेखक एच जी वेल्स की कल्पनाप्रधान कहानी

सर्वोत्तम पुस्तक

ममता के मोती

हर्ष और शोक की घड़ियों ने एक मां को ऐसी दृष्टि दी कि बेटी को लिखे शब्द प्रेम और ममता के गीत बन गए

यह सब तथा और बहुत कुछ

सर्वोत्तम के अक्तूबर १९८२ अंक में

की. ११ फ़रवरी १९४३ को बैस का देहांत हो गया. जीवन के अंतिम क्षण तक उस का यही कहना था कि उसे कभी भी हूदिनी की ओर से संदेश प्राप्त नहीं हुआ.

"मैजीशियन अमंग द स्पिरिट्स' में हूदिनी ने लिखा था: "संभव है कि मैं कभी अपने रहस्य बताने लगूं लेकिन मैं इन्हें अपने साथ क़ब्र में ले जाना चाहता हूं क्योंकि इन से मानवता का कोई भला नहीं होगा. कभी वे किसी बेईमान आदमी के हाथ लग गए तो इन के प्रयोग से बहुत हानि हो सकती है."

उस के इस और अन्य वक्तव्यों से यह विश्वास हो चला था कि उस के सारे रहस्य उसी के साथ ज़मीन में दफ़्न हो गए. लेकिन ऐसा नहीं था ! उस की मौत के कुछ वर्ष बाद ही बहुत से रहस्यों पर से परदा उठ गया. इन्हें लोगों के सामने लाने का श्रेय मिला वाल्टर बी गिब्सन को जो जादूगरी आदि विषयों पर लिखता रहता था. वह हूदिनी का गहरा मित्र था और हूदिनी के नाम से छपी रचनाएं उसी ने लिखी थीं. हूदिनी की मृत्यु के समय गिब्सन साधारण जादू पर तीन खंडों की एक पुस्तक लिख रहा था जो हूदिनी के नाम से ही छपनी थी. 'हूदिनी आन मैजिक' नामक पुस्तक में गिब्सन ने लिखा : "हूदिनी की मृत्यु के बाद उस के वकील ने उसे इस विषय पर इतनी सामग्री दी जो हूदिनी ने वर्षों के परिश्रम के बाद एकत्रित की थी. वह इसे प्रकाशित कराना चाहता था." इसी सामग्री से गिब्सन ने दो खंड तैयार किए जो 'हूदिनीज़ एस्केप्स' और 'हूदिनीज़ मैजिक' के नाम से प्रकाशित हुए. उस के बाद इस विषय पर अनगिनत लेख व पुस्तक अब तक लिखी जा चुकी हैं.

इतना कुछ लिखा जाने के बाद शायद यह ख़याल आए कि हूदिनी के रहस्यों से परदा उठ चुका है. लेकिन ऐसा नहीं है. अब भी बहुत से लोग उस के रहस्यों को शारीरिक करतब मानने के लिए तैयार नहीं हैं. आज भी उस के आकर्षण और रहस्य में कोई कमी नहीं आई.

अंत में बैस के कुछ शब्द प्रस्तुत हैं. १६ दिसंबर १९२६ को सर आर्थर कानन डायल को एक पत्र में उस ने लिखा था: "हूदिनी ने कोई रहस्य नहीं छिपाया. हर जादूगर जानता है कि उस के द्वारा चमत्कार किस प्रकार किए जाते थे—बस, उन्हें यह पता नहीं है कि वह बच निकलने के लिए खटके या यंत्र कहां छिपाता था. असली रहस्य तो हूदिनी स्वयं था."

(समाप्त)

अंतर

कुछ समय पहले हम ने एक मकान ख़रीदा. उस में बहुत रंग रोगन और मरम्मत की ज़रूरत थी, पर हम ख़ुश थे कि घर तो ख़रीदा. अतः हम हर सुधार करने को तत्पर थे.

नए घर में चले आने के कुछ दिन बाद मेरे पति बाहर सफ़ेदी कर रहे थे और मैं भीतर व्यस्त थी. तभी हमारे पड़ोसी उधर से निकलते समय कार की खिड़की का शीशा गिरा कर पूछने लगे कि सब कैसा चल रहा था. इस पर मैं ने पति महोदय की टिप्पणी सुनी, "ठीक. यह मकान ख़रीद तो लिया है . . .अब इसे घर बनाने की कोशिश चल रही है."

—श्रीमती पी जी

सर्वोत्तम
रीडर्स डाइजेस्ट



वनों का योगदान

संजय सिंह
राज्य मंत्री,
वन विभाग

मानव जीवन में अनादिकाल से वनों का बड़ा भारी महत्व रहा है. वह अपने भोजन, कृषि तथा मकान के लिए वृक्षों पर आश्रित रहा है. वर्तमान युग में भी इमारती लकड़ी, ईंधन, चारा, फल फूल, जड़ी बूटी तथा कागज़, दियासलाई, फ़र्नीचर जैसे कई उद्योगों के लिए कच्चे माल हेतु हम वृक्षों पर आश्रित हैं. हमारे सामान्य जीवन में बचपन में पालने, खिलौने द्वारा हमारा संबंध वृक्षों से जुड़ता है एवं युवावस्था में कागज़, कलम, कुरसी, मेज़ से; तो बुढ़ापे में लाठी, औषधि आदि चरणों से गुज़रता हुआ चिता में प्रयुक्त लकड़ी के रूप में कहीं जा कर समाप्त होता है.

सभी धर्मों में वृक्षों की वंदना कर उन की महत्ता को स्वीकारा गया है. मत्स्य पुराण में तो यहां तक कहा गया है:

दस कूप समावापि समोहदः।
दस हदः समः पुत्रो, दस पुत्रो समोद्रुमः।।

अर्थात दस कुओं के बराबर एक तालाब, दस तालाब के बराबर एक पुत्र, दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष लगाने का पुण्य व यश मिलता है. अथर्ववेद के अनुसार वृक्ष समस्त सुखों का स्रोत है.

वनों से हमें दो तरह के लाभ प्राप्त होते हैं: प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष.

प्रत्यक्ष लाभ : वनों से ईंधन; मकान व कृषि यंत्र बनाने की लकड़ी, फल व फूल व जड़ी बूटियां मिलती हैं. पालतू जानवरों को चारा मिलता है. बहुत से उद्योग वनों पर आधारित हैं. जैसे फ़र्नीचर, खिलौने, खेलकूद का सामान, पैकिंग, प्लाईवुड, तारपीन, दियासलाई तथा कत्था आदि. इन उद्योगों को सागौन, शीशम, मलबरी, अखरोट, विलो, झींगन, चीड़, उतीस, गूलर, गोजीना, फर, तून, कास, फलदू, हल्दू, साल, बौरंग, सुरई, पूला आदि की लकड़ी की आपूर्ति की जाती है. हमारे यातायात के साधन भी वनों की उपज पर निर्भर हैं: रेल का डब्बा, रेलवे स्लीपर तथा लारी व ट्रक की बाडी तथा नाव व बैलगाड़ी.

अप्रत्यक्ष लाभ : वनों का सब से बड़ा योगदान वातावरण को स्वच्छ रखना है. जीव जंतु श्वास क्रिया के फलस्वरूप कार्बन डाइआक्साइड छोड़ते हैं. कोयला, पेट्रोल, डीज़ल, लकड़ी आदि के दहन से भी अशुद्ध वायु वातावरण में मिलती रहती है. वृक्ष अशुद्ध वायु को ग्रहण कर प्रकाश संश्लेषण क्रिया द्वारा प्राण वायु आक्सीजन तथा पोषक तत्वों (स्टार्च व कार्बोहाइड्रेट) का निर्माण करते हैं. इस प्रकार मानव के स्वस्थ एवं दीर्घायु होने के लिए वन बड़े ही आवश्यक हैं. प्रयोगों के आधार पर यह ज्ञात हुआ है कि एक हैक्टर में फैला हुआ वन प्रति वर्ष वायुमंडल से औसतन ३

टन कार्बन डाइआक्साइड ग्रहण करता है और बदले में दो टन प्राण वायु प्रदान करता है.

प्रसिद्ध वैज्ञानिक डाक्टर टी एम दास के अनुसार एक पेड़ अपनी पचास वर्ष की उम्र में अप्रत्यक्ष रूप से १५.७० लाख रुपए का लाभ मानव को प्रदान करता है :

—२.५ लाख रुपए मूल्य की प्राण वायु पैदा करता है.

—५ लाख रुपए के तुल्य पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाता है.

—२.५ लाख रुपए मूल्य का भूक्षरण रोक कर जमीन को उपजाऊ बनाता है.

—३ लाख रुपए मूल्य का भूमि एवं जल संरक्षण करता है.

—२.५ लाख रुपए के तुल्य पशु पक्षियों को छाया एवं आवासीय सुविधाएं प्रदान करता है.

—२०,००० रुपए का प्रोटीन पैदा करता है.

इस प्रकार हम देखते हैं कि मानव का अस्तित्व, उस की प्रगति व समृद्धि काफ़ी हद तक वनों एवं वृक्षों पर निर्भर है. वनों से हमें प्रति वर्ष बहुमूल्य राजस्व की प्राप्ति होती है.

पर्यावरण संतुलन के दृष्टिकोण तथा राष्ट्रीय वन नीति के अनुसार कुल भूभाग का ३३.३३ प्रति शत भाग वनों से आच्छादित होना चाहिए. इस में से ६० प्रति शत पहाड़ी क्षेत्र में तथा २० प्रति शत मैदानी क्षेत्र में होना चाहिए. उत्तर प्रदेश में कुल भूभाग के केवल १७.४ प्रति शत क्षेत्र में ही वन हैं और यह भी बहुत असमान रूप से वितरित हैं. पर्वतीय क्षेत्र में यद्यपि ६६ प्रति शत वन भूमि है, परंतु वृक्षों से आच्छादित भूमि केवल ४१ प्रति शत ही है.

दियासलाई, प्लाइवुड, पैकिंग केस, खेलकूद का सामान व कत्था आदि उद्योगों के लिए कच्चे माल की आपूर्ति की दृष्टि से उपयोगी एवं महत्वपूर्ण प्रजातियों का वृक्षारोपण किया जा रहा है. वर्ष १९८१-८२ के अंत तक १,६५५ लाख रुपए

के व्यय से १,९५,७७६ हैक्टर वृक्षारोपण किया गया है. वर्ष १९८२-८३ में ८६.४० लाख रुपए के व्यय से ३,४०० हैक्टर वृक्षारोपण करने का लक्ष्य है. इस के अतिरिक्त मैदानी क्षेत्र में वर्ष १९८२-८३ में राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार योजना के अंतर्गत ५,७१० हैक्टर वृक्षारोपण ८५ लाख रुपए के व्यय से करने का लक्ष्य है.

पल्प एवं कागज़ तथा दियासलाई उद्योग को कच्चे माल की आपूर्ति के लिए शीघ्र उगने वाली प्रजातियों जैसे यूकेलिप्टस, पापलर एवं बांस का वृक्षारोपण किया जा रहा है. वर्ष १९८१-८२ के अंत तक १७७४.९६ लाख रुपए के व्यय से १,६८,५९० हैक्टर वृक्षारोपण; २९,५८३ हैक्टर यूकेलिप्टस कौपिसिंग तथा ५,०४४ हैक्टर वांस का घेरवाड़ किया गया है. वर्ष १९८२-८३ में ९२ लाख रुपए के व्यय से १,३२५ हेक्टर वृक्षारोपण तथा ३,५०० हैक्टर यूकेलिप्टस कौपिसिंग आदि का लक्ष्य है. इस के अतिरिक्त १,९४५ हैक्टर वृक्षारोपण तथा ४,००० हैक्टर यूकेलिप्टस की कौपिसिंग तथा २,५०० हैक्टर बांस प्रजातियों का, घेरवाड़ राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार कार्यक्रम के अंतर्गत किए जाने का भी लक्ष्य है.

प्रदेश की प्रमुख सड़कों को अधिक शोभनीय, छायादार व हरीतिमापूर्ण बनाने के लिए पथ वृक्षारोपण किया जा रहा है. वर्ष १९८१-८२ के अंत तक इस योजना के अंतर्गत ४२९.६० लाख रुपए के व्यय से २३,५५० पंक्ति किलोमीटर वृक्षारोपण किया जा चुका है. वर्ष १९८२-८३ में ३२.५० लाख रुपए के व्यय से ८२५ पंक्ति कि.मी पथ वृक्षारोपण करने का लक्ष्य है.

प्रदेश के मैदानी क्षेत्र के ४२ जनपदों में वनों का अभाव है. ग्रामवासियों को जलौनी लकड़ी, इमारती लकड़ी, पशुओं के लिए चारा पत्ती आदि उपलब्ध कराने हेतु नहरों, सड़कों, रेल लाइनों के किनारे तथा ग्राम पंचायतों की समस्त खाली भूमि पर सामाजिक वानिकी योजना के अंतर्गत वृक्षारोपण

किया जा रहा है. ग्रामवासियों को इन वृक्षारोपणों से ईंधन, चारा, छाया, शुद्ध पर्यावरण मिलेगा और गोबर का उपयोग खेतों में होने से कृषि उत्पादन में वृद्धि होगी.

इस वर्ष (१९८१-८२) के अंत तक इस योजना के अंतर्गत १८४९.३१ लाख रुपए के व्यय से २७,०३२ हैक्टर में वृक्षारोपण किया जा चुका है. फिर १९८२-८३ में १०१२.९३ लाख रुपए के व्यय से १४,५०० हैक्टर वृक्षारोपण करने का लक्ष्य है. इस प्रायोजना के अंतर्गत १९८२-८३ में राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार कार्यक्रम में लगभग १,००० हैक्टर क्षेत्र में नई नर्सरियों की स्थापना की गई है तथा उन में लगभग २० करोड़ पौधे तैयार किए जा रहे हैं.

विभिन्न विभागों और गैरसरकारी संस्थाओं आदि के सहयोग से संपूर्ण प्रदेश में रिक्त एवं उपलब्ध भूमि पर वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम १९७६-७७ से ही चलाया जा रहा है. इस अभियान का उद्देश्य लोगों को वृक्ष लगाने के लिए प्रेरित करना है जिस से लोग निजी भूमि पर अधिक से अधिक वृक्ष लगाएं. इस कार्यक्रम के अंतर्गत १९८१-८२ के अंत तक प्रदेश भर में कुल १,७३२ लाख पौधों का रोपण किया जा चुका है तथा वर्ष १९८२-८३ के लिए १,२३१ लाख पौधों के रोपण का लक्ष्य है.

प्रदेश के एक लाख से अधिक जनसंख्या वाले १५ बड़े नगरों में बढ़ते हुए पर्यावरण व ध्वनि प्रदूषण को नियंत्रित करने एवं सुंदर, आकर्षक, शोभनीय दृश्य प्रदान करने के लिए १९८१-८२ से एक सामाजिक वानिकी योजना ५ महानगरों (लखनऊ, आगरा, वाराणसी, इलाहाबाद, कानपुर) में लागू की गई है. धीरे धीरे अन्य नगरों में भी इसे लागू किया जाएगा. १९८१-८२ में ३.३६ लाख रुपए के व्यय से ३,८०० पौधों का रोपण किया गया है और १९८२-८३ में ५.७५ लाख रुपए के परिव्यय का प्रावधान है. ❖

जीप के उत्पादन में दुगनी वृद्धि केवल 24 महीनों में

1981-82 में जीप के उत्पादन ने 25 करोड़ की सीमा पार की जो 1979-80 में 12 करोड़ की तुलना में दुगनी से अधिक है। यह एक ऐसी सफलता है जिस पर हमें गर्व है।

जीप का अर्थ है 2220 लाख ड्राई सेल, 50 लाख टार्च व 60 लाख बल्ब।

1982 मे जीप की एक नई फैक्ट्री मैसूर में आरम्भ हो रही है जिसके फलस्वरूप अधिक व्यवसाय और अधिक लाभ होगा।

80 हजार विक्रेता, 23 सेल्स आफिसेज और इसके अतिरिक्त एक मजबूत सेल्स फोर्स-सब मिलकर वितरण के मार्ग में जीप की सफलता का सबूत है।

जीप के कर्मचारी उसकी कामयाबी का प्रतीक हैं। 3500 कर्मचारी जीप की उन्नति और प्रतिष्ठा को बढ़ाने मे अति उत्साह के साथ जुटे हुए हैं। जीप का भविष्य उज्जवल और लाभप्रद है। क्या आप उसका एक अंग बनना पसंद नहीं करेंगे?



शीघ्र ही जीप की एक नयी बैट्री फैक्ट्री मैसूर में।



जीप इन्डस्ट्रीयल सिन्डीकेट लिमिटेड
(ए मेरवानी एन्टरप्राइज)



१९७९-८०



१९८१-८२

किया जा रहा है. ग्रामवासियों को इन वृक्षारोपणों से ईंधन, चारा, छाया, शुद्ध पर्यावरण मिलेगा और गोबर का उपयोग खेतों में होने से कृषि उत्पादन में वृद्धि होगी.

इस वर्ष (१९८१-८२) के अंत तक इस योजना के अंतर्गत १८४९.३१ लाख रुपए के व्यय से २७,०३२ हैक्टर में वृक्षारोपण किया जा चुका है. फिर १९८२-८३ में १०१२.९३ लाख रुपए के व्यय से १४,५०० हैक्टर वृक्षारोपण करने का लक्ष्य है. इस प्रायोजना के अंतर्गत १९८२-८३ में राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार कार्यक्रम में लगभग १,००० हैक्टर क्षेत्र में नई नर्सरियों की स्थापना की गई है तथा उन में लगभग २० करोड़ पौधे तैयार किए जा रहे हैं.

विभिन्न विभागों और गैरसरकारी संस्थाओं आदि के सहयोग से संपूर्ण प्रदेश में रिक्त एवं उपलब्ध भूमि पर वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम १९७६-७७ से ही चलाया जा रहा है. इस अभियान का उद्देश्य लोगों को वृक्ष लगाने के लिए प्रेरित करना है जिस से लोग निजी भूमि पर अधिक से अधिक वृक्ष लगाएं. इस कार्यक्रम के अंतर्गत १९८१-८२ के अंत तक प्रदेश भर में कुल १,७३२ लाख पौधों का रोपण किया जा चुका है तथा वर्ष १९८२-८३ के लिए १,२३१ लाख पौधों के रोपण का लक्ष्य है.

प्रदेश के एक लाख से अधिक जनसंख्या वाले १५ बड़े नगरों में बढ़ते हुए पर्यावरण व ध्वनि प्रदूषण को नियंत्रित करने एवं सुंदर, आकर्षक, शोभनीय दृश्य प्रदान करने के लिए १९८१-८२ से एक सामाजिक वानिकी योजना ५ महानगरों (लखनऊ, आगरा, वाराणसी, इलाहाबाद, कानपुर) में लागू की गई है. धीरे धीरे अन्य नगरों में भी इसे लागू किया जाएगा. १९८१-८२ में ३.३६ लाख रुपए के व्यय से ३,८०० पौधों का रोपण किया गया है और १९८२-८३ में ५.७५ लाख रुपए के परिव्यय का प्रावधान है. ◆



श्री एम. आर. शेरवानी

संसद सदस्य स्वर्गीय श्री मुस्तुफ़ा रशीद शेरवानी का इलाहाबाद को भारत के उद्योग के नक़्शे पर लाने में विशेष योगदान है। देशभक्ति के वातावरण में परवरिश पाने और प्रारम्भिक कठिनाइयों और बाधाओं के बावजूद वो उत्तर प्रदेश में दो विशाल उद्योग—'जीप इन्डस्ट्रीयल सिंडीकेट लिमिटेड' व 'शेरवानी शुगर सिंडीकेट लिमिटेड'—स्थापित करने में सफ़ल हुए।

दूरदृष्टि रखने वाले उस महान व्यक्ति ने 1945 में 'ग्रेट ईस्टर्न कमर्शियल कॉरपोरेशन लिमिटेड' के नाम से एक आयात निर्यात उद्योग आरम्भ किया। उसी वर्ष वो 'बिज़नेस मेनेजमेंट और एडमिनिस्ट्रेशन' का अध्ययन करने के उद्देश्य से इंगलैंड और अमरीका गये। स्वदेश वापस आने पर उन्होंने 'ग्रेट ईस्टर्न इलैक्ट्रोप्लेटर्स लिमिटेड' का स्थापन किया (जबकि उस समय भारत में एनोडाइज़िंग व मरक्यूलाईज़िंग प्लांट भी उपस्थित नहीं था) और यह ही बाद में 'जीप फ्लेशलाइट इन्डस्ट्रीज लिमिटेड' के नाम से मशहूर हुआ।

1970 से 1980 तक की अवधी में श्री शेरवानी के योग्य नेतृत्व में 'शेरवानी एन्टरप्राइज़ेज' का क्षितिज विस्तृत हुआ और टॉर्च, सेल और बल्ब से बढ़कर होज़ियरी, शुगर और होटल तक फैल गया।

एक विचारशील व्यक्ति होते हुए उन्होंने अपने आप को केवल व्यापार से सम्बन्धित कार्यों तक सीमित नहीं रखा। संसद सदस्य के रूप में उन्होंने 12 वर्षों तक राष्ट्र की सेवा की और 1980 में तीसरी बार राज्य सभा के सदस्य निर्वाचित हुए।

अपने अनुभव व दूरदृष्टि के कारण वो 1967-68 की अवधी के लिए 'इन्डीयन शुगर मिल्स एसोसियेशन' के अध्यक्ष पद पर नियुक्त हुए। 1963 में वो संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारत के प्रतिनिधि के रूप में सम्मानित किये गये और 1966 में उन्होंने लन्दन में हुई 'कॉमनवेल्थ शुगर कॉनफरेन्स' में भारत के प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व किया।

श्री शेरवानी द्वारा रखी गयी मज़बूत नींव दीर्घ काल तक कम्पनी को उन्नति की दिशा में मार्ग प्रदर्शन करती रहेगी।

1982 में जीप की एक नई फ़ैक्ट्री मैसूर में।

1982 में जीप की एक नई फ़ैक्ट्री मैसूर में आरम्भ हो रही है और यह प्रगति की तरफ़ एक नया क़दम है।

प्रतिवर्ष जीप का उत्पादन 2220 लाख ड्राई सेल, 50 लाख टॉर्च और 60 लाख बल्ब है जो कि जीप के विशाल उद्यमी होने का सबूत है।

जीप की पैदावार हमेशा चमत्कारी रही है। 1979-80 में 12 करोड़ से 1980-81 में 21 करोड़ तक पहुँचा कर लगभग 70 प्रतिशत बढ़ोत्तरी दर्ज की गयी जिस पर हमें गर्व है। 80 हज़ार विक्रेता, 21 डिपोज़, 6 शाखायें और इसके अतिरिक्त एक मज़बूत सेल्स फोर्स सब मिलकर वितरण के मार्ग में जीप की सफलता का सबूत हैं।

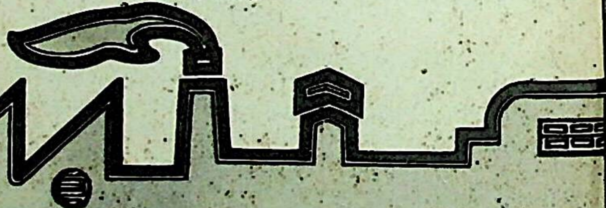
जीप के कर्मचारी उसकी सफ़लता का प्रतीक हैं। 3500 कर्मचारी जीप की उन्नति और प्रतिष्ठा को बढ़ाने में अति उत्साह के साथ जुटे हुए हैं।

जीप का भविष्य उज्जवल और लाभप्रद है। क्या आप उसका एक अंग बनना पसंद नहीं करेंगे?





जीप इन्डस्ट्रीयल सिंडीकेट लिमिटेड
(ए खेतानी एन्टरप्राइज़)









पिकप :

प्रगति की गति

उत्तर प्रदेश के औद्योगिक विकास को गति प्रदान करने तथा उस में सक्रिय भाग लेने की नीति का अनुसरण प्रदेश सरकार कर रही है. इस लक्ष्य को दृष्टिगत रखते हुए प्रदेश में स्थापित तथा स्थापित होने वाली औद्योगिक इकाइयों को वित्तीय तथा अन्य बहुमुखी सहायता प्रदान करने के लिए प्रदेश शासन ने प्रदेशीय इंडस्ट्रियल एंड इन्वेस्टमेंट कारपोरेशन आफ़ उत्तर प्रदेश लिमिटेड (पिकप), लखनऊ, का गठन २९ मार्च १९७२ को किया. इस समय निगम की अधिकृत और चुकता पूंजी क्रमशः २,००० लाख रुपए तथा ७२०.७५ लाख रुपए है. निगम की शत प्रति शत पूंजी प्रदेश सरकार द्वारा प्रदत्त है. प्रदेश सरकार के उपरोक्त लक्ष्य और नीति को पूरा करने के लिए मध्यम तथा बड़े उद्योगों की सहायतार्थ विभिन्न योजनाओं को इस निगम तथा अन्य वित्तीय संस्थाओं द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है. निगम द्वारा प्रदत्त वित्तीय सहायता औद्योगिक इकाई की आवश्यकताओं तथा उपयुक्तता के आधार पर निर्धारित की जाती है. निगम के प्रमुख उद्देश्य तथा कार्य निम्नांकित हैं:

१. प्रदेश में औद्योगिक इकाइयों हेतु पूंजी विनियोजन को प्रोत्साहित करना. २. उद्योगीकरण की सामान्य समस्याओं का अध्ययन कर उचित समाधान करना. ३. नए उद्यमियों को प्रदेश में उपलब्ध सुविधाओं से अवगत कराना तथा उन्हें प्रदेश में ही परियोजना को लगाने के लिए प्रोत्साहित करना. ४. मध्यम व बड़े उद्योगों को प्रबंधकीय, तकनीकी, प्रशासकीय एवं वित्तीय सहायता प्रदान करना. ५. प्रदेश में विभिन्न औद्योगिक इकाइयों की स्थापना की संभावना जानने हेतु संभाव्यता सर्वेक्षण, प्रोजेक्ट रिपोर्ट तथा विपणन सर्वेक्षण तैयार करना.

निगम द्वारा संचालित प्रमुख योजनाओं का संक्षिप्त विवरण निम्न है:

आवधिक ऋण योजना—इस योजना के अंतर्गत प्रदेश की मध्यम तथा बड़ी औद्योगिक इकाइयों को निगम द्वारा ऋण दिया जाता है. कुल आवधिक ऋण की आवश्यकता के प्रथम ३० लाख रुपए उत्तर प्रदेश वित्तीय निगम द्वारा दिए जाते हैं तथा इस से ऊपर की आवश्यकता को यह निगम पूरा करता है. पिकप तथा उत्तर प्रदेश वित्त निगम के बीच अनुबंध के अनुसार ४५ लाख रुपए के आवधिक ऋणों की आवश्यकता को केवल पिकप द्वारा स्वीकृत किया जा सकता है. इस से अधिक के ऋणों पर ५० प्रति शत पिकप तथा ५० प्रति शत वित्त निगम द्वारा स्वीकृति प्रदान की जा सकती है.

अंशों का अभिगोपन—इस योजना के अंतर्गत यह निगम प्रदेश में लगने वाली औद्योगिक इकाइयों को बाज़ार से अंश पूंजी प्राप्त करने के लिए पब्लिक इश्यू में अभिगोपन सहायता प्रदान करता है.

प्रत्यक्ष पूंजी सहयोग योजना—प्रवृतकों की ओर से लगाई जाने वाली अंश पूंजी में कमी होने पर इस योजना के अंतर्गत निगम प्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान करता है तथा यह सहायता सामान्य तथा प्रेफ़्रेंस अंशों के रूप में होती है.

संयुक्त क्षेत्र की इकाइयों में विनियोजन—उपरोक्त वित्तीय सहायता के अतिरिक्त यह निगम संयुक्त क्षेत्र में उद्योगों को स्थापित करता है. अब तक निगम ने दो संयुक्त क्षेत्र की इकाइयां स्थापित की हैं, जिन में से एक है ट्वीगा फ़ाइबर ग्लास लिमिटेड और दूसरी उत्तर प्रदेश ड्रग्स एंड

उद्योग बंधु

प्रदेश सरकार ने उत्तर प्रदेश में प्रस्तावित मुख्यतया मध्यम व बड़े स्तर के उद्योगों को विभिन्न शासकीय विभागों द्वारा प्रदत्त सुविधाएं व स्वीकृतियां प्राप्त करने के बारे में एक ही स्थान पर सक्रिय सहायता व उचित मार्ग दर्शन के उद्देश्य से 'उद्योग बंधु' सेल की स्थापना की है. यह सेल पिकप, यूपीएफ़सी, यूपीएसआईडीसी, उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत परिषद व उद्योग निदेशालय के एक एक अधिकारी मिला कर बना है. पिकप का एक अधिकारी इस से संबद्ध है. यह नव चेतना भवन, अशोक मार्ग पर 'उद्योग बंधु कार्यालय' के नाम से जाना जाता है. यह सेल प्रदेश के उद्यमियों के लिए 'प्रथम संपर्क स्थान' के रूप में कार्य करता है. मुख्य रूप से इस सेल के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :

१. उद्यमियों को प्रस्तावित योजनाओं के चयन में उचित मार्गदर्शन करना.

२. प्रस्तावित योजनाओं के लिए ज़िला उद्योग केंद्र, यूपी इंडस्ट्रियल कंसल्टेंट्स (यूपिका) या पिकप के माध्यम से फ़िज़िबिल्टी रिपोर्ट बनाने में हुए व्यय को सब्सिडाइज़ करना.

३. विभिन्न विभागों एवं निगमों द्वारा सुविधाएं व स्वीकृतियां प्रदान किए जाने के बारे में आवश्यक फ़ार्म आदि को एक ही स्थान पर देना तथा उन के भरने में सहायता करना.

४. उद्यमियों द्वारा विभिन्न विभागों व निगमों में दिए गए प्रार्थना पत्रों पर की जा रही कार्यवाही का पता लगाना तथा उन्हें उचित समय के अंदर निर्णय लेने के लिए उत्साहित करना.

५. उद्यमियों को प्रस्तावित योजनाओं के लिए पिकप, यूपीएफ़सी, यूपीएसआईडीसी व बैंकों से आवश्यक वित्तीय सहायता प्राप्त किए जाने के बारे में सक्रिय सहायता प्रदान करना.

६. प्रस्तावित योजनाओं को उन की आवश्यकता के अनुसार विद्युत, ज़मीन, कच्चा माल इत्यादि दिलाने में सक्रिय सहायता प्रदान करना एवं यह निश्चित करना कि अनावश्यक देरी न हो.

७. प्रदेश में प्रस्तावित लेटर आफ़ इंटेंट प्राप्त नए उद्योगों की प्रगति का पता लगाना एवं उन की परेशानियों को मध्यम एवं बड़े स्तर के उद्योगों की उच्च स्तरीय समिति के सामने प्रस्तुत करना जिस से निर्णय उच्चतम स्तर पर तुरंत किया जा सके.

८. प्रदेश व केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों व निगमों से निकट संपर्क बनाए रखना जिस से उद्यमियों को सुविधाएं अनौपचारिक ढंग से शीघ्र दिलवाई जा सके.

उद्योग बंधु के हस्तक्षेप के बावजूद किसी उद्योग को उचित सहायता या स्वीकृति किसी कारणवश नहीं मिल पाती है तो उस के मामले को प्रदेश के मध्यम व बड़े उद्योगों की सहायता हेतु गठित उच्च स्तरीय समिति के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है. इस समिति की बैठकें मुख्य मंत्री की अध्यक्षता में प्रति मास होती हैं, जिन में उद्यमियों को भी अपना पक्ष प्रस्तुत करने का अवसर दिया जाता है.

फ़ार्मास्युटिकल लिमिटेड. निगम के पास प्रति वर्ष १५०० किमी पावर केबल्स के उत्पादन हेतु आशय पत्र हैं जिस में १००० किमी पीवीसी पावर केबल्स तथा ५०० किमी एक्सएलपी पावर केबल्स होगा. इस परियोजना के लिए इंडस्ट्रियल केबल्स, राजपुरा, के साथ संयुक्त क्षेत्र के अनुबंध पत्र पर ३ नवंबर १९८० को हस्ताक्षर किया जा चुका है. इस परियोजना की कुल लागत १,६५५ लाख रुपए है जिस में पिकप १२५.५६ लाख रुपए के सामान्य अंशों में विनियोजन करेगा. इस के लिए मथुरा इंडस्ट्रीज़ लिमिटेड के नाम से कंपनी की स्थापना हो चुकी है.

Rs. 58.2 M | Rs. 113 M | Rs. 99 M | Rs. 156 M | Rs. 245 M | Rs. 398 M | Rs. 560 M | Rs. 700 M (Target)

Turnover in Rs. Million

0 · 100 · 200 · 500 · 600 · 700

1975–76 · 1976–77 · 1977–78 · 1978–79 · 1979–80 · 1980–81 · 1981–82 · 1982–83

उ० प्र० राज्य सेतु निगम ने १९८२ का गौरवमय अन्तर्राष्ट्रीय एशियाई पुरस्कार अर्जित किया :—

सेतु निर्माण एंव अन्य अभियन्त्रण निर्माण कार्यों के क्षेत्र में अपने उत्तम कार्यों हेतु:—
उ०प्र० राज्य सेतु निगम भारत एंव विदेशों के विभिन्न भागों में अनेक प्रकार के सेतुओं के निर्माण द्वारा परिवहन साधनों की मध्यस्थता को जोड रहा है।
इस प्रकार राष्ट्र की सम्पूर्ण प्रगति में योगदान दे रहा है।
अच्छे परिणामों के साथ निगम की कार्य क्षमता, उत्पादकता एंव मितव्ययता के उच्च स्तर स्थापित कर रहा है तथा अपने नए उद्देश्य "प्रत्येक छठे दिन में एक सेतु" को प्राप्त करने में स्वाभिमानता का अनुभव करता है।

"प्रत्येक छठे दिन में एक सेतु"



उ० प्र० राज्य सेतु निगम
(उ० प्र० शासन का एक संस्थान)
१६, मदन मोहन मालवीय मार्ग
लखनऊ - २२६००१
दूरभाष: ४३५७५ एवं ४३०७८

adEnvoys

विक्री कर ऋण योजना—यह प्रदेश सरकार की योजना है और इस निगम द्वारा चलाई जा रही है. इस योजना के अंतर्गत औद्योगिक इकाई द्वारा बेचे गए स्वनिर्मित माल पर दिए गए बिक्री कर के बराबर ऋण दिया जाता है. उक्त ऋण उत्पादन की तिथि से साधारण ज़िलों में तीन साल तक तथा पिछड़े ज़िलों में पांच वर्ष तक अनुमन्य है. इस योजना के अंतर्गत ऋण प्रतिभूति एवं ब्याज रहित है. इस की वसूली साधारण ज़िलों में १० वर्ष बाद तथा पिछड़े ज़िलों में १२ वर्ष बाद तीन सामान्य वार्षिक किस्तों में होगी. इस योजना के अंतर्गत ऋण पिछड़े ज़िलों में सकल स्थायी संपत्ति का ७५ प्रति शत एवं अन्य जिलों में इस संपत्ति का ५० प्रति शत तक दिया जा सकता है. पर अधिकतम सीमा क्रमशः ५० लाख एवं ४० लाख रुपए है. योजना विस्तारित इकाइयों के लिए भी अनुमन्य है. यह योजना अब परिष्कृत कर दी गई है और अब ऐसी सभी वर्तमान इकाइयां जो नई इकाइयां स्थापित करने के लिए इच्छुक हैं, ऐसी इकाई की स्थापना हेतु बिक्री कर ऋण ले सकती हैं. बिक्री कर ऋण में अब केंद्रीय बिक्री कर की धन राशि भी शामिल की जा सकती है.

पूंजी उपादान योजना—यह भारत सरकार द्वारा घोषित योजना है, जो पिछड़े ज़िलों में औद्योगिक इकाइयों को गति प्रदान करने हेतु संचालित की जा रही है. इस योजना के अंतर्गत सुविधा विशेष रूप से पिछड़े ज़िलों में अल्मोड़ा, वस्ती, फ़ैज़ाबाद, झांसी, रायबरेली और ललितपुर में स्थापित होने वाली इकाइयों पर लागू है. योजना के अंतर्गत औद्योगिक इकाइयों पर लागू है. योजना के अंतर्गत औद्योगिक इकाइयों को उन की अचल संपत्ति का १५ प्रति शत जिस की अधिकतम सीमा १५ लाख रुपए होगी, पूंजी अनुदान के रूप में मिल सकती है.

संभाव्यता आख्या अनुदान योजना—राज्य सरकार की इस योजना को यह निगम कार्यान्वित

करता है. इस योजना के अंतर्गत उद्यमियों के लिए परियोजनाओं की संभाव्यता आख्या तैयार करवाई जाती है. इन आख्याओं की लागत का ७५ प्रति शत अंश राज्य सरकार द्वारा अनुदान के रूप में दिया जाता है. इस के अतिरिक्त इस निगम द्वारा अभिज्ञापित प्रोजेक्ट्स की संभाव्यता आख्या १०० प्रति शत राज्य सरकार द्वारा अनुदान पर बनवाई जाती है.

निगम को स्थापित हुए अब १० वर्ष पूरे हो चुके हैं. इन दस वर्षों में निगम ने अपने कार्यकलाप के सभी क्षेत्रों में सक्रिय सहयोग प्रदान कर के आशातीत सफलता प्राप्त की है. वित्तीय आंकड़ों से सहज ही स्पष्ट होता है कि पिछले दो वर्षों (१९८०-८१ तथा १९८१-८२) की उपलब्धियां पिछले आठ वर्षों की उपलब्धियों से भी अधिक हैं.

ब्याज मुक्त बिक्री कर ऋण योजना के अंतर्गत वित्तीय वर्ष १९८०-८१ तथा १९८१-८२ में क्रमशः २०४.४५ लाख रुपए तथा २४७.४१ लाख रुपए का ऋण वितरित किया गया. वित्तीय वर्ष १९८२-८३ में ३० जून १९८२ तक इस योजना के अंतर्गत ८२.४० लाख रुपए के ऋण वितरित किए जा चुके हैं. केंद्रीय पूंजी अनुदान योजना के अंतर्गत इन दो वर्षों में क्रमशः २७.५९ लाख और १९.४७ लाख रुपए वितरित किए गए तथा इस वित्तीय वर्ष में ३० जून तक २१.४५ लाख रुपए वितरित किए गए हैं. संभाव्यता आख्या अनुदान योजना (७५ प्रति शत सहायता) के अंतर्गत इन दो वर्षों में क्रमशः ६.२५ लाख और ७.७५ लाख रुपए वितरित किए गए. शत प्रति शत सहायता के अंतर्गत वर्ष १९८०-८१ तथा १९८१-८२ में क्रमशः १.४४ लाख और ३.९९ लाख रुपए वितरित किए गए. वर्ष १९८२-८३ का लक्ष्य ७५ प्रति शत सहायता के अंतर्गत १५ लाख रुपए तथा शत प्रति शत सहायता के अंतर्गत ५ लाख रुपए है जिस में से ३० जून १९८२ तक ७५ प्रति

शत सहायता के अंतर्गत १.७९४ लाख रुपए और शत प्रति शत सहायता के अंतर्गत १.२१८ लाख रुपए वितरित किए जा चुके हैं.

पिछले १० वर्षों में निगम ने १४ महत्वपूर्ण तथा आधारभूत परियोजनाओं के लिए आशय पत्र प्राप्त किए हैं. उन में से १२ आशय पत्र केवल पिछले एक वर्ष में प्राप्त किए गए हैं. यह निगम की एक विशेष उल्लेखनीय उपलब्धि है. इन के अतिरिक्त १३ अन्य परियोजनाओं के लिए आशय पत्र प्राप्त करने हेतु निगम ने केंद्र सरकार से अनुरोध किया है.

छठीं पंचवर्षीय योजना अवधि में प्रदेश में स्थापित किए जाने के लिए केमिकल्स, इलेक्ट्रिकल्स, इलेक्ट्रानिक्स, टेलीकम्यूनीकेशन, मेकेनिकल्स, मेटलरजिकल्स, होटेल्स तथा टेक्सटाइल्स से संबंधित २५४ परियोजनाएं निगम द्वारा अभिज्ञापित की गई है. इन परियोजनाओं में से १३२ परियोजनाओं की लागत एक करोड़ रुपए तक, ४६ परियोजनाओं की लागत एक करोड़ से ले कर दो करोड़ रुपए तक, ३४ परियोजनाओं की लागत दो करोड़ से ले कर पांच करोड़ रुपए तक, १८ परियोजनाओं की लागत पांच करोड़ से ले कर १० करोड़ रुपए तक तथा २४ परियोजनाओं की लागत १० करोड़ रुपए से अधिक है.

पेट्रोकेमिकल्स तथा फ़र्टीलाइज़र से संबंधित परियोजनाओं को भी इस निगम के कार्य क्षेत्र में सम्मिलित किया गया है. फ़र्टीलाइज़र से संबंधित परियोजनाओं के संबंध में काफ़ी कार्य किया भी जा चुका है. जिन १४ परियोजनाओं के लिए निगम ने आशय पत्र अभी तक प्राप्त किए हैं उन में से तीन परियोजनाएं पेट्रोकेमिकल्स से संबंधित हैं. पेट्रोकेमिकल्स से संबंधित ८ और परियोजनाएं उन १३ परियोजनाओं में सम्मिलित हैं जिन के लिए आशय पत्र प्राप्त करने हेतु निगम ने केंद्र सरकार अनुरोध कर रखा है. इन्हीं १३ परियोजनाओं में फ़र्टिलाइज़र से संबंधित एक परियोजना भी है.

चुनौती के वर्ष

बच्चा पाठक

मंत्री, सहकारिता

विगत वर्ष यूपीको बैंक के लिए चुनौती के वर्ष रहे हैं. इस के बावजूद बैंक ने प्रगति की है. इस का अंशपूंजी कोष, निक्षेप तथा कार्यशील पूंजी, जो गत वर्ष क्रमशः ३३.०५ करोड़, १५९.५० करोड़ तथा २८१.५० करोड़ रुपए थी ; बढ़ कर ३० जून १९८१ को क्रमशः ४०.३५ करोड़, १९५.९५ करोड़ तथा ३६४.३८ करोड़ हो गई. गत वर्ष की तुलना में अंशपूंजी तथा कोषों में २४.३ प्रति शत, निक्षेपों में २२.९ प्रति शत तथा कार्यशील पूंजी में २९.४ प्रति शत की वृद्धि हुई है. बैंक के बढ़ते हुए निक्षेप उस की उज्ज्वल प्रतिमा एवं बैंक के प्रति जनता के विश्वास के द्योतक हैं. बैंक का विनियोजन जो गत वर्ष २३५ करोड़ रुपए था, ३० जून १९८१ को बढ़ कर ३०१ करोड़ रुपए हो गया. विनियोजन में वर्षांतर्गत २२ प्रति शत की वृद्धि हुई. बैंक के विस्तार एवं कर्मचारियों के पुनरीक्षित वेतन के फलस्वरूप लगभग ६९.० लाख रुपए का अतिरिक्त व्यय भार बैंक पर पड़ने [illegible] बावजूद प्रबंधकीय व्यय कार्यशील पूंजी के ५१ पैं[illegible] आंकड़ा रहा जो रिज़र्व बैंक द्वारा निर्धारित २ प्रति शत [illegible] मानक की तुलना में बहुत कम है. बैंक का शुद्ध लाभ [illegible].०६ करोड़ रहा, जो गत वर्ष से ११.४६ लाख रुपए अधिक है. वर्षांतर्गत ८.५ प्रति शत का लाभांश घोषित किया गया है जो बैंक के इतिहास में कीर्तिमान है.

बैंक ने ऋण वितरण के क्षेत्र में गतिशील नीतियों का अनुसरण किया और विविध प्रकार के ऋण कृषि एवं अन्य कार्यक्रमों हेतु प्रदान किए हैं. वितरित ऋणों में ७४ प्रति शत ऋण कृषि कार्यक्रमों के निमित्त प्रदान किया गया जिस [illegible] से ६० प्रति शत ऋण मौसमी एवं अन्य कृषि कार्य[illegible] हेतु प्राइमरी समितियों के माध्यम से तथा १४ प्रति शत ऋण उर्वरक एवं कीटनाशक दवाओं के व्यवसाय हेतु यूपी कोआपरेटिव फ़ेडरेशन तथा गन्ना संघ व[illegible] दिया गया. चीनी उद्योग की सहकारी तथा स्टेट कारपोरेशन इकाइयों का वित्तपोषण भी बैंक द्वारा किया गया. वित्तपोषण के इस क्षेत्र में एक नई नीति बनाई गई जिस के अंतर्गत सक्षम ज़िला बैंकों को उन के क्षेत्र में संचालित सहकारी चीनी मिलों का वित्तपोषण भारतीय रिज़र्व बैंक की अनुज्ञा से सौंपा गया.

इस के अतिरिक्त ऐसे बैंकों के लिए भी भारतीय रिज़र्व बैंक की अनुज्ञा से लाभकारी वित्तपोषण योजनाएं बनाई की जा रही हैं जिस के क्षेत्र में सहकारी चीनी मिलें अथवा अन्य सहकारी इकाइयां स्थित नहीं हैं. इन बैंकों के साथ कंज़ार्शियम व्यवस्था बना कर धन के लाभकारी विनियोजन की व्यवस्था की जाएगी. इस से औद्योगिक विकास होगा और साथ ही ऐसे ज़िला बैंकों की आर्थिक स्थिति भी सुधरेगी जिन के पास लाभकारी विनियोजन के अवसर उपलब्ध नहीं हैं.

प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के बीस सूत्री कार्यक्रम में बैंक पहले से ही प्रभावी योगदान करता आ रहा है. इस कार्यक्रम के अंतर्गत बैंक ने निर्बल वर्ग की सहायतार्थ वित्तपोषण के कुछ कार्यक्रम संचालित किए हैं. मौसमी कार्यों हेतु किसानों को दिए जाने वाले ऋणों के क्षेत्र में पूर्व वर्ष में वितरित ६४.५४ करोड़ रुपए के विरुद्ध गत वर्ष ७७.३६ करोड़ रुपया निर्बल वर्ग को दिया गया जो वितरित ऋण का ४९.९६ प्रति शत था. अनुसूचित एवं जनजाति के लोगों में सहकारी ऋण प्रसार हेतु सदस्यता अभियान चलाने हेतु ५ लाख रुपए का ब्याजरहित अंशपूंजी ऋण आवंटित किया गया बुनकरों को ज़िला सहकारी बैंकों/बुनकर सहकारी समितियों के माध्यम से ८.५५ करोड़ रुपए का ऋण वितरित हुआ जिस से ४५ हज़ार को राहत मिली.

प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले ५०.२३ प्रति शत लोग, जो ग़रीबी की रेखा के नीचे निवास करते हैं, उन्हें पर्याप्त ऋण, अनुदान तथा तकनीकी सेवाएं पैकेज के रूप में दे कर ग़रीबी की रेखा से ऊपर उठाने में

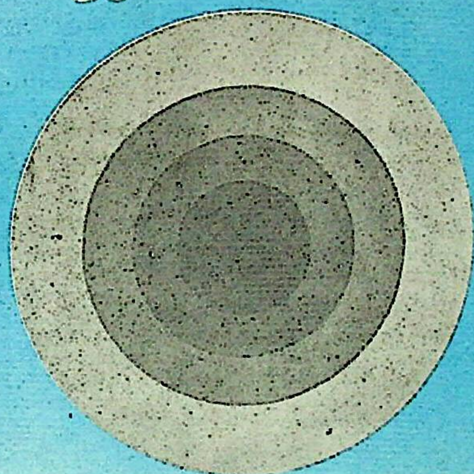
सहकारी बैंक पर्याप्त योगदान कर रहे हैं और विगत वर्षों में उन के द्वारा १,३५,०६१ लोगों को २३.७७ करोड़ रुपए का ऋण दे कर आगे बढ़ने को सहायता दी गई है. कुटीर उद्योगों के विकास हेतु कंपोज़िट ऋण की एक योजना है जिस के अंतर्गत चिन्हित ५६ उद्योगों के लिए ५,००० रुपए तक के ऋणों की व्यवस्था है और विशेष प्रयोजनों के लिए यह १०,००० रुपए की अनधिक सीमा तक सुलभ है.

ग्रामीण गोदाम परियोजना के संचालन का अवसर विश्व बैंक, राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम तथा शासन की सहायता से वर्ष १९७८-७९ में मिला, जिस की प्रगति को दृष्टि में रख विश्व बैंक ने शीतगृहों का एक दूसरा प्रोजेक्ट यूपी कोआपरेटिव बैंक को राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम तथा शासन की सहमति से स्वीकृत किया है. शीतगृह परियोजना में ६९ नए शीतगृह सहकारी क्षेत्र में स्थापित होंगे जिन से आलू भंडारण की २.७६ लाख मैट्रिक टन की अतिरिक्त क्षमता सृजित होगी तथा बैंक को ३५ करोड़ रुपए के विनियोजन का अवसर मिलेगा.

प्राकृतिक विपदाओं के बावजूद ऋण की वसूली गत वर्ष ९४ प्रति शत रही, परंतु ज़िला बैंकों की वसूली १,७०,३२६ किसानों को १३.०१ करोड़ रुपए की कनवर्ज़न राहत देने के बाद भी केवल ५८.५ प्रति शत ही रही जो संतोषजनक नहीं कही जा सकती. यहां यह बता देना उपयोगी होगा कि बैंकों का व्यवसाय इस बात पर निर्भर करता है कि वह किस सीमा तक विनियोजित धनराशि को पुनः विनियोजित करने में समर्थ होते हैं. यह क्रम वसूली पर निर्भर करता है अतएव वसूली के प्रयत्न पूरे वर्ष चलते रहने चाहिए.

अब चूंकि इस बैंक को आगे आने वाले वर्षों में स्वावलंबी भी बनना होगा और भारतीय रिज़र्व बैंक पर अपनी निर्भरता अनिवार्यतः कम करनी होगी अतएव यह आवश्यक है कि ज़िला सहकारी बैंक व प्राइमरी समितियां किसानों में मितव्ययिता की आदत डालें. ❖

अचूक निशाना



जी हां! यही तो है उत्तर प्रदेश में औद्योगिक विकास का केंद्र बिंदु 'पिकप' जो उद्योगों की स्थापना में उद्यमियों को 'संपूर्ण' सहायता देता है. योजना आप की छोटा उद्योग लगाने की हो या बड़ा, उत्तर प्रदेश में साधनों तथा जन शक्ति की कमी नहीं. रही बात पूंजी की, तो पिकप आप की मदद के लिए हर तरह से तैयार है—टर्म लोन, शेयरों की अंडर रायटिंग, चुंगी में छूट, बिक्री कर ऋण तथा प्रवासी भारतीयों के लिए विशेष पैकेज सहायता जैसी सुविधाओं के साथ.

'पिकप' का कंसैलटेंसी विभाग, आप की योजना की फ़ीज़ैबिलिटी की जांच में उद्योगों के लिए साइट के चुनाव तथा अन्य ऐसे कामों में हाथ बंटाता है.

प्राथमिक सुविधाओं, बिजली तथा तकनीकी सलाह देने से संबंधित विभागों के काम को समन्वित करने तथा उद्यमियों को लाल फ़ीताशाही के जंजाल से बचाने के लिए 'उद्योग बंधु' नामक हाई पावर सैल की स्थापना की गई है, जिस का एक दफ्तर लखनऊ (पिकप प्रांगण में) मध्यम तथा बृहत स्तर के उद्योगों तथा दूसरा कानपुर (डायरेक्टर आफ़ इंडस्ट्रीज़ प्रांगण में) छोटे स्तर के उद्योगों से संबंधित जानकारी व सुविधाएं प्राप्त कराने के लिए स्थित है. हर महीने होने वाली उद्योग बंधु बैठकों में स्वयं मुख्य मंत्री तक मौजूद होते हैं, नए उद्योगपतियों से सीधी बातचीत कर उन की हर विभाग से संबंधित समस्याओं और कठिनाइयों को फौरन हल करने के लिए. 'पिकप' और 'उद्योग बंधु' की मदद से निशाना साधिए—चूकने का सवाल नहीं.





UDYOG BANDHU

हमेशा आपकी सहायता के लिए तैयार

उद्यमियों के हितार्थ प्रकाशित

प्रदेशीय इंडस्ट्रियल एंड इनवेस्टमेंट कारपोरेशन आफ़ यू. पी. लि.

'जवाहर भवन' ऐनेक्सी, दूसरा तल, अशोक मार्ग, लखनऊ- २२६००१

''उद्योग बंधु''

नव चेतना भवन, १० अशोक मार्ग, लखनऊ-२२६००१.

दूरभाष : ४३१०५, ४५४२८, ४३०८१, ४२६३५, तार : पिकप, टेलेक्स : ०५३५-२७४

PAC/PICUP/106

प्रति सप्ताह एक सेतु

शीतला शरण

सेतु निगम प्रदेश सरकार का ही एक उपक्रम है. इस की स्थापना मार्च १९७३ में हुई थी. पिछले ९ वर्षों की अल्पावधि में निगम ने १०४ करोड़ रुपए की लागत के २७१ सेतुओं का निर्माण किया, जिन की कुल लंबाई ३५ किलोमीटर से अधिक है. इन में देश एवं प्रदेश की सभी महत्वपूर्ण नदियों के अतिरिक्त विदेशों में भी पुल बनाए जा चुके हैं. वर्ष १९८१-८२ में सेतु निगम ने ५५ सेतुओं को पूर्ण कर के 'हर सप्ताह में एक सेतु' का कीर्तिमान स्थापित किया है जो प्रदेश में ही नहीं, अपितु पूरे देश में बेमिसाल है.

इस वर्ष १९८२-८३ में निगम ने 'हर छठे दिन एक सेतु' पूर्ण करने का नया कीर्तिमान निर्धारित किया है और इस ओर तत्परता से अग्रसर है. सेतु निगम का कार्यभार प्रारंभिक वर्षों में ६ करोड़ रुपए मात्र था जो पिछले ९ वर्षों में ९ गुना वढ़ कर वर्ष १९८१-८२ में ५४ करोड़ रुपए हो गया है. अब वर्ष १९८२-८३ के लिए ६५ करोड़ रुपए कार्यभार हो जाने की पूर्ण आशा है.

प्रारंभ के कुछ वर्षों में निगम को कुछ हानि उठानी पड़ी. पर गत चार वर्षों से निगम द्वारा लगातार लाभ अर्जित किया जा रहा है एवं गत ९ वर्षों में निगम को ४ करोड़ रुपए का सकल लाभ होने की आशा है. पिछले ९ वर्षों में निगम ने लगभग २० करोड़ रुपए के भारी संयंत्र भी एकत्रित कर लिए हैं. अतः सेतु निगम उत्तर प्रदेश के उन गिने चुने निगमों में से है जो कि पिछले कुछ वर्षों से उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर हैं.

इस समय निगम के हाथ में १५४ करोड़ रुपए लागत के १६९ कार्य हैं जिन में से ११७ करोड़ रुपए लागत के ७३ कार्य प्रगति पर हैं. सेतु निगम द्वारा प्रदेश के समस्त बड़े सेतुओं के निर्माण कार्यों के अतिरिक्त सिविल इंजीनियरी के अन्य महत्वपूर्ण कार्य भी देश एवं विदेशों में किए जा रहे हैं.

निगम में हाल ही में असम, मध्य प्रदेश एवं पंजाब में सेतुओं का निर्माण पूर्ण किया है. इन प्रदेशों में सेतु निगम द्वारा किए गए कार्य समय से पूर्व पूर्ण हुए एवं उन की गुणवत्ता की भूरि भूरि प्रशंसा की गई है. निगम द्वारा अपने प्रदेश में सिंचाई विभाग के लिए मध्य गंगा बराज, बेवर बराज, ज्ञानपुर एवं डलमऊ पंप हाउस तथा नदरई जल सेतु का निर्माण कार्य किया जा रहा है. जल निगम की दिल्ली जल संपूर्ति योजना का कार्य हाल ही में पूर्ण किया जा चुका है, जो पूरे देश में अपने किस्म का एक अनोखा कार्य है.

निगम द्वारा नई दिल्ली में एशियाड-८२ के लिए ३ फ़्लाई ओवर्स का निर्माणं भी किया गया है. इन कार्यों की प्रगति एवं गुण की सराहना की जा रही है. गुजरात एवं केरल प्रांतों में ३.५० करोड़ रुपए लागत के एक एक सेतु का निर्माण कार्य निगम द्वारा हाल ही में शुरू किया गया है और आशा है कि पंजाब एवं आंध्र प्रदेश प्रांतों में भी सेतुओं के कार्य शीघ्र ही मिलेंगे.

सेतु निगम ने वर्ष १९७५-७७ में नेपाल में १.५० करोड़ रुपए की लागत के २० सेतुओं का निर्माण किया था और इस समय भी वहां ३३ लाख रुपए लागत का एक सेतु निर्माणाधीन है. देश के विभिन्न प्रांतों में सेतुओं का निर्माण सफलतापूर्वक करने के बाद निगम ने अपना कार्य मध्य पूर्व एशियाई देशों में बढ़ाया है. निगम द्वारा वर्ष १९७८ में पहली बार इराक में एक जलावला सेतु का निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया था, जो समय से पूर्व पूर्ण किया जा चुका है. इस से निगम को बहुत अच्छा लाभ प्राप्त हुआ है. मध्य पूर्व एशियाई देशों में वर्ष १९७८ में विभिन्न भारतीय कंपनियों द्वारा प्रारंभ किए गए कार्यों में यही एक पहला सेतु है जो सेतु निगम ने पूर्ण किया है और इस के फ़लस्वरूप इराकी शासन ने सेतु निगम को सर्वश्रेष्ठ कंपनियों की श्रेणी में स्थान दिया है.

सेतु निगम द्वारा इराक में अप्रैल १९८२ तक ६० करोड़ रुपए लागत के १५ सेतुओं का निर्माण कार्य लिया जा चुका है, और ये सभी कार्य दक्षतापूर्वक किए

(कृपया पृष्ठ १६६ देखें)

भारत का बदलता हुआ

एक पिछड़े हुये रुढ़िग्रस्त समाज का
एक आधुनिक राज्य में



आत्म-निर्भरता, आधुनिकता और

ा चेहरा

का

में रुपान्तरण

सामाजिक पिछड़ेपन को वैज्ञानिक दृष्टिकोण के सामने धीरे-धीरे पर निश्चित रूपसे पीछे हटना पड़ा है। पराधीन औपनिवेशिक अर्थनीति के भग्नावशेषसे भारत एक विशाल औद्योगिक राष्ट्र के रूप में उभरा है।

यह चमत्कार कैसे सम्भव हुआ ?

सरकार द्वारा तीस वर्षों के सुनियोजित विकास; और डी.एन. अग्रवाल जैसे अगुओं की दूरदर्शिता और साहस से।

१९५६ में श्री अग्रवाल ने हिन्दुस्थान सेफ्टी ग्लास वर्क्स की स्थापना की। यहीं सर्वप्रथम भारतीय प्रोद्योगिकी और विशेज्ञता की मदद से परतदार निरापत्ता काच का निर्माण आरम्भ हुआ। आज इस श्रेणी में अन्तर्भुक्त हैं चर्मोलित कांच-चिपटा और बांका, दुहरा कांचित रोधी कांच, गोली रोधक कांच, अन्तर्राष्ट्रीय मानक के उत्कृष्ट दर्पण...और इस श्रेणीमें वृद्धि होती ही जा रही है।

उत्पादों की गुणवत्ता एवं मानक को स्थिर तथा निश्चित करने के लिए सुयोग्य और अनुभवी विशेषज्ञ हैं, समाकलित उत्पादन सुविधायें हैं, अत्यंत समृद्ध प्रयोग शाला में परीक्षण की सुविधायें हैं, सतर्कता है एवं स्वतत्र आन्त : राज्य निरीक्षण तथा गुणवत्ता नियंत्रणके सक्रिय कार्मिक हैं।

उत्पादों की उत्कर्षता का ही यह सबूत है कि इनका उपयोग मूल उपस्कर के रूप के हिन्दुस्थान मोटर्स, टेल्को, प्रिमियर ऑटोमोबाइल्स, स्टैण्डर्ड मोटर्स, सिम्पसन, अशोका लेलैण्ड, महीन्द्र एण्ड महीन्द्र, बजाज ऑटो, बजाज टेम्पो, रेलवे, सुरक्षाविभाग तथा दूसरी अग्रणी संस्थायें कर रही हैं। हिन्दुस्थान सेफ्टी ग्लास के विशिष्ठ परिशुद्ध कांच भावा एटमिक रिसर्च सेन्टर, ऑर्डिनेन्स फैक्टरियों एवं अन्य संस्थाओं की कठोर शर्तोंपर खरे उतरे हैं। आज हिन्दुस्थान सेफ्टी ग्लास वर्क्स लि. चर्मोलित एवं निरापत्ता कांच के उत्पादन करनेवाले संयंत्र और मशीनें भी उत्पादन कर रहा है और इन यंत्रों और 'जानकारी' की आपूर्ति इसने अपने देश तथा विदेश में भी की है। श्री डी. एन. अग्रवालने त्रिवेणी शीट ग्लास वर्क्स लिमिटेड का भी प्रवर्तन किया है। इसने देशमें चादरी कांच के निर्माण में अगुआ हो ने की प्रतिष्ठा अर्जित की है।

डी. एन. अग्रवाल एण्ड सन्स ने अब एक और साहसिक कदम उठाया है। बड़े व्यास की एम. एस. पाइपों के निर्माण करने के लिए द इण्डिया इंजीनियरिंग एण्ड कंस्ट्राक्शन कम्पनी लि. की स्थापना।

और इस तरह भारत के चेहरे को बदलने के लिए सामाजिक परिवर्तन का क्रम निरन्तर चलता ही जा रहा है।

र सामाजिक परिवर्तन के संग्राम मे डी. एन. अग्रवाल एण्ड सन्स

वितरक : त्रिवेणी शीट ग्लास वर्क्स लिमिटेड

GRIFFIN

चर्म उद्योग में चमत्कार

उत्तर प्रदेश सरकार ने १९७४ में यू पी स्टेट लेदर डेवलपमेंट एंड मार्केटिंग कारपोरेशन् लिमिटेड की स्थापना इस उद्देश्य से की थी कि राज्य में, जहां चर्म शिल्प एक परंपरागत उद्योग रहा है, चर्म उद्योग को द्रुत विकास हो सके.

कारपोरेशन अब निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है तथा वह चर्म निर्यात के लिए, विशेष-कर कमज़ोर वर्ग को विकास सहायता दे कर, चर्म उद्योग का एक मज़बूत स्वरूप दे रहा है.

सामान्य सुविधाओं की उपलब्धि : आधुनिकतम मशीनरी से सज्जित एक सामान्य सुविधा केंद्र सदर भट्टी, आगरा, में चलाया जा रहा है ताकि छोटे यूनिट अपने उत्पादन की गुणवत्ता वहां उपलब्ध सुविधाओं द्वारा सामान्य स्तर तक ला सकें. यह सेवा केवल नाम मात्र दर पर उपलब्ध है. उन्नाव में एक और केंद्र पर छोटे चर्मकारों को चमड़े की तैयारी के विभिन्न चरणों के लिए सर्विस सुविधा उपलब्ध है.

मौलिक वस्तुओं का प्रबंध : चर्म उद्योग की एक मुख्य समस्या अच्छी क्वालिटी के चमड़े की कमी रही है. इस के समाधान के लिए कारपोरेशन ने आगरा में कच्चे माल का एक केंद्रीय डिपो स्थापित किया है तथा फ़ैज़ाबाद, मुरादाबाद एवं सुल्तानपुर में ऐसे डिपो स्थापित किए हैं जहां चमड़ा तथा चर्म कारीगरों की आवश्यकता की सभी वस्तुएं उचित मूल्य पर तुरंत मिल सकती हैं.

कुशल कारीगरों की सहायता : कारपोरेशन ने कुशल निर्माताओं को विपणन संबंधी आवश्यक जानकारी तथा सहायता देने के उद्देश्य से ही इस क्षेत्र में पदार्पण किया और अब वह उन से सामान्य एवं आधुनिक डिजाइनों एवं पैटर्नों का तैयार माल प्राप्त कर के अनेक केंद्रों से सफलता-पूर्वक उन का विपणन कर रही है. थोड़े से ही समय में कारपोरेशन ने विदेशी बाज़ारों से अनेक आर्डर प्राप्त कर लिए हैं.

अब निर्माण भी : विपणन एवं प्रापण, कारपोरेशन के मुख्य उद्देश्य रहे हैं. परंतु अब उस ने विशेष वस्तुओं, जैसे कि एंकल बूट्स, दस्ताने तथा सेफ़्टी बूट्स का निर्माण भी आरंभ कर दिया है.

निर्माण विधि में सुधार : शारीरिक श्रम का स्थान मशीनें लेती जा रही हैं, जिस के फलस्वरूप सही क्वालिटी सहित बहुमात्र उत्पादन विश्वसनीय हो गया है, जो कि हाथ से माल की तैयारी में संभव नहीं.

डिज़ाइनिंग एवं अनुसंधान : कुटीर उद्योग के यूनिट; परंपरागत किस्म का ही माल तैयार करते थे, क्योंकि वह डिज़ाइनिंग कक्ष स्थापित करने में असमर्थ थे. लेदर कारपोरेशन ने एक डिज़ाइन एवं विकास केंद्र स्थापित किया है जो सदर भट्टी आगरा में कार्य कर रहा है.

प्रशिक्षण कार्यक्रम : कारपोरेशन ने कारीगरों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाया है जहां उन्हें आधुनिक निर्माण विधियों से अवगत कराया जाता है.

प्रति सप्ताह सेतु . . .

(पृष्ठ १६३ से आगे)

जा रहे हैं. इन में अधिकतर कार्य निगम ने खुली निविदाओं के आधार पर प्राप्त किए हैं और बहुत से सेतुओं की परिकल्पना भी निगम द्वारा स्वयं बनाई गई है जिस से इस के तकनीकी ज्ञान की दक्षता का परिचय मिलता है. अब तो विदेशों में निगम की साख इतनी बना चुकी है कि हाल ही में इराक में कई कार्य निगम को मात्र आपसी बातचीत के आधार पर आवंटित किए गए हैं. पिछले वर्ष के इराक-ईरान युद्ध के समय सेतु निगम के अधिकारी, कर्मचारी एवं अन्य कार्यकर्ता बिना किसी भय के पूरी निष्ठा के साथ कार्यस्थल पर डटे रहे थे जबकि कई अन्य विदेशी कंपनियां अपना सामान समेट कर चली गई थीं. विदेशों में किए जा रहे कार्यों का वार्षिक कार्य भार २४ करोड़ रुपए तक पहुंच चुका है.

सेतु निगम ने अब कई अन्य देशों में भी कार्य प्रारंभ करने हेतु सफल प्रयास किए हैं. इन में कुवैत, मिस्र, सऊदी अरब, लीबिया एवं अल्जीरिया आदि मुख्य हैं. बहरीन में भी निगम को कुछ कार्य प्राप्त हुआ है ❖

राष्ट्रीय वन उत्पादन में उत्तर प्रदेश का योगदान !

उत्तर प्रदेश वन निगम के उद्देश्य:—

- ☐ वन विदोहन में ठेकेदारी प्रथा को समाप्त करना।
- ☐ यथा सम्भव आधुनिकीकरण करना तथा उन्नत ढंग के औज़ारों के उपयोग से प्रकाष्ठ की क्षति को कम करना।
- ☐ वन श्रमिकों की मज़दूरी में वृद्धि करना व ठेकेदारों द्वारा उनके शोषण को समाप्त करना।
- ☐ आम जनता, सार्वजनिक उद्योगों व विभागों को उचित मूल्य पर अच्छी लकड़ी उपलब्ध कराना।
- ☐ वन श्रमिकों को न्यूनतम मज़दूरी तथा यथा सम्भव अच्छा व सस्ता राशन उपलब्ध कराना।
- ☐ वनों के अधिक से अधिक कार्यों में वन श्रमिक संविदाओं को काम देकर प्रोत्सहित करना।
- ☐ शिक्षित बेरोज़गार नवयुवकों को आधुनिक लौगिंग तकनीक में प्रशिक्षण देकर वानिकी कार्यों में लगाना।
- ☐ पिछड़े हुए क्षेत्रों में वनों पर आधारित उद्योगों को लगाना तथा उन्हें उचित दर पर कच्चे माल की सम्पूर्ति करना।
- ☐ वन उत्पादन में वृद्धि करने के लिए वनीकरण करना।







उ.प्र. वन निगम

बी-932, सेक्टर 'बी', महानगर
लखनऊ 226006

PAC-TP-04 (R)

